ISLAM KI BUNYADI BATEN, HISSA 3 (HINDI)
मदनी मुन्नों के लिये बुन्यादी इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल मुनफ़रिद किताब
इस्लाम की
बुन्यादी बातें
(हि़स्सा 3)
www.dawateislami

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

ता़लिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह किताब "इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा -3)" उर्दू ज़बान में पेश की है और मजलिसे तराजिम ने इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त् करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या'नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाई है। इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail, Whats App या Telegram ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं।...✍

राबिता :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त् (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

इस्लाम की बुन्यादी बातें

(हिस्सा 3)

पेशकश

मजलिसे मद्रसतुल मदीना

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

दा'वते इस्लामी

नाशिर मक्तबतुल मदीना देहली हिन्द

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله

नाम किताब : इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 3)

पेशकश : मजलिसे मद्रसतुल मदीना, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

पहली बार : रजबुल मुरज्जब, सि. 1436 हि. ब मुताबिक़ मई सि. 2015 ई.

ता'दाद : 5000 (पांच हज़ार)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 30 रजबुल मुरज्जब 1434 हि. हवाला नम्बर : 183

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 3)(उर्दू)

(मत़बूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक़दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

10-06-2013

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

नाम त़ालिबे इल्म...वलदिय्यत..

मद्रसा...

दरजा..

पता..

....

फ़ोन नम्बर घर.....................................मोबाइल नम्बर...

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

"इस्लाम की बुन्यादी बातें" के अट्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "18 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم : نِیَّۃُ الۡمُؤۡمِنِ خَیۡرٌ مِّنۡ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1]

दो मदनी फूल

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ कुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां अल्लाह का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां सरकार का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) याद दाश्त वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ औलिया की सिफ़ात को अपनाऊंगा ﴾14﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾15﴿ इस ह़दीसे पाक "تَھَادَوۡا تَحَابُّوۡا"[2] या'नी "एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी" पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾16﴿ अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर किया करूंगा और हर इस्लामी माह की दस तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा और ﴾17﴿ आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा ﴾18﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को मुमकिना ज़राएअ़ से तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)।

---

[1] ……المعجم الکبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

[2] ……مؤطا امام مالک، ۲/۴۰۷، حدیث: ۱۷۳۱

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿3﴾ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाए और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "दा'वते इस्लामी" की तमाम मजालिस ब शुमूल "अल मदीनतुल इल्मिय्या" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये

कुरआने मजीद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आख़िरी किताब है, इस को पढ़ने और इस पर अ़मल करने वाला दोनों जहां में कामयाब व कामरान होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त अन्दरूने व बैरूने मुल्क हिफ़्ज़ व नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम मद्रसतुल मदीना क़ाइम हैं। सिर्फ़ पाकिस्तान में तादमे तह़रीर कमो बेश 75 हज़ार मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियों को हिफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इन मदारिस में कुरआने करीम के साथ साथ दीनी मा'लूमात और तरबियत पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है ताकि मद्रसतुल मदीना से फ़ारिग़ होने वाला त़ालिबे इल्म ता'लीमे कुरआन के साथ साथ दीने इस्लाम की ता'लीमात से भी रू शनास हो और उस में इल्मो अ़मल दोनों रंग नज़र आएं, वोह ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पैकर हो, अच्छाई और बुराई की पहचान रखता हो, बुरी आ़दतों से पाक और अच्छे अवसाफ़ का मालिक हो और बड़ा हो कर मुआ़शरे का ऐसा बाकिरदार मुसलमान बने कि उ़म्र भर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मस्रूफ़ रहे।

ज़ेरे नज़र किताब इस्लाम की बुन्यादी बातें हि़स्सा 3 "दर अस्ल मदनी निसाब बराए क़ाइदा और मदनी निसाब बराए नाज़िरा सिलसिले की ही एक कड़ी है। बुन्यादी त़ौर पर चूंकि येह तीनों किताबें मद्रसतुल मदीना में हिफ़्ज़ व नाज़िरा की ता'लीम ह़ासिल करने वाले मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को इस्लाम की बुन्यादी बातों से आगाह करने के लिये लिखी गई थीं मगर ख़वासो अ़वाम में इन की बढ़ती हुई मक़्बूलिय्यत के पेशे नज़र मजलिस ने इस सिलसिले का नाम तब्दील करने का फ़ैसला किया ताकि इन कुतुब की इफ़ादियत सिर्फ़ मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों तक ही मह़दूद न रहे बल्कि हर ख़ासो आ़म इन कुतुब से फ़ैज़याब हो सके। चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस सिलसिले का नया नाम "इस्लाम की बुन्यादी बातें" अ़ता फ़रमाया। लिहाज़ा आयिन्दा से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह सिलसिला इसी नाम से शाएअ़ होगा। इस किताब की पेशकश का सेहरा मजलिसे मद्रसतुल मदीना और मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के सर है जब कि दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से इस की शरई तफ़्तीश करवाई गई है।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

मजलिसे मद्रसतुल मदीना
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

बाब : 1

इब्तिदाइय्या

इस बाब में आप पढ़ेंगे

ह़म्दो ना'त, अस्माए हुस्ना, मा'मूलाते शबे जुमुआ़ के अज़्कार और चन्द मुतफ़र्रिक़ दुआ़एं

हम्दे बारी तआला

दर्दे दिल कर मुझे अता या रब[1]

दर्दे दिल कर मुझे अता या रब / दे मेरे दर्द की दवा या रब

लाज रख ले गुनाहगारों की / नाम रहमान है तेरा या रब

बे सबब बख़्श दे न पूछ अमल / नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब

टीस कम हो न दर्दे उल्फ़त की / दिल तड़पता रहे मेरा या रब

سَبَقَتْ رَحْمَتِيْ عَلٰى غَضَبِيْ / तू ने जब से सुना दिया या रब

आसरा हम गुनाहगारों का / और मज़बूत हो गया या रब

तू ने मेरे ज़लील हाथों में / दामने मुस्तफ़ा दिया या रब

हर भले की भलाई का सदक़ा / इस बुरे को भी कर भला या रब

मुझे दोनों जहां के ग़म से बचा / शाद रख शाद दाइमन या रब

दुश्मनों के लिये हिदायत की / तुझ से करता हूं इल्तिजा या रब

तू हसन को उठा हसन कर के / हो मआल ख़ैर ख़ातिमा या रब

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी : سَبَقَتْ رَحْمَتِيْ عَلٰى غَضَبِيْ (तर्जमा : मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई) शाद (ख़ुशी) दाइमन (हमेशा)

[1]......ज़ौक़े ना'त अज़ मौलाना मुहम्मद हसन रज़ा ख़ान क़ादिरी, स. 59

ना'ते मुस्तफ़ा

क़सीदए नूर[1]

सुब्ह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

बागे़ तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्ते बू हैं बुलबुलें पढ़ती हैं कलिमा नूर का

बारहवीं के चांद का मुजरा है सजदा नूर का
बारह बुरजों से झुका एक इक सितारा नूर का

मैं गदा तू बादशाह भर दे पियाला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदक़ा नूर का

ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का
सर झुकाते हैं इलाही बोल बाला नूर का

जो गदा देखो लिये जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का

भीक ले सरकार से ला जल्द कासा नूर का
माहे नव तैबा में बटता है महीना नूर का

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का

ऐ रज़ा येह अहमदे नूरी का फ़ैज़े नूर है
हो गई मेरी ग़ज़ल बढ़ कर क़सीदा नूर का

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी : बाड़ा (ख़ैरात, भीक) मुजरा (सलाम व आदाब बजा लाना) तोड़ा 1 (थैला या'नी बोरी भर कर) तोड़ा 2 (कमी, क़िल्लत) कासा (कश्कोल) माहे नव (नया चांद) दो शाला (दो चादरें या'नी दो शहज़ादियां, हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या व उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाले, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन अफ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) महद (गोद, पिंगोड़ा)

[1]......हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा दुवुम, स. 242

अज़्कार अस्माउल हुस्ना

सुवाल: अस्माए हुस्ना से क्या मुराद है ?

जवाब: अस्माए हुस्ना से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वोह नाम हैं जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पुकारने का हुक्म दिया गया है। चुनान्चे, पारह 9 सूरतुल आ'राफ़ की आयत नम्बर 180 में है :

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह ही के हैं बहुत अच्छे नाम तो उसे उन से पुकारो।

सुवाल: अस्माए हुस्ना कितने हैं ?

जवाब: अस्माए हुस्ना हैं तो बहुत ज़ियादा मगर मश्हूर 99 हैं।

सुवाल: अस्माए हुस्ना की कोई फ़ज़ीलत बताइये ?

जवाब: हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के निनानवे (99) अस्माए हुस्ना हैं जिस ने येह शुमार किये (या'नी याद कर लिये) वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

सुवाल: क्या येह अस्माए हुस्ना क़ुरआने मजीद में भी हैं ?

जवाब: जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के येह ज़ाती व सिफ़ाती नाम क़ुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ सूरतों में मौजूद हैं।

---

[1] ……بخاری، کتاب التوحید، باب إن للہ مئۃ اسم الا واحدا، ۴/۵۳۷، حدیث: ۷۳۹۲

सुवाल अस्माए हुस्ना कौन से हैं ?

जवाब अस्माए हुस्ना येह हैं :

اَلرَّحِیْمُ (निहायत रह़म वाला)	اَلرَّحْمٰنُ (बड़ा मेहरबान)	هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (वोही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं)
اَلسَّلَامُ (सलामत रखने वाला)	اَلْقُدُّوْسُ (हर ऐब से पाक)	اَلْمَلِكُ (बादशाहे ह़क़ीक़ी)
اَلْعَزِیْزُ (सब से ग़ालिब)	اَلْمُهَیْمِنُ (निगहबान)	اَلْمُؤْمِنُ (अम्न देने वाला)
اَلْخَالِقُ (पैदा करने वाला)	اَلْمُتَكَبِّرُ (बड़ाई वाला)	اَلْجَبَّارُ (टूटे दिलों को जोड़ने वाला)
اَلْغَفَّارُ (बख़्शने वाला)	اَلْمُصَوِّرُ (सूरत बनाने वाला)	اَلْبَارِئُ (पैदा करने वाला)
اَلرَّزَّاقُ (रिज़्क़ देने वाला)	اَلْوَهَّابُ (बहुत देने वाला)	اَلْقَهَّارُ (सब से त़ाक़तवर)
اَلْقَابِضُ (बुलन्द करने वाला)	اَلْعَلِیْمُ (जानने वाला)	اَلْفَتَّاحُ (खोलने वाला)
اَلرَّافِعُ (बुलन्द करने वाला)	اَلْخَافِضُ (पस्त करने वाला)	اَلْبَاسِطُ (कुशादा करने वाला)
اَلسَّمِیْعُ (ख़ूब सुनने वाला)	اَلْمُذِلُّ (ज़िल्लत देने वाला)	اَلْمُعِزُّ (इ़ज़्ज़त देने वाला)
اَلْعَدْلُ (अ़द्ल करने वाला)	اَلْحَكَمُ (फ़ैसला करने वाला)	اَلْبَصِیْرُ (सब देखने वाला)
اَلْحَلِیْمُ (बुर्दबार)	اَلْخَبِیْرُ (ख़बरदार)	اَللَّطِیْفُ (बारीक बीन)
اَلشَّكُوْرُ (बड़ा क़द्र दान)	اَلْغَفُوْرُ (बख़्शने वाला)	اَلْعَظِیْمُ (बहुत बड़ा)
اَلْحَفِیْظُ (सब का मुह़ाफ़िज़)	اَلْكَبِیْرُ (सब से बड़ा)	اَلْعَلِیُّ (बुलन्द मर्तबा)
اَلْجَلِیْلُ (बुज़ुर्ग)	اَلْحَسِیْبُ (किफ़ायत करने वाला)	اَلْمُقِیْتُ (क़ुव्वत देने वाला)

اَلْمُجِيْبُ (क़बूल करने वाला)	اَلرَّقِيْبُ (निगाह रखने वाला)	اَلْكَرِيْمُ (करम करने वाला)
اَلْوَدُوْدُ (महब्बत करने वाला)	اَلْحَكِيْمُ (हिक्मत वाला)	اَلْوَاسِعُ (वुस्अ़त देने वाला)
اَلشَّهِيْدُ (मुशाहदा करने वाला)	اَلْبَاعِثُ (रसूलों का भेजने वाला)	اَلْمَجِيْدُ (बुज़ुर्ग)
اَلْقَوِیُّ (ताक़त वाला)	اَلْوَكِيْلُ (कारसाज़)	اَلْحَقُّ (सच्चा)
اَلْحَمِيْدُ (क़ाबिले ता'रीफ़)	اَلْوَلِیُّ (दोस्त)	اَلْمَتِيْنُ (मज़बूत)
اَلْمُعِيْدُ (दोबारा लौटाने वाला)	اَلْمُبْدِئُ (आग़ाज़ करने वाला)	اَلْمُحْصِی (गिनने वाला)
اَلْحَیُّ (ज़िन्दा)	اَلْمُمِيْتُ (मारने वाला)	اَلْمُحْيِی (ज़िन्दा करने वाला)
اَلْمَاجِدُ (बुज़ुर्गी वाला)	اَلْوَاجِدُ (पाने वाला)	اَلْقَيُّوْمُ (हमेशा रहने वाला)
اَلْقَادِرُ (कुदरत वाला)	اَلصَّمَدُ (बेनियाज़)	اَلْوَاحِدُ (अकेला)
اَلْمُؤَخِّرُ (पीछे करने वाला)	اَلْمُقَدِّمُ (आगे करने वाला)	اَلْمُقْتَدِرُ (कुव्वत वाला)
اَلظَّاهِرُ (आश्कारा)	اَلْاٰخِرُ (सब से पीछे)	اَلْاَوَّلُ (सब से पहले)
اَلْمُتَعَالِی (सब से बुलन्द)	اَلْوَالِی (मालिक)	اَلْبَاطِنُ (पोशीदा)
اَلْمُنْتَقِمُ (बदला लेने वाला)	اَلتَّوَّابُ (तौबा क़बूल करने वाला)	اَلْبَرُّ (एह्सान करने वाला)
مَالِكُ الْمُلْكِ (सारे मुल्कों का मालिक)	اَلرَّءُوْفُ (बहुत मेहरबान)	اَلْعَفُوُّ (मुआफ़ फ़रमाने वाला)
اَلْجَامِعُ (जमअ़ करने वाला)	اَلْمُقْسِطُ (इन्साफ़ करने वाला)	ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ (बुज़ुर्गी और इन्आ़म वाला)

(मन्अ़ करने वाला) اَلْمَانِعُ	(दौलत मन्द करने वाला) اَلْمُغْنِي	(ग़नी) اَلْغَنِيُّ
(रोशनी वाला) اَلنُّوْرُ	(नफ़्अ़ देने वाला) اَلنَّافِعُ	(ज़रर देने वाला) اَلضَّآرُّ
(हमेशा रहने वाला) اَلْبَاقِي	(नया पैदा करने वाला) اَلْبَدِيْعُ	(राह दिखाने वाला) اَلْهَادِي
(बड़ा तहम्मुल वाला) اَلصَّبُوْرُ	(सब की रहनुमाई करने वाला) اَلرَّشِيْدُ	(मालिक) اَلْوَارِثُ

सुवाल क्या अस्माए हुस्ना याद करने का कोई आसान त़रीक़ा भी है?

जवाब जी हां! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अपनी किताब क़ूतुल क़ुलूब में अस्माए हुस्ना याद करने का बड़ा ही आसान त़रीक़ा नक़्ल फ़रमाया है। आप फ़रमाते हैं कि येह अस्माए हुस्ना पूरे क़ुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मज़्कूर हैं। पस जो यक़ीन रखते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इन के वसीले से दुआ़ करे वोह उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म किया। अगर इन्हें ज़बानी याद करना मुश्किल हो तो हुरूफ़े तहज्जी के ए'तिबार से इन्हें शुमार कर लिया करें। या'नी हर ह़र्फ़ से शुरूअ़ होने वाले अस्माए हुस्ना याद कर लें मसलन पहले الف से शुरूअ़ करें और देखें कि इस ह़र्फ़ से कौन से अस्माए हुस्ना आते हैं मसलन الف से اَللّٰهُ , اَلْاٰخِرُ , اَلْاَوَّلُ वग़ैरा। ب से, اَلْبَارِئُ، اَلْبَاطِنُ और ت से اَلتَّوَّابُ। अलबत्ता! बा'ज़ हुरूफ़ से अस्माए हुस्ना का पाया जाना मुश्किल होगा लिहाज़ा जिन हुरूफ़ से मुमकिन हो इन से अस्माए ज़ाहिरा निकाल कर इन्हें शुमार कर लें और जब वोह 99 हो जाएं तो येही काफ़ी है क्यूंकि एक ह़र्फ़ से कमो बेश दस अस्माए हुस्ना पाए जाएं तो भी ह़रज नहीं। अगर किसी ह़र्फ़ से कोई इस्म न मिले तो कोई ह़रज नहीं, बशर्तेकि ता'दाद पूरी हो गई हो तो ह़दीसे पाक में मरवी फ़ज़ीलत ह़ासिल हो जाएगी।[1]

[1] ......قوت القلوب، الفصل الخامس عشر، ١/ ٨١

मा'मूलाते शबे जुमुआ

शबे जुमुआ का दुरूद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ۣالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ
الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ (जुमुआ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं।[1]

तमाम गुनाह मुआ़फ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।[2]

---

[١]......افضل الصلوات على سيّد السادات، الصلاة السادسة والخمسون، ص ١٥١ ملخصًا

[٢]......المرجع السابق، الصلاة الحادية عشرة، ص ٦٥

रह़मत के सत्तर दरवाज़े

صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।[1]

छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है।[2]

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है।[3]

---

[١]……القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ والسلام علی رسول اللہ، ص٢٧٧

[٢]……افضل الصلوات علی سیّد السادات، الصلاۃ الثانیۃ والخمسون، ص١٤٩

[٣]……القول البدیع، الباب الاول، ص١٢٥

हाफ़िज़ा मज़बूत करने की दुआ

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا
رَحْمَتَکَ یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ ①

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले !

ज़बान की लुक्नत दूर करने की दुआ

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ وَیَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ

तर्जमा : ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिर्ह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें।

---

[1]......दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले येह दुआ पढ़ी जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा।

(مستطرف، الباب الرابع فی العلم والادب......الخ، ۱/۲۰)

मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ①

तर्जमा : या इलाही ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं ।[2]

शिआ़रे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ़ पढ़े

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا
وَّاحِدًا لَّا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ ③

तर्जमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, वोह मा'बूदे यक्ता है हम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करते हैं ।

ग़ुस्सा आने, कुत्ते के भोंकने और गधे के रेंगने पर पढ़ने की दुआ़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ④

तर्जमा : मैं शैत़ान मर्दूद से अल्लाह तआ़ला की पनाह चाहता हूं ।

बारिश के वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ سُقْيًا نَّافِعًا ⑤

तर्जमा : या इलाही ! ऐसा पानी बरसा जो नफ़्अ़ पहुंचाए ।

---

1 ......بخاری، ۲/۴۰۵، حدیث:۳۳۰۳ماخوذاً

2 ......मुर्ग़ रह़मत का फ़िरिश्ता देख कर बोलता है, उस वक़्त की दुआ़ पर फ़िरिश्ते के आमीन कहने की उम्मीद है । (मिरआतुल मनाजीह़, 4/32)

3 ...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत में है कि मन्दिरों के घन्टे और संख (नाक़ूस या'नी बड़ी कोड़ी जो मन्दरों में बजाई जाती है) की आवाज़ और गिरजा वग़ैरा की इमारत को देख कर भी येह दुआ़ पढ़े ।

(अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सा दुवुम, स. 235)

4 ......بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ۴/۱۳۰، حدیث:۶۱۱۵
مسند احمد، ۵/۳۴، حدیث:۱۴۲۸۷

5 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب فی الریاح، ۱/۲۹۲، حدیث:۱۵۲۰

आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّ شِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ ①

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़ का और रिज़्क़ की कुशादगी का और हर बीमारी से शिफ़ायाबी का सुवाल करता हूं।

बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط ②

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ मौत नहीं आएगी, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते कुदरत में हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।[3]

अदाए क़र्ज़ की दुआ

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ط ④

---

[1]...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आबे ज़म ज़म पीते वक़्त येह दुआ पढ़ा करते थे। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : आबे ज़म ज़म जिस काम के लिये पिया जाए (कार आमद है) इस को पीते वक़्त शिफ़ा त़लब करें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाएगा और अगर पनाह मांगें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पनाह अ़त़ा फ़रमाएगा। (مستدرک، کتاب المناسک، ماء زمزم لما شرب لہ، ۲/۱۳۲، حدیث: ۱۷۸۲)

[2]...... ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا دخل السوق، ۵/۲۷۱، حدیث: ۳۴۳۹

[3]...... अल्लाह तआ़ला इस (दुआ़ के पढ़ने वाले) के लिये दस लाख नेकियां लिखता है और उस के दस लाख गुनाह मिटाता है और उस के दस लाख दरजे बुलन्द करता है और उस के लिये जन्नत में घर बनाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 4/39)

[4]...... مستدرک، کتاب الدُعاء والتکبیر...... الخ، دُعاء قضاء الدین، ۲/۲۳۰، حدیث: ۲۵۱۶

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़ता फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे।[1]

मुसीबत ज़दा को देखते वक़्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ
وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا ۲

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आ़फ़िय्यत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी।[3]

सितारों को देखते वक़्त की दुआ

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا
سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ط

तर्जमा : ऐ रब हमारे तू ने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

---

[1]...... येह दुआ़ तीर ब हदफ़ नुस्ख़ा है अगर हर मुसलमान हमेशा ही येह दुआ़ हर नमाज़ के बा'द ज़रूर एक बार पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़ व ज़ुल्म से मह़फ़ूज़ रहेगा।

[2]......ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا رای مبتلی، ۵/۲۷۲، حدیث: ۳۴۴۲

[3]......शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी पंज सूरह सफ़ह़ा 209 पर फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी बला रसीदा को देख कर येह दुआ़ पढ़ लेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस बला से मह़फ़ूज़ रहेगा। हर त़रह़ के अमराज़ व बला में मुब्तला को देख कर येह दुआ़ पढ़ सकते हैं, लेकिन तीन क़िस्म की बीमारियों में मुब्तला शख़्स को देख कर येह दुआ़ न पढ़ी जाए क्यूंकि मन्क़ूल है कि तीन बीमारियों को मकरूह न रखो : (1) ज़ुकाम कि इस की वजह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है (2) खुजली कि इस से अमराज़े जिल्दिया और ज़ुज़ाम वग़ैरा का इन्सिदाद हो जाता है (3) आशूबे चश्म नाबीनाई को दफ़्अ़ करता है। (इस दुआ़ को पढ़ते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि मुसीबत ज़दा को सुनाई न पहुंचे क्यूंकि इस से उस की दिल शिकनी हो सकती है)

बद हज़्मी की दुआ

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ①

तर्जमा : खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

बुख़ार से शिफ़ा की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِیْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ مِنْ شَرِّ
كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ ط ②

अल्लाह के नाम से जो बड़ा है और मैं पनाह चाहता हूं अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर की हर जोश मारने वाली रग और आग की गर्मी के नुक़्सान से।

हर मूज़ी मरज़ से पनाह की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُذَامِ
وَالْجُنُوْنِ وَمِنْ سَیِّیءِ الْاَسْقَامِ ط ③

तर्जमा : या इलाही ! मैं तुझ से बरस, जुज़ाम, जुनून और दूसरी बीमारियों से पनाह चाहता हूं।

---

[1]...... फ़ैज़ाने सुन्नत, आदाबे तृआम, 1/609

[2]...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि येह दुआ़ हर क़िस्म के दर्द और बुख़ार वग़ैरा की सूरत में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को सिखाते थे। (المعجم الكبير، ١١/١٧٩، حديث: ١١٥٦٣) चुनान्चे, शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी पंज सूरह सफ़हा 234 पर फ़रमाते हैं : जिस को बुख़ार हो सात बार येह दुआ़ पढ़े, अगर मरीज़ खुद न पढ़ सके तो कोई दूसरा नमाज़ी आदमी सात बार पढ़ कर दम कर दे या पानी पर दम कर के पिला दे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बुख़ार उतर जाएगा। एक मरतबा में बुख़ार न उतरे तो बार बार येह अ़मल करें।

[3]......ابوداود، كتاب الوتر، باب في الاستعاذة، ٢/١٣٢، حديث: ١٥٥٤

मजलिस के इख़्तिताम की दुआ

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ①

तर्जमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी तरफ़ तौबा करता हूं।

सूरए बक़रह के फ़ज़ाइल

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में सूरए बक़रह के तह़त ह़ाशिया नम्बर 1 में फ़रमाते हैं : इस सूरत में 286 आयतें, 40 रुकूअ़, 6121 कलिमे, पच्चीस हज़ार पांच सो ह़र्फ़ हैं। (ख़ाज़िन) पहले क़ुरआने पाक में सूरतों के नाम न लिखे जाते थे, येह त़रीक़ा ह़ज्जाज ने निकाला। इब्ने अ़रबी का क़ौल है कि सूरए बक़रह में हज़ार अम्र, हज़ार नह्य, हज़ार हुक्म, हज़ार ख़बरें हैं। इस के अख़्ज़ में बरकत, तर्क में ह़सरत है, अहले बात़िल जादूगर इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते, जिस घर में येह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैत़ान उस में दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि शैत़ान उस घर से भागता है जिस में येह सूरत पढ़ी जाए। (जमल) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने ह़ज़रते मुग़ीरा से रिवायत की, कि जो शख़्स सोते वक़्त सूरए बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा क़ुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वोह आयतें येह हैं : चार आयतें अव्वल की और आयतुल कुरसी और दो इस के बा'द की और तीन आख़िर सूरत की। मस्अला : त़बरानी व बैहक़ी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत की, कि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मय्यित को दफ़्न कर के क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़रह के अव्वल की (पांच) आयतें और पाउं की त़रफ़ आख़िर की (दो) आयतें पढ़ो।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 1, अल बक़रह)

① ...... ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارة المجلس، ۴/۳۴۸، حدیث: ۴۸۵۹

पहला बाब एक नज़र में

क्या आप ने रजबुल मुरज्जब की 27 वीं रात या'नी मे'राज शरीफ़ की निस्बत से बाब अव्वल में बयान कर्दा दर्जे ज़ैल 27 बातें जान ली हैं ?

1 क्या आप बता सकते हैं कि इस किताब की इब्तिदा में जो ह़म्द शरीफ़ है वोह किस ने लिखी है?

2 क्या आप बता सकते हैं कि इस किताब की इब्तिदा में जो ना'त शरीफ़ है वोह किस ने लिखी है?

3 अस्माए हुस्ना से क्या मुराद है?

4 अस्माए हुस्ना कितने हैं?

5 अस्माए हुस्ना की कोई फ़ज़ीलत बताइये ?

6 क्या येह अस्माए हुस्ना कुरआने मजीद में भी हैं?

7 अस्माए हुस्ना कौन से हैं?

8 क्या अस्माए हुस्ना याद करने का कोई आसान त़रीक़ा भी है?

9 वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से मौत और क़ब्र में दाख़िल होते सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब होगी ?

10 वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं?

11 वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं?

12 वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है?

13 वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कुर्ब नसीब होता है ?

14 ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने की दुआ़ और इस की फ़ज़ीलत भी बताइये।

15 ज़बान की लुक्नत दूर करने की दुआ़ क्या है?

16 शिआ़रे कुफ़्फ़ार को देख कर या आवाज़ सुन कर कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है?

17 ग़ुस्सा आने, कुत्ते के भोंकने और गधे के रेंगने पर पढ़ी जाने वाली दुआ़ सुनाइये?

18 बारिश के वक़्त की दुआ़ सुनाइये?

19 आबे ज़म ज़म पीते वक़्त क्या दुआ़ करनी चाहिये? नीज़ क्या आप इस दुआ़ की कोई फ़ज़ीलत बता सकते हैं?

20 बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है? क्या इस की कोई फ़ज़ीलत भी मरवी है?

21 अदाए क़र्ज़ की दुआ़ और इस की फ़ज़ीलत बताइये?

22 किसी मुसीबत ज़दा को देख कर कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है?

23 सितारों को देख कर कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है?

24 किसी को बद हज़्मी हो जाए तो उसे कौन सी दुआ़ पढ़नी चाहिये?

25 अगर किसी को बुख़ार हो जाए तो उसे शिफ़ा के हुसूल के लिये कौन सी दुआ़ करनी चाहिये?

26 मूज़ी अमराज़ से पनाह की दुआ़ सुनाइये?

27 मजलिस के इख़्तिताम की दुआ़ क्या है?

बाब : 2

ईमानिय्यात

इस बाब में आप पढ़ेंगे

अ़क़ाइद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी इस्तिलाहात की वज़ाहत के इलावा अ़क़ीदए तौह़ीद व रिसालत के मुतअ़ल्लिक़ सुवालन जवाबन मुख़्तसर बुन्यादी बातें

अ़क़ाइद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी इस्तिलाहात

ईमान

सुवाल ईमान किसे कहते हैं ?

जवाब ईमान लुग़त में तस्दीक़ करने (या'नी सच्चा मानने) को कहते हैं।[1] ईमान का दूसरा लुग़वी मा'ना है : अम्न देना। चूंकि मोमिन अच्छे अ़क़ीदे इख़्तियार कर के अपने आप को हमेशा वाले अ़ज़ाब से अम्न दे देता है इस लिये अच्छे अ़क़ीदों के इख़्तियार करने को ईमान कहते हैं।[2] और इस्तिलाहे शरअ़ में ईमान के मा'ना हैं : ''सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करे जो ज़रूरियाते दीन से हैं।''[3]

कुफ़्र

सुवाल कुफ़्र के क्या मा'ना हैं ?

जवाब कुफ़्र का लुग़वी मा'ना है : ''किसी शै को छुपाना।''[4] और इस्तिलाह में किसी एक ज़रूरते दीनी के इन्कार को भी कुफ़्र कहते हैं अगर्चे बाक़ी तमाम ज़रूरियाते दीन की तस्दीक़ करता हो।[5] जैसे कोई शख़्स अगर तमाम ज़रूरियाते दीन को तस्लीम करता हो मगर नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत या ख़त्मे नबुव्वत का मुन्किर हो वोह काफ़िर है। कि नमाज़ को फ़र्ज़ मानना और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी मानना दोनों बातें ज़रूरियाते दीन में से हैं।

ज़रूरियाते दीन

सुवाल ज़रूरियाते दीन किसे कहते हैं ?

---

[1]...... تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ:۳، الجزء الاول، ۱/ ۱۴۷

[2]...... تفسیر نعیمی، البقرۃ، تحت الآیۃ:۳، ۱/ ۱۲۰

[3]...... बहारे शरीअ़त, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/172 बित्तग़य्युर

[4]...... المفردات، ص ۴۳۳

[5]...... बहारे शरीअ़त, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/172 बित्तग़य्युर

जवाब ज़रूरियाते दीन से मुराद इस्लाम के वोह अह़काम हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों, जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक होना, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नबुव्वत, नमाज़, रोज़े, ह़ज, जन्नत, दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, ह़िसाबो किताब लेना वग़ैरा। मसलन येह अ़क़ीदा रखना (भी ज़रूरियाते दीन में से है) कि हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "ख़ातमुन्नबिय्यीन" हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं हो सकता।

सुवाल हर ख़ासो आ़म से क्या मुराद है ?

जवाब ख़ास से मुराद उ़लमा और आ़म से मुराद अ़वाम हैं या'नी वोह मुसलमान जो उ़लमा के त़बक़े में शुमार न किये जाते हों मगर उ़लमा की सोह़बत में बैठने वाले हों और इल्मी मसाइल का ज़ौक़ रखते हों। वोह लोग मुराद नहीं जो दूरो दराज़ जंगलों पहाड़ों में रहने वाले हों जिन्हें सह़ीह़ कलिमा पढ़ना भी न आता हो कि ऐसे लोगों का ज़रूरियाते दीन से नावाक़िफ़ होना इस दीनी ज़रूरी को ग़ैर ज़रूरी न कर देगा। अलबत्ता ! ऐसे लोगों के मुसलमान होने के लिये येह बात ज़रूरी है कि ज़रूरियाते दीन के मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाले) न हों और येह अ़क़ीदा रखते हों कि इस्लाम में जो कुछ है ह़क़ है। इन सब पर इजमालन ईमान लाए हों।[1]

सुवाल ज़रूरियाते दीन के मुन्किर का हुक्म क्या है ?

जवाब ज़रूरियाते दीन का मुन्किर बल्कि इन में अदना शक करने वाला बिल यक़ीन काफ़िर होता है ऐसा कि जो उस के कुफ़्र में शक करे वोह भी काफ़िर।[2]

ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत

सुवाल ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत से क्या मुराद है ?

---

1 ......बहारे शरीअ़त, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/ 172 बित्तग़य्युर

2 ......फ़तावा रज़विय्या, 29/413

जवाब: ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत से मुराद येह है कि इन का मज़हबे अहले सुन्नत से होना सब अ़वाम व ख़वासे अहले सुन्नत को मा'लूम हो। जैसे अ़ज़ाबे क़ब्र, आ'माल का वज़्न वग़ैरा।[1]

सुवाल: ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत के मुन्किर का हुक्म क्या है ?

जवाब: ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत का मुन्किर बद मज़हब गुमराह होता है।[2]

शिर्क

सुवाल: शिर्क के क्या मा'ना हैं ?

जवाब: शिर्क का मा'ना है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को वाजिबुल वुजूद या मुस्तहिक़े इबादत (किसी को इबादत के लाइक़) जानना या'नी उलूहिय्यत (शाने ख़ुदावन्दी) में दूसरे को शरीक करना और येह कुफ़्र की सब से बद तरीन क़िस्म है। इस के सिवा कोई बात कैसी ही शदीद कुफ़्र हो हक़ीक़तन शिर्क नहीं।[3]

वाजिबुल वुजूद

सुवाल: वाजिबुल वुजूद से क्या मुराद है ?

जवाब: वाजिबुल वुजूद ऐसी ज़ात को कहते हैं जिस का वुजूद (या'नी "होना") ज़रूरी और अ़दम मुहाल (या'नी न होना ग़ैर मुमकिन) है या'नी (वोह ज़ात) हमेशा से है और हमेशा रहेगी, जिस को कभी फ़ना नहीं, किसी ने उस को पैदा नहीं किया बल्कि उसी ने सब को पैदा किया है। जो ख़ुद अपने आप से मौजूद है और येह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात है।[4]

---

[1]......نزھۃُ القاری شرح صحیح البخاری، کتاب الایمان، ۱/۲۳۹

[2]...... फ़तावा रज़विय्या, 29/414

[3]......बहारे शरीअ़त, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/183 बित्तग़य्युर

[4]...... हमारा इस्लाम, बाब अव्वल, हिस्सा सिवुम, स. 95

निफ़ाक़

सुवाल निफ़ाक़ की क्या ता'रीफ़ है ?

जवाब ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना निफ़ाक़ है। येह भी ख़ालिस कुफ़्र है बल्कि ऐसे लोगों के लिये जहन्नम का सब से निचला त़बक़ा है । सरवरे काएनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात के ज़माने में इस सिफ़त के कुछ अफ़राद बत़ौरे मुनाफ़िक़ीन मश्हूर हुवे, इन के बात़िनी कुफ़्र को क़ुरआने मजीद में बयान किया गया है। नीज़ सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बअ़त़ाए इलाही अपने वसीअ़ इल्म से एक एक को पहचाना और नाम बनाम फ़रमा दिया कि येह येह मुनाफ़िक़ हैं । अब इस ज़माने में किसी मख़्सूस शख़्स की निस्बत यक़ीन से कहना कि वोह मुनाफ़िक़ है मुमकिन नहीं कि हमारे सामने जो इस्लाम का दा'वा करे हम उसे मुसलमान ही समझेंगे जब तक कि ईमान के मुनाफ़ी (या'नी ईमान के उलट) कोई क़ौल (बात) या फ़े'ल (काम) उस से सरज़द न हो । अलबत्ता निफ़ाक़ या'नी मुनाफ़क़त की एक शाख़ इस ज़माने में भी पाई जाती है कि बहुत से बद मज़्हब अपने आप को मुसलमान कहते हैं और देखा जाए तो इस्लाम के दा'वे के साथ साथ बहुत से ज़रूरियाते दीन का इन्कार भी करते हैं ।[1]

मुर्तद

सुवाल मुर्तद किसे कहते हैं ?

जवाब मुर्तद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो ज़रूरियाते दीन से हो । या'नी ज़बान से कलिमए कुफ़्र बके जिस में तावीले सह़ीह़ की गुन्जाइश न हो । यूंहीं बा'ज़ अफ़्आ़ल (काम) भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है मसलन बुत को सजदा करना, मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) को नजासत की जगह फेंक देना ।[2]

---

[1]...... बहारे शरीअ़त, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/ 182 मुलख़्ख़सन

[2]...... बहारे शरीअ़त, मुर्तद का बयान, 2/455

तौहीदे बारी तआ़ला

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हस्ती का यक़ीन हर शख़्स की फ़ित्रत में शामिल है, ख़ास त़ौर पर मुसीबत, बीमारी और मौत के वक़्त अकसर येह देखा गया है कि बड़े बड़े मुन्किरीन की ज़बानों पर भी बेसाख़्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम आ ही जाता है। आइये जानते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुतअ़ल्लिक़ हमारे अ़क़ाइद क्या हैं :

सुवाल "हर शै का ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है" क्या येह दुरुस्त है ?

जवाब जी हां ! येह दुरुस्त है कि हर शै का ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है क्यूंकि जिस इन्सान में थोड़ी सी भी अ़क़्ल हो दुन्या की चीज़ों को देख कर येह यक़ीन कर लेगा कि बेशक येह आस्मान, येह सितारे और सय्यारे, इन्सान व ह़ैवान और तमाम मख़्लूक़ किसी न किसी के पैदा करने से पैदा हुवे हैं। आख़िर कोई हस्ती तो है जिस ने इन सब को पैदा किया क्यूंकि जब हम किसी कुरसी या दरवाज़े और खिड़कियों वग़ैरा को देखते हैं तो फ़ौरन समझ जाते हैं कि इन को किसी न किसी कारीगर ने बनाया है अगर्चे हम ने अपनी आंख से उसे बनाते हुवे न देखा लेकिन हमारी अ़क़्ल ने हमारी रहनुमाई की और हम ने इस बात का यक़ीन कर लिया कि इन चीज़ों का कोई बनाने वाला है। किसी ने क्या ख़ूब सूरत बात कही है कि जब क़दमों के निशानात से पता चल जाता है कि येह किस के हैं तो फिर आस्मान व ज़मीन को देख कर येह यक़ीन क्यूं नहीं होता कि इन का भी कोई बनाने वाला है।

तौहीदे बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अ़क़ाइद और इन की वज़ाहत

तौहीद से मुराद

सुवाल तौहीद से क्या मुराद है ?

जवाब तौहीद से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत को मानना है या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है और कोई भी उस का शरीक नहीं, न ज़ात में न सिफ़ात में, न अस्मा (नामों) में, न अफ़्आ़ल (कामों) में और न ही अह़काम में ।

सुवाल अगर कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात, अस्मा व अफ़्आ़ल और अह़काम में से किसी एक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक माने तो उसे क्या कहते हैं ?

जवाब अगर कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात, अस्मा व अफ़्आ़ल और अह़काम में से किसी एक में भी किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक माने तो उसे मुशरिक व काफ़िर कहते हैं ।

كتاب العقائد

ज़ात में शिर्क से मुराद

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में शिर्क से क्या मुराद है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में शिर्क से मुराद येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को भी ख़ुदा माना जाए, ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है और उस का कोई शरीक नहीं, इस लिये कि अगर कोई और ख़ुदा भी होता तो येह निज़ामे ज़िन्दगी बरबाद हो जाता । जैसा कि क़ुरआने मजीद में है :

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ

(پ۱۷، الانبیآء:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर आस्मानो ज़मीन में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वोह तबाह हो जाते ।

सिफ़ात में शिर्क से मुराद

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात में शिर्क से क्या मुराद है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किसी सिफ़त में किसी मख़्लूक़ को शरीक करना या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात की त़रह़ किसी और में वोही सिफ़ात मानना शिर्क है। जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमेशा से है इसी त़रह़ किसी और के लिये येह अ़क़ीदा रखना कि वोह अल्लाह तआ़ला की त़रह़ हमेशा से है। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़ाती तौर पर सुनने वाला है किसी और के लिये ज़ाती तौर पर सुनने का अ़क़ीदा रखना सिफ़ात में शिर्क है। याद रखिये ! कुरआने मजीद और अह़ादीसे मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बा'ज़ सिफ़ात अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام नीज़ आ़म बन्दों के लिये भी ज़िक्र की गई हैं जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी दो सिफ़ात ज़िक्र फ़रमाता है : اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ (پ۱۴،النحل:۷) दूसरे मक़ाम पर अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये येही सिफ़ात ज़िक्र फ़रमाईं : رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ (پ۱۱،التوبة:۱۲۸) येह हरगिज़ हरगिज़ शिर्क नहीं, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात ज़ाती, ला मह़दूद और क़दीम या'नी किसी की पैदा कर्दा नहीं बल्कि हमेशा से हैं और हमेशा रहेंगी जब कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ात अ़त़ाई या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा, मह़दूद और ह़ादिस (या'नी अल्लाह की पैदा कर्दा) हैं। एक और मक़ाम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी सिफ़ात ज़िक्र फ़रमाता है : اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ (پ۱۵،بنی اسرائیل:۱) येही दो सिफ़ात बन्दों के लिये यूं ज़िक्र फ़रमाईं : فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ۝ (پ۲۹،الدھر:۲) येह भी यक़ीनन सिफ़ात में शिर्क नहीं क्यूंकि बन्दों की सिफ़ात अ़त़ाई, मह़दूद और ह़ादिस हैं। इस फ़र्क़ के होते हुवे शिर्क लाज़िम नहीं आता।

अस्मा में शिर्क से मुराद

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अस्मा या'नी नामों में शिर्क से क्या मुराद है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अस्मा या'नी नामों में किसी मख़्लूक़ को शरीक करना अस्मा में शिर्क है। जैसे किसी और को अल्लाह कहना। आयते मुबारका هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۝ (پ۱۶،مریم:۶۵) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उस के नाम का दूसरा जानते हो। के तह़्त ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : या'नी किसी को उस के साथ इस्मी शिर्कत भी नहीं और उस की वह़दानिय्यत इतनी ज़ाहिर है कि मुशरिकीन ने भी अपने किसी मा'बूदे बात़िल का नाम अल्लाह नहीं रखा।

अफ़्आल में शिर्क से मुराद

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आल या'नी कामों में शिर्क से क्या मुराद है ?

जवाब जो अफ़्आल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास हैं उन में किसी और को शरीक ठहराना "अफ़्आल में शिर्क" कहलाता है। जैसे नबुव्वत व रिसालत अ़ता फ़रमाना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़े'ल है चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَللّٰهُ يَصْطَفِىْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۷۵﴾ (پ۱۷، الحج:۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह चुन लेता है फ़िरिश्तों में से रसूल और आदमियों में से बेशक अल्लाह सुनता देखता है।

इस लिये किसी और को नबुव्वत अ़ता करने वाला मानना अफ़्आल में शिर्क है।

अह़काम में शिर्क से मुराद

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम में शिर्क से क्या मुराद है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम में किसी दूसरे को शरीक जानना या ग़ैरुल्लाह के हुक्म को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के बराबर क़रार देना "अह़काम में शिर्क" कहलाता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : (پ۱۲، يوسف:۴۰) اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हुक्म नहीं मगर अल्लाह का। दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया : (پ۱۵، الكهف:۲۶) وَّلَا يُشْرِكُ فِىْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। याद रखिये ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का किसी चीज़ को ह़लाल या ह़राम क़रार देना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से है इस लिये येह अह़काम में शिर्क नहीं है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ (پ۱۰، التوبة:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लड़ो उन से जो ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और क़ियामत पर और ह़राम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को ह़राम किया अल्लाह और उस के रसूल ने। फ़रमाने मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) है : اَلَا وَاِنَّ مَا حَرَّمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلُ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ या'नी ख़बरदार ! जिस चीज़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल ह़राम कर दे वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ह़राम कर्दा की त़रह़ ह़राम है।[1]

[1] ......ابن ماجه، كتاب السنة، باب تعظيم حديث رسول الله...الخ، ۱/۱۵، حديث ۱۲

नबुव्वत व रिसालत

जिस इन्सान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ की हिदायत के लिये भेजा हो उसे नबी कहते हैं और उन नबियों में से जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से कोई नई आस्मानी किताब और नई शरीअ़त ले कर आए वोह "रसूल" कहलाते हैं।(1) नबी सब मर्द थे, न कोई जिन्न नबी हुवा, न कोई औ़रत।(2) सब से पहले पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं और सब से आख़िरी पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और बाक़ी तमाम नबी व रसूल इन दोनों के दरमियान हुवे।
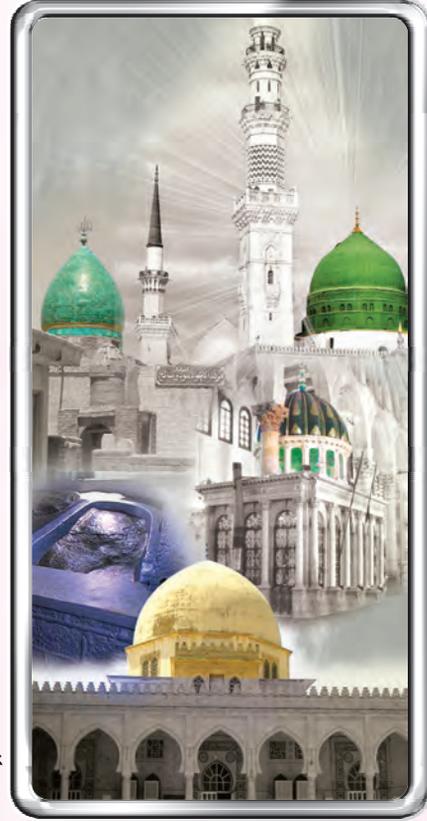
सुवाल कुरआने करीम में कितने नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं ?

जवाब कुरआने करीम में 26 नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं।

सुवाल क्या आप बता सकते हैं कि किस नबी या रसूल का नाम कुरआने करीम में कितनी बार आया है ?

जवाब कुरआने मजीद में जिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नाम जितनी बार आए हैं वोह येह हैं :

(1).....ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 25 बार आया है।

(2).....ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 43 बार आया है।

---

(1)......شرح العقائد النسفیہ، النوع الثانی خبر الرسول......الخ، ص ۸۱، و...... जन्नती ज़ेवर, स. 172

(2)......تفسیر قرطبی، یوسف، تحت الآیۃ: ۱۰۹، الجزء التاسع، ۱۹۳/۵

इन दोनों अम्बियाए किराम का तज़किरा पारह 3 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 33 में कुछ यूं है : اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 69 बार आया है।

﴾4﴿.....हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 12 बार आया है।

﴾5﴿.....हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 17 बार आया है।

﴾6﴿.....हज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 16 बार आया है।

इन चार जलीलुल क़द्र अम्बियाए किराम का तज़किरा पारह 1 सूरए बक़रह की आयत नम्बर 140 में कुछ यूं है :

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ

﴾7﴿.....हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 27 बार आया है। चुनान्चे, पारह 12 सूरए यूसुफ़ की आयत नम्बर 4 में है :

اِذْ قَالَ یُوْسُفُ لِاَبِیْهِ یٰۤاَبَتِ اِنِّیْ رَاَیْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 16 बार आया है। चुनान्चे, पारह 2 सूरए बक़रह की आयत नम्बर 251 में है :

وَ قَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ

﴾9﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 17 बार आया है। चुनान्चे, पारह 1 सूरए बक़रह की आयत नम्बर 102 में है :

وَ اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّیٰطِیْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَیْمٰنَ ۚ

﴾10﴿.....हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 4 बार आया है। चुनान्चे, पारह 17 सूरए अम्बिया की आयत नम्बर 83 में है :

وَ اَیُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ

﴾11﴿.....हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 136 बार आया है।

﴾12﴿.....हज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 20 बार आया है।

इन दोनों नबियों का तज़्किरा पारह 9 सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 122 में कुछ यूं है :

رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 7 बार आया है ।

﴿14﴾.....हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 5 बार आया है ।

इन दोनों नबियों का तज़्किरा पारह 16 सूरए मरयम की आयत नम्बर 7 में कुछ यूं है :

يٰزَكَرِيَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ﹰاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 25 बार आया है । चुनान्चे, पारह 3 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 59 में है :

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ

﴿16﴾.....हज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 3 बार आया है । चुनान्चे, पारह 23 सूरए साफ़्फ़ात की आयत नम्बर 123 में है :

وَ اِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ؕ

﴿17﴾.....हज़रते सय्यिदुना युसअ़ عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 2 बार आया है ।

﴿18﴾.....हज़रते सय्यिदुना ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक भी कुरआने मजीद में 2 बार आया है । चुनान्चे, पारह 23 सूरए ص की आयत नम्बर 48 में इन दो नबियों का ज़िक्र कुछ यूं है :

وَ اذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ

﴿19﴾.....हज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 4 बार आया है । चुनान्चे, पारह 23 सूरए साफ़्फ़ात की आयत नम्बर 139 में है :

وَ اِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ؕ

﴿20﴾.....हज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 27 बार आया है । चुनान्चे, पारह 23 सूरए साफ़्फ़ात की आयत नम्बर 133 में है :

وَ اِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ؕ

﴿21﴾.....हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 2 बार

आया है। चुनान्चे, पारह 16 सूरए मरयम की आयत नम्बर 56 में है :

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝۵۶

﴿22﴾....हज़रते सय्यिदुना सालेह عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 9 बार आया है। चुनान्चे, पारह 8 सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 73 में है :

وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ

﴿23﴾....हज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 7 बार आया है। चुनान्चे, पारह 12 सूरए हूद की आयत नम्बर 58 में है :

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا

﴿24﴾....हज़रते सय्यिदुना शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में 11 बार आया है। चुनान्चे, पारह 8 सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 85 में है :

وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ

﴿25﴾....हज़रते सय्यिदुना उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का नामे मुबारक कुरआने मजीद में एक बार आया है। चुनान्चे, पारह 10 सूरए तौबा की आयत नम्बर 30 में है :

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ﹰ ابْنُ اللّٰهِ

﴿26﴾....हमारे प्यारे नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक ''मुहम्मद'' कुरआने मजीद में 4 बार आया है। चुनान्चे, पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 144 में है : وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ और पारह 28 सूरए सफ़ की छटी आयते मुबारका में اَحْمَدُ एक बार आया है।

मक़्सदे रिसालत

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैग़म्बरों और रसूलों को दुन्या में क्यूं भेजा ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैग़म्बरों और रसूलों को दुन्या में भेजा ताकि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अहकाम उस की मख़्लूक़ तक पहुंचाएं और बन्दे इन पर अ़मल कर के हिदायत व नजात की राह पाएं।[1]

[1] ......شرح العقائد النسفية، النوع الثانى خبر الرسول......الخ، ص ۸۱

तब्लीगे़ रिसालत

सुवाल तब्लीग़ से क्या मुराद है ?

जवाब तब्लीग़ से मुराद है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम को लोगों तक पहुंचाना ।

सुवाल क्या पैग़म्बरों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम अह़काम लोगों तक पहुंचा दिये हैं ?

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैग़म्बरों पर शरीअ़त के जितने अह़काम तब्लीग़ के लिये नाज़िल फ़रमाए इन पैग़म्बरों ने उन तमाम अह़काम को ख़ुदा के बन्दों तक पहुंचा दिया है ।(1)

सुवाल अगर कोई येह कहे कि किसी नबी या रसूल ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम अह़काम लोगों तक नहीं पहुंचाए तो उसे क्या कहेंगे ?

जवाब जो येह कहे कि किसी नबी या रसूल ने किसी हुक्म को किसी भी वजह से छुपा लिया और लोगों तक नहीं पहुंचाया वोह काफ़िर है ।(2)

दलीले रिसालत

सुवाल क्या रसूलों के पास अपनी रिसालत की कोई दलील होती है ?

जवाब जी हां ! रसूलों के पास अपनी रिसालत की दलील होती है और उसे मो 'जिज़ा कहते हैं ।

सुवाल मो 'जिज़ा क्या होता है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने पैग़म्बरों की सच्चाई ज़ाहिर करने के लिये इन के हाथों पर ऐसी ऐसी ह़ैरत और तअ़ज्जुब में डालने वाली चीज़ें ज़ाहिर फ़रमाईं जो बहुत ही मुश्किल और आ़दत के ख़िलाफ़ हैं और दूसरे लोग ऐसा नहीं कर सकते । इन चीज़ों को ''मो 'जिज़ा'' कहते हैं ।(3)

---

١ ...... اليواقيت والجواهر، المبحث الثانی والثلاثون فی ثبوت رسالة نبينا محمد صلى الله عليه وسلم، ص ٢٥٢

٢ ...... المعتقد المنتقد مع شرحه المعتمد المستند، الباب الثانی فی النبوات، منه تبليغ جميع ما امروا بتبليغه، ص ١١٤

٣ ...... شرح العقائد النسفية، والنوع الثانی خبر الرسول المؤيد بالمعجزة، ص ١٧، مبحث النبواة، ص ١٣٥

सुवाल क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात का तज़्किरा कुरआने मजीद में भी है ?

जवाब जी हां ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बहुत से मो'जिज़ात का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी है : मिसाल के तौर पर चन्द मो'जिज़ात येह हैं :

1.... हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के असा का अज़्दहा बन जाना । चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआला है :

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾
(پ٩، الاعراف:١٠٧)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो मूसा ने अपना असा डाल दिया वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा हो गया ।

2..... हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का बीमारों को तन्दुरुस्त और मुर्दों को ज़िन्दा करना । चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआला है :

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ
(پ٣، اٰل عمران:٤٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं अल्लाह के हुक्म से ।

3..... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चांद को दो टुकड़े करना । चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआला है :

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾
(پ٢٧، القمر:١)

तर्जमए कन्जुल ईमान : पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद ।

ता'दादे अम्बिया व रुसुल

सुवाल नबियों और रसूलों की ता'दाद के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अक़ीदा क्या है ?

जवाब नबियों और रसूलों की कोई ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं क्यूंकि इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें आई हैं और नबियों की किसी ख़ास ता'दाद पर ईमान लाने में येह एह्तिमाल है कि किसी नबी की नबुव्वत का

इन्कार हो जाए या ग़ैरे नबी को नबी मान लिया जाए और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं ।[1] इस लिये येह ए'तिक़ाद रखना चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर नबी पर हमारा ईमान है । क्यूंकि मुसलमान के लिये जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लाना ज़रूरी है । इसी त़रह़ हर नबी की नबुव्वत पर भी ईमान लाना ज़रूरी है ।

(नबियों का गुनाहों और ऐ़बों से पाक होना)

सुवाल : क्या किसी नबी और रसूल से कोई गुनाह मुमकिन है ?

जवाब : नबी और रसूल से कोई गुनाह मुमकिन नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन ह़ज़रात को गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखने का वा'दा फ़रमाया है । इस सबब से इन ह़ज़रात का गुनाह में मुब्तला होना शरअ़न मुह़ाल (नामुमकिन) है ।[2]

सुवाल : क्या नबियों और रसूलों के इलावा भी कोई गुनाहों से मह़फ़ूज़ है ?

जवाब : जी हां ! नबियों और रसूलों के इलावा फ़िरिश्ते भी गुनाहों से मह़फ़ूज़ होते हैं । किसी नबी और फ़िरिश्ते के सिवा कोई मा'सूम नहीं ।[3]

सुवाल : बा'ज़ लोग वलियों और इमामों को भी मा'सूम समझते हैं, क्या येह दुरुस्त है ?

जवाब : जी नहीं ऐसा समझना दुरुस्त नहीं बल्कि वलियों और इमामों को नबियों की त़रह़ मा'सूम समझना बद दीनी व गुमराही है ।[4]

---

[1]……شرح العقائد النسفية، مبحث اول الانبياء آدم عليه السلام، ص ٣٠٢
व बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/52 मौज़िह़ा

[2]……बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/38

[3]……النبراس، مبحث الملائكة عليهم السلام، ص ٢٨٧

[4]……बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/38

फ़ज़ीलते अम्बिया व रुसुल

सुवाल क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हैं ?

जवाब जी हां ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम मख़्लूक़ यहां तक कि तमाम फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हैं ।(1)

सुवाल क्या कोई वली मर्तबे में किसी नबी के बराबर हो सकता है ?

जवाब जी नहीं ! वली चाहे कितने ही बड़े मर्तबे वाला हो हरगिज़ हरगिज़ किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता । बल्कि जो किसी ग़ैरे नबी को किसी नबी से अफ़्ज़ल या बराबर बताए वोह काफ़िर है ।(2)

सुवाल क्या सब नबी मर्तबे के लिहाज़ से आपस में बराबर हैं ?

जवाब जी नहीं ! सब नबियों के दरजे मुख़्तलिफ़ हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है । जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है : تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ (پ۳،البقرۃ:۲۵۳) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह रसूल हैं कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया ।

सुवाल मर्तबे के लिहाज़ से सब से अफ़्ज़ल पांच नबियों के नामे मुबारक बताइये ?

जवाब सब से अफ़्ज़ल व आ'ला हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं । फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़ा मर्तबा हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का है फिर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का, फिर हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام का दर्जा है । इन पांचों हज़रात को "मुर्सलीने ऊलूल अज़्म" कहते हैं । येह पांचों बाक़ी तमाम नबियों और रसूलों से अफ़्ज़ल हैं ।(3)

1……बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/47

۲……المرجع السابق

3……बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/52

ह़याते अम्बिया व रुसुल

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा क्या है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा येह है कि वोह अपनी अपनी क़ब्रों में उसी त़रह़ बह़याते ह़क़ीक़ी ज़िन्दा हैं जैसे दुन्या में थे, खाते पीते हैं और जहां चाहें आते जाते हैं ।[1]

सुवाल क्या ह़यात का अ़क़ीदा कुरआन से साबित है ?

जवाब जी हां ! ह़यात का अ़क़ीदा कुरआन से साबित है । चुनान्चे,

1.....पारह 2, सूरए बक़रह की आयत नम्बर 154 में है :

وَلَا تَقُوۡلُوۡا لِمَنۡ يُّقۡتَلُ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتٌ ؕ بَلۡ اَحۡيَآءٌ وَّلٰكِنۡ لَّا تَشۡعُرُوۡنَ ﴿۱۵۴﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें ख़बर नहीं ।

2.....पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 169 में है :

وَلَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ قُتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتًا ؕ بَلۡ اَحۡيَآءٌ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ يُرۡزَقُوۡنَ ۙ﴿۱۶۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं ।

3.....पारह 14, सूरए नह़्ल की आयत नम्बर 97 में है :

مَنۡ عَمِلَ صَالِحًا مِّنۡ ذَكَرٍ اَوۡ اُنۡثٰى وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَلَنُحۡيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो अच्छा काम करे मर्द हो या औ़रत और हो मुसलमान तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे ।

सुवाल कुरआने करीम में तो सिर्फ़ बा'ज़ मोअमिनीन व मोअमिनात और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ह़यात साबित है, अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़यात कैसे साबित होगी ?

---

[1].....बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/58

जवाब पारह 5, सूरए निसा की आयत नम्बर 69 में है :

وَ مَنۡ یُّطِعِ اللّٰہَ وَ الرَّسُوۡلَ فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰہُ عَلَیۡہِمۡ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَ الصِّدِّیۡقِیۡنَ وَ الشُّہَدَآءِ وَ الصّٰلِحِیۡنَ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग।

इस आयते मुबारका में जिन चार गुरौहों का तज़्किरा है इन में शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का ज़िक्र तीसरे नम्बर पर और आ़म नेक लोगों का ज़िक्र चौथे नम्बर पर है, जब इन्आ़म शुदा लोगों में तीसरे नम्बर वालों की ह़यात कुरआने करीम से साबित है तो दूसरे नम्बर पर मौजूद सिद्दीक़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن और पहले नम्बर पर मौजूद अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़यात बदरजए औला साबित होगी।[1]

सुवाल क्या ह़यात का अ़क़ीदा ह़दीस से भी साबित है ?

जवाब जी हां ! ह़यात का अ़क़ीदा ह़दीस से भी साबित है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो फ़रामैने मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

1 ...... : اَلْاَنْبِیَآءُ اَحْیَآءٌ فِیْ قُبُوْرِهِمْ یُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।[2]

2 ...... : اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰهِ حَیٌّ یُّرْزَقُ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर ह़राम ठहरा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाए, पस अल्लाह का (हर) नबी ज़िन्दा है और रिज़्क़ दिया जाता है।[3]

---

[1]...... मक़ामे रसूल, स. 497 मुलख़्ख़सन

[2]...... مسند ابی یعلی، ۳/۲۱۶، حدیث: ۳۴۱۲

[3]...... ابن ماجه، کتاب الجنائز، ذکر وفاته ودفنه، ۲/۲۹۱، حدیث: ۱۶۳۷

सुवाल क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मौत का ज़ाइक़ा चखा है ?

जवाब जी हां ! तस्दीक़े वा'दए इलाहिय्या के लिये एक आन को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मौत त़ारी हुई, फिर वोह बदस्तूर ज़िन्दा हो गए ।[1] चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क्या ख़ूब इस की मन्ज़र कशी की है :

अम्बिया को भी अजल आनी है	मगर ऐसी की फ़क़त़ आनी है
फिर इसी आन के बा'द उन की ह़यात	मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़यात में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़यात में फ़र्क़ येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जो ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाई है वोह शहीदों की ज़िन्दगी से कहीं बढ़ कर अरफ़अ़ व आ'ला है ।[2] येही वजह है कि शहीदों का तर्का तक़्सीम कर दिया जाता है और उन की बीवियां इ़द्दत के बा'द दूसरों से निकाह़ कर सकती हैं । मगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का न तर्का तक़्सीम होता है और न ही उन की बीवियां इ़द्दत के बा'द दूसरों से निकाह़ कर सकती हैं ।[3]

सुवाल क्या कोई नबी अब भी ह़याते ज़ाहिरी के साथ ज़िन्दा है ?

जवाब चार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़याते ज़ाहिरी के साथ ज़िन्दा हैं । इन में से दो या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानों पर हैं और दो या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام ज़मीन पर हैं ।[4]

---

[1]...... बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/58

[۲]......حاشية الصاوی علی تفسیر الجلالین، پ۳، آل عمران: ۱۶۹، ۱/۳۳۳، وآیت: ۱۸۵، ۱/۳۴۰

[3]...... बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/58

[4]...... हमारा इस्लाम, ह़िस्सा सिवुम, स. 103

इल्मे अम्बिया व रुसूल

सुवाल : क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ग़ैब की बातें भी जानते हैं।

जवाब : जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबियों को बहुत सी ग़ैब की बातों का इल्म अ़ता फ़रमाया है। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ (پ۴، ال عمرٰن:۱۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे। और बिल खुसूस सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्म के मुतअ़ल्लिक़ यूं इरशाद फ़रमाया : (پ۱۵، لنسآء:۱۱۳) وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे।

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इल्मे ग़ैब और नबियों रसूलों के इल्मे ग़ैब में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इल्म और उस का हर कमाल ज़ाती है, किसी का दिया हुवा नहीं। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ (پ۱۱، یونس:۲۰) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ग़ैब तो अल्लाह के लिये है। जब कि नबियों और रसूलों का इल्मे ग़ैब अ़ताई है या'नी उन्हें येह इल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़ता फ़रमाया है।

सुवाल : अगर कोई शख़्स ग़ैरे ख़ुदा के मुतअ़ल्लिक़ येह अ़क़ीदा रखे कि उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता के बिग़ैर इल्मे ग़ैब ह़ासिल है तो उसे क्या कहेंगे ?

जवाब : ऐसा अ़क़ीदा रखना सरीह़ कुफ़्र है। इस लिये कि हमारा अ़क़ीदा है कि जिस को भी इल्मे ग़ैब मिला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से मिला। चुनान्चे, बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 10 पर है : कोई शख़्स ग़ैरे ख़ुदा के लिये ज़ाती (या'नी बिग़ैर अल्लाह के दिये) इल्मे ग़ैब माने वोह काफ़िर है।

सुवाल : जो लोग नबियों और रसूलों बिल खुसूस सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब को बिल्कुल नहीं मानते उन्हें क्या कहेंगे ?

जवाब जो लोग नबियों और रसूलों बिल ख़ुसूस सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब को बिल्कुल नहीं मानते, काफ़िर हैं क्यूंकि आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की 29 वीं जिल्द के सफ़हा 414 पर मुत़लक़न इल्मे ग़ैब के इन्कार को ज़रूरियाते दीन का इन्कार क़रार दिया है और जो शख़्स ज़रूरियाते दीन का मुन्किर हो काफ़िर होता है। मज़ीद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इल्मे ग़ैब तो माने लेकिन ग़ुयूबे ख़म्सा को न माने तो वोह बद मज़हब व गुमराह है क्यूंकि ग़ुयूबे ख़म्सा पर ईमान ज़रूरियाते अहले सुन्नत से है और ज़रूरियाते अहले सुन्नत का मुन्किर बद मज़हब व गुमराह होता है।

सूरए बक़रह के फ़ज़ाइल

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में सूरए बक़रह के तह़त ह़ाशिया नम्बर 1 में फ़रमाते हैं : इस सूरत में 286 आयतें, 40 रुकूअ़, 6121 कलिमे, पच्चीस हज़ार पांच सो ह़ुर्फ़ हैं। (ख़ाज़िन) पहले कुरआने पाक में सूरतों के नाम न लिखे जाते थे, येह त़रीक़ा ह़ज्जाज ने निकाला। इब्ने अ़रबी का क़ौल है कि सूरए बक़रह में हज़ार अम्र, हज़ार नह्य, हज़ार हुक्म, हज़ार ख़बरें हैं। इस के अख़ज़ में बरकत, तर्क में ह़सरत है, अहले बात़िल जादूगर इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते, जिस घर में येह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैत़ान उस में दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि शैत़ान उस घर से भागता है जिस में येह सूरत पढ़ी जाए। (जमल) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने ह़ज़रते मुग़ीरा से रिवायत की, कि जो शख़्स सोते वक़्त सूरए बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा कुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वोह आयतें येह हैं : चार आयतें अव्वल की और आयतुल कुरसी और दो इस के बा'द की और तीन आख़िर सूरत की। मस्अला : त़बरानी व बैहक़ी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मय्यित को दफ़्न कर के क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़रह के अव्वल की (पांच) आयतें और पाउं की त़रफ़ आख़िर की (दो) आयतें पढ़ो।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 1, अल बक़रह)

कुतुबे रिसालत

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कितने सहीफ़े[1] और आस्मानी किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबियों पर जो सहीफ़े और आस्मानी किताबें नाज़िल फ़रमाई उन की यक़ीनी ता'दाद बयान करना मुमकिन नहीं, अलबत्ता ! एक रिवायत के मुताबिक़ उन की ता'दाद तक़रीबन 100 है।[2]

सुवाल क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन सहीफ़ों और आस्मानी किताबों का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी फ़रमाया है?

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन सहीफ़ों और आस्मानी किताबों का ज़िक्र कुरआने मजीद में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर फ़रमाया है। चुनान्चे,

📖........ कुछ सहीफ़े ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाए और इन का तज़्किरा कुछ यूं फ़रमाया :

اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰىۙ﴿۱۸﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى۠﴿۱۹﴾ (پ۳۰،الاعلی:۱۸، ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक येह अगले सहीफ़ों में है, इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।

📖........ तौरैत ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाई और इस का ज़िक्र कुछ यूं फ़रमाया :

---

[1]......मख़्लूक़ की हिदायत के लिये अल्लाह तआ़ला की उतारी हुई छोटी छोटी किताबें या वरक़ जो कुरआन शरीफ़ से पहले उतारे गए, उन्हें सहीफ़े कहते हैं, उन सहीफ़ों में अच्छी अच्छी मुफ़ीद नसीह़तें और कार आमद बातें होती थीं। (हमारा इस्लाम, स. 49)

[۲]......النبراس، بیان الکتب المنزلۃ، ص ۲۹۰

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ (پ ۱، البقرۃ:۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता की ।

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में है कि इस किताब से तौरैत मुराद है ।

📖...... ज़बूर हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाई और इस का ज़िक्र कुछ यूं फ़रमाया :

وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾ (پ ۱۵، بنی اسرآئیل:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी और दावूद को ज़बूर अ़ता फ़रमाई ।

📖...... इन्जील हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाई और इस का ज़िक्र कुछ यूं फ़रमाया :

وَقَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ (پ ٦، المائدۃ:٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम उन नबियों के पीछे उन के निशाने क़दम पर ईसा बिन मरयम को लाए तस्दीक़ करता हुवा तौरैत की जो इस से पहले थी और हम ने उसे इन्जील अ़ता की जिस में हिदायत और नूर है ।

📖...... क़ुरआने मजीद जो सब से अफ़्ज़ल किताब है वोह सब से अफ़्ज़ल रसूल हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाई और इस का ज़िक्र कुछ यूं फ़रमाया :

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿۲۳﴾ (پ ۲۹، الدھر:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम पर क़ुरआन ब तदरीज उतारा ।

सुवाल : चार मश्हूर आस्मानी किताबें किन ज़बानों में नाज़िल हुईं ?

जवाब : इन चारों में से तौरात और ज़बूर इब्रानी ज़बान में, इन्जील सुरयानी ज़बान में और क़ुरआने करीम अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुवा ।[1]

[1]...... हमारा इस्लाम, स. 99

सुवाल अगर कोई इन सहीफ़ों या किताबों में से किसी एक को न माने तो उस पर क्या हुक्म नाफ़िज़ होगा ?

जवाब अगर कोई इन सहीफ़ों या किताबों में से किसी एक को न माने तो उस पर कुफ़्र का हुक्म नाफ़िज़ होगा क्यूंकि किसी भी आस्मानी किताब या सहीफ़े का इन्कार करना कुफ़्र है।[1]

सुवाल क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जितने सहीफ़े और किताबें नाज़िल फ़रमाईं, सब पर ईमान लाना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जितने सहीफ़े और किताबें नाज़िल फ़रमाईं सब हक़ हैं और सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम हैं, इन किताबों में जो कुछ इरशादे ख़ुदावन्दी हुवा सब पर ईमान लाना और इन को सच मानना ज़रूरी है।[2]

सुवाल क्या हम पर तमाम आस्मानी किताबों और सहीफ़ों में नाज़िल कर्दा अह़कामात पर अ़मल करना लाज़िम है ?

जवाब जी नहीं ! हम पर तमाम आस्मानी किताबों और सहीफ़ों में नाज़िल कर्दा अह़कामात पर अ़मल करना लाज़िम नहीं बल्कि हम पर सिर्फ़ कुरआने करीम के अह़कामात पर अ़मल करना फ़र्ज़ है।

सुवाल क्या कुरआने मजीद में कमी बेशी मुमकिन है ?

जवाब जी नहीं ! कुरआने मजीद में कमी बेशी मुमकिन नहीं। इस्लाम चूंकि हमेशा रहने वाला दीन है। लिहाज़ा कुरआने मजीद की ह़िफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मे रखी है, इस लिये कुरआने मजीद में कोई कमी बेशी कर दे ऐसा कभी नहीं हो सकता।[3] चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ ﴿۹﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम ख़ुद इस के निगहबान हैं।

(پ ۱۴، الحجر: ۹)

सुवाल अगर कोई कुरआने मजीद में किसी क़िस्म की कमी बेशी का क़ाइल हो तो उसे क्या कहेंगे ?

---

[1]...... الشفاء، فصل واعلم ان من استخف بالقران......الخ، الجزء الثانی، ص ۲۶۴

[2]......बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/30 बित्तग़य्युर

[3]......बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/30 बित्तग़य्युर

जवाब अगर कोई कुरआने मजीद में किसी क़िस्म की कमी बेशी का क़ाइल हो तो उसे काफ़िर कहेंगे ।[1] क्यूंकि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

لَا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ لَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ حَمِیْدٍ ﴿۴۲﴾ (پ ۲۴، حم السجدة: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बातिल को उस की तरफ़ राह नहीं न उस के आगे से न उस के पीछे से उतारा हुवा है हिक्मत वाले सब ख़ूबियों सराहे का ।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी किसी तरह और किसी जिहत (सम्त, तरफ़) से भी बातिल उस तक राह नहीं पा सकता, वोह तग़य्युर व तब्दील व कमी व ज़ियादती से महफ़ूज़ है, शैतान उस में तसर्रुफ़ (या'नी अपनी तरफ़ से कुछ शामिल करने या बना देने) की कुदरत नहीं रखता ।

सुवाल कुरआने मजीद में कुल कितने पारे और सूरतें हैं ?

जवाब कुरआने मजीद में कुल 30 पारे और 114 सूरतें हैं ।

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से पहले नाज़िल हुई ?

जवाब सब से पहले सूरए अ़लक़ की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ (پ ۳۰، العلق: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया ।[2]

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ?

जवाब सब से आख़िर में सूरए बक़रह की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

وَ اتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ

فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ۠﴿۲۸۱﴾

---

[1] ······الشفاء، فصل واعلم ان من استخف بالقرآن······الخ، الجزء الثانی، ص ۲۶۴ ماخوذاً

[2] ······الاتقان، باب معرفة المكی والمدنی، ۱/۱۴

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा ।[1]

सुवाल क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने के मुतअ़ल्लिक़ शरई ह़ुक्म क्या है ?

जवाब एक आयत का ह़िफ़्ज़ करना हर मुकल्लफ़ (या'नी आ़क़िल बालिग़) मुसलमान पर फ़र्ज़े ऐ़न है और पूरे क़ुरआने मजीद का ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया (या'नी अगर चन्द मुसलमान ह़िफ़्ज़ कर लें तो बक़िय्या के ज़िम्मे ज़बानी याद करना लाज़िम नहीं रहेगा) और सूरए फ़ातिह़ा और एक दूसरी छोटी सूरत या इस की मिस्ल तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का ह़िफ़्ज़ वाजिबे ऐ़न (या'नी हर एक के लिये याद करना वाजिब) है ।[2]

सुवाल क़ुरआने मजीद से ख़ाली सीना कैसा है ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के सीने में कुछ क़ुरआन नहीं वोह वीरान मकान की त़रह़ है ।[3]

सुवाल जो शख़्स क़ुरआने पाक पढ़े और इस पर अ़मल करे उस की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि जिस ने क़ुरआन पढ़ा और इस को याद कर लिया और इस के ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जाना उस के घर वालों में से उन दस अफ़राद के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा जिन पर जहन्नम की आग वाजिब हो चुकी होगी ।[4]

सुवाल क़ुरआने मजीद पढ़ने की फ़ज़ीलत क्या है ?

---
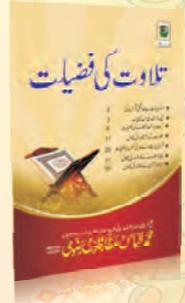
[1]......بخاری، کتاب التفسیر، باب وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْہِ......الخ، ۳/۱۸۷، حدیث: ۴۵۴۴

[2]......बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/545

[3]......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب: ۱۸، ۴/۴۱۹، حدیث: ۲۹۲۲

[4]......ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل قارئ القرآن، ۴/۴۱۴، حدیث: ۲۹۱۴

जवाब जिस ने कुरआने मजीद से एक ह़र्फ़ पढ़ा उस के लिये दस नेकियां हैं ।

सुवाल ज़बान में लुक्नत की वजह से रुक रुक कर कुरआने पाक पढ़ने वाले के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब ऐसे शख़्स को दो गुना सवाब मिलता है ।[1]

सुवाल कुरआने मजीद देख कर पढ़ने और ज़बानी पढ़ने में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब कुरआने मजीद देख कर पढ़ना ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल है कि येह पढ़ना भी है और देखना भी और हाथ से छूना भी और येह सब काम इ़बादत हैं ।[2]

सुवाल क्या कुरआने मजीद को बे वुज़ू पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी हां ! कुरआने मजीद को बे वुज़ू पढ़ सकते हैं ।

सुवाल क्या कुरआने मजीद को बे वुज़ू छू भी सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! कुरआने मजीद को बे वुज़ू छूना ह़राम है ।

ख़त्मे कुरआन की दुआ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِيْ فِيْ قَبْرِيْ ط اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً ط اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِيْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ حُجَّةً لِّيْ يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۔[3]

---

[1]......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین......الخ، باب فضل من یقوم بالقرآن......الخ، ص ۴۰۸، حدیث: ۲۶۹۔(۸۱۲) مفهومًا

[2]......बहारे शरीअ़त, मसाइले क़िराअत बैरूने नमाज़, 1/550

[3]......الجامع الصغیر للسیوطی، ص ۴۱، حدیث: ۵۷۱ تفسیر روح البیان، پ ۱۵، الاسراء، تحت الآیۃ: ۱۰، ۵/۱۳۶

तर्जमा : इलाही मेरी क़ब्र में मेरी परेशानी को दूर फ़रमाना और कुरआने अ़ज़ीम के वसीले से मुझ पर रह़्म फ़रमाना और कुरआन को मेरे लिये पेशवा बना और बाइसे नूर और सबबे हिदायत व रह़मत बना और कुरआन से जो कुछ मैं भूल गया हूं उसे याद दिला दे और जो कुछ कुरआन से मैं न जान सका वोह भी सिखला दे और रात दिन मुझे इस की तिलावत नसीब कर और (क़ियामत के दिन) इस को मेरे लिये दलील बना । ऐ आ़लम के परवरिश करने वाले ! मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा ।

सुवाल कम अ़र्से में हि़फ़्ज़ करने वाले चन्द बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के नाम बताइये और येह भी बताइये कि इन्हों ने कितने अ़र्से में हि़फ़्ज़ किया ?

जवाब कम अ़र्से में हि़फ़्ज़ करने वाले चन्द बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के नाम येह हैं :

- ...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد ने सात दिन में हि़फ़्ज़ किया ।
- ...... सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने एक माह में हि़फ़्ज़ किया ।
- ...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मा'सूम नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने 3 माह में हि़फ़्ज़ किया ।[1]

सुवाल सात मश्हूर कुर्रा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नाम बताइये ?

जवाब सात मश्हूर कुर्रा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नाम येह हैं :

(1)...... अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

(2)...... अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

(3)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

(4)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

(5)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

(6)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

(7)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه [2]

---

[1]...... انوار العرفان، ص ۲۸، ۳۰

[2]...... اتقان، النوع العشرون، ۱/ ۱۰۳

सुवाल क़िराअते सबआ़ के इमामों के नाम बयान कीजिये ?

जवाब क़िराअते सबआ़ के इमामों के नाम येह हैं :

(1) .... हज़रते सय्यिदुना इमाम नाफ़ेअ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (2) ....हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने कसीर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(3) .....हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़म्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (4) ....हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़म्ज़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(5) ....हज़रते सय्यिदुना इमाम आ़सिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (6) ....हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने आ़मिर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(7) ....हज़रते सय्यिदुना इमाम किसाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه[1]

सुवाल अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के तय्यार कर्दा मसाहिफ़ (या'नी कुरआने पाक) की ता'दाद कितनी थी ?

जवाब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के तय्यार कर्दा मसाहिफ़ की ता'दाद पांच थी ।

ख़त्मे नबुव्वत व रिसालत

सुवाल ख़त्मे नबुव्वत से क्या मुराद है ?

जवाब ख़त्मे नबुव्वत से मुराद येह मानना है कि हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ''आख़िरी नबी'' हैं । या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर सिलसिलए नबुव्वत को ख़त्म फ़रमा दिया । हुज़ूर के ज़माने में या इस के बा'द क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं हो सकता ।[2]

सुवाल जो शख़्स ख़त्मे नबुव्वत को न माने उस के मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म क्या है ?

जवाब जो शख़्स सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नबुव्वत मिलने का ए'तिक़ाद रखे या किसी नए नबी के आने को मुमकिन माने वोह काफ़िर है ।[3]

---

[1]......كتاب التيسير في القراءات السبع، ص١٧، ١٩

[2]......बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/63

[3]......المعتقد المنتقد مع شرحه المعتمد المستند، تكميل الباب، ص ١٢٠

सुवाल हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी से क्या अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत पर कोई फ़र्क़ वाक़ेअ़ हो सकता है ?

जवाब जी नहीं ! हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी से अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत पर कोई फ़र्क़ वाक़ेअ़ नहीं होगा, इस लिये कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी बतौ़रे नबी नहीं बल्कि बतौ़रे उम्मती होगी । चुनान्चे, तफ़्सीरे नसफ़ी में है कि सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं, हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी नबी की ह़ैसिय्यत से नहीं बल्कि शरीअ़ते मुह़म्मदिय्या के एक पैरूकार की ह़ैसिय्यत से होगी गोया कि वोह सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उम्मती होंगे ।(1)

सुवाल क्या ख़त्मे नबुव्वत का सुबूत कुरआने करीम में है ?

जवाब जी हां ! ख़त्मे नबुव्वत का अ़क़ीदा कुरआने करीम से साबित है । चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۴۰﴾ (پ ۲۲، الاحزاب: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हां अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले और अल्लाह सब कुछ जानता है ।

इमाम ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में लिखते हैं : خَتَمَ اللّٰهُ بِهِ النُّبُوَّةَ فَلَا نُبُوَّةَ بَعْدَهٗ اَیْ وَلَا مَعَهٗ तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सिलसिलए नबुव्वत को ख़त्म फ़रमा दिया, अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं आएगा और न ही कोई नबुव्वत में आप के साथ शरीक है ।(2)

---

1 ...... تفسیر نسفی، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیة: ۴۴، ص ۹۴۳

2 ...... تفسیر ابن کثیر، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیة: ۴۴، ۶/ ۳۹۱

मे'राजे मुस्तफ़ा

सुवाल मे'राज से क्या मुराद है ?

जवाब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस तक, फिर वहां से सातों आस्मानों और कुरसी व अ़र्श तक और वहां से ऊपर जहां तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मन्ज़ूर हुवा रात के थोड़े से हिस्से में सैर कराई। उस रात बारगाहे ख़ुदावन्दी में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वोह कुर्बे ख़ास ह़ासिल हुवा कि किसी नबी और फ़िरिश्ते को न कभी ह़ासिल हुवा न कभी होगा। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस आस्मानी सफ़र को "मे'राज" कहते हैं।[1]

सुवाल मे'राज शरीफ़ कब हुई ?

जवाब मे'राज शरीफ़ रजबुल मुरज्जब की 27 वीं रात को हुई।

सुवाल मे'राज शरीफ़ का तज़्किरा कुरआने करीम की किस सूरत में है ?

जवाब मे'राज शरीफ़ का तज़्किरा कुरआने करीम के पारह नम्बर 15 सूरए बनी इस्राईल की पहली आयत में कुछ यूं है :

---

[1]...... تفسیراتِ احمدیۃ، بنی اسرآئیل، تحت الآیۃ: ۱، مسئلۃ المعراج، ص ۵۰۲ـ۵۰۵ ملتقطًاو نبراس، بیان المعراج، ص ۲۹۲ـ۲۹۵ ملتقطًا

सُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

(پ ۱۵، بنی اسرآءیل: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है।

सुवाल शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या क्या देखा ?

जवाब शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्श व कुरसी, लौह़ो क़लम, जन्नत व दोज़ख़, ज़मीन व आस्मान का ज़र्रा ज़र्रा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दीगर बेशुमार बड़ी बड़ी निशानियों को देखा, सब से बढ़ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस रात अपने सर की आंखों से जमाले इलाही का दीदार किया और बिग़ैर किसी वासित़े के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुना।[1]

सुवाल शबे मे'राज किस आस्मान पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात किस नबी عَلَیْہِ السَّلَام से हुई ?

जवाब शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात

1 ......: पहले आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام से हुई।

2 ......: दूसरे आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या व ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा علیهما السلام से हुई।

3 ......: तीसरे आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से हुई।

4 ......: चौथे आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام से हुई।

5 ......: पांचवें आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَیْہِ السَّلَام से हुई।

6 ......: छटे आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से हुई।

7 ......: सातवें आस्मान पर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से हुई।[2]

---

[1]......बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/67 माख़ूज़न

[2]......[illegible], स. 733

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस आस्मानी सफ़र का इन्कार करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब सफ़रे मे'राज के तीन हिस्से हैं :
{1} अस्रा {2} मे'राज {3} ए'राज या उरूज । चुनान्चे,
{1} अस्रा या'नी मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बैतुल मुक़द्दस तक शब के थोड़े से हिस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से कुरआनी (या'नी कुरआने पाक की वाज़ेह आयत और रोशन दलील) से साबित है । इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) काफ़िर है ।
{2} मे'राज या'नी आस्मानों की सैर और मनाज़िले कुर्ब में पहुंचना अहादीसे सहीहा (صَحِی۔حَہ) मो'तमदा (مُع۔ت۔مَدَہ) मश्हूरा (مَش۔ہُورَہ) से साबित है, इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) गुमराह है ।
{3} ए'राज या उरूज या'नी सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर की आंखों से दीदारे इलाही करने और फ़ौक़ल अर्श (अर्श से ऊपर) जाने का मुन्किर (इन्कार करने वाला) ख़ाती या'नी ख़ताकार है ।(1)

सुवाल शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैतुल मुक़द्दस में किस नमाज़ की इमामत फ़रमाई ?

जवाब शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैतुल मुक़द्दस में जिस नमाज़ की इमामत फ़रमाई वोह नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद थी । चुनान्चे, हज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो रक्अ़त तहिय्यतुल मस्जिद अदा की और ज़ाहिर येही है कि येही वोह नमाज़ है जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इक़्तिदा की और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अस्फ़िया के इमाम बने ।(2)

---

1 ......कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 226, 227 माख़ूज़न

2 ......مرقاة، كتاب الفضائل، باب في المعراج، ١٠/١٦٧، تحت الحديث: ٥٨٦٣

शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा

सुवाल शफ़ाअ़त से क्या मुराद है ?

जवाब शफ़ाअ़त से मुराद सिफ़ारिश है या'नी क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी व रसूल और दीगर नेक बन्दे गुनाहगारों की बख़्शिश के लिये बारगाहे ख़ुदावन्दी में सिफ़ारिश फ़रमाएंगे।

सुवाल क़ियामत के दिन सब से पहले शफ़ाअ़त कौन करेगा ?

जवाब क़ियामत के दिन सब से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत के दिन शफ़ाअ़ते कुब्रा और मक़ामे मह़मूद का शरफ़ अ़ता फ़रमाया है। जब तक हमारे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त का दरवाज़ा नहीं खोलेंगे किसी को भी मजाले शफ़ाअ़त न होगी, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के बा'द तमाम अम्बिया व औलिया व सुलह़ा व शुहदा वग़ैरा सब शफ़ाअ़त करेंगे।[1]

सुवाल मक़ामे मह़मूद से क्या मुराद है ?

जवाब मक़ामे मह़मूद से मुराद वोह ख़ास मक़ाम है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाएगा कि तमाम अव्वलीन व आख़िरीन हुज़ूर की ह़म्द व सिताइश करेंगे।[2]

सुवाल लिवाउल ह़म्द क्या है और बरोज़े क़ियामत किस के पास होगा ?

जवाब लिवाउल ह़म्द एक झन्डे का नाम है जो बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मर्ह़मत होगा, सब लोग इस के नीचे होंगे।[3]

---

[1]……बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/70 माख़ूज़न

[2]……सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, सय्यिदुल अम्बिया के फ़ज़ाइले मुबारका, स. 33

[3]……ترمذی، کتاب المناقب، ۵/۳۵۴، حدیث: ۳۶۳۵
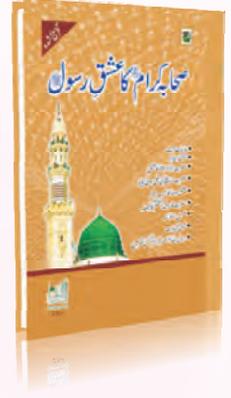
महब्बते मुस्तफ़ा

सुवाल हमें सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस क़दर महब्बत होनी चाहिये ?

जवाब हमें अपने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सब से ज़ियादा महब्बत होनी चाहिये, क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत ऐन ईमान है और जब तक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत मां-बाप अवलाद बल्कि तमाम जहां से ज़ियादा न हो कोई शख़्स कामिल मुसलमान नहीं हो सकता। जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है :

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۴﴾ (پ۱۰، التوبۃ: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो (इन्तिज़ार करो) यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।

और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है :

لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ

या 'नी तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उस के बाप, अवलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं ।[1]

सुवाल सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत का तक़ाज़ा क्या है ?

जवाब सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत का तक़ाज़ा येह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सहाबा व अहले बैत और तमाम मुतअ़ल्लिक़ीन व मुतवस्सिलीन से महब्बत की जाए और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम दुश्मनों से अ़दावत व दुश्मनी हो । अगर्चे वोह अपना बाप या बेटा या रिश्तेदार ही क्यूं न हो क्यूंकि येह मुमकिन ही नहीं कि रसूल से भी महब्बत हो और उन के दुश्मनों से भी ।[2]

चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۱۰، التوبۃ:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वोह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई उन से दोस्ती करेगा तो वोही ज़ालिम हैं ।

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में

[1] ...... بخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول صلی اللہ علیہ وسلم من الایمان، ۱/۱۷، حدیث:۱۵

[2] ...... الشفاء، فصل فی علامات محبتہ صلی اللہ علیہ وسلم، الجزء الثانی، ص ۲۱

الْاِیْمَانَ وَاَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَیُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓىٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۠﴿۲۲﴾ (پ۲۸، المجادلة:۲۲)

अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी येह अल्लाह की जमाअ़त है सुनता है अल्लाह ही की जमाअ़त कामयाब है ।

ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा

सुवाल ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर हर मुसलमान पर फ़र्ज़े आ'ज़म बल्कि जाने ईमान है ।[1]

चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है : وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ (پ۲۶، الفتح:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो ।

सुवाल सुल्त़ाने बह़्‌रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर हम से क्या तक़ाज़ा करती है ?

जवाब सुल्त़ाने बह़्‌रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर हम से तक़ाज़ा करती है कि हर वोह शै जिसे आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत व तअ़ल्लुक़ हो लाइक़े ता'ज़ीम और वाजिबुल एह़तिराम है ।[2]

---

[1]……बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइदे मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, 1/74 माख़ूज़न

[2]……مواهب لدنية، المقصد السابع في وجوب صحبته صلى الله عليه وسلم، الفصل الثالث، حب الصحابة وعلاماته، ۳/۳۹۳

इताअ़ते मुस्तफ़ा

सुवाल क्या हम पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त करना फ़र्ज़ है ?

जवाब जी हां ! हम पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त करना फ़र्ज़ है क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाइबे मुत़लक़ (या'नी ख़लीफ़ा) हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ
(پ۵، النسآء:۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने अल्लाह का हुक्म माना ।

अ़त़ाए मुस्तफ़ा

सुवाल क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी को तमाम जहानों में तसर्रुफ़ का इख़्तियार दिया है ?

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम जहानों में तसर्रुफ़ का इख़्तियार दिया है ।

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम जहानों में किस क़िस्म का तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आस्मानो ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुन्जियां अ़त़ा फ़रमा रखी हैं, अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तमाम ने'मतों और अ़त़ाओं को पूरी काएनात में तक़्सीम फ़रमाते हैं ।[1] سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ !

[1]……مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات حوض نبینا صلی اللہ علیہ وسلم وصفاتہ، ص ۱۲۵۸، حدیث:۳۰-(۲۲۹۲)
ومواہب لدنیۃ، الفصل الثانی، اعطی مفاتیح الخزائن، ۲/۲۳۹

रब है मु'त़ी येह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं

ह़ाज़िरो नाज़िर मुस्त़फ़ा

सुवाल ह़ाज़िरो नाज़िर का मत़लब क्या है ?

जवाब ह़ाज़िर के लुग़वी मा'ना हैं "मौजूद, जो सामने हो" और नाज़िर के मा'ना है "देखने वाला" । चुनान्चे, जहां तक हमारी नज़र काम करे वहां तक हम नाज़िर हैं और जो जगह हमारी पहुंच में हो वहां तक हम ह़ाज़िर हैं । मसलन आस्मान तक नज़र काम करती है वहां तक हम नाज़िर हैं मगर ह़ाज़िर नहीं क्यूंकि वहां तक हमारी पहुंच नहीं और जिस कमरे या घर में हम मौजूद हैं वहां ह़ाज़िर हैं कि उस जगह हमारी पहुंच है । जब कि ह़ाज़िरो नाज़िर के शरई मा'ना येह हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा बअ़त़ाए इलाही एक ही जगह रह कर तमाम जहान को अपनी हथेली की त़रह़ देखे और दूर व क़रीब की आवाज़ें सुने या एक आन में तमाम आ़लम की सैर करे और सदहा कोस पर ह़ाजत मन्दों की ह़ाजत रवाई करे । येह रफ़्तार ख़्वाह सिर्फ़ रूह़ानी हो या जिस्मे मिसाली के साथ, क़ब्र में मदफ़ून जिस्म से हो या किसी दूसरी जगह मौजूद जिस्म से ।(1)

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ह़ाज़िरो नाज़िर कहना कैसा ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ह़ाज़िरो नाज़िर नहीं कहना चाहिये क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जगह और मकान से पाक है । ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : हर जगह में ह़ाज़िरो नाज़िर होना ख़ुदा की सिफ़त हरगिज़ नहीं ख़ुदाए तआ़ला जगह और मकान से पाक है ।(2)

सुवाल क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ाज़िरो नाज़िर हैं ?

---

1 ......जाअल ह़क़, स. 145

2 ......जाअल ह़क़, स. 143

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हाज़िरो नाज़िर हैं या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर में रहते हुवे नूरे नबुव्वत से अपने हर उम्मती के हर हर अ़मल का मुशाहदा फ़रमा रहे हैं, तमाम आ़लम को अपने हाथ की हथेली की त़रह़ देखते, दूरो नज़्दीक की आवाज़ें सुनते, जहां चाहें, जितने मक़ामात पर चाहें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ताक़त से जल्वागर हो सकते हैं ।

सुवाल क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने जिस्मे बशरी के साथ हर जगह मौजूद हैं ?

जवाब जी नहीं ! सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने जिस्मे बशरी के साथ हर जगह मौजूद नहीं बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी नूरानिय्यत, रूह़ानिय्यत और इ़ल्मिय्यत के ए'तिबार से हर जगह उसी त़रह़ मौजूद हैं जिस त़रह़ सूरज आस्मान पर होता है लेकिन अपनी रोशनी और नूरानिय्यत के साथ रूए ज़मीन पर मौजूद होता है। अलबत्ता ! अगर चाहें तो जिस्मे बशरी के साथ जहां चाहें ह़ाज़िर हो सकते हैं ।

सुवाल क्या ह़ाज़िरो नाज़िर का अ़क़ीदा कुरआने पाक से साबित है ?

जवाब जी हां ! ह़ाज़िरो नाज़िर का अ़क़ीदा कुरआने करीम की मुतअ़द्दिद आयाते मुबारका से साबित है । चुनान्चे,

1......: पारह 22 सूरए अह़ज़ाब की आयत नम्बर 45 में इरशाद होता है : اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا - तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर । इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में है : या'नी हम ने आप को उन सब पर गवाह बना कर भेजा जिन की त़रफ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रसूल बना कर भेजे गए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के अह़वाल को देखते और उन के आ'माल का मुशाहदा फ़रमाते हैं । जो कुछ भी तस्दीक़ व तक्ज़ीब उन से सादिर हो रही है इस पर गवाह बन रहे हैं, हिदायत व गुमराही में से जिस पर भी लोग हैं इस पर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गवाह हैं और येह गवाही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन अदा फ़रमाएंगे जो उम्मत के ह़क़ में भी क़बूल होगी और मुख़ालफ़त में भी ।(1)

---

1 ...... تفسیر روح المعانی، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۴۵، الجزء الثانی والعشرون، ص ۳۰۴

और येह सब उसी वक़्त हो सकता है जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ'माले उम्मत पर ह़ाज़िरो नाज़िर हों ।

2......: पारह 2, सूरए बक़रह की आयत नम्बर 143 में इरशाद होता है :

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर गवाह हो और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह।

इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे रूहुल बयान में है : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मत के बारे में गवाही देने का मत़लब येह है कि आप नूरे ह़क़ की वजह से दीन पर चलने वाले हर दीनदार के रुत्बे को जानते हैं और उस के दीन की ह़क़ीक़त को भी, नीज़ उस रुकावट से भी वाक़िफ़ हैं जिस ने उम्मती को दीन में कमाल ह़ासिल करने से रोक रखा है । पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के गुनाहों को पहचानते हैं, उन के ईमान की ह़क़ीक़त को, उम्मत के आ'माल, उन की नेकियों, बुराइयों, इख़्लास और निफ़ाक़ सब को नूरे ह़क़ की वजह से जानते और पहचानते हैं[1] येह सब उसी सूरत में मुमकिन है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ'माले उम्मत पर ह़ाज़िरो नाज़िर हों ।

सुवाल क्या ह़ाज़िरो नाज़िर का अ़क़ीदा अह़ादीसे करीमा से भी साबित है ?

जवाब जी हां ! ह़ाज़िरो नाज़िर का अ़क़ीदा अह़ादीसे करीमा से भी साबित है। चुनान्चे,

1...... : ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये ज़मीन समेट दी तो मैं ने इस के मशरिक़ो मग़रिब का तमाम ह़िस्सा देख लिया और अ़न क़रीब मेरी उम्मत की ह़ुकूमत वहां तक पहुंचेगी जहां तक कि ज़मीन मेरे लिये समेटी गई ।[2] मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मक़ाम पर मौजूद होते हुवे पूरी रूए ज़मीन को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे थे ।

---

[1]......تفسیر روح البیان، پ ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۴۳، ۱/۲۴۸

[2]......مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعۃ، باب ھلاک ھذہ الامۃ بعضھم ببعض، ص ۱۵۴۴، حدیث: ۲۸۸۹

2......: हज़रते सय्यिदतुना बिन्ते अबी बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े कुसूफ़ अदा फ़रमाई, फ़रागत के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना की, फिर इरशाद फ़रमाया : हर वोह शै जिस को मैं ने पहले नहीं देखा था उसे मैं ने इस मक़ाम पर देख लिया यहां तक कि जन्नत व दोज़ख़ को भी देख लिया।[1] मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर जन्नत व दोज़ख़ को मुलाहज़ा फ़रमाया।

3......: उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक शब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुवे और फ़रमाया : سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस रात में किस क़दर फ़ितने और ख़ज़ाने उतारे गए हैं।[2] मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आयिन्दा होने वाले फ़ितनों को ब चश्म मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं।

4......: हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जंगे मौता में शरीक हज़रते सय्यिदुना ज़ैद, हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र और हज़रते सय्यिदुना इब्ने रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की शहादत की ख़बर लोगों को इस तरह दी गोया कि मौता जो कि मदीनए मुनव्वरा से बहुत ही दूर है वहां जो कुछ हो रहा है उस को सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना शरीफ़ से देख रहे हैं।[3]

5......: उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक रात मेरे पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप हस्बे मा'मूल नमाज़े तहज्जुद के लिये उठे और वुज़ू करने की जगह तशरीफ़ ले गए। मैं ने सुना कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा फ़रमाया कि मैं तेरे पास पहुंचा और तू मदद किया गया। जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वुज़ू कर के बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने सुना है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

[١]...... بخاری، کتاب الوضوء، باب من لم یتوضأ الا من الغشی المثقل، ١/٨٧، حدیث: ١٨٤

[٢]...... بخاری، کتاب التهجد، باب تحریض النبی علی صلاۃ اللیل......الخ، ١/٣٨٣، حدیث: ١١٢٦

[٣]...... بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ موتۃ من ارض شام، ٣/٩٦، حدیث: ٤٢٦٢ ماخوذاً

तीन मरतबा लब्बैक और तीन मरतबा نُصِرْتَ फ़रमाया, गोया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी से कलाम फ़रमा रहे हैं क्या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कोई था ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : राजिज़ मुझ से फ़रियाद कर रहा था ।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना राजिज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मक्कए मुकर्रमा में और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में थे ।

नूरानिय्यत व बशरिय्यते मुस्त़फ़ा

सुवाल : क्या ऐसा मुमकिन है कि कोई नूर भी हो और बशर भी ?

जवाब : जी हां ! ऐसा बिल्कुल मुमकिन है क्यूंकि नूरानिय्यत और बशरिय्यत एक दूसरे की ज़िद नहीं हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام नूरी मख़्लूक़ होने के बावुजूद ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के सामने इन्सानी शक्ल में जलवा गर हुवे थे । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَیْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِیًّا ﴿۱۷﴾ (پ۱۶، مریم:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस की त़रफ़ हम ने अपना रूह़ानी भेजा वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा ।

सुवाल : नूर व बशर होने के ए'तिबार से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा क्या है ?

जवाब : नूर व बशर होने के ए'तिबार से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा येह है कि हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नूर भी हैं और बशर भी । या'नी ह़क़ीक़त के ए'तिबार से नूर और सूरत के ए'तिबार से बे मिस्ल बशर हैं ।

सुवाल : क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर होना क़ुरआने पाक से साबित है ?

---

[1] ……المعجم الصغیر، الجزء الثانی، ص ۷۳

जवाब जी हां ! सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नूर होना कुरआने पाक से साबित है। चुनान्चे, पारह 6 सूरए माइदह की आयत नम्बर 15 में इरशाद होता है : قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब । तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में इस आयत के तह़्त है : या'नी नूरे अ़ज़ीम और वोह नूरों का नूर, नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।[1] और फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में है कि उ़लमा फ़रमाते हैं : यहां नूर से मुराद मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।[2]

सुवाल क्या सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने नूर होने का ज़िक्र ख़ुद भी फ़रमाया है ?

जवाब जी हां ! सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने नूर होने का ज़िक्र ख़ुद भी फ़रमाया है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां–बाप आप (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर कुरबान ! मुझे बताइये कि सब से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क्या चीज़ बनाई ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जाबिर ! बेशक बिल यक़ीन, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम मख़्लूक़ात से पहले तेरे नबी का नूर अपने नूर से पैदा फ़रमाया ।[3]

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बशरिय्यत का इन्कार करना कैसा ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बशरिय्यत का मुत़लक़न इन्कार कुफ़्र है।[4] बल्कि इस में शक करना भी कुफ़्र है क्यूंकि शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

[1]……تفسیر روح المعانی، پ٦، المآئدۃ، تحت الآیۃ: ١٥، الجزء السادس، ص ٣٦٧

[2]……फ़तावा रज़विय्या, 30/707

[3]……الجزء المفقود من الجزء الاول من المصنف، کتاب الایمان، باب فی تخلیق نور محمد، ص ٦٣، حدیث: ١٨ و مواھب لدنیہ، المقصد الاول تشریف اللہ تعالٰی لہ، ١/٣٦ व फ़तावा रज़विय्या, 30/658

[4]……फ़तावा रज़विय्या, 14/358

की बशरिय्यत कुरआने मजीद की नस्से क़तई से साबित है। हां अपने जैसा बशर न कहे। ख़ैरुल बशर, सय्यिदुल बशर कहे।[1] क्यूंकि तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बशर ही थे। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है : وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا (پ۱۳، یوسف: ۱۰۹) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम से पहले जितने रसूल भेजे सब मर्द ही थे।

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने जैसा बशर कहना कैसा है ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने जैसा बशर कहना अहले ईमान का त़रीक़ा नहीं, क्यूंकि ब क़स्दे तह़क़ीर ऐसा कहना नापाक इरादे की बिना पर बिला शुबा कुफ़्र है। यक़ीनन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशर भी हैं लेकिन आप की बशरिय्यत आ़म इन्सानों की त़रह़ नहीं, लिहाज़ा आप की बशरिय्यत को आ़म इन्सानों की त़रह़ क़रार देना मुसलमानों का शेवा नहीं बल्कि कुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इसे काफ़िरों का त़रीक़ा बताया गया है कि वोह अपने नबी को अपने जैसा बशर समझते थे। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ (پ۱۸، المؤمنون: ۲۳، ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी।

मा'लूम हुवा नबी की शान घटाने के लिये बशर बशर की रट लगाना कुफ़्फ़ारे नाहन्जार का त़रीक़ा है और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशर तो हैं मगर हमारी मिस्ल नहीं बल्कि अफ़्ज़लुल बशर हैं।

---

[1]……कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब स. 224

दूसरा बाब एक नज़र में

क्या आप ने नामे मुहम्मद के आ'दाद की निस्बत से अक़ीदए तौहीद व रिसालत के मुतअ़ल्लिक़ दर्जे ज़ैल 92 सुवालात के जवाबात जान लिये हैं ?

1 ईमान किसे कहते हैं ?
2 कुफ़्र के क्या मा'ना हैं ?
3 ज़रूरियाते दीन किसे कहते हैं ?
4 ज़रूरियाते दीन के मुन्किर का हुक्म क्या है ?
5 ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत से क्या मुराद है ?
6 ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत के मुन्किर का हुक्म क्या है ?
7 शिर्क के क्या मा'ना हैं ?
8 वाजिबुल वुजूद से क्या मुराद है ?
9 निफ़ाक़ की क्या ता'रीफ़ है ?
10 मुर्तद किसे कहते हैं ?
11 "हर शै का ख़ालिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है" क्या येह दुरुस्त है ?
12 तौह़ीद से क्या मुराद है ?
13 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में शिर्क से क्या मुराद है ?
14 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात में शिर्क से क्या मुराद है ?
15 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अस्माए हुस्ना या'नी नामों में शिर्क से क्या मुराद है ?
16 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आ़ल या'नी कामों में शिर्क से क्या मुराद है ?

17 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम में शिर्क से क्या मुराद है ?
18 कुरआने करीम में कितने नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं ?
19 क्या आप बता सकते हैं कि किस नबी या रसूल का नाम कुरआने करीम में कितनी बार आया है ?
20 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैग़म्बरों और रसूलों को दुन्या में क्यूं भेजा ?
21 क्या पैग़म्बरों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम अह़काम लोगों तक पहुंचा दिये हैं ?
22 अगर कोई येह कहे कि किसी नबी या रसूल ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम अह़काम लोगों तक नहीं पहुंचाए तो उसे क्या कहेंगे ?
23 क्या रसूलों के पास अपनी रिसालत की कोई दलील होती है ?
24 मो'जिज़ा क्या होता है ?
25 क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात का तज़किरा कुरआने मजीद में भी है ?
26 नबियों और रसूलों की ता'दाद के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा क्या है ?
27 क्या किसी नबी और रसूल से कोई गुनाह मुमकिन है ?
28 क्या नबियों और रसूलों के इलावा भी कोई गुनाहों से मह़फ़ूज़ है ?
29 बा'ज़ लोग वलियों और इमामों को भी मा'सूम समझते हैं, क्या येह दुरुस्त है ?
30 क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हैं?
31 क्या कोई वली मर्तबे में किसी नबी के बराबर हो सकता है ?
32 क्या सब नबी मर्तबे के लिह़ाज़ से आपस में बराबर हैं ?
33 मर्तबे के लिह़ाज़ से सब से अफ़्ज़ल पांच नबियों के नामे मुबारक बताइये ?
34 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा क्या है ?
35 क्या ह़यात का अ़क़ीदा कुरआन से साबित है ?
36 कुरआने करीम में तो सिर्फ़ बा'ज़ मोअमिनीन व मोअमिनात और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़यात साबित है, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़यात कैसे साबित होगी ?

37 क्या ह़यात का अ़क़ीदा ह़दीस से भी साबित है ?

38 क्या अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मौत का ज़ाइक़ा चखा है ?

39 अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और शुहदाए ड़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की ह़यात में क्या फ़र्क़ है ?

40 क्या कोई नबी अब भी ह़याते ज़ाहिरी के साथ ज़िन्दा है ?

41 क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ग़ैब की बातें भी जानते हैं ?

42 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इल्मे ग़ैब और नबियों रसूलों के इल्मे ग़ैब में क्या फ़र्क़ है ?

43 अगर कोई शख़्स ग़ैरे ख़ुदा के मुतअ़ल्लिक़ येह अ़क़ीदा रखे कि उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर इल्मे ग़ैब ह़ासिल है तो उसे क्या कहेंगे ?

44 जो लोग नबियों और रसूलों बिल ख़ुसूस सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब को बिल्कुल नहीं मानते उन्हें क्या कहेंगे ?

45 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कितने सह़ीफ़े और आस्मानी किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं ?

46 चार मश्हूर आस्मानी किताबें किन ज़बानों में नाज़िल हुईं ?

47 अगर कोई इन सह़ीफ़ों या किताबों में से किसी एक को न माने तो उस पर क्या हुक्म नाफ़िज़ होगा ?

48 क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जितने सह़ीफ़े और किताबें नाज़िल फ़रमाईं, सब पर ईमान लाना ज़रूरी है ?

49 क्या हम पर तमाम आस्मानी किताबों और सह़ीफ़ों में नाज़िल कर्दा अह़कामात पर अ़मल करना लाज़िम है ?

50 क्या कुरआने मजीद में कमी बेशी मुमकिन है ?

51 अगर कोई कुरआने मजीद में किसी क़िस्म की कमी बेशी का क़ाइल हो तो उसे क्या कहेंगे ?

52 कुरआने मजीद में कुल कितने पारे और सूरतें हैं ?

53 कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से पहले नाज़िल हुई ?

54 कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ?
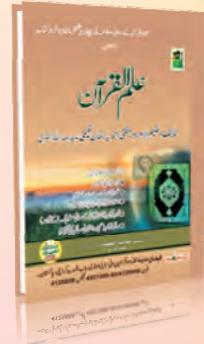
55 कुरआने पाक हिफ़्ज़ करने के मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म क्या है ?

56 कम अ़र्से में हिफ़्ज़ करने वाले चन्द बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के नाम बताइये और येह भी बताइये कि उन्हों ने कितने अ़र्से में हिफ़्ज़ किया ?

57 सात मश्हूर कुर्रा सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नाम बताइये ?

58 क़िराअते सब्अ़ा के इमामों के नाम बयान कीजिये ?

59 अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के तय्यार कर्दा मसाहिफ़ (या'नी कुरआने पाक) की ता'दाद कितनी थी ?

60 ख़त्मे नबुव्वत से क्या मुराद है ?

61 जो शख़्स ख़त्मे नबुव्वत को न माने उस के मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म क्या है ?

62 ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी से क्या अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत पर कोई फ़र्क़ वाक़ेअ़ हो सकता है ?

63 क्या ख़त्मे नबुव्वत का अ़क़ीदा कुरआनो ह़दीस से साबित है ?

64 मे'राज शरीफ़ से क्या मुराद है ?

65 मे'राज शरीफ़ कब हुई ?

66 मे'राज शरीफ़ का तज़किरा कुरआने करीम की किस सूरत में है ?

67 शबे मे'राज किस आस्मान पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात किस नबी عَلَيْهِ السَّلَام से हुई ?

68 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस आस्मानी सफ़र का इन्कार करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

69 शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैतुल मुक़द्दस में किस नमाज़ की इमामत फ़रमाई ?

70 शफ़ाअ़त से क्या मुराद है ?

71 क़ियामत के दिन सब से पहले शफ़ाअ़त कौन करेगा ?

72 मक़ामे मह़मूद से क्या मुराद है ?

73 लिवाउल ह़म्द क्या है और बरोज़े क़ियामत किस के पास होगा ?

74 हमें सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस क़दर महब्बत होनी चाहिये ?
75 सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत का तक़ाज़ा क्या है ?
76 ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर की शरई हैसिय्यत क्या है ?
77 सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर हम से क्या तक़ाज़ा करती है ?
78 क्या हम पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत करना फ़र्ज़ है ?
79 क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम जहानों में किसी को तसर्रुफ़ का इख़्तियार दिया है ?
80 हाज़िरो नाज़िर का मतलब क्या है ?
81 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को हाज़िरो नाज़िर कहना कैसा ?
82 क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हाज़िरो नाज़िर हैं ?
83 क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने जिस्मे बशरी के साथ हर जगह मौजूद हैं ?
84 क्या हाज़िरो नाज़िर का अक़ीदा कुरआने पाक से साबित है ?
85 क्या हाज़िरो नाज़िर का अक़ीदा अहादीसे करीमा से भी साबित है ?
86 क्या ऐसा मुमकिन है कि कोई नूर भी हो और बशर भी ?
87 नूर व बशर होने के ए'तिबार से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अक़ीदा क्या है ?
88 क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर होना कुरआने पाक से साबित है ?
89 क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने नूर होने का ज़िक्र ख़ुद भी फ़रमाया है ?
90 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बशरिय्यत का इन्कार करना कैसा ?
91 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने जैसा बशर कहना कैसा है ?

बाब : 3

सीरते मुस्तफ़ा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इस बाब में आप पढ़ेंगे

ख़ानदाने मुस्तफ़ा के इलावा हुस्ने मुस्तफ़ा और इस हुस्न पर फ़िदा जांनिसाराने मुस्तफ़ा व महबूबाने ख़ुदा व मुस्तफ़ा के मुतअल्लिक़ सुवालन जवाबन मुख़्तसर बुन्यादी बातें

बाप दादा

सुवाल हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के किस ख़ानदान से था ?

जवाब हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के मश्हूर व मा'रूफ़ और मुअ़ज़्ज़ज़ व मोहतशम ख़ानदाने कुरैश से था ।

सुवाल हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस नबी की अवलाद में से हैं ?

जवाब हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की अवलाद में से हैं ।

सुवाल हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दरमियान कितने वासिते (या'नी बाप दादा) हैं?

जवाब हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दरमियान 22 वासिते हैं ।

सुवाल हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुख़्तसर नसब शरीफ़ बताइये ?

जवाब हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नसब शरीफ़ येह है : सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन कुसय्य बिन किलाब बिन मुर्रह ।[1]

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कितने चचा थे ?

---

[1] ……بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۲/ ۵۷۳

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 12 चचा थे।

सुवाल क्या सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब चचा मुसलमान हो गए थे ?

जवाब जी नहीं ! सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब चचा मुसलमान नहीं हुवे थे, बल्कि सिर्फ़ दो चचा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हुवे थे ।

अज़्वाजे मुत़ह्हरात

सुवाल हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ता'दाद कितनी थी ?

जवाब हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ता'दाद 11 थी और येह सब उम्महातुल मोअमिनीन या'नी मोअमिनीन की माएं कहलाती हैं ।

सुवाल उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के अस्माए मुबारका बताइये ।

जवाब उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के अस्माए मुबारका येह हैं :

(1)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(2)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदा बिन्ते ज़म्अ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(3)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(4)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(5)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा बिन्ते अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(6)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(7)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(8)...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿9﴾...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिस हिलालिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿10﴾...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या बिन्ते ह़ारिस ख़ुज़ाइय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿11﴾...... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते ह़ुयय्य बिन अख़्त़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا[1]

शहज़ादे

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादे कितने थे ? उन के नाम बताइये ।

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तीन शहज़ादे थे और उन के अस्माए मुबारका येह हैं :

﴿1﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

﴿2﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

﴿3﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन्ही का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है ।[2]

शहज़ादियां

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादियां कितनी थीं और उन के नाम क्या थे ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चार शहज़ादियां थीं और उन के अस्माए मुबारका येह हैं :

﴿1﴾...... ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿2﴾...... ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿3﴾...... ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

﴿4﴾...... ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا[3]

---

[1]......مواهب لدنيه، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات...الخ، ۱/۴۰۱

[2]......مواهب لدنية، المقصد الثانی، الفصل الثانی فی ذکر اولاده الكرام......الخ، ۱/۳۹۱

[3]......مواهب لدنية، المقصد الثانی، الفصل الثانی فی ذکر اولاده الكرام......الخ، ۱/۳۹۱

हुस्ने मुस्तफ़ा

चेहरए अन्वर

सुवाल: सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर कैसा था ?

जवाब: सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर जमाले इलाही का आईना, निहायत ही ख़ूब सूरत, पुर गोश्त और किसी क़दर गोलाई में था । हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक मरतबा चांदनी रात में देखा, मैं एक मरतबा चांद की त़रफ़ देखता और एक मरतबा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को देखता तो मुझे आप का चेहरा चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत नज़र आता ।(1)

सुवाल: क्या हमारे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से भी ज़ियादा ह़सीन थे ?

जवाब: जी हां ! हमारे आक़ा सरवरे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से भी ज़ियादा ह़सीन थे । चुनान्चे, मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام तमाम नबियों और रसूलों बल्कि तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा ह़सीन थे मगर हमारे आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो हुस्न अ़त़ा फ़रमाया वोह किसी और को अ़त़ा न हुवा । इस के इलावा हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को हुस्नो जमाल का एक हिस्सा मिला था मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुस्ने कुल अ़त़ा हुवा ।(2)

हुस्न है बे मिस्ल सूरत ला जवाब
मैं फ़िदा, तुम आप हो अपना जवाब

---

[1]……شمائلِ محمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ص ۲۴، حدیث:۹

[2]……خصائص کبریٰ، باب ما اوتی یوسف علیہ الصلوۃ والسلام، ۲/۳۰۹

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर के हुस्न के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के कोई दो शे'र सुनाइये ।

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर के हुस्न के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाते हैं :

﴾1﴿...... चांद से मुंह पे ताबां दरख़्शां दुरूद
नमक आगीं सबाहृत पे लाखों सलाम

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी

लफ़्ज़	मा'ना	लफ़्ज़	मा'ना	लफ़्ज़	मा'ना
चांद से	चांद जैसे	ताबां	चमकदार	दरख़्शां	रोशन
नमक आगीं	नमक भर			सबाहृत	गोरापन

मफ़्हूमे शे'र : सरवरे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत चेहरए अन्वर पे नूर वाला दुरूद व रह़मत हो और आप के नमकीं हुस्नो जमाल पे लाखों सलाम हों ।

﴾2﴿......जिस से तारीक दिल जगमगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

नूरानी आंखें

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखें कैसी थीं ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखें बड़ी बड़ी और कुदरती तौर पर सुर्मगीं थीं या'नी सुर्मे के बिग़ैर मा'लूम होता कि सुर्मा लगा हुवा है । पलकें घनी और दराज़ थीं । पुतली की सियाही ख़ूब सियाह और आंख की सफ़ेदी ख़ूब सफ़ेद थी जिन में बारीक बारीक सुर्ख़ डोरे थे ।

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों की बसारत (देखने की कुव्वत) कैसी थी ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों की बसारत (देखने की कुव्वत) में मो'जिज़ाना शान थी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बयक वक़्त आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे, दिन रात, अन्धेरे उजाले में यक्सां देखा करते थे ।[1]

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों की अ़ज़्मत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ अश्आ़र सुनाइये ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों की अ़ज़्मत के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं :

जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया — उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम
किस को देखा येह मूसा से पूछे कोई — आंखों वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

गोशे मुबारक

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गोश या'नी कान मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताइये ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर दो गोश या'नी कान मुबारक कामिल थे ।

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कुव्वते समाअ़त (सुनने की कुव्वत) कैसी थी ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कुव्वते समाअ़त में भी मो'जिज़ाना शान थी, क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दूरो नज़्दीक की आवाज़ों को यक्सां त़ौर पर सुन लिया करते थे । चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाते : اِنِّیْ اَرٰی مَالَا تَرَوْنَ وَاَسْمَعُ مَالَا تَسْمَعُوْنَ या'नी मैं जो देखता हूं तुम नहीं देखते और मैं जो सुनता हूं तुम नहीं सुनते ।[2]

---

[1] ...... خصائص کبری، باب المعجزة والخصائص...... الخ، ۱/ ۱۰۴ ملتقطاً

[2] ......ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحزن والبکاء، ۴/ ۴۶۴، حدیث: ۴۱۹۰

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की समाअ़त मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे 'र सुनाइये ।

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की समाअ़त मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ आ 'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं :

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान
काने ला 'ले करामत पे लाखों सलाम

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी

लफ़्ज़	मा 'ना	लफ़्ज़	मा 'ना	लफ़्ज़	मा 'ना
पहला (कान)	जिस से सुना जाता है	दूसरा (कान)	मा 'दिन, जहां से हीरे जवाहिरात निकलते हैं	ला 'ल	हीरे, जवाहिरात

मफ़्हूमे शे 'र : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कान मुबारक अस्ल में इ़ज़्ज़त के मोतियों और अ़ज़्मतो शान के हीरे, जवाहिरात की कान (मा 'दिन व ज़ख़ीरा) हैं और येह दूरो नज़्दीक की आवाज़ यक्सां सुनते हैं । ऐसे मुबारक कानों की समाअ़त पर लाखों सलाम हों ।

अब्रूए मुबारक

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अब्रू या 'नी भवें कैसी थीं ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भवें दराज़ व बारीक और घने बाल वाली थीं और दोनों भवें इस क़दर मुत्तसिल थीं कि दूर से मिली हुई मा 'लूम होती थीं और इन दोनों भवों के दरमियान एक रग थी जो ह़ालते जलाल में उभर जाती थी ।(1)

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भवों के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे 'र सुनाइये ।

जवाब आ 'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت अब्रूए मुबारक की मद्ह़ में फ़रमाते हैं :

---

(1) ......شمائلِ محمدیہ، باب ماجاء فی خلق......الخ، ص ۲۱، حدیث:۷

जिन के सजदे को मेह़राबे का'बा झुकी
उन भवों की लत़ाफ़त पे लाखों सलाम

बीनी मुबारक

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बीनी या'नी नाक मुबारक कैसी थी ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुतबर्रक नाक ख़ूब सूरत दराज़ और बुलन्द थी जिस पर एक नूर चमकता था । जो शख़्स बग़ौर नहीं देखता था वोह येह समझता था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक नाक बहुत ऊंची है ह़ालांकि आप की नाक बहुत ज़ियादा ऊंची न थी बल्कि बुलन्दी उस नूर की वजह से मह़सूस होती थी जो आप की मुक़द्दस नाक के ऊपर जल्वा फ़िगन था ।(1)

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बीनी मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ।

जवाब आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت बीनी मुबारक की मद्ह़ में फ़रमाते हैं :

नीची आंखों की शर्मो ह़या पर दुरूद
ऊंची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

पेशानी मुबारक

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जबीन या'नी पेशानी मुबारक कैसी थी ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक कुशादा और चौड़ी थी और क़ुदरती त़ौर पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक पेशानी पर एक नूरानी चमक थी ।

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ।

जवाब दरबारे रिसालत के शाइर मद्दाहे रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन

---

(1) ...... شمائلِ محمدیہ، باب ماجاء فی خلق ...... الخ، ص ۲۱، حدیث: ۷

साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसी हसीनो जमील नूरानी मन्ज़र को देख कर येह कहा :

مَتٰی یَبْدُ فِی الدَّاجِی الْبَہِیْمِ جَبِیْنُہٗ!

یَلُحْ مِثْلَ مِصْبَاحِ الدُّجَی الْمُتَوَقِّدِ

या'नी जब अन्धेरी रात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस पेशानी ज़ाहिर होती है तो इस तरह चमकती है जिस तरह रात की तारीकी में रोशन चराग़ चमकते हैं।

आ'ला हज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

जिस के माथे शफ़ाअ़त का सहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम

दहन मुबारक

सुवाल : सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहन (मुंह) मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ आप क्या जानते हैं ?

जवाब : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सार नर्म व नाज़ुक और हमवार थे और मुंह फ़राख़, दांत कुशादा और रोशन थे । जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू फ़रमाते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों अगले दांतों के दरमियान से एक नूर निकलता था और जब कभी अन्धेरे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा देते तो मुबारक दांतों की चमक से रोशनी हो जाती थी ।(1)

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहन मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ।

जवाब : आ'ला हज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت दहन मुबारक की मद्ह में फ़रमाते हैं :

वोह दहन जिस की हर बात वह्ये ख़ुदा
चश्मए इल्मो हिक्मत पे लाखों सलाम

---

1 ......सीरते मुस्तफ़ा, स. 574 وشمائلِ محمدیہ، باب ماجاء فی خلق ...... الخ، ص ۲۱، ۲۲، حدیث:۷، ۱۴

जां निसाराने मुस्त़फ़ा

सुवाल: सब से पहले किस ने इस्लाम क़बूल किया ?

जवाब: मर्दों में सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने, बच्चों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने और औ़रतों में उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इस्लाम क़बूल किया ।

सुवाल: इस्लाम के लिये सब से पहले किस सह़ाबी ने ख़ून बहाया ?

जवाब: इस्लाम के लिये सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ून बहाया ।

सुवाल: इस्लाम के सब से बड़े दुश्मन अबू जह्ल को किस ने क़त्ल किया ?

जवाब: इस्लाम के सब से बड़े दुश्मन अबू जह्ल को ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ और सय्यिदुना मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने क़त्ल किया ।

सुवाल: अमीनुल उम्मत (उम्मत का अमीन) किस सह़ाबी का लक़ब है ?

जवाब: अमीनुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब है ।

सुवाल: मुअ़ल्लिमुल उम्मत (उम्मत का उस्ताज़) किस सह़ाबी का लक़ब है ?

जवाब: मुअ़ल्लिमुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब है ।

सुवाल शैख़ैन से कौन से सहाबए किराम मुराद हैं ?

जवाब शैख़ैन से मुराद अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہما हैं ।

सुवाल मेज़बाने रसूल किस सहाबी को कहते हैं ?

जवाब मेज़बाने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ को कहते हैं ।

सुवाल सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत (बीमारी) के दौरान किस सह़ाबी ने नमाज़ों में इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये ?

जवाब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत (बीमारी) के दौरान अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ ने इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये ।

सुवाल सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द कौन कौन से सह़ाबा ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल देने की सआ़दत ह़ासिल की ?

जवाब सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जिन सह़ाबा ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल देने की सआ़दत ह़ासिल की, उन के नाम येह हैं :

﴾1﴿....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

﴾2﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ

﴾3﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ

﴾4﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुस्म बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ

﴾5﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ

﴾6﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ

﴾7﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ ह़बशी رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ

सुवाल सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र मुबारक किस सह़ाबी ने तय्यार की ?

जवाब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा अन्सारी رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ ने तय्यार की ।
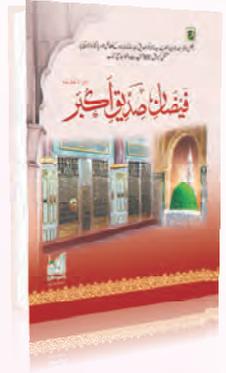
सुवाल उन सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का नाम बताइये जिन्हों ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे मुनव्वर में उतारने का शरफ़ पाया ?

जवाब जिन सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे मुनव्वर में उतारने का शरफ़ पाया उन के नाम येह हैं :

﴾1﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुस़म बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه

मह़बूबाने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा

सुवाल विलायत किसे कहते हैं ?

जवाब विलायत एक कुर्बे ख़ास़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने नेक बन्दों को मह़्ज़ अपने फ़ज़्लो करम से अ़त़ा फ़रमाता है ।

सुवाल क्या विलायत बे इ़ल्म को मिल सकती है ?

जवाब जी नहीं ! विलायत किसी बे इ़ल्म को नहीं मिल सकती बल्कि उस के लिये हुसूले इ़ल्म ज़रूरी है ।

सुवाल हुसूले इ़ल्म से क्या मुराद है ?

जवाब हुसूले इ़ल्म से मुराद येह है कि इ़ल्म ज़ाहिरी त़ौर पर ह़ासिल किया हो या विलायत के दरजे पर पहुंचने से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस पर उ़लूम को मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) फ़रमा दिया हो ।

सुवाल सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम किस उम्मत के हैं ?

जवाब सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के हैं ।

सुवाल क्या कोई वली किसी सह़ाबी से भी अफ़्ज़ल है ?

जवाब जी नहीं कोई वली कितने ही बड़े मर्तबे का हो, किसी सहाबी के रुत्बे को नहीं पहुंचता ।[1]

सुवाल क्या त़रीक़त शरीअ़त के ख़िलाफ़ है ?

जवाब जी नहीं त़रीक़त शरीअ़त ही का बात़िनी ह़िस्सा है ।[2]

सुवाल क्या कोई वली अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी से सुबुकदोश हो सकता है ?

जवाब जी नहीं अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी से कोई वली कैसा ही अ़ज़ीम हो, सुबुकदोश नहीं हो सकता ।[3]

सुवाल क्या अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की त़रह़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी बा'दे वफ़ात ह़यात (ज़िन्दा) हैं ?

जवाब जी हां ! अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की त़रह़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी बा'दे वफ़ात ह़यात (ज़िन्दा) हैं । चुनान्चे,

۞....आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 29 सफ़ह़ा 545 पर फ़रमाते हैं : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام बा'दे वफ़ात ज़िन्दा हैं, मगर न मिस्ले अम्बिया (या'नी अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रह़ ज़िन्दा नहीं क्यूंकि) अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़यात "रूह़ानी, जिस्मानी, दुन्यावी" है, (और येह) बिल्कुल उसी त़रह़ ज़िन्दा होते हैं जिस त़रह़ दुन्या में थे और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़यात इन से कम और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से ज़ाइद, जिन के बारे में कुरआने अ़ज़ीम में फ़रमाया : उन (या'नी शहीदों) को मुर्दा मत कहो वोह ज़िन्दा हैं ।[4]

۞.....ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی इरशाद

---

[1]......बहारे शरीअ़त, इमामत का बयान, 1/253

[2]......बहारे शरीअ़त, विलायत का बयान, 1/264 मुलतक़त़न

[3]......बहारे शरीअ़त, विलायत का बयान, 1/266

[4]......फ़तावा रज़विय्या, 29/545

फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली इस दारे फ़ानी (या'नी ख़त्म हो जाने वाली दुन्या) से दारे बक़ा (या'नी बाक़ी रहने वाले जहान) की त़रफ़ मुन्तक़िल (Transfer) हो जाते हैं, वोह अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है और ख़ुश व ख़ुर्रम हैं लेकिन लोगों को इस का शुऊ़र नहीं।[1]

۞.....ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْبَارِی ने इरशाद फ़रमाया : لَا فَرْقَ لَهُمْ فِي الْحَالَيْنِ وَلِذَا قِيلَ أَوْلِيَاءُ اللهِ لَا يَمُوتُونَ وَلٰكِنْ يَّنْتَقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ إِلٰى دَارٍ या'नी औलियाए किराम की दोनों ह़ालतों (या'नी ज़िन्दगी और मौत) में अस्लन फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर तशरीफ़ ले जाते हैं।[2]

औलिया हैं, कौन कहता मर गए　　फ़ानी घर से निकले बाक़ी घर गए

सुवाल : क्या ग़ैरुल्लाह से (या'नी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से बा'दे वफ़ात) मदद मांगना जाइज़ है?

जवाब : जी हां ग़ैरुल्लाह से (या'नी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से बा'दे वफ़ात) मदद मांगना जाइज़ है। चुनान्चे, शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना शहाब रमली अन्सारी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1004 हि.) से फ़तवा त़लब किया गया : (या सय्यिदी ! इरशाद फ़रमाइये :) आ़म लोग जो सख़्तियों (या'नी मुसीबतों) के वक़्त मसलन "या शैख़ फ़ुलां !" कह कर पुकारते हैं और अम्बियाए किराम व औलियाए इ़ज़ाम से फ़रियाद करते हैं, इस का शरअ़ शरीफ़ में क्या हुक्म है? तो आप ने फ़तवा दिया : अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलिया व उ़लमा व सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن से इन के विसाल (या'नी इन्तिक़ाल) शरीफ़ के बा'द भी इस्तिआ़नत व इस्तिमदाद (या'नी मदद त़लब करना) जाइज़ है।[3]

सुवाल : हम اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़नफ़ी हैं, तो क्या हमारे इमाम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से भी ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना साबित है?

जवाब : जी हां ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे इमाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू

---

[1] ......اشعة اللمعات، ٣/٤٢٣ مُلَخَّصًا

[2] ......مرقاة المفاتيح، ٣/٤٥٩

[3] ......فتاوی رملی، ٤/٧٣٣

हनीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से भी ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना साबित है। चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बारगाहे रिसालत में मदद की दरख़्वास्त करते हुवे "क़सीदए नो'मान" में अ़र्ज़ करते हैं :

يَا اَكْرَمَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَنْزَ الْوَرٰى　　جُدْ لِيْ بِجُوْدِكَ وَاَرْضِنِيْ بِرِضَاكَ

اَنَا طَامِعٌ بِالْجُوْدِ مِنْكَ لَمْ يَكُنْ　　لِاَبِيْ حَنِيْفَةَ فِي الْاَنَامِ سِوَاكَ

या'नी ऐ जिन्न व इन्स से बेहतर और ने'मते इलाही के ख़ज़ाने ! मुझे अपनी जूदो सख़ा में से अ़ता फ़रमाइये और अपनी रिज़ा से भी नवाज़िये। मैं आप की सख़ावत का उम्मीदवार हूं, आप के सिवा अबू हनीफ़ा का मख़्लूक़ में कोई नहीं।[1]

मज़ारात पर हाज़िरी और ज़ियारते क़ुबूर

ज़ियारते क़ुबूर का शरई हुक्म

सुवाल : मज़ारात पर हाज़िरी या आ़म अफ़राद की क़ुबूर की ज़ियारत का क्या हुक्म है ?

जवाब : मज़ारात पर हाज़िरी या आ़म अफ़राद की क़ुबूर की ज़ियारत जाइज़ व मुस्तहब बल्कि मस्नून (या'नी सुन्नत) है, आक़ाए दो जहान, मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शुहदाए उहुद की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते[2] और उन के लिये दुआ़ फ़रमाते और येह भी इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग क़ब्रों की ज़ियारत करो, वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब हैं और आख़िरत याद दिलाती हैं।[3]

सुवाल : क्या मज़ाराते औलियाए किराम पर हाज़िरी बाइसे बरकत है ?

जवाब : जी हां ! ज़ियारते मज़ाराते औलियाए किराम मूजिबे हज़ारां हज़ार बरकत व सआ़दत है।[4]

---

[1]...... قصيدۂ نعمانيه مع الخيرات الحسان، ص ٢٠٠

[2]...... ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ٣/١٧٧ و
المصنف لعبد الرزاق، كتاب الجنائز، باب في زيارة القبور، ٣/٣٨١، حديث: ٦٧٤٥

[3]...... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في زيارة القبور، ٢/٢٥٢، حديث: ١٥٧١

[4]......फ़तावा रज़विय्या, 29/282

ज़ियारते क़ुबूर का मुस्तहब त़रीक़ा

सुवाल ज़ियारते क़ुबूर का मुस्तह़ब त़रीक़ा क्या है ?

जवाब जब भी कोई ज़ियारते क़ुबूर को जाए तो दर्जे ज़ैल उमूर पर अ़मल करना मुस्तह़ब है :

❁.....पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा के बा'द एक बार आयतुल कुरसी, और तीन बार सूरतुल इख़्लास पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साह़िबे क़ब्र को पहुंचाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा।[1]

❁.....क़ब्रिस्तान को जाए तो रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो।

❁.....जब क़ब्रिस्तान पहुंचे तो पाइंती (پا۔اِن۔تی या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जा कर इस त़रह़ खड़ा हो कि क़िब्ले को पीठ हो और मय्यित के चेहरे की त़रफ़ मुंह। मय्यित के सिरहाने से न आए कि मय्यित के लिये बाइसे तक्लीफ़ है या'नी मय्यित को गर्दन फैर कर देखना पड़ता है कि कौन आया है ?[2]

❁.....इस के बा'द येह कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَآ اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ [3]

तर्जमा : सलामती हो तुम पर ऐ अहले क़ब्रिस्तान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।

❁.....या यूं कहे :

---
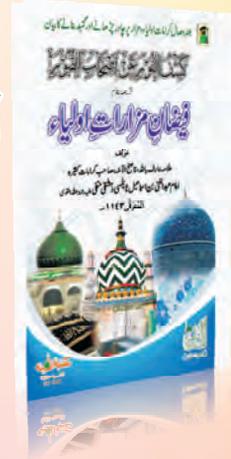
[1] ……عالمگیری، کتاب الکراھیة، الباب السادس عشر فی زیارة القبور……الخ، ۳۵۰/۵

[2] ……ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ۱۷۹/۳

[3] ……ترمذی، کتاب الجنائز، باب مایقول الرجل……الخ، ۳۲۹/۲، حدیث: ۱۰۵۵

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ [1]

तर्जमा : ऐ मुसलमान क़ौम के घर वालो तुम्हें सलाम ! तुम हम से पहले गए और हम तुम्हारे बा'द तुम से मिलने वाले हैं । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

- ..... और सूरए फ़ातिहा व आयतुल कुरसी और सूरए ज़िलज़ाल व तकासुर पढ़े । सूरए मुल्क और दूसरी सूरतें भी पढ़ सकता है और इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए ।
- .....अगर बैठना चाहे तो इतने फ़ासिले पर बैठे जितना ज़िन्दगी में दूर या नज़्दीक बैठते थे ।[2]

ज़ियारते क़ुबूर के लिये दिन या वक़्त मुक़र्रर करना

सुवाल : क्या ज़ियारत के लिये कोई ख़ास दिन या वक़्त मुक़र्रर है ?

जवाब : जी नहीं ! ज़ियारत के लिये कोई ख़ास दिन या वक़्त मुक़र्रर नहीं, अलबत्ता ! चार दिन ज़ियारत के लिये बेहतर ज़रूर हैं : पीर, जुमा'रात, जुमुआ़ और हफ़्ता ।

सुवाल : ज़ियारत के लिये सब से अफ़्ज़ल दिन या वक़्त कौन सा है ?

जवाब : ज़ियारत के लिये सब से अफ़्ज़ल रोज़ जुमुआ़ है । अगर जुमुआ़ के दिन जाना हो तो नमाज़े जुमुआ़ से पहले जाना अफ़्ज़ल है और हफ़्ते के दिन तुलूए आफ़्ताब तक, जुमा'रात को दिन के अव्वल वक़्त और बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि आख़िर वक़्त में अफ़्ज़ल है । इसी त़रह़ मुतबर्रक रातों में भी ज़ियारत अफ़्ज़ल है मसलन शबे बराअत, शबे क़द्र, वग़ैरा । यूंही ईदैन के दिन और अ़शरए ज़िल ह़िज्जा में भी बेहतर है ।[3]

---

[1]……बहारे शरीअ़त, किताबुल जनाइज़, ज़ियारते क़ुबूर, 1/849 मुख़्तसरन

[2]……ردّالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ۳/۱۷۹

[3]……हमारा इस्लाम, हिस्सा 5, बाब दुवुम, स. 360 बित्तग़य्युरिन

तीसरा बाब एक नज़र में

क्या आप ने हिजरत से क़ब्ल सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्र मुबारक की निस्बत से तीसरे बाब में बयान कर्दा दर्जे ज़ैल 53 सुवालात के जवाबात जान लिये हैं ?

1. हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के किस ख़ानदान से था ?
2. हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस नबी की अवलाद में से हैं ?
3. हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दरमियान कितने वासित़े (या'नी बाप दादा) हैं?
4. हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुख़्तसर नसब शरीफ़ बताइये ।
5. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कितने चचा थे ?
6. क्या सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब चचा मुसलमान हो गए थे ?
7. हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की ता'दाद कितनी थी ?
8. उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के अस्माए मुबारका बताइये ।
9. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादे कितने थे ? उन के नाम बताइये ।
10. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादियां कितनी थीं और उन के नाम क्या थे ?
11. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर कैसा था ?
12. क्या हमारे सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से भी ज़ियादा ह़सीन थे ?
13. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर के हुस्न के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के कोई दो शे'र सुनाइये ।
14. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखें कैसी थीं ?
15. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों की बसारत (देखने की कुव्वत) कैसी थी ?
16. सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानी आंखों की अ़ज़्मत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ अश्आ़र सुनाइये ।

17 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गोश या'नी कान मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताइये ?

18 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुव्वते समाअ़त (सुनने की कुव्वत) कैसी थी ?

19 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की समाअ़त मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ।

20 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अब्रू या'नी भवें कैसी थीं ?

21 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भवों के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ?

22 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बीनी या'नी नाक मुबारक कैसी थी ?

23 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बीनी मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ?

24 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जबीन या'नी पेशानी मुबारक कैसी थी ?

25 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ?

26 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दहन (मुंह) मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ आप क्या जानते हैं ?

27 सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दहन मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ कोई शे'र सुनाइये ?

28 सब से पहले किस ने इस्लाम क़बूल किया ?

29 इस्लाम के लिये सब से पहले किस सहाबी ने ख़ून बहाया ?

30 इस्लाम के सब से बड़े दुश्मन अबू जह्ल को किस ने क़त्ल किया ?

31 अमीनुल उम्मत (उम्मत का अमीन) किस सहाबी का लक़ब है ?

32 मुअ़ल्लिमुल उम्मत (उम्मत का उस्ताज़) किस सहाबी का लक़ब है ?

33 शैख़ैन से कौन से सहाबए किराम मुराद हैं ?

34 मेज़बाने रसूल किस सहाबी को कहते हैं ?

35 सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़लालत (बीमारी) के दौरान किस सहाबी ने नमाज़ों में इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये ?

36 सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द कौन कौन से सहाबा ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल देने की सआ़दत ह़ासिल की ?

37 सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक किस सहाबी ने तय्यार की ?

38 उन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का नाम बताइये जिन्हों ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे मुनव्वर में उतारने का शरफ़ पाया ?

39 विलायत किसे कहते हैं ?

40 क्या विलायत बे इल्म को मिल सकती है ?

41 हुसूले इल्म से क्या मुराद है ?

42 सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम किस उम्मत के हैं ?

43 क्या कोई वली किसी सहाबी से भी अफ़्ज़ल है ?

44 क्या त़रीक़त शरीअ़त के ख़िलाफ़ है ?

45 क्या कोई वली अहकामे शरइय्या की पाबन्दी से सुबुकदोश हो सकता है ?

46 क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की त़रह़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام भी बा'दे वफ़ात ह़यात (ज़िन्दा) हैं ?

47 क्या ग़ैरुल्लाह से (या'नी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से बा'दे वफ़ात) मदद मांगना जाइज़ है ?

48 हम اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़नफ़ी हैं, तो क्या हमारे इमाम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से भी ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना साबित है ?

49 मज़ारात पर ह़ाज़िरी या आ़म अफ़राद की क़ुबूर की ज़ियारत का क्या हुक्म है ?

50 क्या मज़ाराते औलियाए किराम पर ह़ाज़िरी बाइसे बरकत है ?

51 ज़ियारते क़ुबूर का मुस्तह़ब त़रीक़ा क्या है ?

52 क्या ज़ियारत के लिये कोई ख़ास दिन या वक़्त मुक़र्रर है ?

53 ज़ियारत के लिये सब से अफ़्ज़ल दिन या वक़्त कौन सा है ?

बाब : 4

इ़बादात

इस बाब में आप पढ़ेंगे

तह़ारत में नजासत की अक़्साम व अह़काम, ग़ुस्ल व तयम्मुम का त़रीक़ा व आदाब, अज़ान, इक़ामत, इमामत व इक़्तिदा की शराइत़, नमाज़े तरावीह़ व वित्र की अदाएगी का त़रीक़ा और अह़काम व मसाइल, सजदए सह्व व सजदए तिलावत का त़रीक़ा व अह़काम, नमाज़े जुमुआ़ के फ़ज़ाइल व अह़काम और ख़ुत़बाते जुमुआ़, नमाज़े ई़दैन का त़रीक़ा, नमाज़े जनाज़ा मअ़ तजहीज़ व तक्फ़ीन और तदफ़ीन व तल्क़ीन वग़ैरा के अह़काम व मसाइल, रोज़ा, ज़कात, सदक़ए फ़ित्र, ह़ज व क़ुरबानी के मुतअ़ल्लिक़ सुवालन जवाबन मुख़्तसर बुन्यादी बातें

तहारत

तहारत के मसाइल

सुवाल तहारत का क्या मत्लब है ?

जवाब तहारत का मत्लब येह है कि नमाज़ी का बदन, उस के कपड़े और वोह जगह जिस पर नमाज़ पढ़नी है नजासत से पाक साफ़ हो ।

सुवाल तहारत की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब तहारत की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿....तहारते सुग़रा ﴾2﴿.....तहारते कुब्रा । तहारते सुग़रा से मुराद वुज़ू और तहारते कुब्रा से मुराद ग़ुस्ल है ।[1]

नजासत की अक़्साम

सुवाल नजासत की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब नजासत की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿....हुक्मिय्या ﴾2﴿....ह़क़ीक़िय्या

सुवाल नजासते हुक्मिय्या से क्या मुराद है ?

जवाब नजासते हुक्मिय्या वोह है जो नज़र नहीं आती, या'नी सिर्फ़ शरीअ़त के हुक्म से उसे नापाकी कहते हैं जैसे बे वुज़ू होना या ग़ुस्ल की ह़ाजत होना ।

सुवाल नजासते हुक्मिय्या से पाक होने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब इस नजासत से पाक होने का त़रीक़ा येह है कि जहां वुज़ू करना लाज़िमी हो वहां वुज़ू कर लिया जाए और जहां ग़ुस्ल की ह़ाजत हो वहां ग़ुस्ल कर लिया जाए ।

---

[1]......बहारे शरीअ़त, किताबुत्तहारत, 1/282

सुवाल नजासते हक़ीक़िय्या से क्या मुराद है ?

जवाब नजासते हक़ीक़िय्या वोह नापाक चीज़ है जो कपड़े या बदन वग़ैरा पर लग जाए तो ज़ाहिर तौर पर मा'लूम हो जाती है जैसे पाख़ाना पेशाब वग़ैरा ।

सुवाल नजासते हक़ीक़िय्या से पाक होने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब इस से पाक होने का त़रीक़ा येह है कि कपड़े या बदन वग़ैरा को इस नापाक चीज़ से धो कर पाक किया जाए । नजासते हक़ीक़िय्या की भी दो क़िस्में हैं :
﴾1﴿....नजासते ग़लीज़ा ﴾2﴿.....नजासते ख़फ़ीफ़ा

नजासते ग़लीज़ा

सुवाल नजासते ग़लीज़ा का हुक्म क्या है ?

जवाब नजासते ग़लीज़ा का हुक्म सख़्त है और वोह येह है :

- .....अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है । बे पाक किये नमाज़ नहीं होगी ।
- .....अगर दिरहम के बराबर है तो पाक करना वाजिब है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो मकरूहे तह़रीमी हुई, या'नी ऐसी नमाज़ का इआ़दा वाजिब है ।
- .....अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई, इआ़दा बेहतर है ।

सुवाल नजासते ग़लीज़ा के दिरहम या इस से कम या ज़ियादा होने से क्या मुराद है ?

जवाब नजासते ग़लीज़ा का दिरहम या इस से कम या ज़ियादा होने से मुराद येह है कि नजासते ग़लीज़ा अगर गाढ़ी हो मसलन पाख़ाना, लीद वग़ैरा तो दिरहम से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशा (या'नी 4.374 ग्राम) है, लिहाज़ा अगर नजासत दिरहम से ज़ियादा या कम है तो इस से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशे से कम या ज़ियादा होना है और अगर नजासते ग़लीज़ा पतली हो जैसे पेशाब वग़ैरा तो दिरहम से मुराद लम्बाई चौड़ाई है या'नी हथेली को ख़ूब फैला कर हमवार रखिये और इस पर आहिस्तगी से इतना पानी डालिये कि इस से ज़ियादा पानी न रुक सके, अब जितना पानी का

फैलाव है उतना बड़ा दिरहम समझा जाएगा ।[1] किसी कपड़े या बदन पर चन्द जगह नजासते ग़लीज़ा लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं, मगर मजमूआ दिरहम के बराबर है तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद । नजासते ख़फ़ीफ़ा में भी मजमूए ही पर हुक्म दिया जाएगा ।[2]

सुवाल कौन कौन सी चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं ?

जवाब आदमी का पेशाब, पाख़ाना, बहता ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै, दुखती आंख का पानी, हराम चोपायों का पेशाब पाख़ाना, घोड़े की लीद और हर हलाल जानवर का गोबर, मेंगनी, मुर्ग़ी या बत़ की बीट, हर क़िस्म की शराब, सुवर का गोश्त और हड्डी और बाल, छिपकली या गिरगिट का ख़ून और दरिन्दे चोपायों का थूक येह सब चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं । इस के इलावा दूध पीते बच्चे या बच्ची का पेशाब और इन की क़ै भी अगर मुंह भर है नजासते ग़लीज़ा है और येह जो लोगों में मश्हूर है कि "दूध पीते बच्चों का पेशाब पाक है" मह़ज़ ग़लत़ है ।[3]

नजासते ख़फ़ीफ़ा

सुवाल नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म क्या है ?

जवाब नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म हलका है या'नी कपड़े के हिस्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी हो :

- .....अगर उस की चौथाई से कम है तो मुआफ़ है ।
- .....अगर चौथाई के बराबर हो तो उस का धोना वाजिब है ।
- ..... अगर ज़ियादा हो तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है । बे धोए नमाज़ होगी ही नहीं ।[4]

सुवाल नजासते ख़फ़ीफ़ा कौन कौन सी चीज़ें हैं ?

---

1 ·····बहारे शरीअ़त, नजासतों का बयान, नजासतों के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम, 1/389

2 ......المرجع السابق، ا/ ٣٩٣

3 ......المرجع السابق، ا/ ٣٩٠، ٣٩١ ملتقطاً

4 ......المرجع السابق، ا/ ٣٨٧

जवाब हलाल जानवरों और घोड़े का पेशाब और हराम परन्दों की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है और अगर नजासते ग़लीज़ा, ख़फ़ीफ़ा में मिल जाए तो कुल ग़लीज़ा है।[1]

सुवाल बदन या कपड़ा नजिस हो जाए तो पाक करने का क्या त़रीक़ा है?

जवाब बदन या कपड़ा नजिस हो जाए तो इन्हें पाक करने के दो त़रीक़े हैं :

1.....: नजासत अगर पतली हो तो बदन या कपड़ा तीन मरतबा धोने से पाक हो जाएगा, मगर कपड़े को तीनों मरतबा अपनी पूरी क़ुव्वत से इस त़रह़ निचोड़ना ज़रूरी है कि इस से मज़ीद कोई क़त़रा न टपके, पहली और दूसरी बार निचोड़ कर हाथ भी धो ले। जब कि तीसरी मरतबा निचोड़ने में कपड़ा और हाथ दोनों पाक हो जाएंगे और अगर नजासत दलदार (या'नी मोटी, दबीज़) हो जैसे गोबर, ख़ून, पाख़ाना वग़ैरा तो इस को दूर करना ज़रूरी है। गिनती की कोई शर्त़ नहीं अगर्चे चार पांच मरतबा धोना पड़े।[2] मगर येह तीन मरतबा धोने और निचोड़ने का हुक्म उस वक़्त है जब थोड़े पानी में धोया हो।

2.....: अगर ह़ौज़े कबीर (जिस की मिक़दार दह दर दह या'नी 25 गज़ या 225 फ़ुट हो या फिर इस से बड़े ह़ौज़, नहर, नदी, समुन्दर वग़ैरा) में धोया हो या (नल, पाइप या लोटे वग़ैरा के ज़रीए) बहुत सा पानी इस पर बहाया या (दरिया वग़ैरा) बहते पानी में धोया तो निचोड़ने की शर्त़ नहीं।[3] बल्कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : दरी या टाट या कोई नापाक कपड़ा बहते पानी में रात भर पड़ा रहने दें पाक हो जाएगा और अस्ल येह है कि जितनी देर में येह ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया, पाक हो गया कि बहते पानी से पाक करने में निचोड़ना शर्त़ नहीं।[4]

---

1 ..... बहारे शरीअ़त, नजासतों का बयान, नजासतों के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम, 1/391, 392 मुलतक़त़न

2 ..... बहारे शरीअ़त, नजासतों का बयान, नजिस चीज़ों के पाक करने का त़रीक़ा, 1/397, 398 मुलतक़त़न

3 ..... फ़तावा अमजदिय्या, 1/53

4 ..... बहारे शरीअ़त, नजासतों का बयान, नजिस चीज़ों के पाक करने का त़रीक़ा, 1/399

ग़ुस्ल

ग़ुस्ल के फ़राइज़

सुवाल ग़ुस्ल के कितने फ़र्ज़ हैं ? और इन से क्या मुराद है ?

जवाब ग़ुस्ल के तीन फ़र्ज़ हैं :

﴾1﴿.....कुल्ली करना : मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पिच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुर्ज़े, गोशे, होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए ।[1]

﴾2﴿.....नाक में पानी चढ़ाना : जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ़ तक धुलना लाज़िमी है ।[2]

﴾3﴿.....तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना : सर के बालों से ले कर पाउं के तलवों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर हर रोंगटे पर पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि अगर एह़तियात़ न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और ग़ुस्ल न होगा ।[3]

ग़ुस्ल का त़रीक़ा

۞.....बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये ग़ुस्ल करता हूं ।

۞.....पहले दोनों हाथ पहोंचों तक तीन तीन बार धोइये ।

۞.....फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो ।

---

[۱]......خلاصۃ الفتاوی، کتاب الطھارۃ، الفصل الثالث، سنن الوضوء، الجزء الاول، ۱ / ۲۱

[۲]......المرجع السابق

[۳]......عالمگیری، کتاب الطھارۃ، الباب الثانی، الفصل الثانی، ۱ / ۱۴

۞..... फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये ।

۞..... फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, हां अगर चोकी वग़ैरा पर ग़ुस्ल कर रहे हैं या ऐसी जगह पर हैं जहां पानी ठहरता नहीं तो पाउं भी धो लीजिये ।

۞.... फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं)

۞..... फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये । फिर तीन बार उलटे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार ।

۞..... फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये ।

आदाबे ग़ुस्ल

सुवाल: नहाने में किन बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

जवाब: नहाने में दर्जे ज़ैल बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये :

۞.....नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों ।

۞.....तमाम बदन पर हाथ फेर कर मल कर नहाइये ।

۞.....ऐसी जगह नहाएं कि किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुमकिन न हो तो मर्द अपना सतर (नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े ले, क्यूंकि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَ اللّٰه घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी । औ़रत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है ।

۞.....दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्त्गू मत कीजिये ।

۞.....कोई दुआ़ भी न पढ़िये ।

۞.....नहाने के बा'द तोलिये वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं ।

۞.....नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये । अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना मुस्तह़ब है ।[1]

---

[1]......नमाज़ के अह़काम, ग़ुस्ल का त़रीक़ा, स. 100 मुलतक़त़न

बे वुज़ू या बे ग़ुस्ल के लिये ममनूअ़ काम

सुवाल : नापाकी की ह़ालत में कौन कौन से काम नहीं कर सकते ?

जवाब : नापाकी की ह़ालत में येह काम करना मन्अ़ हैं :

﴾1﴿.....जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस पर दर्जे ज़ैल काम करना ह़राम हैं :

- .....मस्जिद में जाना
- .....त़वाफ़ करना
- .....क़ुरआने पाक छूना
- ..... बे छूए ज़बानी पढ़ना[1]
- .....किसी आयत का लिखना
- .....आयत का ता'वीज़ लिखना
- .....ऐसा ता'वीज़ या अंगूठी छूना या पहनना जिस पर आयत या ह़ुरूफ़े मुक़त्त़आ़त लिखे हों ह़राम है ।[2]

(मौम जामे वाले या प्लास्टिक में लपेट कर कपड़े या चमड़े वग़ैरा में सिले हुवे ता'वीज़ को पहनने या छूने में मुज़ायक़ा नहीं)

﴾2﴿.....जो बे वुज़ू हो उस पर दर्जे ज़ैल काम करना ह़राम है :

- .....जिस बरतन या कटोरे पर कोई सूरत या आयते मुबारका लिखी हो बे वुज़ू और बे ग़ुस्ल दोनों को उस का छूना ह़राम है ।[3]
- ..... क़ुरआने पाक का तर्जमा फ़ारसी या उर्दू या किसी दूसरी ज़बान में हो उस को भी पढ़ने या छूने में क़ुरआने पाक ही का सा ह़ुक्म है ।[4]

बे वुज़ू या बे ग़ुस्ल के लिये जाइज़ काम

सुवाल : नापाकी की ह़ालत में कौन कौन से काम करने में कोई ह़रज नहीं ?

जवाब : नापाकी की ह़ालत में दर्जे ज़ैल काम करने में कोई ह़रज नहीं :

﴾1﴿.....जो बे वुज़ू हो वोह दर्जे ज़ैल काम कर सकता है :

---

[1]……درمختار، کتاب الطھارۃ، ١/٣٤٣، ٣٤٨

[2]……बहारे शरीअ़त, ग़ुस्ल का बयान, 1/326

[3]……عالمگیری، کتاب الطھارۃ، الباب السادس، الفصل الرابع، ١/٣٩

[4]……बहारे शरीअ़त, ग़ुस्ल का बयान, 1/327

۞.....अगर कुरआने पाक जुज़्दान (या'नी गिलाफ़) में हो तो बे वुज़ू या बे गुस्ल जुज़्दान पर हाथ लगाने में हरज नहीं ।[1]

۞.....किसी ऐसे कपड़े या रूमाल वग़ैरा से कुरआने पाक पकड़ना जाइज़ है जो न अपने ताबेअ़ हो न कुरआने पाक के ।[2]

۞.....बे वुज़ू को कुरआने मजीद या उस की किसी आयत का छूना हराम है । बे छूए ज़बानी या देख कर पढ़े तो कोई हरज नहीं ।[3]

﴾1﴿.....जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो वोह दर्जे ज़ैल काम कर सकता है :

۞.....कुरआने पाक की आयत दुआ की निय्यत से या तबर्रुक के लिये मसलन بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○ या अदाए शुक्र के लिये اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ या किसी मुसलमान की मौत या किसी क़िस्म के नुक़्सान की ख़बर पर اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ ﴿۱۵۶﴾ؕ या सना की निय्यत से पूरी सूरए फ़ातिहा या आयतुल कुरसी या सूरए हश्र की आख़िरी तीन आयात पढ़ें और इन सब सूरतों में कुरआन पढ़ने की निय्यत न हो तो कोई हरज नहीं ।[4]

۞.....आख़िरी तीनों कुल बिला लफ़्ज़े कुल ब निय्यते सना पढ़ सकते हैं । लफ़्ज़े कुल के साथ सना की निय्यत से भी नहीं पढ़ सकते क्यूंकि इस सूरत में इन का कुरआन होना मुतअ़य्यन है, निय्यत को कुछ दख़्ल नहीं ।[5]

۞.....कुरआने मजीद देखने में कुछ हरज नहीं अगर्चे हुरूफ़ पर नज़र पड़े और अल्फ़ाज़ समझ में आएं और ख़याल में पढ़ते जाएं, क्यूंकि ख़याल में पढ़ने का ए'तिबार नहीं ।

۞.....दुरूद शरीफ़ और दुआओं के पढ़ने में हरज नहीं मगर बेहतर येह है कि वुज़ू या कुल्ली कर के पढ़ें ।

۞.....अज़ान का जवाब देना भी जाइज़ है ।

---

[1]......الهداية، كتاب الطهارات، باب الحيض والاستحاضة، ١/٣٣

[2]......ردالمحتار، كتاب الطهارة، مطلب يطلق الدعاء......الخ، ١/٣٤٨

[3]......المرجع السابق

[4]......عالمگیری، کتاب الطهارة، الباب السادس، الفصل الرابع، ١/٣٨ व बहारे शरीअ़त, गुस्ल का बयान, 1/326

[5]......बहारे शरीअ़त, गुस्ल का बयान, 1/326

तयम्मुम

सुवाल तयम्मुम क्या है ?

जवाब तयम्मुम अस्ल में वुज़ू और ग़ुस्ल का बदल है, या'नी जिस का वुज़ू न हो या नहाने की ज़रूरत हो और पानी पर क़ुदरत न हो तो वोह वुज़ू और ग़ुस्ल की जगह तयम्मुम कर सकता है।

सुवाल क्या वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम में कोई फ़र्क़ है ?

जवाब जी नहीं ! वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम में कोई फ़र्क़ नहीं ।

सुवाल अगर किसी पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो तो क्या वोह ग़ुस्ल का तयम्मुम कर के नमाज़ वग़ैरा पढ़ सकता है या नमाज़ के लिये अलग से वुज़ू का तयम्मुम करना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां ! अगर किसी पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो तो वोह तयम्मुम कर के नमाज़ वग़ैरा पढ़ सकता है और उस के लिये येह ज़रूरी नहीं कि ग़ुस्ल और वुज़ू दोनों के लिये दो तयम्मुम करे बल्कि एक ही में दोनों की निय्यत कर ले दोनों हो जाएंगे और अगर सिर्फ़ ग़ुस्ल या वुज़ू की निय्यत की जब भी काफ़ी है।

सुवाल क्या तयम्मुम का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में भी है ?

जवाब जी हां ! तयम्मुम का ज़िक्र पारह 6 सूरए माइदह की आयत नम्बर 6 में कुछ यूं आया है :

وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآىٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ

(پ٦، المائدة:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए हाजत से आया या तुम ने औरतों से सोहबत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह करो ।

तयम्मुम के फ़राइज़

सुवाल तयम्मुम के कितने फ़र्ज़ हैं ?

जवाब तयम्मुम के तीन फ़र्ज़ हैं :
﴾1﴿.....निय्यत ﴾2﴿.....सारे मुंह पर हाथ फेरना ﴾3﴿.....कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह़ करना ।

सुवाल तयम्मुम में निय्यत से क्या मुराद है ?

जवाब तयम्मुम करते वक़्त येह निय्यत होना फ़र्ज़ है : बे वुज़ू या बे ग़ुस्ली या दोनों से पाकी ह़ासिल करने और नमाज़ वग़ैरा जाइज़ होने के लिये तयम्मुम करता हूं । याद रखिये कि निय्यत अगर्चे दिल के इरादे का नाम है मगर ज़बान से भी कह लेना बेहतर है ।

सुवाल तयम्मुम में सारे मुंह पर हाथ फेरते हुवे किन बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

जवाब तयम्मुम में सारे मुंह पर हाथ फेरते हुवे दर्जे ज़ैल बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये :

- .....हाथ इस त़रह़ फेरा जाए कि मुंह का कोई ह़िस्सा बाक़ी न रह जाए अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मुम न हुवा ।
- .....दाढ़ी, मूंछों और भवों के बालों पर हाथ फिर जाना ज़रूरी है ।
- .....भवों के नीचे और आंखों के ऊपर जो जगह है उस का और नाक के निचले ह़िस्से का ख़याल रखें कि अगर ख़याल न रखेंगे तो इन पर हाथ न फिरेगा और तयम्मुम न होगा ।
- ..... .ज़ोर से आंखें बन्द कर लीं जब भी तयम्मुम न होगा ।
- ..... .होंट का वोह ह़िस्सा जो आ़दतन मुंह बन्द होने की ह़ालत में दिखाई देता है उस पर भी मस्ह़ हो जाना ज़रूरी है तो अगर किसी ने हाथ फेरते वक़्त होंटों को ज़ोर से दबा लिया कि कुछ ह़िस्सा बाक़ी रह गया तो तयम्मुम न हुवा ।

सुवाल तयम्मुम में कोहनियों समेत दोनों हाथों के मस्ह़ के दौरान क्या एह़तियात़ करनी चाहिये ?

जवाब तयम्मुम में कोहनियों समेत दोनों हाथों के मस्ह़ के दौरान येह ख़याल रखना चाहिये कि कोई जगह ज़र्रा बराबर बाक़ी न रहे वरना तयम्मुम न होगा और इस के लिये अंगूठी छल्ले या कंगन चूड़ियां वग़ैरा पहने हों तो इन्हें उतार कर इन के नीचे हाथ फेरना फ़र्ज़ है ।

तयम्मुम की सुन्नतें

सुवाल तयम्मुम की सुन्नतें कितनी हैं ?

जवाब तयम्मुम की दस सुन्नतें हैं :

﴾1﴿.....बिस्मिल्लाह शरीफ़ कहना । ﴾2﴿..... हाथों को ज़मीन पर मारना ।
﴾3﴿.....ज़मीन पर हाथ मार कर लौट देना ।[1] ﴾4﴿.....उंगलियां खुली हुई रखना ।
﴾5﴿.....हाथों को झाड़ लेना या'नी एक हाथ के अंगूठे की जड़ को दूसरे हाथ के अंगूठे की जड़ पर मारना मगर येह एह़तियात़ रहे कि ताली की आवाज़ पैदा न हो ।
﴾6﴿.....पहले मुंह फिर हाथों का मस्ह़ करना । ﴾7﴿.....दोनों का मस्ह़ पै दर पै होना ।
﴾8﴿.....पहले सीधे फिर उलटे हाथ का मस्ह़ करना । ﴾9﴿.....दाढ़ी का ख़िलाल करना ।
﴾10﴿.....उंगलियों का ख़िलाल करना जब कि ग़ुबार पहुंच गया हो । अगर ग़ुबार न पहुंचा हो मसलन पथ्थर वग़ैरा किसी ऐसी चीज़ पर हाथ मारा जिस पर ग़ुबार न हो तो ख़िलाल फ़र्ज़ है ख़िलाल के लिये दोबारा ज़मीन पर हाथ मारना ज़रूरी नहीं ।[2]

तयम्मुम का त़रीक़ा

۞.....तयम्मुम की निय्यत कीजिये ।

---

[1]......या'नी हाथों को पहले आगे बढ़ाना फिर पीछे लाना ।

[2]......बहारे शरीअ़त, तयम्मुम का बयान, 4/356

❁..... बिस्मिल्लाह पढ़ कर दोनों हाथों की उंगलियां कुशादा कर के किसी ऐसी पाक चीज़ पर जो ज़मीन की जिन्स (मसलन पथ्थर, चूना, ईंट, दीवार, मिट्टी वग़ैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाइये फिर पीछे लाइये) ।

❁..... अगर ज़ियादा गर्द लग जाए तो झाड़ लीजिये और इस से सारे मुंह का इस त़रह़ मस्ह़ कीजिये कि कोई ह़िस्सा रह न जाए अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मुम न होगा ।

❁..... फिर दूसरी बार इसी त़रह़ हाथ ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों का नाख़ुनों से ले कर कोहनियों समेत मस्ह़ कीजिये ।

❁..... इस का बेहतर त़रीक़ा येह है कि उलटे हाथ के अंगूठे के इलावा चार उंगलियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंगलियों के सिरों से कोहनी तक ले जाइये और फिर वहां से उलटे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को मस करते हुवे गट्टे तक लाइये और उलटे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मस्ह़ कीजिये । इसी त़रह़ सीधे हाथ से उलटे हाथ का मस्ह़ कीजिये ।

❁..... और अगर एक दम पूरी हथेली और उंगलियों से मस्ह़ कर लिया तब भी तयम्मुम हो गया चाहे कोहनी से उंगलियों की त़रफ़ लाए या उंगलियों से कोहनी की त़रफ़ ले गए मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ हुवा । तयम्मुम में सर और पाउं का मस्ह़ नहीं है ।[1]

❁......❁......❁

सूरए तक्वीर की फ़ज़ीलत

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمةُ اللهِ الْهَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में सूरए तक्वीर के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : सूरए कुव्विरत मक्किया है, इस में एक रुकूअ़, 29 आयतें, 104 कलिमे, 530 ह़र्फ़ हैं । ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि रोज़े क़ियामत को ऐसा देखे गोया कि वोह नज़र के सामने है तो चाहिये कि सूरए اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ और सूरए اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ और सूरए اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ पढ़े । (तिर्मिज़ी)

[1]……नमाज़ के अह़काम, स. 128

अज़ान का बयान

सुवाल अज़ान से क्या मुराद है ?

जवाब अज़ान से मुराद वोह मख़्सूस ए'लान है जो पंज वक़्ता नमाज़ से पहले मख़्सूस अल्फ़ाज़ में किया जाता है ताकि नमाज़ी मस्जिद में आ कर बा जमाअ़त अपने रब की बारगाह में ह़ाज़िर हो सकें।

सुवाल अज़ान देने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब अज़ान देने का त़रीक़ा येह है :

۞.....अज़ान कहने वाला बा वुज़ू क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करे।

۞.....मस्जिद के बाहर बुलन्द जगह पर खड़ा हो।

۞.....कानों के सूराख़ों में शहादत की उंगलियां डाले।

۞.....अज़ान के कलिमात बुलन्द आवाज़ से ठहर ठहर कर कहे ताकि दूसरों को ख़ूब सुनाई दे।

۞.....और حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ दाहिनी त़रफ़ मुंह कर के और حَیَّ عَلَی الْفَلَاح बाईं त़रफ़ मुंह कर के कहे।

सुवाल अज़ान कहने वाले को क्या कहते हैं

जवाब अज़ान कहने वाले को मुअज़्ज़िन कहते हैं।

सुवाल अज़ान सुनने वाला क्या करे ?

जवाब जब अज़ान हो तो इतनी देर के लिये सलाम कलाम और सारे काम यहां तक कि कुरआन की तिलावत बन्द कर दे, अज़ान को ग़ौर से सुने और जवाब दे।
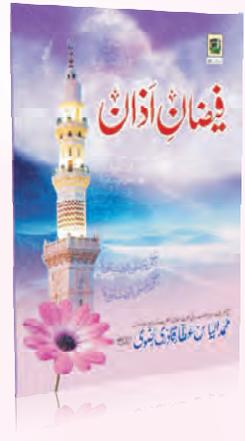
सुवाल जो शख़्स अज़ान के वक़्त बातें करता रहे उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स अज़ान के वक़्त बातों में लगा रहे उस पर مَعَاذَ اللہ ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है ।(1)

सुवाल अज़ान का जवाब देने से क्या मुराद है ?

जवाब अज़ान का जवाब देने से मुराद येह है :

۞..... मुअज़्ज़िन जो कलिमात कहे उस के बा'द सुनने वाला भी वोही कलिमात कहे । मगर حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ، حَیَّ عَلَی الْفَلَاح के जवाब में لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللہ कहे ।

۞.....जब मुअज़्ज़िन اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللہ कहे तो सुनने वाला दुरूद शरीफ़ पढ़े और मुस्तहब है कि अंगूठों को बोसा दे कर आंखों से लगा ले और कहे :

قُرَّۃُ عَیْنِیْ بِکَ یَارَسُوْلَ اللہِ اَللّٰھُمَّ مَتِّعْنِیْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَر

या'नी या रसूलल्लाह ! मेरी आंखों की ठन्डक आप से है । या इलाही ! मुझे सुनने और देखने से फ़ाएदा पहुंचा ।(2)

۞.....फ़ज्र की अज़ान में जब मुअज़्ज़िन اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم कहे तो सुनने वाला कहे :

صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ (3)

۞.....जब अज़ान ख़त्म हो जाए तो मुअज़्ज़िन और अज़ान सुनने वाला हर फ़र्द दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ اٰتِ سَیِّدَنَا مُحَمَّدَا ۨ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا ۨ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ وَاجْعَلْنَا فِیْ شَفَاعَتِہٖ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ ط اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ط (4)

(1)......جامع الرموز للقهستانی، کتاب الصلاۃ، فصل الاذان، ١/ ١٢٢

(2)......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی کراھۃ تکرار الجماعۃ......الخ، ٢/ ٨٤

(3)......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی کراھۃ تکرار الجماعۃ......الخ، ٢/ ٨٣

(4)......बहारे शरीअत, अज़ान का बयान, 1/474

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस दा'वते ताम्मा और सलाते क़ाइमा के मालिक तू हमारे सरदार मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द दरजा अ़ता फ़रमा और इन को मक़ामे महमूद में खड़ा कर जिस का तू ने इन से वा'दा किया है और हमें क़ियामत के दिन इन की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा, बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता ।

इक़ामत का बयान

सुवाल इक़ामत किसे कहते हैं ?

जवाब जमाअ़त क़ाइम होने से पहले जल्दी जल्दी हल्की आवाज़ से अज़ान के अल्फ़ाज़ पढ़ने को इक़ामत या तक्बीर कहते हैं ।

सुवाल अज़ानो इक़ामत में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब अज़ान और इक़ामत में थोड़ा सा फ़र्क़ है और वोह येह है :

- अज़ान में कानों के सूराख़ों में उंगलियां रखते हैं जब कि इक़ामत में ऐसा नहीं करते ।
- अज़ान आ़म तौ़र पर बुलन्द जगह और मस्जिद से बाहर कही जाती है जब कि इक़ामत मस्जिद में इमाम की पिछली सफ़ में दाएं या बाएं खड़े हो कर कही जाती है ।
- अज़ान और नमाज़ के दरमियान काफ़ी वक़्त होता है जब कि इक़ामत के फ़ौरन बा'द नमाज़ शुरूअ़ हो जाती है ।
- पांचों वक़्त सिर्फ़ इक़ामत में حَیَّ عَلَی الْفَلَاح के बा'द दो बार قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ (या'नी नमाज़ क़ाइम हो चुकी) कहा जाता है ।

सुवाल इक़ामत का जवाब किस त़रह़ दिया जाए ?

जवाब इस का जवाब भी इसी त़रह़ है जैसे अज़ान का, हां इस में قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ के जवाब में येह कलिमा कहे اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ या'नी अल्लाह इस को क़ाइम और हमेशा रखे जब तक कि आस्मानो ज़मीन हैं ।

पांचों नमाज़ों में इक़ामत से क़ब्ल दुरूदो सलाम और ए'लान

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ يَا حَبِيۡبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ يَا نُوۡرَ اللّٰه

ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये, मोबाइल फ़ोन हो तो बन्द कर दीजिये। हुसूले सवाब के लिये इक़ामत बैठ कर सुनिये और जवाब दीजिये, حَيَّ عَلَى الْفَلَاح पर खड़ा होना सुन्नत है।

इक़ामत के बा'द ए'लान

फिर इक़ामत के बा'द इमाम साहिब या मुकब्बिर (इक़ामत कहने वाले को मुकब्बिर कहते हैं) येह ए'लान करे :

अपनी एड़ियां, गर्दनें और कन्धे एक सीध में कर के सफ़ सीधी कर लीजिये। दो आदमियों के बीच में जगह छोड़ना गुनाह है, कन्धे से कन्धा रगड़ खाता हुवा रखना वाजिब, सफ़ सीधी रखना वाजिब और जब तक अगली सफ़ दोनों कोनों तक पूरी न हो जाए पीछे नमाज़ शुरूअ़ कर देना तर्के वाजिब, नाजाइज़ और गुनाह है। 15 साल से छोटे नाबालिग़ बच्चों को सफ़ों में खड़ा न रखें, इन्हें कोने में भी न भेजें, छोटे बच्चों की सफ़ सब से आख़िर में बनाएं।

नमाज़ का बयान

इमामत की शराइत़

सुवाल इमामत की शराइत़ कितनी हैं ?

जवाब जो शख़्स शरई मा'ज़ूर न हो उस के इमाम के लिये छे शराइत़ हैं : ﴾1﴿.....सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसलमान होना ﴾2﴿.....बालिग़ होना ﴾3﴿.....आ़क़िल होना ﴾4﴿.....मर्द होना ﴾5﴿.....क़िराअत सह़ीह़ होना ﴾6﴿.....(शरई) मा'ज़ूर[1] न होना[2]

सुवाल इमामत का सब से ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?

जवाब इमामत का सब से ज़ियादा ह़क़दार वोह शख़्स है जो नमाज़ व त़हारत के अह़काम को सब से ज़ियादा जानता हो, अगर्चे बाक़ी ड़लूम में पूरी दस्तगाह (महारत) न रखता हो, ब शर्तेकि इतना कुरआन याद हो कि बत़ौरे मस्नून (सुन्नत के मुत़ाबिक़) पढ़े और सह़ीह़ पढ़ता हो या'नी हुरूफ़ मख़ारिज से अदा करता हो और मज़हब की कुछ ख़राबी न रखता हो और फ़वाहिश (बेह़याई के कामों) से बचता हो ।[3]

---
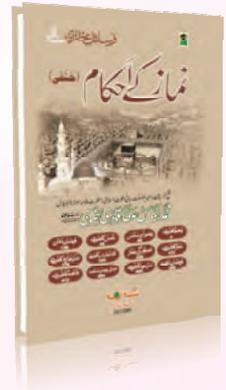
[1]......हर वोह शख़्स जिस को कोई ऐसी बीमारी है कि एक वक़्त पूरा ऐसा गुज़र गया कि वुज़ू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सका वोह मा'ज़ूर है । (बहारे शरीअ़त, इस्तिह़ाज़ा के अह़काम, 1/385)

[2]......ردالمحتار، کتاب الصلاة، مطلب شروط الامامة الکبری، ۲/۳۳۷

[3]......बहारे शरीअ़त, इमामत का बयान, 1/567

सुवाल जिस इमाम का अ़क़ीदा दुरुस्त न हो क्या उस के पीछे नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब वोह बद मज़्हब जिस की बद मज़्हबी ह़द्दे कुफ़्र को पहुंच गई हो उस के पीछे नमाज़ नहीं होती और जिस की बद मज़्हबी ह़द्दे कुफ़्र को न पहुंची हो उस के पीछे नमाज़ मकरूहे तह़रीमी (वाजिबुल इआ़दा) है ।[1]

इक़्तिदा की 13 शराइत़

﴾1﴿.....निय्यत ।

﴾2﴿.....इक़्तिदा और इस निय्यते इक़्तिदा का तह़रीमा (नमाज़ की निय्यत बांधने के वक़्त पहली बार हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहने) के साथ होना या तक्बीरे तह़रीमा से पहले होना ब शर्तेकि पहले होने की सूरत में कोई अजनबी काम निय्यत व तह़रीमा से जुदाई करने वाला न हो ।

﴾3﴿.....इमाम व मुक़्तदी दोनों का एक मकान में होना ।

﴾4﴿.....दोनों की नमाज़ एक हो या इमाम की नमाज़, नमाज़े मुक़्तदी को अपने ज़िम्न में लिये हो ।

﴾5﴿.....इमाम की नमाज़ का मज़्हबे मुक़्तदी पर सह़ीह़ होना और

﴾6﴿.....इमाम व मुक़्तदी दोनों का इसे सह़ीह़ समझना ।

﴾7﴿.....शराइत़ की मौजूदगी में औ़रत का मह़ाज़ी (बराबर) न होना ।

﴾8﴿.....मुक़्तदी का इमाम से आगे न होना ।

﴾9﴿.....इमाम के इन्तिक़ालात का इ़ल्म होना ।

﴾10﴿.....इमाम का मुक़ीम या मुसाफ़िर होना मा'लूम होना ।

﴾11﴿.....अरकान की अदाएगी में शरीक होना ।

﴾12﴿.....अरकान की अदाएगी में मुक़्तदी इमाम के मिस्ल हो या कम ।

﴾13﴿.....यूंही शराइत़ में मुक़्तदी का इमाम से ज़ाइद न होना ।[2]

---

[1]......बहारे शरीअ़त, इमामत का बयान, 1/562 मुलख़्ख़सन

[2]......درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب شروط الامامۃ الکبری، ۲/۳۳۷-۳۴۰

नमाज़े तरावीह

तरावीह की शरई हैसिय्यत

सुवाल : क्या तरावीह फ़र्ज़ है ?

जवाब : जी नहीं तरावीह न तो फ़र्ज़ है और न ही वाजिब बल्कि हर आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान पर तरावीह पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है और इसे छोड़ना जाइज़ नहीं ।(1)

सुवाल : क्या तरावीह की जमाअ़त वाजिब है ?

जवाब : जी नहीं ! तरावीह की जमाअ़त वाजिब नहीं बल्कि सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है । या'नी अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब इसाअत के मुर्तकिब हुवे (या'नी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला जमाअ़त की फ़ज़ीलत से महरूम रहा ।(2)

सुवाल : मस्जिद के इलावा घर या किसी दूसरी जगह बा जमाअ़त तरावीह अदा करने का क्या हुक्म है ?

जवाब : तरावीह मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना अफ़्ज़ल है । अगर घर में बा जमाअ़त अदा की तो तर्के जमाअ़त का गुनाह न हुवा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो मस्जिद में पढ़ने का था ।(3) इशा के फ़र्ज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा कर के घर या हॉल वग़ैरा में तरावीह अदा कीजिये अगर बिला उ़ज़्रे शरई मस्जिद के बजाए घर या हॉल वग़ैरा में इशा के फ़र्ज़ की जमाअ़त क़ाइम कर ली तो तर्के वाजिब का मुर्तकिब होने की वजह से गुनाहगार होंगे ।(4)

सुवाल : क्या तरावीह बैठ कर पढ़ सकते हैं ?

---

[1] ......درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/۵۹۶

[2] ......هدایه، کتاب الصلاۃ، باب النوافل، فصل فی قیام شهر رمضان، ۱/۷۰

[3] ......عالمگیری، کتاب الصلاۃ، فصل فی التراویح، ۱/۱۱۶

[4] ......इस का तफ़्सीली मस्अला फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के सफ़हा 1116 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये ।

जवाब: जी नहीं ! तरावीह़ बिला उ़ज़्र बैठ कर पढ़ना मकरूहे (तन्ज़ीही) है, बल्कि बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के नज़्दीक तो (बिला उ़ज़्र बैठ कर) तरावीह़ होती ही नहीं ।[1]

तरावीह़ का वक़्त

सुवाल: तरावीह़ का वक़्त क्या है ?

जवाब: तरावीह़ का वक़्त इ़शा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्ह़ सादिक़ तक है । इ़शा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले अगर पढ़ ली तो न होगी ।[2] आ़म तौ़र पर तरावीह़ वित्रों से पहले पढ़ी जाती है लेकिन अगर कोई वित्र पहले पढ़ ले तो तरावीह़ बा'द में भी पढ़ सकता है ।

सुवाल: अगर तरावीह़ फ़ौत हो गई तो इस की क़ज़ा कब करे ?

जवाब: तरावीह़ अगर (वक़्त में न पढ़ी और) फ़ौत हो गई तो इस की क़ज़ा नहीं ।[3]

रक्अ़ात की ता'दाद

सुवाल: तरावीह़ की कितनी रक्अ़तें हैं ?

जवाब: तरावीह़ की ﴾20﴿ रक्अ़तें हैं । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़हद में ﴾20﴿ रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं ।[4]

तरावीह़ की अदाएगी का त़रीक़ा

सुवाल: तरावीह़ की ﴾20﴿ रक्अ़तों की अदाएगी का त़रीक़ा क्या है ?

---

[1] ...... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/ ۶۰۳

[2] ...... عالمگیری، کتاب الصلوۃ، الباب التاسع، فصل فی التراویح، ۱/ ۱۱۵

[3] ...... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/ ۵۹۸

[4] ...... معرفۃ السنن والآثار للبیہقی، کتاب الصلاۃ، باب قیام رمضان، ۲/ ۳۰۵، حدیث: ۱۳۶۵

जवाब तरावीह़ की ﴾20﴿ रक्अ़तों की अदाएगी का त़रीक़ा येह है :

- ..... बेहतर येह है कि तरावीह़ की ﴾20﴿ रक्अ़तें दो दो कर के ﴾10﴿ सलाम के साथ अदा करे ।
- .....अगर किसी ने तरावीह़ की ﴾20﴿ रक्अ़तें पढ़ कर आख़िर में सलाम फेरा तो अगर हर दो रक्अ़त पर क़ा'दा करता रहा तो हो जाएंगी मगर कराहत के साथ और अगर क़ा'दा न किया था तो दो रक्अ़त के क़ाइम मक़ाम हुईं ।[1]
- .....हर दो रक्अ़त पर क़ा'दा करना फ़र्ज़ है ।
- ..... हर क़ा'दे में अत्तहिय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ और दुआ़ भी पढ़े ।
- .....अगर मुक़्तदियों पर गिरानी होती हो (या'नी इन्हें बोझ मह़सूस होता हो) तो तशह्हुद के बा'द اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ पर इक्तिफ़ा करे ।
- ..... त़ाक़ रक्अ़त (या'नी पहली, तीसरी, पांचवीं वग़ैरा) में सना पढ़े और इमाम तअ़व्वुज़ व तस्मिय्या पढ़े ।
- ..... जब दो दो रक्अ़त कर के पढ़ रहा है तो हर दो रक्अ़त पर अलग अलग निय्यत करे और अगर बीस रक्अ़तों की एक साथ निय्यत कर ली तब भी जाइज़ है ।[2]

नाबालिग़ इमाम के पीछे तरावीह़ का हुक्म

सुवाल क्या नाबालिग़ इमाम के पीछे तरावीह़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! नाबालिग़ इमाम के पीछे सिर्फ़ नाबालिग़ ही तरावीह़ पढ़ सकते हैं । बालिग़ की तरावीह़ (बल्कि कोई भी नमाज़ ह़त्ता कि नफ़्ल भी) नाबालिग़ के पीछे नहीं होती ।

तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन

सुवाल तरावीह़ में पूरा क़ुरआने मजीद पढ़ने या सुनने की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

---

[1]......बहारे शरीअ़त, तरावीह़ का बयान, 1/689

[2]......फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने तरावीह़, 1/1117

जवाब तरावीह़ में पूरा क़ुरआने मजीद पढ़ना और सुनना सुन्नते मुअक्कदा है।[1]

सुवाल अगर तरावीह़ में किसी भी वजह से ख़त्मे क़ुरआन मुमकिन न हो तो क्या करना चाहिये ?

जवाब अगर तरावीह़ में किसी भी वजह से पूरा क़ुरआने मजीद ख़त्म करना मुमकिन न हो तो तरावीह़ में कोई सी भी सूरतें पढ़ लीजिये, अगर चाहें तो क़ुरआने करीम की आख़िरी दस सूरतें اَلَمْ تَرَكَيْفَ से وَالنَّاس तक दो मरतबा पढ़ लीजिये, इस त़रह़ 20 रक्अ़तें याद रखना भी आसान रहेगा।

सुवाल तरावीह़ में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ बुलन्द आवाज़ से पढ़ना चाहिये या आहिस्ता ?

जवाब तरावीह़ में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ एक बार ऊंची आवाज़ से पढ़ना सुन्नत है और हर सूरह की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मुस्तह़ब है।

सुवाल अगर तरावीह़ सिर्फ़ आख़िरी दस सूरतों के साथ पढ़ी जा रही हो तो क्या फिर भी एक बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ ऊंची आवाज़ से पढ़ना सुन्नत है ?

जवाब जी नहीं ! अगर तरावीह़ सिर्फ़ आख़िरी दस सूरतों के साथ पढ़ी जा रही हो तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ ऊंची आवाज़ से पढ़ना सुन्नत नहीं।

सुवाल तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआने करीम किस त़रह़ करना चाहिये ?

जवाब मुतअख़्ख़िरीन (या'नी बा'द में आने वाले) फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने ख़त्मे तरावीह़ में तीन बार قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ना मुस्तह़ब कहा है। नीज़ बेहतर येह है कि ख़त्म के दिन आख़िरी रक्अ़त में الٓمّٓ से الْمُفْلِحُوْنَ तक पढ़े।[2]

सुवाल ख़त्मे क़ुरआन के बा'द क्या महीने के बाक़ी दिन तरावीह़ छोड़ दे ?

---

[1]……फ़तावा रज़विय्या, 7/458

[2]……बहारे शरीअ़त, तरावीह़ का बयान, 1/ 695

जवाब अगर सत्ताईसवीं को या इस से क़ब्ल कुरआने पाक ख़त्म हो गया तब भी आख़िर रमज़ान तक तरावीह़ पढ़ते रहें कि सुन्नते मुअक्कदा है ।[1]

तरावीह़ में क़िराअते कु़रआन

सुवाल तरावीह़ में कुरआने मजीद जल्दी जल्दी पढ़ना चाहिये या आहिस्ता आहिस्ता ?

जवाब तरावीह़ में कुरआने मजीद जल्दी जल्दी नहीं पढ़ना चाहिये बल्कि तरतील के साथ या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये । चुनान्चे, बहारे शरीअ़त में है : फ़र्ज़ों में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और तरावीह़ में मुतवस्सित़ (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और रात के नवाफ़िल में जल्द पढ़ने की इजाज़त है, मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम "मद्द" का जो दरजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना ह़राम है । इस लिये कि तरतील से (या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर) कुरआन पढ़ने का हुक्म है ।[2]

सुवाल आज कल के बहुत तेज़ पढ़ने वाले हुफ़्फ़ाज़ के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब आज कल के अकसर हुफ़्फ़ाज़ इस त़रह़ पढ़ते हैं कि मद्द का अदा होना तो बड़ी बात है يَعۡلَمُوۡنَ تَعۡلَمُوۡنَ के सिवा किसी लफ़्ज़ का पता नहीं चलता, हुरूफ़ भी सह़ीह़ त़रह़ अदा नहीं होते, बल्कि जल्दी में लफ़्ज़ के लफ़्ज़ खा जाते हैं और इस पर फ़ख़्र होता है कि फुलां इस क़दर जल्द पढ़ता है, ह़ालांकि इस त़रह़ कुरआने मजीद पढ़ना ह़राम व सख़्त ह़राम है ।

सुवाल अगर जल्दी जल्दी पढ़ने में ह़ाफ़िज़ साह़िब कुरआने मजीद में से कुछ अल्फ़ाज़ चबा गए तो क्या ख़त्मे कुरआन की सुन्नत अदा हो गई ?

जवाब अगर जल्दी जल्दी पढ़ने में ह़ाफ़िज़ साह़िब पूरे कुरआने मजीद में से सिर्फ़ एक ह़र्फ़ भी चबा गए तो ख़त्मे कुरआन की सुन्नत अदा न होगी ।

सुवाल अगर किसी आयत में कोई ह़र्फ़ चब गया या अपने मख़्रज से न निकला तो अब क्या करना चाहिये ?

---

[1] ……عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع، فصل فی التراویح، ۱/۱۱۸

[2] ……درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، فصل فی القراءۃ، مطلب: السنۃ تکون سنۃ……الخ، ۲/۳۲۰

जवाब अगर किसी आयत में कोई ह़र्फ़ चब गया या अपने मख़्रज से न निकला तो लोगों से शर्माए बिग़ैर पलट पढ़िये और दुरुस्त पढ़ कर फिर आगे बढ़िये।

ग़लती हो जाने या भूल जाने की सूरतें

सुवाल अगर किसी वजह से तरावीह़ की नमाज़ फ़ासिद हो जाए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब अगर किसी वजह से तरावीह़ की नमाज़ फ़ासिद हो जाए तो जितना कुरआने पाक इन रक्अ़तों में पढ़ा था दोबारा पढ़ें ताकि ख़त्म में नुक़्सान न रहे।

सुवाल अगर इमाम ग़लती से कोई आयत या सूरह छोड़ कर आगे बढ़ गया तो क्या करे ?

जवाब अगर इमाम ग़लती से कोई आयत या सूरह छोड़ कर आगे बढ़ गया तो मुस्तह़ब येह है कि (याद आने पर पहले) उसे पढ़ कर फिर आगे बढ़े।[1]

सुवाल तरावीह़ में दो रक्अ़त के बा'द बैठना भूल गया तो क्या करे ?

जवाब दो रक्अ़त पर बैठना भूल गया तो इसे दर्जे ज़ैल बातों का ख़याल रखना चाहिये :

- .... जब तक तीसरी का सजदा न किया हो बैठ जाए आख़िर में सजदए सह्व कर ले।
- .... अगर तीसरी का सजदा कर लिया तो चार पूरी कर ले मगर येह दो शुमार होंगी। हां अगर पहली दो के बा'द क़ा'दा किया था तो चार हुईं।
- .... तीन रक्अ़तें पढ़ कर सलाम फेरा, अगर दूसरी पर बैठा नहीं था तो न हुईं इन के बदले की दो रक्अ़तें दोबारा पढ़े।

सुवाल तरावीह़ में अगर कोई रक्आ़त की ता'दाद भूल जाए तो क्या करे ?

जवाब तरावीह़ में अगर रक्आ़त की ता'दाद भूल जाए तो दर्जे ज़ैल सूरतों पर अ़मल करे :

- .... सलाम फेरने के बा'द कोई कहता है दो हुईं, कोई कहता है तीन, तो इमाम को जो याद हो उस का ए'तिबार है, अगर इमाम ख़ुद भी तज़बज़ुब का शिकार हो तो जिस पर ए'तिमाद हो उस की बात मान ले।

---

[1] ……عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع، فصل فی التراویح، ۱/۱۱۸

۞.....अगर लोगों को शक हो कि बीस हुई या अठ्ठारह? तो दो रक्अ़त तन्हा तन्हा पढ़ें।

तरवीहा से मुराद

सुवाल तरवीहा से क्या मुराद है?

जवाब तरवीहा से मुराद हर चार रक्अ़त के बा'द का वोह वक़्फ़ा है जिस में उतनी देर आराम के लिये बैठा जाता है जितनी देर में चार रक्अ़त पढ़ी हैं और येह मुस्तहब है।

सुवाल तरवीहा के दौरान क्या करना या पढ़ना चाहिये?

जवाब तरवीहा के दौरान इख़्तियार है : चुप बैठा रहे या ज़िक्रो दुरूद और तिलावत करे या तन्हा नफ़्ल पढ़े।[1] येह तस्बीह़ भी पढ़ सकते हैं :

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ ط سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ ط سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ ط اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ط يَا مُجِيْرُ! يَا مُجِيْرُ! يَا مُجِيْرُ! بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ﴿٢﴾

तरावीह़ पढ़ाने की उजरत लेना

सुवाल तरावीह़ पढ़ाने की उजरत लेना कैसा है?

जवाब तरावीह़ पढ़ाने की उजरत लेना नाजाइज़ व ह़राम है। चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में उजरत दे कर मय्यित के ईसाले सवाब के लिये ख़त्मे कुरआन व ज़िक्रुल्लाह करवाने से मुतअ़ल्लिक़ जब इस्तिफ़्ता पेश हुवा

---

[1]......غنية المتملى، فصل فى النوافل، التراويح، ص ٤٠٤

[2]......फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने तरावीह़, 1/1122

तो जवाबन इरशाद फ़रमाया : तिलावते कुरआन व ज़िक्रे इलाही पर उजरत लेना देना दोनों ह़राम है। लेने देने वाले दोनों गुनहगार होते हैं और जब येह फ़े'ले ह़राम के मुर्तकिब हैं तो सवाब किस चीज़ का अम्वात (या'नी मरने वालों) को भेजेंगे ? गुनाह पर सवाब की उम्मीद और ज़ियादा सख़्त व अशद्द (या'नी शदीद तरीन) जुर्म है।[1]

सुवाल अगर तरावीह़ पढ़ाने की उजरत तै़ न की जाए और लोग या इन्तिज़ामिय्या कुछ ख़िदमत वग़ैरा करें तो क्या येह लेना जाइज़ है ?

जवाब अगर तरावीह़ पढ़ाने की उजरत तै़ न की जाए और लोग या इन्तिज़ामिय्या कुछ ख़िदमत वग़ैरा करें तो येह लेना जाइज़ नहीं, क्यूंकि तै़ करने ही को उजरत नहीं कहते बल्कि अगर यहां तरावीह़ पढ़ाने इसी लिये आते हैं कि मा'लूम है कि यहां कुछ मिलता है अगर्चे तै़ न हुवा हो तो येह भी उजरत ही है। (लिहाज़ा येह नाजाइज़ व ह़राम है नीज़) उजरत रक़म ही का नाम नहीं बल्कि कपड़े या ग़ल्ला वग़ैरा की सूरत में भी उजरत, उजरत ही है। हां अगर ह़ाफ़िज़ साह़िब इस्लाहे़ निय्यत के साथ साफ़ साफ़ कह दें कि मैं कुछ नहीं लूंगा या पढ़वाने वाला कह दे : नहीं दूंगा। फिर बा'द में ह़ाफ़िज़ साह़िब की ख़िदमत कर दें तो ह़रज नहीं कि आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।[2]

सुवाल अगर ह़ाफ़िज़ उजरत न ले मगर अपनी तेज़ी दिखाने, ख़ुश आवाज़ी की दाद पाने और नाम चमकाने के लिये कुरआने पाक पढ़े तो क्या इसे सवाब मिलेगा ?

जवाब अगर ह़ाफ़िज़ उजरत न ले मगर अपनी तेज़ी दिखाने, ख़ुश आवाज़ी की दाद पाने और नाम चमकाने के लिये कुरआने पाक पढ़े तो सवाब तो दूर की बात है, उलटा हु़ब्बे जाह और रियाकारी की तबाहकारी में जा पड़ेगा, लिहाज़ा पढ़ने पढ़ाने वालों को अपने अन्दर इख़्लास पैदा करना ज़रूरी है।

मुतफ़र्रिक़ मसाइल

सुवाल अगर कोई अलग अलग मसाजिद में तरावीह़ पढ़े तो क्या उस का ऐसा करना दुरुस्त है ?

---

[1]……फ़तावा रज़विय्या, 23/537

[2]……फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने तरावीह़, 1/1099

जवाब जी हां ! अगर कोई अलग अलग मसाजिद में तरावीह़ पढ़ना चाहता हो तो वोह ऐसा कर सकता है मगर उसे ख़याल रखना चाहिये कि ख़त्मे कुरआन में नुक़्सान न हो । मसलन तीन मसाजिद ऐसी हैं कि इन में हर रोज़ सवा पारह पढ़ा जाता है तो तीनों में रोज़ाना बारी बारी जा सकता है ।

सुवाल बा'ज़ लोग इमाम के रुकूअ़ में पहुंचने के इन्तिज़ार में बैठे रहते हैं, उन के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब जो लोग इमाम के रुकूअ़ में पहुंचने के इन्तिज़ार में बैठे रहते हैं, उन्हें याद रखना चाहिये कि येह मुनाफ़िक़ीन से मुशाबहत है । चुनान्चे, सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 142 में है :

اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ یُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَ هُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ یُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَ لَا یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۱۴۲﴾ (پ۵، النسآء: ۱۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते हैं और वोही इन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से लोगों का दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा ।

लिहाज़ा कोई उ़ज़्र न हो तो फ़र्ज़ की जमाअ़त में भी अगर इमाम रुकूअ़ से उठ गया तो सजदों वग़ैरा में फ़ौरन शरीक हो जाएं, नीज़ इमाम क़ा'दए ऊला में हो तब भी इस के खड़े होने का इन्तिज़ार न करें बल्कि शामिल हो जाएं । अगर क़ा'दे में शामिल हो गए और इमाम खड़ा हो गया तो अत्तहिय्यात (शुरूअ़ कर देने की सूरत में) पूरी किये बिग़ैर खड़े न हों ।

सुवाल क्या इशा के फ़र्ज़ एक इमाम के पीछे और तरावीह़ दूसरे इमाम के पीछे पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी हां ! न सिर्फ़ येह कर सकते हैं बल्कि एक इमाम के पीछे फ़र्ज़, दूसरे के पीछे तरावीह़ और तीसरे के पीछे वित्र पढ़ने में भी कोई ह़रज नहीं । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़र्ज़ व वित्र की जमाअ़त करवाते थे और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तरावीह़ पढ़ाते ।(1)

---

(1) ...... عالمگیری، کتاب الصلاة، الباب التاسع، فصل فی التراویح، ۱/۱۱۶ ماخوذاً

नमाज़े वित्र

वित्र का शरई हुक्म

सुवाल क्या वित्र पढ़ना फ़र्ज़ है ?

जवाब जी नहीं वित्र पढ़ना फ़र्ज़ नहीं बल्कि वाजिब है।

सुवाल क्या फ़र्ज़ की तरह वित्र की भी क़ज़ा है ?

जवाब जी हां ! फ़र्ज़ की तरह वित्र की भी क़ज़ा करना ज़रूरी है।

वित्र का वक़्त

सुवाल वित्र किस वक़्त पढ़े जाते हैं ?

जवाब वित्र नमाज़े इशा के बा'द पढ़े जाते हैं।

सुवाल अगर कोई नमाज़े इशा से पहले वित्र पढ़ ले तो क्या हो जाएंगे ?

जवाब जी नहीं ! इशा और वित्र का वक़्त अगर्चे एक है मगर बाहम इन में तरतीब फ़र्ज़ है कि इशा से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं, अलबत्ता भूल कर अगर वित्र पहले पढ़ लिये या बा'द को मा'लूम हुवा कि इशा की नमाज़ बे वुज़ू पढ़ी थी और वित्र वुज़ू के साथ तो वित्र हो गए।[1]

सुवाल वित्र कब तक पढ़े जा सकते हैं ?

जवाब वित्र इशा के फ़र्ज़ों के बा'द से सुब्हे सादिक़ तक पढ़े जा सकते हैं।

सुवाल वित्र पढ़ने का अफ़्ज़ल वक़्त कौन सा है ?

जवाब जो सो कर उठने पर क़ादिर हो उस के लिये अफ़्ज़ल है कि पिछली रात में उठ कर पहले तहज्जुद अदा करे फिर वित्र।[2]

---

[1]……बहारे शरीअ़त, नमाज़ के वक़्तों का बयान, 1/451

[2]……नमाज़ के अहकाम, नमाज़ का त़रीक़ा, स. 273

चुनान्चे, एक हदीसे पाक में है : "जिसे अन्देशा हो कि पिछली रात में न उठेगा वोह अव्वल वक़्त में पढ़ ले और जिसे उम्मीद हो कि पिछली रात को उठेगा वोह पिछली रात में पढ़े कि आख़िर शब की नमाज़ मश्हूद है (या'नी उस में मलाइकए रहमत हाज़िर होते हैं) और येह अफ़्ज़ल है।"(1)

सुवाल : क्या वित्र बा जमाअ़त पढ़ सकते हैं ?

जवाब : जी नहीं ! वित्र बा जमाअ़त अदा करना मन्अ़ है। अलबत्ता ! रमज़ान शरीफ़ में जमाअ़त के साथ वित्र अदा करने की रुख़्सत है।

वित्र पढ़ने का त़रीक़ा

सुवाल : वित्र की कितनी रक्अ़तें हैं और इस के पढ़ने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : नमाज़े वित्र तीन रक्अ़त है और इस में क़ा'दए ऊला वाजिब है।

- .....वित्र पढ़ने वाला क़ा'दए ऊला में सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ़ कर खड़ा हो जाए, न दुरूद पढ़े न सलाम फेरे जैसे मग़रिब में करते हैं उसी त़रह़ करे।
- .....वित्र की तीनों रक्अ़तों में मुत़लक़न क़िराअत फ़र्ज़ है और हर एक में बा'दे फ़ातिह़ा सूरत मिलाना वाजिब और बेहतर येह है कि पहली में سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى या اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ दूसरी में قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ , तीसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े। कभी कभी और सूरतें भी पढ़ ले।
- .....तीसरी रक्अ़त में क़िराअत से फ़ारिग़ हो कर रुकूअ़ से पहले कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहे जैसे तक्बीरे तह़रीमा में करते हैं कि येह तक्बीर कहना भी वाजिब है, फिर हाथ बांध ले और दुआ़ए क़ुनूत पढ़े।
- ..... फिर रुकूअ़ करे और बाक़ी नमाज़ों की त़रह़ आख़िरी रक्अ़त मुकम्मल कर के सलाम फेर दे।

---

(1)......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب من خاف ان لا یقوم......الخ، ص ۳۸۰، حدیث: ۷۵۵

दुआ़ए कुनूत

सुवाल : क्या दुआ़ए कुनूत पढ़ना फ़र्ज़ है ?

जवाब : जी नहीं ! दुआ़ए कुनूत पढ़ना फ़र्ज़ नहीं बल्कि वाजिब है ।

सुवाल : क्या दुआ़ए कुनूत किसी ख़ास दुआ़ का नाम है ?

जवाब : जी नहीं ! दुआ़ए कुनूत किसी ख़ास दुआ़ का नाम नहीं और न ही वित्र में किसी ख़ास दुआ़ का पढ़ना ज़रूरी है, बल्कि हर वोह दुआ़ जो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है पढ़ ली जाए जब भी ह़रज नहीं, अलबत्ता ! सब में ज़ियादा मश्हूर दुआ़ येह है और आ़म लोग इसी दुआ़ को दुआ़ए कुनूत भी कहते हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ط

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी नाफ़रमानी करे, ऐ अल्लाह ! हम तेरी ही इ़बादत करते हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते और सजदा करते हैं और तेरी ही त़रफ़ दौड़ते और ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर होते हैं और तेरी रह़मत के उम्मीदवार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है ।

सुवाल : क्या बाक़ी दुआ़ओं की त़रह़ दुआ़ए कुनूत के बा'द दुरूदे पाक पढ़ सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! दुआ़ए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ सकते हैं बल्कि येह बेहतर भी है ।[1]

---

[1] ... बहारे शरीअ़त, वित्र का बयान, 1/655

सुवाल अगर किसी को दुआ़ए कुनूत न आती हो तो वोह क्या पढ़े ?

जवाब अगर किसी को दुआ़ए कुनूत न आती हो तो वोह येह पढ़ ले :

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

ऐ अल्लाह ! ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा या येह पढ़े : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ या'नी ऐ अल्लाह ! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे ।

सुवाल अगर कोई दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल जाए तो क्या करे ?

जवाब अगर कोई दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल जाए और रुकूअ़ में चला जाए तो वापस न लौटे बल्कि आख़िर में सजदए सह्व कर ले ।[1]

सुवाल वित्र जमाअ़त से पढ़ रहे हों और इमाम मुक़्तदी के मुकम्मल कुनूत पढ़ने से पहले ही रुकूअ़ में चला जाए तो अब मुक़्तदी क्या करे ?

जवाब रमज़ानुल मुबारक में वित्र जमाअ़त से पढ़ रहे हों और इमाम मुक़्तदी के मुकम्मल कुनूत पढ़ने से पहले ही रुकूअ़ में चला जाए तो मुक़्तदी को चाहिये कि वोह भी इमाम की इक़्तिदा में फ़ौरन रुकूअ़ में चला जाए और बाक़ी दुआ़ए कुनूत न पढ़े ।[2]

---

[1] ……عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن، ۱/۱۱۱

[2] ……المرجع السابق

सजदए सह्व

सजदए सह्व से मुराद

सुवाल सजदए सह्व से क्या मुराद है ?

जवाब वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए या फ़राइज़ व वाजिबाते नमाज़ में भूले से ताख़ीर हो जाए तो इस कमी को पूरा करने के लिये सजदए सह्व किया जाता है।

सुवाल अगर किसी ने जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो क्या फिर भी सजदए सह्व से तलाफ़ी हो जाएगी ?

जवाब जी नहीं ! अगर किसी ने जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो सजदए सह्व से वोह नुक़्सान पूरा न होगा बल्कि इआदा या'नी दोबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है।

सजदए सह्व की शरई हैसिय्यत

सुवाल सजदए सह्व की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब सजदए सह्व वाजिब है।(1)

सुवाल अगर किसी ने सजदए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब अगर किसी ने सजदए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो नमाज़ लौटाना वाजिब है।

सुवाल क्या कोई ऐसा वाजिब भी है जिस के रह जाने की सूरत में सजदए सह्व वाजिब नहीं होता ?

जवाब जी हां ! कोई ऐसा वाजिब रह जाए जो वाजिबाते नमाज़ से न हो तो सजदए सह्व वाजिब नहीं होता मसलन तरतीब से कुरआने पाक पढ़ना वाजिब है मगर इस का तअ़ल्लुक़ वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि वाजिबाते तिलावत से है, लिहाज़ा अगर किसी ने नमाज़ में ख़िलाफ़े तरतीब कुरआने करीम पढ़ा मसलन पहले सूरए नास और बा'द में सूरए फ़लक़ तो इस से सजदए सह्व वाजिब न होगा।

(1) ......درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ۲/۶۵۵

सुवाल अगर कोई फ़र्ज़ रह जाए तो क्या सजदए सह्व से उस की भी तलाफ़ी हो जाएगी ?

जवाब जी नहीं ! फ़र्ज़ तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सजदए सह्व से इस की तलाफ़ी नहीं हो सकती, लिहाज़ा नमाज़ दोबारा पढ़ना होगी ।

सुवाल अगर सुन्नतें या मुस्तह़ब्बात छूट जाएं तो क्या इस सूरत में भी सजदए सह्व कर लेना चाहिये ?

जवाब सुन्नतें या मुस्तह़ब्बात मसलन सना, तअ़व्वुज़, तस्मिय्या, आमीन, तक्बीराते इन्तिक़ालात और तस्बीह़ात के तर्क से सजदए सह्व वाजिब नहीं होता, नमाज़ हो जाती है[1] (लिहाज़ा इस सूरत में सजदए सह्व न करें) । मगर दोबारा पढ़ लेना मुस्तह़ब है भूल कर तर्क किया हो या जान बूझ कर ।

सुवाल अगर एक से ज़ाइद वाजिबात तर्क हुवे हों तो क्या हर एक के लिये अलग अलग सजदए सह्व करना होगा ?

जवाब जी नहीं ! नमाज़ में अगर्चे तमाम वाजिब तर्क हुवे, सह्व के दो ही सजदे सब के लिये काफ़ी हैं ।[2]

सुवाल अगर इमाम से नमाज़ में कोई वाजिब छूट गया तो मुक़्तदी पर भी सजदए सह्व वाजिब है ।

जवाब जी हां ! अगर इमाम से सह्व हुवा और सजदए सह्व किया तो मुक़्तदी पर भी सजदए सह्व वाजिब है ।[3]

सुवाल अगर मुक़्तदी से बह़ालते इक़्तिदा सह्व वाक़ेअ़ हुवा तो क्या इस पर सजदए सह्व वाजिब है ?

जवाब जी नहीं ! अगर मुक़्तदी से बह़ालते इक़्तिदा सह्व वाक़ेअ़ हुवा तो इस पर सजदए सह्व वाजिब नहीं ।[4] और नमाज़ लौटाने की भी ह़ाजत नहीं ।

सुवाल क्या सजदए सह्व सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ में वाजिब है या दीगर नमाज़ों में भी वाजिब है ?

---

[1] ......فتح القدیر، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ، ۱/۴۳۸

[2] ......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ، ۲/۶۵۵

[3] ......درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ، ۲/۶۵۸

[4] ......عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر ، ۱/۱۲۸

जवाब : सजदए सह्व का तअ़ल्लुक़ नमाज़ से है ख़्वाह फ़र्ज़ हो या सुन्नत, वित्र हो या नफ़्ल । किसी भी नमाज़ में वाजिब तर्क हो जाए तो सजदए सह्व वाजिब है ।

सजदए सह्व वाजिब होने की चन्द सूरतें

सुवाल : चन्द सूरतें बताइये जिन में सजदए सह्व वाजिब होता है ।

जवाब : सजदए सह्व वाजिब होने की चन्द सूरतें येह हैं :

- .....ता'दीले अरकान (मसलन रुकूअ़ के बा'द सीधा खड़ा होना या दो सजदों के दरमियान एक बार سبحن الله कहने की मिक्दार सीधा बैठना) भूल गए सजदए सह्व वाजिब है ।(1)
- .....दुआ़ए कुनूत या तक्बीरे कुनूत भूल गए सजदए सह्व वाजिब है ।(2)
- .....क़िराअत वग़ैरा किसी मौक़अ़ पर सोचने में तीन मरतबा سبحن الله कहने का वक़्फ़ा गुज़र गया सजदए सह्व वाजिब हो गया ।(3)
- .....रुकूअ़ व सुजूद व क़ा'दे में कुरआन पढ़ा तो सजदा वाजिब है ।(4)
- .....क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द इतना पढ़ा اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ तो सजदए सह्व वाजिब है इस वजह से नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस वजह से कि फ़र्ज़ या'नी तीसरी रक्अ़त के क़ियाम में ताख़ीर हुई ।(5)
- .....इमाम ने जहरी नमाज़ में ब क़दरे जवाज़े नमाज़ या'नी एक आयत आहिस्ता पढ़ी या सिर्री में जहर से तो सजदए सह्व वाजिब है और एक कलिमा आहिस्ता या जहर से पढ़ा तो मुआ़फ़ है ।(6)

---

[1]......عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر، ١٢٧/١

[2]......عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر، ١٢٨/١

[3].....बहारे शरीअ़त, सजदए सह्व का बयान, 1/715

[4]......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السهو، ٢/٦٥٧

[5]......درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السهو، ٢/٦٥٧

[6]......عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر، ١٢٨/١

❁.....मुन्फ़रिद ने सिर्री नमाज़ में जह्‌र से पढ़ा तो सजदा वाजिब है और जह्‌री में आहिस्ता तो नहीं ।(1)

सजदए सह्‌व का त़रीक़ा

सुवाल सजदए सह्‌व का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब सजदए सह्‌व का त़रीक़ा येह है :

❁.....अत्तहिय्यात के बा'द दह्‌नी त़रफ़ सलाम फेर कर दो सजदे करे फिर तशह्हुद वग़ैरा पढ़ कर सलाम फेरे ।(2)

❁.....सजदए सह्‌व के बा'द भी अत्तहिय्यात (اَلتَّحِیَّات) पढ़ना वाजिब है । अत्तहिय्यात पढ़ कर सलाम फेरिये और बेहतर येह है कि दोनों क़ा'दों (या'नी सजदए सह्‌व से पहले और बा'द) में दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये ।(3)

सजदए तिलावत

सजदए तिलावत से मुराद

सुवाल सजदए तिलावत से क्या मुराद है ?

जवाब कुरआने पाक में बा'ज़ आयाते मुबारका ऐसी हैं जिन के पढ़ने या सुनने से जो सजदा किया जाता है उसे सजदए तिलावत कहते हैं ।

सुवाल कुरआने पाक में सजदे की कुल कितनी आयात हैं ?

जवाब कुरआने पाक में सजदे की कुल चौदह आयात हैं ।
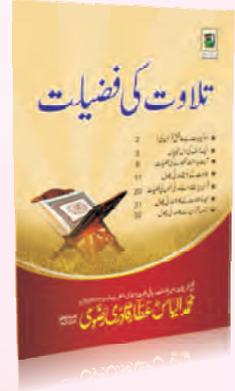
1.....बहारे शरीअ़त, सजदए सह्‌व का बयान, 1/714

2.....شرح الوقاية، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، الجزء الاول، ۱/۲۲۰

3.....عالمگیری، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر، ۱/۱۲۵

सजदए तिलावत का शरई हुक्म

सुवाल : आयते सजदा का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब : आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है ।[1]

सुवाल : अगर किसी ने आयते सजदा का तर्जमा पढ़ा या सुना तो क्या उस पर भी सजदा करना लाज़िम है ?

जवाब : जी हां ! अगर किसी ने फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया ।[2]

सुवाल : अगर किसी ने पूरी आयते सजदा न पढ़ी बल्कि कुछ हिस्सा ही पढ़ा या सुना तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब : सजदा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह आयते मुबारका जिस में लफ़्ज़े सजदा का माद्दा पाया जाता है और इस के साथ क़ब्ल या बा'द कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है ।[3]

सुवाल : क्या आयते सजदा पढ़ने या सुनने से फ़ौरन सजदा करना ज़रूरी है या बा'द में भी कर सकते हैं ?

जवाब : अगर आयते सजदा नमाज़ में पढ़ी गई तो सजदा भी नमाज़ में फ़ौरन करना वाजिब है और अगर आयते सजदा बैरूने नमाज़ (या'नी नमाज़ के बाहर) पढ़ी तो फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब नहीं । हां बेहतर है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर मकरूहे तन्ज़ीही ।[4] और अगर किसी वजह से फ़ौरन सजदा न कर सके तो पढ़ने व सुनने वाले को येह कह लेना मुस्तहब है : سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ٭ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾ (پ۳، البقرة:۲۸۵)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने सुना और माना तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है ।[5]

---

[1]...... الهدَايه، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ۱/ ۷۸

[2]...... बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, 1/730

[3]...... ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ۲/ ۶۹۴

[4]...... बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, 1/733 मुलतक़त़न

[5]...... ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ۲/ ۷۰۳

सुवाल मदारिस में त़ालिबे इल्म कुरआने करीम याद करने के लिये एक ही आयत एक ही जगह बैठे बैठे बार बार पढ़ते हैं तो क्या आयते सजदा बार बार पढ़ने और सुनने से बार बार सजदा करना होगा ?

जवाब जी नहीं ! एक ही मजलिस में सजदे की एक आयत को बार बार पढ़ा या सुना तो एक ही सजदा वाजिब होगा, अगर्चे चन्द शख़्सों से सुना हो यूंही अगर आयत पढ़ी और वोही आयत दूसरे से सुनी जब भी एक ही सजदा वाजिब होगा ।[1]

सुवाल अगर कोई पूरी सूरत तिलावत करे मगर आयते सजदा न पढ़े तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब पूरी सूरत पढ़ना और आयते सजदा छोड़ देना मकरूहे तह़रीमी है और सिर्फ़ आयते सजदा के पढ़ने में कराहत नहीं, मगर बेहतर येह है कि दो एक आयत पहले या बा'द की मिला ले ।[2]

सजदए तिलावत का त़रीक़ा

सुवाल सजदे का मस्नून त़रीक़ा क्या है ?

जवाब सजदे का मस्नून त़रीक़ा येह है कि खड़े हो कर **अल्लाहु अक्बर** कहते हुवे सजदे में जाइये और कम से कम तीन बार سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی कहिये, फिर **अल्लाहु अक्बर** कहते हुवे खड़े हो जाइये, पहले पीछे दोनों बार **अल्लाहु अक्बर** कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सजदे में जाना और सजदे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब हैं ।[3] लिहाज़ा बैठ कर भी सजदए तिलावत कर सकते हैं ।

सुवाल क्या सजदए तिलावत में येह निय्यत होना ज़रूरी है कि येह सजदा फ़ुलां आयत का है ?

जवाब जी नहीं ! सजदए तिलावत की निय्यत में येह ज़रूरी नहीं कि फ़ुलां आयत का सजदा है बल्कि मुत़लक़न सजदए तिलावत की निय्यत काफ़ी है ।

---
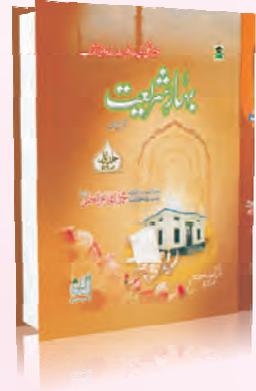
[1] ...... درمختار و ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۱۲

[2] ...... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۱۷

[3] ...... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۶۹۹

सुवाल क्या सजदए तिलावत में अल्लाहु अक्बर कहते वक़्त कानों को हाथ लगाए जाते हैं?

जवाब जी नहीं ! सजदए तिलावत में अल्लाहु अक्बर कहते वक़्त कानों को हाथ नहीं लगाए जाते ।(1)

आयते सजदा के फ़वाइद

सुवाल अगर कोई सजदे वाली तमाम आयात इकठ्ठी पढ़े तो इस की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब बहारे शरीअ़त में है कि जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सजदे की सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर सजदे करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा । ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर इस का सजदा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में 14 सजदे कर ले ।(2)

सूरए इख़्लास की फ़ज़ीलत

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में सूरए इख़्लास के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : सूरए इख़्लास मक्किया व बक़ौले मदनिय्या है, इस में एक रुकूअ़, 4 या 5 आयतें, 15 कलिमे, 47 ह़र्फ़ हैं। अह़ादीस में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं इस को तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया है या'नी तीन मरतबा इस को पढ़ा जाए तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले । एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मह़ब्बत है। फ़रमाया : इस की मह़ब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी। (तिर्मिज़ी) शाने नुज़ूल : कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَعَلا तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ के सुवाल किये। कोई कहता था कि अल्लाह का नसब क्या है? कोई कहता था कि वोह सोने का है या चांदी का है या लोहे का है या लकड़ी का है, किस चीज़ का है ? किसी ने कहा वोह क्या खाता है ? क्या पीता है? रबूबिय्यत उस ने किस से विरसे में पाई और उस का कौन वारिस होगा ? उन के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ात व सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मा'रिफ़त की राह वाज़ेह़ की और जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ात व सिफ़ात के अन्वार के बयान से मुज़महिल कर दिया ।

1 ...... تنویر الابصار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۰

2 ...... बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, 1/738

14 आयाते सजदा

सुवाल आयाते सजदा कुरआने पाक के किस पारे व सूरत में हैं और कौन सी हैं तफ़्सील बताइये ?

जवाब आयाते सजदा कुल 14 हैं जिन की तफ़्सील येह है :

﴾1﴿.....पारह 9 सूरए आ'राफ़ की आयत नम्बर 206 :

﴿ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾ ﴾

﴾2﴿.....पारह 13, सूरए रअ़्द की आयत नम्बर 15 :

﴿ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۩ ﴿١٥﴾ ﴾

﴾3﴿.....पारह 14, सूरए नह़्ल की आयत नम्बर 49 :

﴿ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ ﴾

﴾4﴿.....पारह 15, सूरए बनी इस्राईल की आयत नम्बर 107 ता 109 :

﴿ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۩ ﴿١٠٩﴾ ﴾

﴾5﴿.....पारह 16 सूरए मरयम की आयत नम्बर 58 :

﴿ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ﴿٥٨﴾ ﴾

﴾6﴿.....पारह 17, सूरए ह़ज में पहली जगह जहां सजदे का ज़िक्र है या'नी सूरए ह़ज की आयत नम्बर 18 :

﴿ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۩ ﴿١٨﴾ ﴾

﴿7﴾.....पारह 19, सूरए फुरक़ान की आयत नम्बर 60 : ﴿ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ﴾

﴿8﴾.....पारह 19, सूरए नम्ल की आयत नम्बर 25, 26 : ﴿ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۩ ﴾

﴿9﴾.....पारह 21, सूरए सजदा की आयत नम्बर 15 : ﴿ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ ﴾

﴿10﴾.....पारह 23 सूरए ص की आयत नम्बर 24, 25 : ﴿ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ ﴾

﴿11﴾.....पारह 24, सूरए حم السجدة की आयत नम्बर 37, 38 : ﴿ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۳۷﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۩ ﴾

﴿12﴾.....पारह 27, सूरए नज्म की आयत नम्बर 62 : ﴿ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۩ ﴾

﴿13﴾.....पारह 30, सूरए इनशिक़ाक़ की आयत नम्बर 20, 21 :
﴿ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۩ ﴾

﴿14﴾.....पारह 30 सूरए इक़रा (या'नी सूरए अ़लक़) की आयत नम्बर 19
﴿ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩ ﴾

नमाज़े जुमुआ

हम कितने खुश नसीब हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें जुमुअ़तुल मुबारक की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। अफ़्सोस! हम नाक़द्रे जुमुआ शरीफ़ को भी आम दिनों की त़रह ग़फ़्लत में गुज़ार देते हैं। ह़ालांकि

- जुमुआ यौमे ईद है।
- जुमुआ सब दिनों का सरदार है।
- जुमुआ के रोज़ जहन्नम की आग नहीं सुलगाई जाती।
- जुमुआ की रात दोज़ख़ के दरवाज़े नहीं खुलते।
- जुमुआ को बरोज़े क़ियामत दुल्हन की त़रह उठाया जाएगा।
- जुमुआ के रोज़ मरने वाला खुश नसीब मुसलमान शहीद का रुत्बा पाता और अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ हो जाता है।

जुमुआ से मुराद

सुवाल: जुमुआ से क्या मुराद है?

जवाब: जुमुआ के मुतअ़ल्लिक़ बहुत से अक़्वाल मरवी हैं। चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जुमुआ को जुमुआ कहने की वुजूहात कुछ यूं नक़्ल फ़रमाते हैं:

۞..... इस दिन तक्मीले ख़ल्क़ हुई ।

۞..... हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मिट्टी इसी दिन जम्अ़ हुई ।

۞..... इस दिन में लोग जम्अ़ हो कर नमाज़े जुमुआ़ अदा करते हैं । इस लिये इस दिन को जुमुआ़ कहते हैं ।[1]

जुमुआ़ का शरई हुक्म

सुवाल जुमुआ़ का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब जुमुआ़ फ़र्ज़े ऐन है और इस की फ़र्ज़िय्यत के मुतअ़ल्लिक़ नमाज़े ज़ोहर से ज़ियादा ताकीद मरवी है ।[2]

सुवाल अगर कोई जुमुआ़ न पढ़े तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स तीन जुमुआ़ (की नमाज़) सुस्ती के सबब छोड़ दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल पर मुहर लगा देगा ।[3]

सुवाल अगर कोई जुमुआ़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब अगर कोई जुमुआ़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे तो वोह काफ़िर है ।[4]

सब से पहला जुमुआ़

सुवाल जुमुआ़ का आग़ाज़ कब और कहां हुवा ?

जवाब जुमुआ़ का आग़ाज़ सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरत से पहले मदीना शरीफ़ में हुवा ।

सुवाल सब से पहले जुमुआ़ किस ने पढ़ाया ?

---

1 ...... मिरआतुल मनाजीह, जुमुआ़ का बाब, 2/317, बित्तग़य्युरिन

٢ ...... درمختار، تتمۃ کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/۵

٣ ...... مستدرک، کتاب الجمعۃ، التشدید علی التخلف عن الجمعۃ، ۱/۵۸۹، حدیث: ۱۱۲۰

٤ ...... درمختار، تتمۃ کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/۵

जवाब सरकारे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से सब से पहले जुमुआ़ हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने पढ़ाया ।

सुवाल क्या सब से पहली नमाज़े जुमुआ़ मस्जिदे नबवी में अदा की गई थी ?

जवाब जी नहीं ! उस वक़्त तक मस्जिदे नबवी नहीं बनी थी बल्कि येह नमाज़ हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन ख़ैसमा अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के घर पर अदा की गई ।

सुवाल जिस मस्जिद में जुमुआ़ होता है उसे क्या कहते हैं ?

जवाब जिस मस्जिद में जुमुआ़ पढ़ा जाता है उस को जामेअ़ मस्जिद कहते हैं ।

आक़ा का पहला जुमुआ़

सुवाल सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहला जुमुआ़ कब और कहां अदा फ़रमाया ?

जवाब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए तो 12 रबीउ़ल अव्वल पीर शरीफ़ को चाश्त के वक़्त मक़ामे क़ुबा में इक़ामत फ़रमाई । पीर, मंगल, बुध और जुमा'रात यहां क़ियाम फ़रमाया और एक मस्जिद की बुन्याद रखी । फिर जुमुआ़ के दिन मदीना शरीफ़ रवाना हुवे, रास्ते में बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़ने वादी में जुमुआ़ का वक़्त हुवा तो उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया और यूं सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां 16 रबीउ़ल अव्वल को पहला जुमुआ़ अदा फ़रमाया ।(1)

सुवाल सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में कुल कितने जुमुआ़ अदा फ़रमाए ?

जवाब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में तक़रीबन 500 जुमुए़ अदा फ़रमाए ।(2)

---

1 ……ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 28 अल जुमुअ़ह, तह़तुल आयह 9, ह़ाशिया नम्बर 21

2 ……मिरआतुल मनाजीह़, ख़ुत़बा और नमाज़, 2/346 मुलख़्ख़सन

जुमुआ का ज़िक्र कुरआन में

सुवाल क्या जुमुआ का ज़िक्र कुरआन में भी है ?

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जुमुआ के नाम की एक पूरी सूरत या'नी सूरतुल जुमुआ नाज़िल फ़रमाई है जो कि कुरआने करीम के 28 वें पारे में जगमगा रही है । अल्लाह तबारक व तआला सूरतुल जुमुआ की आयत नम्बर 9 में इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ٢٨، الجُمُعة:٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ के दिन तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो ।

जुमुआ का ज़िक्र अहादीसे मुबारका में

अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी शब) मरेगा अज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस पर शहीदों की मुहर होगी ।"(1)

हर दुआ क़बूल होती है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है:

---

1 ...... حلية الاولياء، ٣/١٨١، حديث: ٣٢٦٩

"जुमुआ में एक ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसलमान इसे पा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कुछ मांगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को ज़रूर देगा।"(1)

मक्बूल साअ़त कौन सी है ?

सुवाल वोह घड़ी कौन सी है जिस में हर दुआ़ क़बूल होती है ?

जवाब मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हर रात में रोज़ाना क़बूलिय्यते दुआ़ की साअ़त आती है मगर दिनों में सिर्फ़ जुमुआ के दिन। मगर यक़ीनी त़ौर पर येह नहीं मा'लूम कि वोह साअ़त कब है ? ग़ालिब गुमान येह है कि येह दो ख़ुत़बों के दरमियान का वक़्त है या मग़रिब से कुछ पहले का।(2)

सुवाल उस वक़्त क्या दुआ़ मांगना चाहिये ?

जवाब बेहतर येह है कि उस साअ़त में कोई जामेअ़ दुआ़ मांगे जैसे येह कुरआनी दुआ़ :

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ (پ۲،البقرة:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

जुमुआ के दिन नेकी का सवाब और गुनाह का अ़ज़ाब

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के फ़रमान के मुत़ाबिक़ "जुमुआ को ह़ज हो तो इस का सवाब सत्तर ह़ज के बराबर है, जुमुआ की एक नेकी का सवाब सत्तर गुना है।"(3) (चूंकि इस का शरफ़ बहुत ज़ियादा है, लिहाज़ा) जुमुआ के रोज़ गुनाह का अ़ज़ाब भी सत्तर गुना है।(4)

---

1 ...... مسلم، کتاب الجمعة، باب فی الساعة التی فی یوم الجمعة، ص ۴۲۴، حدیث:۱۵-(۸۵۲)

2 ...... मिरआतुल मनाजीह़, जुमुआ का बाब, 2/319 बित्तग़य्युर

3 ...... मिरआतुल मनाजीह़, जुमुआ का बाब, 2/325

4 ...... मिरआतुल मनाजीह़, सफ़ाई और जल्दी करना, 2/236
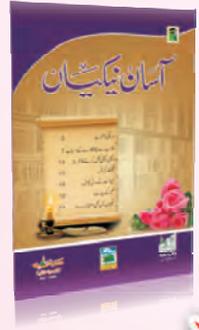
जुमुआ़ के दिन के आ'माल

सुवाल जुमुआ़ के दिन क्या काम करने चाहियें ?

जवाब जुमुआ़ के दिन येह काम करने चाहियें :

﴾1﴿ ग़ुस्ले जुमुआ़

नमाज़े जुमुआ़ से पहले ग़ुस्ल करना चाहिये। चुनान्चे, मरवी है कि "जुमुआ़ का ग़ुस्ल बाल की जड़ों से ख़त़ाएं खींच लेता है।"[1] और एक रिवायत में है : जो जुमुआ़ के दिन नहाए उस के गुनाह और ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जब वोह (मस्जिद की त़रफ़) चलना शुरूअ़ करता है तो हर क़दम पर बीस साल का अ़मल लिखा जाता है। और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उसे दो सो बरस के अ़मल का अज्र मिलता है।[2]

﴾2﴿ जुमुआ़ के दिन ज़ीनत इख़्तियार करना

जुमुआ़ के दिन ज़ीनत इख़्तियार करना चाहिये। या'नी लिबास व जिस्म की सफ़ाई के साथ साथ मिस्वाक करना चाहिये, ख़ुश्बू लगानी चाहिये, नाख़ुन तरशवाने चाहिये, ह़जामत बनवानी चाहिये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नहाए और जिस त़हारत (या'नी पाकीज़गी) की इस्तित़ाअ़त हो करे और तेल लगाए और घर में जो ख़ुश्बू हो मले, फिर नमाज़ को निकले और दो शख़्सों में जुदाई न करे या'नी दो शख़्स बैठे हुवे हों उन्हें हटा कर बीच में न बैठे और जो नमाज़ उस के लिये लिखी गई है पढ़े और इमाम जब ख़ुत़बा पढ़े तो चुप रहे उस के लिये उन गुनाहों की जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं मग़फ़िरत हो जाएगी।[3] मरवी है कि

[1] ...... المعجم الكبير، ۸/۲۵٦، حديث: ۷۹۹٦

[2] ...... المعجم الاوسط، ۲/۳۱۴، حديث: ۳۳۹۷

[3] ...... بخاری، کتاب الجمعة، باب الدهن للجمعة، ۱/۳۰٦، حديث: ۸۸۳

"जो शख़्स जुमुआ़ के दिन अपने नाखुन काटता है अल्लाह तआ़ला उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा दाख़िल कर देता है।"(1)

सुवाल हजामत बनवाने और नाखुन तरशवाने का काम जुमुआ़ से पहले करना चाहिये या जुमुआ़ के बा'द ?

जवाब हजामत बनवाने और नाखुन तरशवाने का काम जुमुआ़ से पहले भी किया जा सकता है मगर जुमुआ़ के बा'द येह काम करना अफ़्ज़ल है।(2)

﴾3﴿ इमामा शरीफ़ बांधना

इमामा शरीफ़ चाहिये तो येह कि हर रोज़ बांधा जाए मगर जुमुआ़ के दिन बिल ख़ुसूस इमामा बांधने की फ़ज़ीलत भी मरवी है। चुनान्चे, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे रह़मत बुन्याद है : "बेशक अल्लाह तआ़ला और उस के फ़िरिश्ते जुमुआ़ के दिन इमामा बांधने वालों पर दुरूद भेजते हैं।"(3)

﴾4﴿ दुरूदे पाक कसरत से पढ़ना

जुमुआ़ के दिन दुरूदे पाक कसरत से पढ़ना चाहिये। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूद की कसरत करो कि येह दिन मश्हूद है, इस में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं और जो दुरूद पढ़ता है मुझ पर पेश किया जाता है यहां तक कि वोह फ़ारिग़ हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की और क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी ? इरशाद फ़रमाया : हां इस के बा'द भी ! क्यूंकि

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَآءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर अम्बिया के जिस्म खाना ह़राम कर दिया है, अल्लाह का नबी ज़िन्दा है, रोज़ी दिया जाता है।(4)

---

1 ...... المصنّف لابن ابی شیبه، کتاب الجمعة، باب فی تنقیة الاظفار...... الخ، ۲/۶۵، حدیث: ۲

2 ...... درمختار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ۹/۶۶۸

3 ...... مجمعُ الزوائد، کتاب الصلاة، باب اللباس للجمعة، ۲/۳۹۴، حدیث: ۳۰۷۵

4 ...... ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاته ودفنه صلی اللہ علیه وسلم، ۲/۲۹۱، حدیث: ۱۶۳۷

﴾5﴿ जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना

जिस क़दर मुमकिन हो जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्द जाने की कोशिश करे । चुनान्चे,

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जब जुमुआ़ का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फ़िरिश्ते आने वाले को लिखते हैं, जो पहले आए उस को पहले लिखते हैं, जल्दी आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो अल्लाह तआ़ला की राह में एक ऊंट सदक़ा करता है और इस के बा'द आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो एक गाए सदक़ा करता है, इस के बा'द वाला उस शख़्स की मिस्ल है जो मेंढा सदक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो मुरग़ी सदक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो अन्डा सदक़ा करे और जब इमाम (ख़ुत़बे के लिये) बैठ जाता है तो वोह आ'माल नामों को लपेट लेते हैं और आ कर ख़ुत़बा सुनते हैं ।"[1]

पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "पहली सदी में सह़री के वक़्त और फ़ज्र के बा'द रास्तों को लोगों से भरा हुवा देखा जाता था, वोह चराग़ लिये हुवे (नमाज़े जुमुआ़ के लिये) जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जाते गोया ईद का दिन हो, ह़त्ता कि येह सिलसिला ख़त्म हो गया । पस मन्क़ूल है कि इस्लाम में जो पहली बिदअ़त ज़ाहिर हुई वोह जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाने को छोड़ना है ।[2]

﴾6﴿ जामेअ़ मस्जिद में ठहरना

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (नमाज़े जुमुआ़ के बा'द) अ़स्र की नमाज़ पढ़ने तक मस्जिद ही में रहे और अगर नमाज़े मग़रिब

[1] ……بخاری، کتاب الجمعة، باب الاستماع……الخ، ۱/۳۱۹، حدیث: ۹۲۹

[2] ……احیاء العلوم، کتاب اسرار الصلاة ومهماتها، الباب الخامس، ۱/۲۴۲

तक ठहरे तो अफ़्ज़ल है, मन्क़ूल है कि जिस ने जामेअ़ मस्जिद में (जुमुआ़ अदा करने के बा'द वहीं रुक कर) नमाज़े अ़स्र पढ़ी उस के लिये ह़ज का सवाब है और जिस ने (वहीं रुक कर) मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उस के लिये ह़ज और उ़मरे का सवाब है।[1]

﴾7﴿ क़ब्रों पर ह़ाज़िरी देना

बहारे शरीअ़त में है : जुमुआ़ के दिन रूहें जम्अ़ होती हैं, लिहाज़ा इस में ज़ियारते क़ुबूर करनी चाहिये और इस रोज़ जहन्नम को (भी) नहीं भड़काया जाता।[2]

सुवाल जुमुआ़ के दिन ज़ियारते क़ुबूर का अफ़्ज़ल वक़्त कौन सा है ?

जवाब जुमुआ़ के दिन ज़ियारते क़ुबूर का अफ़्ज़ल वक़्त नमाज़े फ़ज्र के बा'द का है।[3]

वालिदैन की क़ब्र की ज़ियारत का सवाब

सुवाल अगर किसी के मां बाप दोनों या कोई एक फ़ौत हो चुका हो तो क्या जुमुआ़ के दिन उन की क़ब्र की ज़ियारत करने के मुतअ़ल्लिक़ कोई रिवायत मरवी है ?

जवाब जी हां ! अगर किसी के मां बाप दोनों या कोई एक फ़ौत हो चुका हो तो जुमुआ़ के दिन उन की क़ब्र की ज़ियारत करने के मुतअ़ल्लिक़ कई रिवायात मरवी हैं। चुनान्चे, ज़ैल में तीन रिवायात पेशे ख़िदमत हैं :

- जो अपने मां बाप दोनों या एक की क़ब्र पर हर जुमुआ़ के दिन ज़ियारत को ह़ाज़िर हो, अल्लाह तआ़ला उस के गुनाह बख़्श देता है और उसे मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिख लिया जाता है।[4]
- पीर और जुमा'रात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर आ'माल पेश होते हैं और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मां बाप के सामने हर जुमुआ़ को,

[1] ……احیاء العلوم، کتاب اسرار الصلاۃ ومھماتھا، الباب الخامس، ۱/ ۲۴۹

[2] …… बहारे शरीअ़त, जुमुआ़ का बयान, 1/ 777

[3] …… फ़तावा रज़विय्या, 9/523 बित्तग़य्युर

[4] ……نوادر الاصول للترمذی، ص ۲۴

वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ाई और चमक दमक बढ़ जाती है, लिहाज़ा अल्लाह से डरो और अपने वफ़ात पाने वालों को अपने गुनाहों से दुख न पहुंचाओ।[1]

۞.....जो हर जुमुआ़ वालिदैन या एक की ज़ियारते क़ब्र कर के वहां सूरए यासीन पढ़े तो इस सूरत में जितने ह़र्फ़ हैं इन सब की गिनती के बराबर अल्लाह तआ़ला उस के लिये मग़फ़िरत फ़रमाए।[2]

मा'लूम हुवा जुमुआ़ शरीफ़ को फ़ौत शुदा वालिदैन या इन में से एक की क़ब्र पर ह़ाज़िर हो कर यासीन शरीफ़ पढ़ने वाले का तो बेड़ा ही पार है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सूरए यासीन में 5 रुकूअ़ 83 आयात 729 कलिमात और 3000 हुरूफ़ हैं, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक हमारी येह गिनती दुरुस्त है तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तीन हज़ार मग़फ़िरतों का सवाब मिलेगा।

﴾8﴿ सूरए कह्फ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा अ़ज़मत है: "जो शख़्स जुमुआ़ के रोज़ सूरए कह्फ़ पढ़ेगा उस के क़दम से आस्मान तक नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत को उस के लिये रोशन होगा और दो जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुवे हैं बख़्श दिये जाएंगे।"[3] और एक रिवायत में है: "जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ सूरए कह्फ़ पढ़े उस के लिये दोनों जुमुओं के दरमियान नूर रोशन होगा।"[4]

﴾9﴿ जुमुआ़ के पांच ख़ुसूसी आ'माल

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है: "पांच चीज़ें जो एक दिन में करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नती लिख देगा: (1) जो मरीज़ की इ़यादत को जाए (2) नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िर हो (3) रोज़ा रखे (4) नमाज़े जुमुआ़ को जाए और (5) ग़ुलाम आज़ाद करे।"[5]

---

[1]......نوادرالاصول للترمذی، ص ۲۱۳

[2]......اتحاف السادۃ المتقین، ۱۰/۳۶۳

[3]......الترغیب والترھیب، کتاب الجمعۃ، الترغیب فی قراءۃ سورۃ الکھف......الخ، ۱/۲۹۸، حدیث: ۲

[4]......المرجع السابق، ص ۲۹۷، حدیث: ۱

[5]......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب صلوۃ الجمعۃ، ۴/۱۹۱، حدیث: ۲۷۶۰

शराइते जुमुआ

जुमुआ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं, इन में से एक भी कम हो तो फ़र्ज़ नहीं, फिर भी अगर कोई पढ़ ले तो हो जाएगा बल्कि आ़क़िल बालिग़ मर्द के लिये जुमुआ पढ़ना अफ़्ज़ल है। नाबालिग़ ने जुमुआ पढ़ा तो नफ़्ल है कि उस पर नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं।[1]

"या ग़ौसल आ'ज़म" के 11 हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ की अदाएगी फ़र्ज़ होने की ग्यारह शराइत

(1) शहर में मुक़ीम होना (2) सिह्हत या'नी मरीज़ पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं मरीज़ से मुराद वोह है कि जामेअ़ मस्जिद तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा। शैख़े फ़ानी[2] मरीज़ के हुक्म में है (3) आज़ाद होना, ग़ुलाम पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं और उस का आक़ा मन्अ़ कर सकता है (4) मर्द होना (5) बालिग़ होना (6) आ़क़िल होना। येह दोनों शर्तें या'नी आ़क़िल व बालिग़ होना ख़ास जुमुआ के लिये नहीं बल्कि हर इबादत के वाजिब होने में शर्त हैं (7) अंखयारा होना (8) चलने पर क़ादिर होना (9) क़ैद में न होना (10) बादशाह या चोर वग़ैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना (11) बारिश या आंधी या ओले या सर्दी का न होना या'नी इस क़दर कि इन से नुक़्सान का ख़ौफ़े सह़ीह़ हो।[3] जिन पर नमाज़ फ़र्ज़ है मगर किसी शरई उ़ज़्र के सबब जुमुआ फ़र्ज़ नहीं, उन को जुमुआ के रोज़ ज़ोहर मुआफ़ नहीं है वोह तो पढ़नी ही होगी।

---

[1] ...... नमाज़ के अह़काम स. 424

[2] ......शैख़े फ़ानी : वोह बूढ़ा जिस की उ़म्र ऐसी हो गई कि अब रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होता जाएगा जब वोह रोज़ा रखने से आ़जिज़ हो या'नी न अब रख सकता है न आयिन्दा उस में इतनी त़ाक़त आने की उम्मीद है कि रोज़ा रख सकेगा (तो शैख़े फ़ानी है)। (बहारे शरीअ़त, इस्तिलाहात, 1/55)

[3] ...... درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، مطلب فی شروط ...... الخ، ۳/۳۰تا۳۳

ख़ुत़बे के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मुफ़ीद बातें

जो जुमुआ़ के दिन कलाम करे जब कि इमाम ख़ुत़बा दे रहा हो तो इस की मिसाल उस गधे जैसी है जो बोझ उठाए हो और इस वक़्त जो कोई अपने साथी से येह कहे कि "चुप रहो" तो उसे जुमुआ़ का सवाब न मिलेगा ।[1]

ख़ुत़बा सुनना वाजिब है

जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं मसलन खाना पीना, सलाम व जवाब वग़ैरा येह सब ख़ुत़बे की ह़ालत में भी ह़राम हैं यहां तक कि नेकी की दा'वत देना भी । हां ख़त़ीब नेकी की दा'वत दे सकता है । जब ख़ुत़बा पढ़े तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना वाजिब है, जो लोग इमाम से दूर हों कि ख़ुत़बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना वाजिब है अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ या सर के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से नाजाइज़ है ।[2]

ख़ुत़बा सुनने वाला दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ सकता

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक ख़त़ीब ने लिया तो दिल में दुरूद शरीफ़ पढ़ें क्यूंकि इस वक़्त ज़बान से पढ़ने की इजाज़त नहीं, यूंही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़िक्रे पाक पर इस वक़्त رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं ।[3]

ख़ुत़बे से पहले का ए'लान

आज कल इ़ल्मे दीन से दूरी का दौर है, लोग दीगर इ़बादात की त़रह़ ख़ुत़बा सुनने जैसी अ़ज़ीम इ़बादत में भी ग़लत़ियां कर के कई गुनाहों का इर्तिकाब करते हैं, लिहाज़ा मदनी इल्तिजा है कि ढेरों नेकियां कमाने के लिये हर जुमुआ़ को ख़त़ीब क़ब्ल अज़ अज़ाने ख़ुत़बा मिम्बर पर बैठने से पहले येह ए'लान करे :

---

[1] ...... مسندِاحمد، ١/٤٩٤، حديث: ٢٠٣٣

[2] ...... درمختار، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ٣/٣٩

[3] ...... المرجع السابق، ص ٤٠، ٤١ ملتقطًا

"بِسۡمِ اللّٰہ" के सात हुरूफ़ की निस्बत से खुत़बे के 7 मदनी फूल

﴾1﴿.....ह़दीसे पाक में है : "जिस ने जुमुआ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया।"[1] इस के एक मा'ना येह है कि उस पर चढ़ चढ़ कर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे।

﴾2﴿.....ख़त़ीब की त़रफ़ मुंह कर के बैठना सुन्नते सह़ाबा है।[2]

﴾3﴿.....बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : दो ज़ानू बैठ कर खुत़बा सुने, पहले खुत़बे में हाथ बांधे, दूसरे में ज़ानू पर रखे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दो रक्अ़त का सवाब मिलेगा।[3]

﴾4﴿.....आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "खुत़बे में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे पाक सुन कर दिल में दुरूद पढ़ें कि ज़बान से सुकूत (या'नी ख़ामोशी) फ़र्ज़ है।"[4]

﴾5﴿.....दुर्रे मुख़्तार में है : खुत़बे में खाना पीना, कलाम करना अगर्चे سُبۡحَانَ اللّٰہ कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना ह़राम है।[5]

﴾6﴿.....आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : ब ह़ालते खुत़बा चलना ह़राम है। यहां तक उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि अगर ऐसे वक़्त आया कि खुत़बा शुरूअ़ हो गया तो मस्जिद में जहां तक पहुंचा वहीं रुक जाए, आगे न बढ़े कि येह अ़मल होगा और ह़ाले खुत़बा में कोई अ़मल रवा (या'नी जाइज़) नहीं।[6]

﴾7﴿.....आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "खुत़बे में किसी त़रफ़ गर्दन फेर कर देखना (भी) ह़राम है।"[7]

---

1 ...... ترمذی، کتاب الجمعۃ، باب ماجاء فی کراھیۃ ......الخ، ۲/۴۸، حدیث: ۵۱۳
2 ...... مشکاۃ المصابیح، ص ۲۳۱ مطبوعہ باب المدینہ (کراچی)
3 ...... मिरआतुल मनाजीह़, 2/338
4 ...... फ़तावा रज़विय्या, 8/365
5 ...... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/۳۹
6 ...... फ़तावा रज़विय्या, 8/334 माख़ूज़न
7 ...... المرجع السابق

जुमुआ का पहला ख़ुतबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَ سَيِّدَنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ جَمِيْعًا ط وَاَقَامَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لِلْمُذْنِبِيْنَ الْمُتَلَوِّثِيْنَ الْخَطَّآئِيْنَ الْهَالِكِيْنَ شَفِيْعًا ط فَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ ط وَعَلٰى كُلِّ مَنْ هُوَ مَحْبُوْبٌ وَّمَرْضِيٌّ لَّدَيْهِ صَلٰوةً تَبْقٰى وَتَدُوْمُ بِدَوَامِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ط وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط وَاَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ اَرْسَلَهٗ ط صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَيَآ اَيُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ ط رَحِمَنَا وَرَحِمَكُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ط اُوْصِيْكُمْ وَنَفْسِىْ بِتَقْوَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فِى السِّرِّ وَالْاِعْلَانِ ط فَاِنَّ التَّقْوٰى سَنَامُ ذُرَى الْاِيْمَانِ ط وَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ كُلِّ شَجَرٍ وَّحَجَرٍ ط وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ط وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ط وَاقْتَفُوْٓا اٰثَارَ سُنَنِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ط فَاِنَّ السُّنَنَ هِىَ الْاَنْوَارُ وَزَيِّنُوْا قُلُوْبَكُمْ بِحُبِّ هٰذَا النَّبِيِّ الْكَرِيْمِ ط عَلَيْهِ وَ عَلٰٓى اٰلِهٖ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَ التَّسْلِيْمِ فَاِنَّ الْحُبَّ هُوَ الْاِيْمَانُ كُلُّهٗ ط اَلَا لَآ اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ ط اَلَا لَآ اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ ط اَلَا لَآ اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ ط رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى وَاِيَّاكُمْ حُبَّ حَبِيْبِهٖ هٰذَا النَّبِيِّ الْكَرِيْمِ ط عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ اَكْرَمُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْمِ ط كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضٰى ط وَاسْتَعْمَلَنَا وَاِيَّاكُمْ بِسُنَّتِهٖ ط وَحَيَّانَا وَاِيَّاكُمْ عَلٰى مَحَبَّتِهٖ ط وَتَوَفَّانَا وَاِيَّاكُمْ عَلٰى مِلَّتِهٖ ط وَحَشَرَنَا وَاِيَّاكُمْ فِىْ زُمْرَتِهٖ ط وَسَقَانَا وَاِيَّاكُمْ مِنْ شَرْبَتِهٖ ط شَرَابًا هَنِيْئًا مَّرِيْئًا سَآئِغًا لَّا نَظْمَأُ بَعْدَهٗٓ اَبَدًا ط وَاَدْخَلَنَا وَاِيَّاكُمْ فِىْ جَنَّتِهٖ ط بِمَنِّهٖ وَرَحْمَتِهٖ

وَ كَرَمِهٖ وَرَاْفَتِهٖ ط اِنَّهٗ هُوَ الرَّءُوْفُ الرَّحِيْمُ ط عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ط اَلْبِرُّ
لَا يَبْلٰى وَالذَّنْبُ لَا يُنْسٰى وَالدَّيَّانُ لَا يَمُوْتُ ط اِعْمَلْ مَاشِئْتَ كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ ط
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط ﴿**فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۞ وَ مَنْ**
يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۞﴾ بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ ط وَنَفَعَنَا
وَاِيَّاكُمْ بِالْاٰيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ط اِنَّهٗ تَعَالٰى مَلِكٌ كَرِيْمٌ ط جَوَادٌ بَرٌّ رَّءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ط
اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا ط وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَآئِرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ط

जुमुआ का दूसरा ख़ुत्बा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ ط وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ
شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا ط مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ
لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ اَرْسَلَهٗ ط صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
اَجْمَعِيْنَ وَ بَارَكَ وَسَلَّمَ اَبَدًا ط لَا سِيَّمَا عَلٰٓى اَوَّلِهِمْ بِالتَّصْدِيْقِ ط وَاَفْضَلِهِمْ بِالتَّحْقِيْقِ ط
اَلْمَوْلَى الْاِمَامِ الصِّدِّيْقِ ط اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِمَامِ الْمُشَاهِدِيْنَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط سَيِّدِنَا
وَمَوْلٰنَا الْاِمَامِ ط اَبِيْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ ط رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ط وَعَلٰٓى اَعْدَلِ الْاَصْحَابِ ط مُزَيِّنِ
الْمِنْبَرِ وَالْمِحْرَابِ ط اَلْمُوَافِقِ رَاْيُهٗ لِلْوَحْيِ وَالْكِتَابِ ط سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا الْاِمَامِ ط اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَغَيْظِ الْمُنَافِقِيْنَ ط اِمَامِ الْمُجَاهِدِيْنَ فِيْ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط اَبِيْ حَفْصٍ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ط رَضِيَ
اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ط وَعَلٰى جَامِعِ الْقُرْاٰنِ كَامِلِ الْحَيَآءِ وَالْاِيْمَانِ ط مُجَهِّزِ جَيْشِ الْعُسْرَةِ فِيْ

رِضَى الرَّحْمٰنِ ؕ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا الْاِمَامِ ؕ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَاِمَامِ الْمُتَصَدِّقِیْنَ لِرَبِّ
الْعٰلَمِیْنَ ؕ اَبِیْ عَمْرٍو عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ ؕ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ؕ وَعَلٰی اَسَدِ اللّٰہِ الْغَالِبِ ؕ اِمَامِ
الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ ؕ حَلَّالِ الْمُشْکِلَاتِ وَالنَّوَآئِبِ ؕ دَفَّاعِ الْمُعْضَلَاتِ وَالْمَصَآئِبِ ؕ اَخِ
الرَّسُوْلِ وَزَوْجِ الْبَتُوْلِ ؕ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا الْاِمَامِ ؕ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَاِمَامِ الْوَاصِلِیْنَ اِلٰی
رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ؕ اَبِی الْحَسَنِ عَلِیِّ بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ ؕ کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْمِ ؕ وَعَلٰی ابْنَیْہِ
الْکَرِیْمَیْنِ السَّعِیْدَیْنِ الشَّہِیْدَیْنِ ؕ اَلْقَمَرَیْنِ الْمُنِیْرَیْنِ النَّیِّرَیْنِ ؕ اَلزَّاہِرَیْنِ الْبَاہِرَیْنِ
الطَّیِّبَیْنِ الطَّاہِرَیْنِ ؕ سَیِّدَیْنَا اَبِیْ مُحَمَّدِ ِالْحَسَنِ وَاَبِیْ عَبْدِ اللّٰہِ الْحُسَیْنِ ؕ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی
عَنْہُمَا ؕ وَعَلٰی اُمِّہِمَا سَیِّدَۃِ النِّسَاءِ ؕ اَلْبَتُوْلِ الزَّہْرَآءِ ؕ فِلْذَۃِ کَبِدِ خَیْرِ الْاَنْبِیَآءِ ؕ صَلَوَاتُ اللّٰہِ
تَعَالٰی وَسَلَامُہٗ عَلٰی اَبِیْہَا الْکَرِیْمِ ؕ وَعَلَیْہَا وَعَلٰی بَعْلِہَا وَابْنَیْہَا ؕ وَعَلٰی عَمَّیْہِ الشَّرِیْفَیْنِ
الْمُطَہَّرَیْنِ مِنَ الْاَدْنَاسِ ؕ سَیِّدَیْنَا اَبِیْ عُمَارَۃَ حَمْزَۃَ وَاَبِی الْفَضْلِ الْعَبَّاسِ ؕ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی
عَنْہُمَا ؕ وَعَلٰی سَآئِرِ فِرَقِ الْاَنْصَارِ وَالْمُہَاجِرَۃِ ؕ وَعَلَیْنَا مَعَہُمْ یَا اَہْلَ التَّقْوٰی وَاَہْلَ
الْمَغْفِرَۃِ ؕ اَللّٰہُمَّ انْصُرْ مَنْ نَّصَرَ دِیْنَ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ
وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ ؕ رَبَّنَا یَا مَوْلٰنَا وَاجْعَلْنَا مِنْہُمْ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِیْنَ
سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ ؕ رَبَّنَا یَا مَوْلٰنَا وَلَا
تَجْعَلْنَا مِنْہُمْ ؕ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ ؕ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآئِ ذِی
الْقُرْبٰی وَیَنْہٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ ۚ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ ؕ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ
تَعَالٰی اَعْلٰی وَاَوْلٰی وَاَجَلُّ وَاَعَزُّ وَاَتَمُّ وَاَہَمُّ وَاَعْظَمُ وَاَکْبَرُ ؕ

मुसलमानों की ईदें

सुवाल साल में कितनी ईदें हैं ?

जवाब साल में दो ईदें हैं या'नी ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा ।

सुवाल येह दोनों ईदें कब और किन महीनों में मनाई जाती हैं ?

जवाब ईदुल फ़ित्र माहे रमज़ानुल मुबारक के ख़त्म होने के बा'द यकुम शव्वालुल मुकर्रम को मनाई जाती है और ईदुल अज़्हा माहे ज़ुल हिज्जतुल हराम की दस तारीख़ को मनाई जाती है ।

सुवाल इन दोनों ईदों पर मुसलमान क्या करते हैं ?

जवाब इन दोनों ईदों पर मुसलमान ख़ुशियां मनाते हैं । मसलन

- ईदुल फ़ित्र को मीठी ईद भी कहते हैं इस दिन रंग बिरंगे खाने पकाए जाते हैं, नमाज़े ईद पढ़ने से पहले ग़रीबों को अपनी ख़ुशियों में शरीक करने के लिये फ़ित्राना दिया जाता है ।
- ईदुल अज़्हा को ईदे क़ुरबान और बक़र ईद भी कहते हैं, इस मौक़अ़ पर नमाज़े ईद के बा'द राहे ख़ुदा में जानवरों की क़ुरबानियां पेश की जाती हैं ।

सुवाल क्या इन दोनों ईदों के इलावा भी किसी दिन को ईद कहा गया है ?

जवाब जी हां ! जुमुआ़ के दिन को भी ईद का दिन कहा गया है ।

ईदों की ईद

सुवाल क्या इन ईदों के इलावा भी कोई दिन ऐसा है जिस में मुसलमान ख़ुशियां मनाते हैं ?

जवाब जी हां ! इन दो ईदों के इलावा माहे रबीउ़ल अव्वल की बारह तारीख़ को भी मुसलमान ख़ूब ख़ुशियां मनाते हैं, क्यूंकि इस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुब्हे सादिक़ के वक़्त

इस जहां में फ़ज़्लो रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए । लिहाज़ा बारह रबीउ़ल अव्वल का दिन मुसलमानों के लिये ईदों की भी ईद है इस लिये कि अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां में शाहे बह़रो बर बन कर जल्वा गर न होते तो कोई ईद, ईद होती न कोई शब, शबे बराअत । बिला शुबा कौनो मकान की तमाम तर रौनक़ो शान इस जाने जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों की धूल का सदक़ा है ।

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है[1]

सुवाल ईदे मीलाद के मौक़अ़ पर मुसलमान क्या करते हैं ?

जवाब ईदे मीलाद के मौक़अ़ पर मुसलमान घरों को माहे रबीउ़ल अव्वल की आमद के साथ ही झन्डों और चरागां वग़ैरा से ख़ूब सजाते हैं, फिर बारह तारीख़ को मीलाद की ख़ुशी में जल्से जुलूसों का ख़ूब एहतिमाम करते हैं जिन में झूम झूम कर ना'तें पढ़ी जाती हैं और दरो दीवार "सरकार की आमद मरह़बा" के पुर कैफ़ ना'रों से गूंज उठते हैं ।

ईदैन की नमाज़ें

सुवाल क्या ईदैन की नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है ?

जवाब जी नहीं ! ईदैन की नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ नहीं बल्कि वाजिब है ।

सुवाल क्या ईदैन की नमाज़ पढ़ना तमाम मुसलमानों पर वाजिब है ?

जवाब जी नहीं ! ईदैन की नमाज़ पढ़ना सब पर वाजिब नहीं बल्कि सिर्फ़ उन लोगों पर वाजिब है जिन पर जुमुआ़ वाजिब है ।

सुवाल क्या नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी की त़रह़ नमाज़े ईदैन की अदाएगी की भी कुछ शराइत़ हैं ?

जवाब जी हां ! नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी की त़रह़ नमाज़े ईदैन की अदाएगी की भी शराइत़ हैं और येह वोही शर्तें हैं जो जुमुआ़ के लिये हैं ।

[1] ⋯⋯ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 178

नमाज़े ईदैन व नमाज़े जुमुआ में फ़र्क़

सुवाल क्या नमाज़े जुमुआ और नमाज़े ईदैन की अदाएगी में कोई फ़र्क़ है?

जवाब जी हां! नमाज़े जुमुआ और नमाज़े ईदैन की अदाएगी में बुन्यादी तौर पर तीन फ़र्क़ हैं :

- .....जुमुआ में ख़ुत़बा शर्त़ है और ईदैन में सुन्नत। अगर जुमुआ में ख़ुत़बा न पढ़ा तो जुमुआ न हुवा और ईदैन में न पढ़ा तो नमाज़ हो गई मगर बुरा किया।
- .....जुमुआ का ख़ुत़बा नमाज़ से पहले होता है और ईदैन का नमाज़ के बा'द। अगर पहले पढ़ लिया तो बुरा किया, मगर नमाज़ हो गई लौटाई नहीं जाएगी।
- .....जुमुआ की नमाज़ से पहले अज़ानो इक़ामत होती है मगर ईदैन में न अज़ान है न इक़ामत। सिर्फ़ दो बार इतना कहने की इजाज़त है : اَلصَّلٰوۃُ جَامِعَۃٌ

नमाज़े ईद का त़रीक़ा

نمازِ عید کا طریقہ

सुवाल क्या ईदैन की नमाज़ों और आ़म नमाज़ों की अदाएगी में भी कोई फ़र्क़ है?

जवाब जी हां! ईदैन की नमाज़ों और आ़म नमाज़ों की अदाएगी में मा'मूली सा फ़र्क़ है।

सुवाल नमाज़े ईद का त़रीक़ा क्या है?

जवाब नमाज़े ईद का त़रीक़ा येह है :

- .....सब से पहले नमाज़ी को चाहिये कि इस त़रह़ निय्यत करे :
  मैं निय्यत करता हूं दो रक्अ़त नमाज़ ईदुल फ़ित्र (या ईदुल अज़्ह़ा) की, साथ छे ज़ाइद तक्बीरों के, वासित़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, (मुक़्तदी येह भी कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह त़रफ़ क़िब्ला शरीफ़।
- .....फिर कानों तक हाथ उठाए और अल्लाहु अक्बर कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध ले।
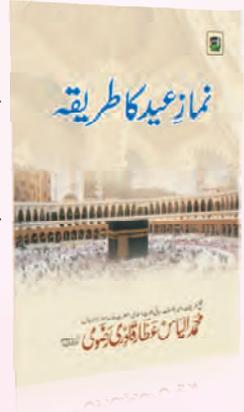
۞·····सना पढ़े ।

۞·····फिर कानों तक हाथ उठाए और अल्लाहु अक्बर कहते हुवे लटका दे ।

۞·····फिर कानों तक हाथ उठाए और अल्लाहु अक्बर कह कर लटका दे ।

۞·····फिर कानों तक हाथ उठाए और अल्लाहु अक्बर कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध ले ।

(या'नी पहली तक्बीर के बा'द हाथ बांधे इस के बा'द दूसरी और तीसरी तक्बीर में लटकाए और चौथी में हाथ बांध ले । इस को यूं याद रखे कि जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं)

۞·····फिर इमाम तअ़व्वुज़ और तस्मिय्या आहिस्ता पढ़ कर अल ह़म्द शरीफ़ और सूरत बुलन्द आवाज़ के साथ पढ़े, फिर रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा कर के पहली रक्अ़त मुकम्मल कर ले ।

۞·····फिर दूसरी रक्अ़त में पहले अल ह़म्द शरीफ़ और सूरत जह्र के साथ पढ़े ।

۞·····फिर तीन बार कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहे और हाथ न बांधे और चौथी बार बिग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर कहते हुवे रुकूअ़ में जाए ।

۞·····बाक़ी नमाज़ दूसरी नमाज़ों की त़रह़ पूरी करे, सलाम फेरने के बा'द इमाम दो ख़ुत़बे पढ़े । फिर दुआ़ मांगे पहले ख़ुत़बे को शुरूअ़ करने से पहले इमाम नव बार और दूसरे से पहले सात बार और मिम्बर से उतरने से पहले चौदह बार अल्लाहु अक्बर आहिस्ता से कहे कि येह सुन्नत है ।

۞······۞······۞

नमाज़े जनाज़ा

तजहीज़ व तक्फ़ीन

सुवाल : नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल क्या मय्यित के लिये कोई ख़ास एहतिमाम किया जाता है ?

जवाब : जी हां ! नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल मय्यित की तजहीज़ व तक्फ़ीन का एहतिमाम किया जाता है ।

सुवाल : तजहीज़ व तक्फ़ीन से क्या मुराद है ?

जवाब : तजहीज़ से मुराद मय्यित को ग़ुस्ल वग़ैरा देना और तक्फ़ीन से मुराद मय्यित को कफ़न पहनाना है ।

सुवाल : ग़ुस्ले मय्यित के फ़राइज़ बताएं ?

जवाब : एक बार सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन बार सुन्नत ।

ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा

सुवाल : ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा बताएं ?

जवाब : ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा येह है :

- .....अगरबत्तियां या लूबान जला कर तीन, पांच या सात बार ग़ुस्ल के तख़्ते को धूनी दें या'नी इतनी बार तख़्ते के गिर्द फिराएं ।
- .....तख़्ते पर मय्यित को इस त़रह़ लिटाएं जैसे क़ब्र में लिटाते हैं ।
- .....नाफ़ से घुटनों समेत कपड़े से छुपा दें ।(1)

---

(1).....आज कल ग़ुस्ल के दौरान सफ़ेद कपड़ा औढ़ाते हैं, पानी लगने से बे पर्दगी होती है, लिहाज़ा कथ्थई या गहरे रंग का इतना मोटा कपड़ा हो कि पानी पड़ने से सत्र न चमके, कपड़े की दो तहें कर लें तो ज़ियादा बेहतर ।

۞..... नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर इस्तिन्जा करवाए (या'नी पानी से धोए) ।

۞..... फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करवाएं या'नी तीन बार मुंह फिर कोहनियों समेत दोनों हाथ तीन तीन बार धुलाएं, फिर सर का मस्ह करें, फिर तीन बार दोनों पाउं धुलाएं ।[1]

۞..... फिर सर और दाढ़ी के बाल हो तो वोह धोएं ।

۞..... अब बाईं (या'नी उलटी) करवट पर लिटा कर बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा (नीम गर्म) पानी और येह न हो तो ख़ालिस पानी नीम गर्म सर से पाउं तक बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए ।

۞..... फिर सीधी करवट लिटा कर भी इसी त़रह़ करें ।

۞..... फिर टेक लगा कर बिठाएं और नर्मी के साथ पेट के निचले ह़िस्से पर हाथ फेरें और कुछ निकले तो धो डालें । दोबारा वुज़ू और ग़ुस्ल की ह़ाजत नहीं ।

۞..... फिर आख़िर में सर से पाउं तक तीन बार काफ़ूर का पानी बहाएं ।

۞..... फिर किसी पाक कपड़े से बदन आहिस्ता से पोंछ दें ।

मस्नून कफ़न और इस की तफ़्सील

सुवाल मर्द व औ़रत का मस्नून कफ़न क्या है ?

जवाब मर्द के कफ़न में तीन कपड़े होते हैं : ﴾1﴿.....लिफ़ाफ़ा ﴾2﴿.....इज़ार और ﴾3﴿.....क़मीस । और औ़रत के लिये मज़्कूरा तीन के इ़लावा दो मज़ीद होते हैं या'नी ﴾4﴿.....सीना बन्द और ﴾5﴿.....औढ़नी ।

﴾1﴿.....लिफ़ाफ़ा (या'नी चादर) मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों त़रफ़ से बांध सकें ।

﴾2﴿.....इज़ार (या'नी तहबन्द) चोटी से क़दम तक हो ।

---

[1]......मय्यित के वुज़ू में पहले गट्टों तक हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है । अलबत्ता कपड़े या रूई के फुरैरे भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दें ।

《3》.....क़मीस (या'नी कफ़नी) गर्दन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो, इस में चाक और आस्तीनें न हों । मर्द के लिये कफ़नी कन्धों पर चीरें और औ़रत के लिये सीने की त़रफ़ ।

《4》.....सीना बन्द पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो ।

《5》.....औढ़नी तीन हाथ (या'नी डेढ़ गज़) की हो ।

सुवाल मुख़न्नस (हीजड़े) को मर्दों वाला मस्नून कफ़न दिया जाएगा या औ़रतों वाला ?

जवाब मुख़न्नस को औ़रतों वाला कफ़न दिया जाए ।

सुवाल मर्दों और औ़रतों को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा बताइये ?

जवाब मर्दों और औ़रतों को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा दर्जे ज़ैल है :
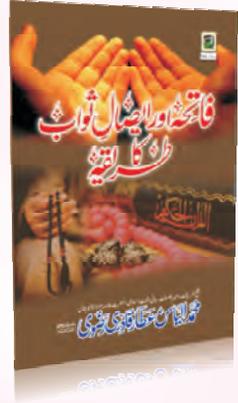
मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

- कफ़न को एक, तीन, पांच या सात बार धूनी दें ।
- फिर इस त़रह़ बिछाएं कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर इस पर तहबन्द और इस के ऊपर कफ़नी रखें ।
- अब मय्यित को इस पर लिटाएं और कफ़नी पहनाएं ।
- अब दाढ़ी पर (न हो तो ठोड़ी पर) और तमाम जिस्म पर ख़ुश्बू मलें ।
- वोह आ'ज़ा जिन पर सजदा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक, हाथों और क़दमों पर काफ़ूर लगाएं ।
- फिर तहबन्द पहले उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से लपेटें ।
- अब आख़िर में लिफ़ाफ़ा भी इसी त़रह़ पहले उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से लपेटें ताकि सीधा ऊपर रहे ।
- आख़िर में सर और पाउं की त़रफ़ से बांध दें ।

औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

- कफ़नी पहना कर इस के बालों के दो हिस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दें ।

۞.....औढ़नी को आधी पीठ के नीचे बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर निक़ाब की त़रह़ डाल दें कि सीने पर रहे । इस का तूल आधी पुश्त से नीचे तक और अ़र्ज़ एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हो । बा'ज़ लोग औढ़नी इस त़रह़ औढ़ाते हैं जिस त़रह़ औ़रतें ज़िन्दगी में सर पर औढ़ती हैं येह ख़िलाफ़े सुन्नत है ।

۞.....फिर बदस्तूर तहबन्द व लिफ़ाफ़ा या'नी चादर लपेटें ।

۞.....फिर आख़िर में सीना बन्द पिस्तान के ऊपर वाले ह़िस्से से रान तक ला कर किसी डोरी से बांधें ।
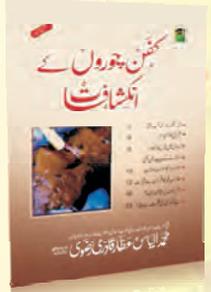
तजहीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की फ़ज़ीलत

सुवाल क्या तजहीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की फ़ज़ीलत भी मरवी है ?

जवाब जी हां ! तजहीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की फ़ज़ीलत बहुत सी रिवायात में मरवी है । चुनान्चे,

۞.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न पहनाए, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और (नहलाते वक़्त) जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे मां के पेट से पैदा हुवा हो ।[1]

۞.....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जो शख़्स (ईमान का तक़ाज़ा समझ कर और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से) अपने घर से जनाज़े के साथ चले, नमाज़े जनाज़ा पढ़े और दफ़्न तक जनाज़े के साथ रहे, उस के लिये दो क़ीरात़[2] सवाब है जिस में हर क़ीरात़ उह़ुद (पहाड़) के बराबर है और जो शख़्स सिर्फ़ नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर वापस आ जाए (और तदफ़ीन में शरीक न हो) तो उस के लिये एक क़ीरात़ सवाब है ।[3]

---

[1]...... ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی غسل المیت، ۲/۲۰۱، حدیث: ۱۴۶۲

[2]......क़ीरात़ अस्ल में निस्फ़ दानिक़ या'नी दिरहम के बारहवें ह़िस्से को कहते हैं ।(عمدۃ القاری، ۱۴/۴۸۳)

[3]...... مسلم، کتاب الجنائز باب فضل الصلاۃ علی الجنازۃ، ص ۴۷۲، حدیث: ۵۲-(۹۴۵)

नमाज़े जनाज़ा की शरई हैसिय्यत

सुवाल नमाज़े जनाज़ा की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है । या'नी अगर किसी एक ने भी अदा कर लिया तो सब की त़रफ़ से हो गया वरना जिन जिन को ख़बर पहुंची थी और नहीं आए वोह सब गुनाहगार होंगे ।(1)

सुवाल क्या नमाज़े जनाज़ा के लिये जमाअ़त शर्त़ है ?

जवाब जी नहीं ! नमाज़े जनाज़ा के लिये जमाअ़त शर्त़ नहीं, एक शख़्स भी पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा ।(2)

सुवाल अगर कोई नमाज़े जनाज़ा का फ़र्ज़ होना न माने तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब अगर कोई नमाज़े जनाज़ा का फ़र्ज़ होना न माने तो वोह काफ़िर है ।
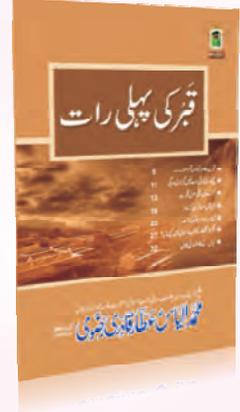
नमाज़े जनाज़ा की शराइत़

सुवाल नमाज़े जनाज़ा के सह़ीह़ होने की शराइत़ बताइये ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा के सह़ीह़ होने के लिये दो क़िस्म की शराइत़ हैं : एक तो वोह हैं जिन का तअ़ल्लुक़ नमाज़ी से है और दूसरी वोह हैं जिन का तअ़ल्लुक़ मय्यित से है ।

सुवाल नमाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ क्या शराइत़ हैं ?

जवाब नमाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ वोही शराइत़ हैं जो आ़म नमाज़ की हैं : ۞...... बदन, जगह और कपड़ों का पाक होना । ۞...... सत्रे औ़रत ۞......क़िब्ला रू होना ۞......निय्यत का होना ۞......इस में वक़्त और तक्बीरे तह़रीमा शर्त़ नहीं ।

सुवाल मय्यित से मुतअ़ल्लिक़ शराइत़ क्या हैं ?

---

1 ......فتاوی تاتارخانیه، کتاب الصلاۃ، الفصل الثانی والثلاثون، ۲/۱۵۳

2 ......عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون، الفصل الخامس، ۱/۱۶۲

जवाब मय्यित से मुतअ़ल्लिक़ शराइत़ येह हैं :

- ❁····· मय्यित का मुसलमान होना।
- ❁····· मय्यित के बदन व कफ़न का पाक होना।
- ❁····· जनाज़ा का वहां मौजूद होना या'नी कुल या अकसर या निस्फ़ (आधा बदन) मअ़ सर के मौजूद होना, लिहाज़ा ग़ाइब की नमाज़ नहीं हो सकती।
- ❁····· जनाज़ा नमाज़ी के आगे क़िब्ला की त़रफ़ हो, अगर नमाज़ी के पीछे होगा नमाज़ सह़ीह़ न होगी।
- ❁····· मय्यित का वोह ह़िस्सए बदन छुपा हो जिस का छुपाना फ़र्ज़ है।
- ❁····· मय्यित इमाम के मुह़ाज़ी (या'नी उस की सीध में) हो या'नी अगर एक मय्यित है तो उस का कोई ह़िस्सए बदन इमाम के मुह़ाज़ी हो और चन्द हों तो किसी एक का ह़िस्सए बदन इमाम के मुह़ाज़ी होना काफ़ी है।

नमाज़े जनाज़ा के फ़राइज़ और सुन्नतें

सुवाल नमाज़े जनाज़ा के फ़राइज़ और सुन्नतें बताइये ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा के दो फ़र्ज़ हैं :

(1) चार बार अल्लाहु अक्बर कहना (2) क़ियाम।

इस में तीन सुन्नते मुअक्कदा हैं :

(1) सना (2) दुरूद शरीफ़ (3) मय्यित के लिये दुआ़।

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा

- ❁····· मुक़्तदी इस त़रह़ निय्यत करे : मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासिते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये पीछे इस इमाम के।
- ❁····· अब इमाम व मुक़्तदी पहले कानों तक हाथ उठाएं और अल्लाहु अक्बर कहते हुवे फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लें।

۞ ····· सना पढ़ें । इस में وَتَعَالٰى جَدُّكَ के बा'द وَجَلَّ ثَنَآءُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ पढ़ें ।

۞ ····· फिर बिग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर कहें ।

۞ ····· फिर दुरूदे इब्राहीमी पढ़ें ।

۞ ····· फिर बिग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर कहें और दुआ़ पढ़ें । (इमाम तक्बीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी आहिस्ता । बाक़ी तमाम अज़्कार इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता पढ़ें)

۞ ····· दुआ़ के बा'द फिर अल्लाहु अक्बर कहें और हाथ लटका दें ।

۞ ····· फिर दोनों त़रफ़ सलाम फेर दें ।[1]

बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا ط اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ②

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू बख़्श दे हमारे ज़िन्दा और मुर्दा को और हमारे ह़ाज़िर व ग़ाइब को और हमारे छोटे और बड़े को और मर्द और औ़रत को । ऐ अल्लाह ! हम में से तू जिसे ज़िन्दा रखे उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से तू जिस को वफ़ात दे उसे ईमान पर वफ़ात दे ।

नाबालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ③

---

[1] ····· नमाज़ के अह़काम, स. 382

[2] ····· ترمذی، کتاب الجنائز، باب مایقول فی الصلاۃ علی المیت، ۲/۳۱۴، حدیث:۱۰۲۶

[3] ····· کنز الدقائق، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۵۲

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू इस (लड़के) को हमारे लिये पेश रू कर और इस को हमारे लिये ज़ख़ीरा कर और इस को हमारी शफ़ाअ़त करने वाला बना और मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर दे ।

नाबालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْھَا لَنَاۤ اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू इस (लड़की) को हमारे लिये पेश रू कर और इस को हमारे लिये ज़ख़ीरा कर और इस को हमारी शफ़ाअ़त करने वाली बना और मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर दे ।

जनाज़े को कन्धा देने का सवाब

सुवाल : क्या जनाज़े को कन्धा देना सवाब का काम है ?

जवाब : जी हां ! जनाज़े को कन्धा देना बहुत ज़ियादा सवाब का काम है । चुनान्चे, मरवी है कि जो जनाज़े की चार पाई के चारों पायों को कन्धा दे तो उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे ।(1)

सुवाल : क्या सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किसी जनाज़े को कन्धा देना साबित है ?

जवाब : जी हां ! सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाज़े को कन्धा दिया था ।

जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा

सुवाल : जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : जनाज़े को कन्धा देने में येह बातें सुन्नत हैं :

۞..... चार शख़्स जनाज़ा उठाएं, एक एक पाया एक शख़्स ले और अगर सिर्फ़ दो शख़्सों ने जनाज़ा उठाया, एक सिरहाने और एक पाइन्ती तो बिला ज़रूरत मकरूह है और ज़रूरत से हो मसलन जगह तंग है तो हरज नहीं ।

(1) ......المعجم الاوسط، ۴/۲۶۰، حدیث:۵۹۲۰

۞..... यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस दस क़दम चले।

۞..... पहले सीधे सिरहाने कन्धा दे, फिर सीधी पाइन्ती (या'नी सीधे पाउं की त़रफ़) फिर उलटे सिरहाने फिर उलटी पाइन्ती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुवे।[1]

۞..... बा'ज़ लोग जनाज़े के जुलूस में ए'लान करते रहते हैं : दो दो क़दम चलो ! उन को चाहिये कि इस त़रह़ ए'लान किया करें : "हर पाये को कन्धे पर लिये दस दस क़दम चलिये।"

नमाज़े जनाज़ा के मुतअ़ल्लिक़ मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल

सुवाल : क्या जूता पहन कर जनाज़ा पढ़ सकते हैं ?

जवाब : अगर जूता पहन कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें तो जूते और ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है और जूता उतार कर उस पर खड़े हो कर पढ़ें तो जूते के तले और ज़मीन का पाक होना ज़रूरी नहीं।[2]

सुवाल : नमाज़े जनाज़ा में कितनी सफ़ें होनी चाहियें ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा में तीन सफ़ें हों तो बेहतर है क्यूंकि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस की नमाज़े जनाज़ा तीन सफ़ों ने पढ़ी बेशक उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।[3]

सुवाल : नमाज़े जनाज़ा में सब से अफ़्ज़ल सफ़ कौन सी है ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा में पिछली सफ़ तमाम सफ़ों से अफ़्ज़ल है।[4]

---

1 ......बहारे शरीअ़त, जनाज़ा ले चलने का बयान, 1/822

2 ......फ़तावा रज़विय्या, 9/188

٣ ......ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصلاۃ علی المیت الشفاعۃ لہ، ۲/۳۱۷، حدیث: ۱۰۳۰

٤ ......درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۳۱

बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से पहले येह ए'लान कीजिये

मर्हूम के अ़ज़ीज़ व अह़बाब तवज्जोह फ़रमाएं : मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या ह़क़ तलफ़ी की हो तो इन को मुआ़फ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा अगर कोई लैन दैन का मुआ़मला हो तो मर्हूम के वारिसों से राबित़ा कीजिये। नमाज़े जनाज़ा की निय्यत और इस का त़रीक़ा भी सुन लीजिये : "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासिते़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये पीछे इस इमाम के।" अगर येह अल्फ़ाज़ याद न रहें तो कोई ह़रज नहीं, आप के दिल में येह निय्यत होनी ज़रूरी है कि "मैं इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहा हूं।" जब इमाम साहि़ब अल्लाहु अक्बर कहें तो कानों तक हाथ उठाने के बा'द अल्लाहु अक्बर कहते हुवे फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और सना पढ़िये। दूसरी बार इमाम साहि़ब अल्लाहु अक्बर कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर कहिये फिर नमाज़ वाला दुरूदे इब्राहीम पढ़िये तीसरी बार इमाम साहि़ब अल्लाहु अक्बर कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर कहिये और बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ पढ़िये (अगर नाबालिग़ या नाबालिग़ा है तो इस की दुआ़ पढ़ने का ए'लान करना है) जब चौथी बार इमाम साहि़ब अल्लाहु अक्बर कहें तो आप अल्लाहु अक्बर कह कर दोनों हाथों को खोल कर लटका दीजिये और इमाम साहि़ब के साथ क़ाइदे के मुत़ाबिक़ सलाम फेर दीजिये।

तदफ़ीन

सुवाल : मय्यित को क़ब्र में उतारने के लिये क़ब्र के पास किस त़रफ़ रखना चाहिये ?

जवाब : मय्यित को क़ब्र से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तह़ब है ताकि मय्यित क़िब्ले की त़रफ़ से क़ब्र में उतारी जाए ।

सुवाल : मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त कितने आदमी होने चाहिये ?

जवाब : मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन आदमी काफ़ी हैं । बेहतर है कि वोह लोग क़वी और नेक हों ।

सुवाल : औ़रत की मय्यित क़ब्र में उतारते हुवे किन बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

जवाब : औ़रत की मय्यित क़ब्र में मह़ारिम[1] उतारें । येह न हों तो दीगर रिश्तेदार, येह भी न हों तो परहेज़गारों से उतरवाएं । नीज़ मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें ।

सुवाल : मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त क्या दुआ़ पढ़ना चाहिये ?

जवाब : मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें :

بِسۡمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوۡلِ اللّٰهِ

सुवाल : मय्यित को क़ब्र में लिटाते वक़्त क्या करना चाहिये ?

जवाब : मय्यित को क़ब्र में लिटाते वक़्त दर्जे ज़ैल बातों का ख़याल रखना चाहिये :

- मय्यित को सीधी करवट पर लिटाएं ।
- अगर सीधी करवट पर लिटाना मुमकिन न हो तो उस का मुंह फेर कर क़िब्ले की त़रफ़ कर दें । बशर्ते कि आसानी से मुमकिन हो वरना ज़बरदस्ती न करें कि मय्यित को तक्लीफ़ होगी ।
- कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं, न खोली तो भी ह़रज नहीं ।

---

[1]……या'नी ऐसे क़रीबी रिश्तेदार जिन से उस औ़रत का ज़िन्दगी में निकाह़ ह़राम था ।

क़ब्र पर मिट्टी डालने का त़रीक़ा

सुवाल क़ब्र पर मिट्टी डालने का त़रीक़ा बताइये ?

जवाब क़ब्र पर मिट्टी डालने का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें । पहली बार कहें : مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ दूसरी बार : وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ तीसरी बार : وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى कहें । अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें ।

सुवाल क़ब्र पर किस क़दर मिट्टी डालना चाहिये ?

जवाब क़ब्र पर सिर्फ़ उसी क़दर मिट्टी डाले जिस क़दर क़ब्र से निकली हो, इस से ज़ियादा डालना मकरूह है ।

सुवाल क़ब्र कैसी बनानी चाहिये ?

जवाब क़ब्र ऊंट के कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाना चाहिये ।

सुवाल क़ब्र ज़मीन से किस क़दर ऊंची होनी चाहिये ?

जवाब क़ब्र ज़मीन से एक बालिश्त ऊंची हो या इस से मा'मूली ज़ियादा ।[1]

तदफ़ीन के बा'द के उमूर

सुवाल तदफ़ीन के बा'द क्या करना चाहिये ?

जवाब तदफ़ीन के बा'द दर्जे ज़ैल काम करना चाहियें :

- ..... पानी छिड़कना सुन्नत है । इस के इलावा बा'द में पौदे वग़ैरा को पानी देने की ग़रज़ से छिड़कें तो जाइज़ है । आज कल जो बिला वजह क़ब्रों पर पानी छिड़का जाता है इस को फ़तावा रज़विय्या शरीफ़, जिल्द 4 सफ़ह़ा 185 पर इसराफ़ लिखा है ।
- ..... दफ़्न के बा'द सिरहाने الٓمّٓ ता الْمُفْلِحُوْنَ और क़दमों की त़रफ़ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्म सूरह तक पढ़ना मुस्तह़ब है

[1] ……ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی دفن المیت، ٣/١٦٨
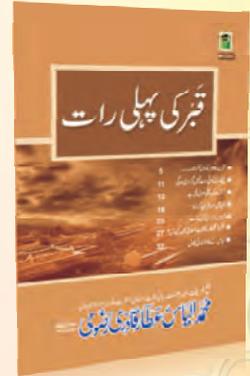
- ..... तल्क़ीन करें।
- ..... क़ब्र के सिरहाने क़िब्ला रू खड़े हो कर अज़ान दें।
- ..... क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।[1]

तल्क़ीन

सुवाल : तल्क़ीन की शरई हैसिय्यत क्या है?

जवाब : दफ़्न के बा'द मुर्दे को तल्क़ीन करना शरअ़न जाइज़ है।

सुवाल : क्या तल्क़ीन ह़दीस से साबित है?

जवाब : जी हां ! तल्क़ीन ह़दीसे पाक से साबित है।

सुवाल : तल्क़ीन का त़रीक़ा क्या है?

जवाब : तल्क़ीन का त़रीक़ा ह़दीसे पाक में कुछ यूं मरवी है : जब कोई मुसलमान फ़ौत हो तो उसे दफ़्न करने के बा'द एक शख़्स उस की क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर तीन बार येह कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! (फ़ुलां की जगह मय्यित का नाम और फ़ुलाना की जगह मय्यित की वालिदा का नाम ले) पहली बार वोह सुनेगा मगर जवाब न देगा। दूसरी बार सुन कर सीधा हो कर बैठ जाएगा और तीसरी बार येह जवाब देगा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए ! हमें इरशाद कर। मगर पुकारने वाले को उस के जवाब की ख़बर नहीं होती, लिहाज़ा तीन बार या फ़ुलां बिन फ़ुलाना कहने के बा'द येह कहे :

اُذْكُرْ مَا خَرَجْتَ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا
وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَّبِيًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا

---

[1] ...... ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی وضع الجرید ...... الخ، ٣/١٨٤ ماخوذاً

तर्जमा : तू उसे याद कर जिस पर तू दुन्या से निकला या'नी येह गवाही कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब और इस्लाम के दीन और मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी और कुरआन के इमाम होने पर राज़ी था ।[1]

सुवाल तल्क़ीन का क्या फ़ाएदा है ?

जवाब तल्क़ीन का फ़ाएदा येह है कि जब मुन्कर नकीर सुवाल करने आते हैं और लोगों को मय्यित को तल्क़ीन करते देखते हैं तो इन में से एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहता है : चलो ! हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके ।

सुवाल अगर किसी को मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो तल्क़ीन के वक़्त क्या कहे ?

जवाब अगर किसी को मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो मां की जगह हज़रते सय्यिदतुना हव्वा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का नाम ले ले ।[2]

ईसाले सवाब

सुवाल ईसाले सवाब से क्या मुराद है ?

जवाब ईसाले सवाब से मुराद येह है कि ज़िन्दा लोग अपने हर नेक अ़मल और हर क़िस्म की इबादत ख़्वाह माली हो या बदनी फ़र्ज़ व नफ़्ल और ख़ैर ख़ैरात का सवाब मुर्दों को पहुंचा सकते हैं ।

सुवाल क्या ईसाले सवाब का ज़िक्र किसी हदीसे पाक में भी मरवी है ?

जवाब जी हां ! बहुत सी अहादीसे मुबारका में ईसाले सवाब का ज़िक्र मिलता है । चुनान्चे,

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़

---

[1] ……المعجم الكبير، ٨/ ٢٤٩، حديث: ٧٩٧٩

[2] ……इस्लामी अहकाम, स. 460
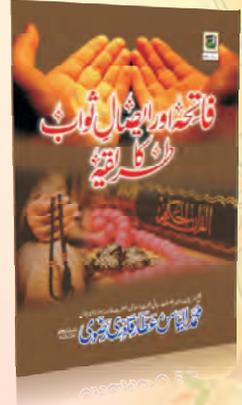
उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है इस) से ज़ियादा महबूब होती है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को इन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़्फ़ा) मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है ।[1] और त़बरानी शरीफ़ में है : जब कोई शख़्स मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो जिब्रईले अमीन उसे नूरानी त़बाक़ (बड़ी प्लेट) में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : "ऐ क़ब्र वाले ! येह हदिय्या (तोह़्फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर ।" येह सुन कर वोह ख़ुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं ।[2]

सुवाल क्या ईसाले सवाब के लिये दिन वग़ैरा मुक़र्रर करना जाइज़ है ? मसलन तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी (या'नी सालाना ख़त्म) वग़ैरा ।

जवाब ज़िन्दों के ईसाले सवाब से यक़ीनन मुर्दों को फ़ाएदा पहुंचता है । मगर शरीअ़त ने ईसाले सवाब के लिये कोई ख़ास दिन मुक़र्रर नहीं फ़रमाया बल्कि जब किसी का दिल चाहे अपनी सहूलत के लिये कोई भी वक़्त और दिन मुक़र्रर कर सकता है । चाहे वोह तीसरा दिन हो या दसवां या चालीसवां या कोई और दिन हो, बल्कि इन्तिक़ाल के बा'द ही से कुरआने मजीद की तिलावत और ख़ैर ख़ैरात का सिलसिला भी जारी किया जा सकता है ।
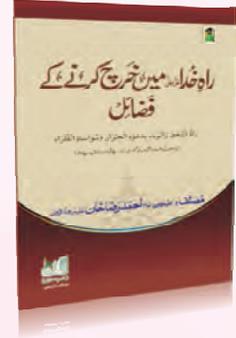
सुवाल क्या ईसाले सवाब सिर्फ़ मुर्दों को ही किया जा सकता है ?

जवाब जी नहीं ! ईसाले सवाब मुर्दों के साथ साथ ज़िन्दों को भी किया जा सकता है ।

सुवाल बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की नियाज़ और लंगर वग़ैरा खाना कैसा है ?

जवाब बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की नियाज़ और लंगर वग़ैरा खाना न सिर्फ़ येह कि जाइज़ है बल्कि बाइसे बरकत भी है ।

---

[1] ……شعب الایمان، الخامس والخمسون من شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۲/۲۰۳، حدیث: ۷۹۰۵

[2] ……المعجم الاوسط، ۵/۳۷، حدیث: ۶۵۰۴

सुवाल बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की नियाज़ क्या मालदार भी खा सकते हैं ?

जवाब जी हां ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की नियाज़ मालदार भी खा सकते हैं। मसलन रजब शरीफ़ के कूंडे, मुहर्रम का शरबत या खिचड़ा, माहे रबीउ़ल आख़िर की ग्यारहवीं शरीफ़ जिस में हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي की फ़ातिहा दिलाई जाती है, रजब की छठी तारीख़ हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रते सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की फ़ातिहा दिलाई जाती है, यूंही हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तोशा या हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तोशा वग़ैरा येह सब वोह चीज़ें हैं जो सदियों से मुसलमानों के अ़वाम व ख़वास और उ़लमा व फ़ु-ज़ला में जारी हैं और इन में ख़ास एहतिमाम किया जाता है। उमरा भी इस में ज़ौक़ व शौक़ से शरीक होते हैं और लंगर वग़ैरा के खाने से फ़ैज़ पाते हैं।

ईसाले सवाब व फ़ातिहा का त़रीक़ा

सुवाल ईसाले सवाब का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब ईसाले सवाब कोई मुश्किल काम नहीं सिर्फ़ इतना कह देना या दिल में निय्यत कर लेना भी काफ़ी है : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो कुरआने पाक पढ़ा (या फुलां फुलां अ़मल किया) इस का सवाब मेरी वालिदए मर्हूमा या मेरे फुलां रिश्तेदार को पहुंचा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा।

सुवाल फ़ातिहा का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब आज कल मुसलमानों में ख़ुसूसन खाने पर जो फ़ातिहा का त़रीक़ा राइज है वोह भी बहुत अच्छा है, इस दौरान तिलावत वग़ैरा का भी ईसाले सवाब किया जा सकता है। जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये।

अब أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ कर एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَ لِيَ دِيْنِ ۠﴿۶﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ तीन बार

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَ لَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ एक बार

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۠﴿۵﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ एक बार

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۠﴿۶﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ एक बार

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ۠﴿۷﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴿1﴾...... وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲، البقرة:۱۶۳)

﴿2﴾...... اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸، الاعراف:۵۶)

﴿3﴾...... وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷، الانبيآء:۱۰۷)

﴿4﴾...... مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۴۰)

﴿5﴾...... اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۶)

अब कोई सा भी दुरूद शरीफ़ पढ़िये : मसलन

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

इस के बा'द पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳، الصفت:۱۸۰ تا ۱۸۲)

अब हाथ उठा कर फ़ातिहा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से "अल फ़ातिहा" कहे । सब लोग आहिस्ता से सूरए फ़ातिहा पढ़ें । अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला इस तरह ए'लान करे : "आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये ।" तमाम हाज़िरीन कह दें : "आप को दिया ।" अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला ईसाले सवाब कर दे ।

ईसाले सवाब के लिये दुआ का तरीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस तरह से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अ़मल हो सका है इस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात मुसलमान हुवे या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा । इस दौरान जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये । अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी ईसाले सवाब कीजिये । (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है) अब ह़स्बे मा'मूल दुआ ख़त्म कर दीजिये । (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह खानों और पानी में वापस डाल दीजिये)

सवाब आ'माल का मेरे तू पहुंचा सारी उम्मत को
मुझे भी बख़्श या रब बख़्श उन की प्यारी उम्मत को

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ा

रोज़े से मुराद

सुवाल रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब रोज़े से मुराद येह है कि इबादत की निय्यत से सुब्हे सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक कुछ खाने पीने वग़ैरा से बाज़ रहें।

रोज़े की शरई हैसिय्यत

सुवाल क्या रोज़ा रखना फ़र्ज़ है ?

जवाब जी हां ! रोज़ा रखना फ़र्ज़ है और बा'ज़ सूरतों में वाजिब और नफ़्ल भी है।

सुवाल फ़र्ज़ रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखना फ़र्ज़ है और अगर कोई शख़्स किसी उ़ज़्र की वजह से इस माह में रोज़े न रख सके तो बा'द में इन रोज़ों की क़ज़ा करना भी फ़र्ज़ है। इस के इलावा कफ़्फ़ारे के रोज़े रखना भी फ़र्ज़ हैं।

सुवाल वाजिब रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब अगर किसी ने रोज़े की नज़्र मानी हो तो नज़्र पूरी होने के बा'द रोज़ा रखना वाजिब है।
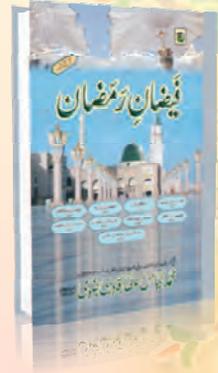
सुवाल नफ़्ली रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब फ़र्ज़ और वाजिब रोज़ों के इलावा बाक़ी हर त़रह़ का रोज़ा नफ़्ली होता है अगर्चे इन में से बा'ज़ रोज़े सुन्नत और मुस्तह़ब भी हैं : मसलन ۞.....आ़शूरा या'नी दसवीं मुह़र्रम का रोज़ा और इस के साथ नवीं का भी ۞.....हर महीने में तेरहवीं, चौदहवीं, पन्दरहवीं का रोज़ा ۞.....अ़र्फ़ा या'नी ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम की 9 तारीख़ का रोज़ा ۞.....पीर और जुमा'रात का रोज़ा ۞.....ईदुल फ़ित्र के छे रोज़े रखना। ۞.....एक दिन छोड़ कर रोज़ा रखना।

सुवाल क्या किसी दिन रोज़ा रखना मन्अ़ भी है ?

जवाब जी हां ! ईदैन के दो दिन और माहे ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम में अय्यामे तशरीक़[1] के तीन दिन रोज़ा रखना मकरूहे तह़रीमी है।

रोज़े कब और किस पर फ़र्ज़ हुवे ?

सुवाल रमज़ान के रोज़े कब और किस पर फ़र्ज़ हुवे ?

जवाब तौह़ीद व रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान लाने के बा'द जिस त़रह़ हर मुसलमान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी त़रह़ रमज़ान शरीफ़ के रोज़े भी हर मुसलमान (मर्द व औ़रत) आ़क़िल व बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं और येह रोज़े 10 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म दो हिजरी को फ़र्ज़ हुवे।

सुवाल कुरआने मजीद में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का हुक्म किस आयते मुबारका में है ?

जवाब कुरआने मजीद में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का हुक्म सूरए बक़रह की आयत नम्बर 183 में है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुवे थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।

[1]......दस ज़ुल ह़िज्जा के बा'द के तीन दिन (11, 12, 13) को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं।
(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा चहारुम की इस्तिलाहात, 1/55)

सुवाल क्या रोज़ा पहले की उम्मतों पर भी फ़र्ज़ था ?

जवाब जी हां ! रोज़ा गुज़श्ता उम्मतों में भी था मगर उस की सूरत हमारे रोज़ों से मुख़्तलिफ़ थी । रिवायात से पता चलता है कि

- .....हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने (हर इस्लामी माह की) 13, 14, 15 तारीख़ को रोज़ा रखा ।[1]
- .....हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام हमेशा रोज़ादार रहते ।[2]
- .....हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام हमेशा रोज़ा रखते थे, कभी न छोड़ते थे ।[3]
- .....हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते ।[4]
- .....हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام तीन दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन दिन दरमियान में और तीन दिन आख़िर में (या'नी महीने में 9 दिन) रोज़ा रखा करते ।[5]
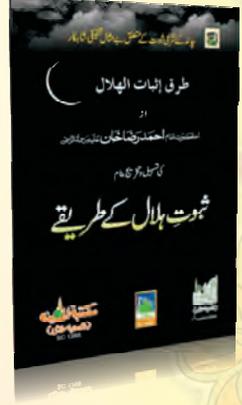
रोज़ा तक़्वा व परहेज़गारी की अ़लामत है

सुवाल क्या रोज़ा तक़्वा व परहेज़गारी की अ़लामत है ?

जवाब जी हां ! रोज़ा परहेज़गारी की अ़लामत है क्यूंकि सख़्त गर्मी के दिनों में जब प्यास से ह़ल्क़ सूख रहा हो, होंट ख़ुश्क हो चुके हों और पानी भी मौजूद हो तो भी रोज़ादार उस की त़रफ़ देखता तक नहीं । इसी त़रह़ भूक की शिद्दत के बा वुजूद रोज़ादार खाने की त़रफ़ हाथ नहीं बढ़ाता । इस से मा'लूम होता है कि रोज़ादार का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कितना पुख़्ता ईमान है ! क्यूंकि वोह जानता है कि उस की ह़रकत सारी दुन्या से तो छुप सकती है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पोशीदा नहीं रह सकती ।

[1] ……كنز العمال، كتاب الصوم، الجزء الثامن، ۴/ ۲۵۸، حديث: ۲۴۱۸۸

[2] ……ابن ماجه، كتاب الصيام، باب ماجاء فى صيام نوح، ۲/ ۳۳۳، حديث: ۱۷۱۴

[3] ……كنز العمال، كتاب الصوم، الجزء الثامن، ۴/ ۳۰۴، حديث: ۲۴۶۲۴

[4] ……مسلم، كتاب الصيام، باب النهى عن صوم الدهر……الخ، ص ۵۸۷، حديث: ۱۸۷-(۱۱۵۹)

[5] ……كنز العمال، كتاب الصوم، الجزء الثامن، ۴/ ۳۰۴، حديث: ۲۴۶۲۴

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर उस का येह यक़ीने कामिल रोज़े का अ़मली नतीजा है क्यूंकि दूसरी इबादतें किसी न किसी ज़ाहिरी ह़रकत से अदा की जाती हैं मगर रोज़े का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है। उस का ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता अगर वोह छुप कर खा पी ले तब भी लोग तो येही समझते रहेंगे कि वोह रोज़ादार है मगर वोह मह़्ज़ ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स खाने पीने से अपने आप को बचा रहा है और येही तो तक़्वा व परहेज़गारी है।

सुवाल किस उ़म्र में रोज़ा रखना शुरूअ़ कर देना चाहिये ?

जवाब छोटे मदनी मुन्नों को भी रोज़ा रखने की आ़दत डालनी चाहिये ताकि जब वोह बालिग़ हो जाएं तो उन्हें रोज़ा रखने में दुश्वारी न हो। चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बच्चा जैसे आठवें साल में क़दम रखे उस के वली पर लाज़िम है कि उसे नमाज़ रोज़े का हुक्म दे और जब उसे ग्यारहवां साल शुरूअ़ हो तो वली पर वाजिब है कि सौमो सलात पर मारे ब शर्तेकि रोज़े की त़ाक़त हो और रोज़ा ज़रर (या'नी नुक़्सान) न करे।[1]

सुवाल क्या कभी किसी ने दूध पीने की उ़म्र में रोज़ा रखा है ?

जवाब जी हां ! हमारे ग्यारहवीं वाले पीर ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی दूध पीने की उ़म्र में माहे रमज़ान में दिन के वक़्त अपनी वालिदा माजिदा का दूध नहीं पीते थे गोया कि रोज़े से हों।

सुवाल क्या रोज़ा रखने से इन्सान बीमार हो जाता है ?

जवाब जी नहीं ! रोज़ा रखने से इन्सान बीमार नहीं होता बल्कि तन्दुरुस्त हो जाता है जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : صُوْمُوْا تَصِحُّوْا या'नी रोज़ा रखो सिह़्ह़त याब हो जाओगे।[2]

---

1 ...... फ़तावा रज़विय्या, 10/345

٢ ...... المعجم الاوسط، ٦/١٤٦، حديث: ٨٣١٢

रोज़ा रखने व खोलने की दुआएं

निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से कहना शर्त़ नहीं मगर ज़बान से कह लेना मुस्तह़ब है । चुनान्चे, अगर रात में (या'नी सुब्हे सादिक़ से पहले) रोज़े की निय्यत करे तो यूं कहे :

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَدًا لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ هٰذَا

या'नी मैं ने निय्यत की, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा कल रखूंगा । और अगर दिन में (या'नी सुब्हे सादिक़ के बा'द) निय्यत करे तो येह कहे :

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ هٰذَا الْيَوْمَ لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ

मैं ने निय्यत की, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आज रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा ।[1]

रोज़े की ह़क़ीक़त

सुवाल रोज़ादारों के ए'तिबार से रोज़े की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब रोज़ादारों के ए'तिबार से रोज़े की तीन क़िस्में हैं :

《1》.....अ़वाम का रोज़ा : रोज़े के लुग़वी मा'ना हैं : रुकना । शरीअ़त की इस्तिलाह़ में सुब्हे सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक क़स्दन खाने पीने वग़ैरा से रुके रहने को रोज़ा कहते हैं और येही अ़वाम या'नी आ़म लोगों का रोज़ा है ।

《2》.....ख़्वास का रोज़ा : खाने पीने वग़ैरा से रुके रहने के साथ साथ जिस्म के तमाम आ'ज़ा को बुराइयों से रोकना ख़्वास या'नी ख़ास लोगों का रोज़ा है ।

《3》.....अख़स्सुल ख़्वास का रोज़ा : अपने आप को तमाम तर उमूर से रोक कर सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, येह अख़स्सुल ख़्वास या'नी ख़ासुल ख़ास लोगों का रोज़ा है ।

सुवाल रोज़े की ह़क़ीक़त क्या है ?

---

[1].....बहारे शरीअ़त, 1/968

जवाब हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : रोज़े की ह़क़ीक़त रुकना है और रुके रहने की बहुत सी शराइत़ हैं : मसलन मे'दे को खाने पीने से रोके रखना, आंख को शहवानी नज़र से रोके रखना, कान को ग़ीबत सुनने, ज़बान को फ़ुज़ूल और फ़ितना अंगेज़ बातें करने और जिस्म को हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से रोके रखना रोज़ा है। जब बन्दा इन तमाम शराइत़ की पैरवी करेगा तब वोह ह़क़ीक़तन रोज़ादार होगा।[1]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى के फ़रमान से क्या बात मा'लूम होती है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى के फ़रमान से येह बात मा'लूम होती है कि हमें भूका प्यासा रहने के साथ साथ जिस्म के दीगर आ'ज़ा मसलन आंख, कान, ज़बान, हाथ और पाउं का भी रोज़ा रखना चाहिये।

आंख का रोज़ा

सुवाल आंख के रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब आंख के रोज़े से मुराद येह है कि आंख जब भी उठे तो सिर्फ़ और सिर्फ़ जाइज़ उमूर ही की त़रफ़ उठे। या'नी अपनी आंख को फ़िल्में, डिरामे देखने, किसी पर बुरी नज़र डालने से बचा कर इस से मस्जिद व कुरआने पाक, वालिदैन व असातिज़ा, अपने पीरो मुर्शिद व उ़लमाए किराम और मज़ाराते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام देखिये और ज़हे नसीब, करम बालाए करम हो जाए तो सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के अन्वार और का'बतुल्लाह शरीफ़ के जल्वे देखिये।

कान का रोज़ा

सुवाल कान के रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब कान के रोज़े से मुराद येह है कि सिर्फ़ और सिर्फ़ जाइज़ बातें सुनिये या'नी अपने कानों को ग़ीबत, चुग़ली, गाने बाजे व मूसीक़ी, फ़ोह़्श लत़ीफ़े व बेह़याई की बातें और कान लगा कर किसी के ऐ़ब सुनने से बचा कर अज़ानो इक़ामत, तिलावते कुरआन व ना'त, सुन्नतों भरा बयान व दीन की प्यारी प्यारी बातें सुनिये।

---

[1] ......كشف المحجوب، كشف الحجاب السابع فى الصوم، ص ٣٥٣، ٣٥٤ ملتقطاً

ज़बान का रोज़ा

सुवाल ज़बान के रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब ज़बान के रोज़े से मुराद येह है कि ज़बान सिर्फ़ और सिर्फ़ नेक व जाइज़ बातों के लिये ही ह़रकत में आए । या'नी अपनी ज़बान को झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच करने, बे ह़याई, फ़ुज़ूल और किसी मुसलमान की दिल आज़ारी वाली बातें करने, गाने व नग़मे गाने, फ़ोह़्श व बे हूदा लत़ीफ़े सुनाने से बचा कर ज़िक्रुल्लाह करने, ना'त शरीफ़ पढ़ने, सच बोलने, अज़ानो इक़ामत कहने, नमाज़ पढ़ने, तिलावते क़ुरआने पाक करने, सुन्नतों भरा बयान और अच्छी अच्छी बातें करने में इस्ति'माल करें ।

हाथ का रोज़ा

सुवाल हाथ के रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब हाथ के रोज़े से मुराद येह है कि जब भी हाथ उठें, सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें या'नी अपने हाथों को किसी पर ज़ुल्म करने, रिश्वत लेने, ताश लुडो और दीगर फ़ुज़ूल खेल खेलने, चोरी करने और झूट लिखने से बचा कर क़ुरआने पाक को छूने, मुसलमान भाई, उ़लमाए किराम, मशाइख़े इ़ज़ाम से मुसाफ़ह़ा करने, ज़कात व सदक़ा ख़ैरात देने, ह़लाल की मेह़नत मज़दूरी करने और दीन की प्यारी प्यारी बातें लिखने में इस्ति'माल करें ।

पाउं का रोज़ा

सुवाल पाउं के रोज़े से क्या मुराद है ?

जवाब पाउं के रोज़े से मुराद येह है कि पाउं सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें या'नी चलें तो मस्जिद व मज़ाराते औलिया, सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व नेकी की दा'वत, मदनी क़ाफ़िला व सफ़रे मदीना की त़रफ़ चलें और हरगिज़ सीनेमा घर, डिरामागाह, बुरे दोस्तों की मजलिसों, शत़रंज, लुडो, ताश, क्रिकेट फ़ुटबॉल, वीडियो गेम्ज़ वग़ैरा खेल खेलने या देखने की त़रफ़ न चलें ।

रोज़ा रखने के फ़ज़ाइल

﴾1﴿.....हर शै का एक दरवाज़ा होता है और इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है ।[1]

﴾2﴿.....जिस का रोज़े की ह़ालत में इन्तिक़ाल हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है ।[2]

﴾3﴿.....जिस ने रमज़ान का रोज़ा रखा और इस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया ।[3]

﴾4﴿..... जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का रोज़ा रखा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर कर देगा ।[4]

﴾5﴿..... क़ियामत के दिन रोज़े दारों के लिये सोने के दस्तर ख़्वान पर खाना रखा जाएगा जिसे वोह खाएंगे ह़ालांकि लोग (ह़िसाबो किताब के) मुन्तज़िर होंगे ।[5]

रोज़ा न रखने की वईदें

﴾1﴿..... जिस ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बिग़ैर रुख़्सत व बिग़ैर मरज़ इफ़्त़ार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का रोज़ा भी इस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले ।[6]

﴾2﴿..... उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस पर रमज़ान का महीना दाख़िल हुवा फिर उस की मग़फ़िरत होने से क़ब्ल गुज़र गया ।[7]

---

[1] ……الجامع الصغير، ص ١٤٦، حديث: ٢٤١٥

[2] ……فردوس الاخبار، ٢/٢٧٤، حديث: ٥٩٦٧

[3] ……الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، باب فضل رمضان، الجزء الخامس، ٤/١٨٢، حديث: ٣٤٢٤

[4] ……بخاری، کتاب الجهاد والسير، باب فضل الصوم في سبيل الله، ٢/٢٦٥، حديث: ٢٨٤٠

[5] ……كنز العمال، كتاب الصوم، الباب الاول فی صوم الفرض، الجزء الثامن، ٨/٢١٤، حديث: ٢٣٦٤٠

[6] ……ترمذی، كتاب الصوم، باب ماجاء فی الافطار متعمدًا، ٢/١٧٥، حديث: ٧٢٣

[7] ……مسند احمد، ٣/٦١، حديث: ٧٤٥٥

सहरी से मुतअ़ल्लिक़ चन्द बुन्यादी बातें

सुवाल सहरी से क्या मुराद है ?

जवाब सहरी से मुराद वोह खाना है जो रमज़ानुल मुबारक में रात के आख़िरी हिस्से से सुब्हे सादिक़ तक रोज़ा रखने के लिये खाया जाता है ।

सुवाल सहरी कब तक कर सकते हैं ?

जवाब सहरी में ताख़ीर करना मुस्तहब है और देर से सहरी करने में ज़ियादा सवाब मिलता है मगर इतनी ताख़ीर भी न की जाए कि सुब्हे सादिक़ का शुबा होने लगे ।

सुवाल सहरी में ताख़ीर से मुराद कौन सा वक़्त है ?

जवाब सहरी में ताख़ीर से मुराद रात का छटा हिस्सा है ।

सुवाल रात का छटा हिस्सा कैसे मा'लूम हो सकता है ?

जवाब ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्हे सादिक़ तक रात कहलाती है । मसलन किसी दिन सात बजे शाम को सूरज ग़ुरूब हुवा और फिर चार बजे सुब्हे सादिक़ हुई तो इस त़रह़ ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्हे सादिक़ तक जो नव घन्टों का वक़्फ़ा गुज़रा वोह रात कहलाया । अब रात के इन नव घन्टों के बराबर बराबर छे हिस्से किये तो हर हिस्सा डेढ़ घन्टे का हुवा । अब रात के आख़िरी डेढ़ घन्टे (या'नी अढ़ाई बजे ता चार बजे) के दौरान सुब्हे सादिक़ से पहले पहले जब भी सहरी की, वोह ताख़ीर से करना हुवा ।

सुवाल जो लोग सुब्हे सादिक़ के बा'द फ़ज्र की अज़ानें हो रही हों और खाते पीते रहें उन के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब वोह लोग जो सुब्हे सादिक़ के बा'द फ़ज्र की अज़ानें हो रही हों और खाते पीते रहें उन का रोज़ा नहीं होता क्यूंकि रोज़ा बन्द करने का तअ़ल्लुक़ अज़ाने फ़ज्र से नहीं बल्कि सुब्हे सादिक़ के शुरूअ़ होने से है, लिहाज़ा सुब्हे सादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है ।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी पसन्द का रोज़ादार बना कर मदीने में रोज़े की हालत में अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों में मौत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न नसीब फ़रमा । आमीन

ज़कात

ज़कात से मुराद

सुवाल : ज़कात से क्या मुराद है ?

जवाब : ज़कात शरीअ़त की जानिब से मुक़र्रर कर्दा उस माल को कहते हैं जिसे अपना हर त़रह़ का नफ़्अ़ ख़त्म करने के बा'द रिज़ाए इलाही के लिये किसी ऐसे मुसलमान फ़क़ीर की

मिल्कियत में दे दिया जाए जो न तो ख़ुद हाशिमी हो और न ही किसी हाशिमी का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हो ।(1)

सुवाल : हाशिमी से क्या मुराद है ?

जवाब : इस से मुराद ह़ज़रते अ़ली व जा'फ़र व अ़क़ील और ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की अवलादें हैं । इन के इ़लावा जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इआ़नत (मदद) न की मसलन अबू लहब कि अगर्चे येह काफ़िर भी ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बेटा था मगर इस की अवलादें बनी हाशिम में शुमार न होंगी ।(2)

सुवाल : ज़कात किस पर फ़र्ज़ है ?

जवाब : ज़कात देना हर उस आ़क़िल, बालिग़ और आज़ाद मुसलमान पर फ़र्ज़ है जो साल भर निसाब का मालिक हो और वोह निसाब उस के क़ब्ज़े में होने के साथ साथ उस की ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरियाते ज़िन्दगी) से ज़ाइद भी हो । नीज़ उस पर ऐसा क़र्ज़ भी न हो कि अगर वोह क़र्ज़ अदा करे तो उस का निसाब बाक़ी न रहे ।(3)

---

1 ...... درمختار، کتاب الزکوۃ، ۳/۲۰۳ تا ۲۰۶ ملتقطاً

2 ...... बहारे शरीअ़त, माले ज़कात के मसारिफ़ 1/931

3 ...... बहारे शरीअ़त, ज़कात का बयान, 1/875 ता 880 मुलतक़त़न
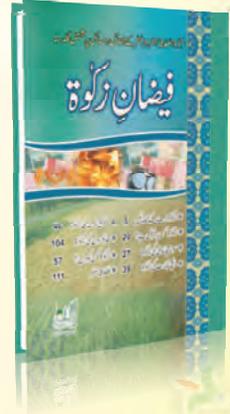
सुवाल निसाब का मालिक होने से क्या मुराद है ?

जवाब निसाब का मालिक होने से मुराद येह है कि उस शख़्स के पास साढ़े सात तोले सोना या साढ़े बावन तोले चांदी या इतनी मालिय्यत की रक़म या इतनी मालिय्यत का माले तिजारत हो ।

सुवाल ह़ाजते अस्लिय्या से क्या मुराद है ?

जवाब ह़ाजते अस्लिय्या से मुराद वोह चीज़ें हैं जिन की उ़मूमन इन्सान को ज़रूरत होती है और इन के बिग़ैर गुज़र अवक़ात में शदीद तंगी व दुश्वारी मह़सूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपड़े, सुवारी, इ़ल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ किताबें और पेशे से मुतअ़ल्लिक़ औज़ार वग़ैरा ।[1]

सुवाल ज़कात के फ़र्ज़ होने के लिये साल गुज़रने में क़मरी (या'नी चांद के) महीनों का ए'तिबार होगा या शम्सी महीनों का ?

जवाब ज़कात के फ़र्ज़ होने के लिये साल गुज़रने में क़मरी (या'नी चांद के) महीनों का ए'तिबार होगा न कि शम्सी महीनों का, बल्कि शम्सी महीनों का ए'तिबार ह़राम है ।[2]

सुवाल कितनी ज़कात देना फ़र्ज़ है ?

जवाब निसाब का चालीसवां हि़स्सा (या'नी 2.5%) ज़कात के तौ़र पर देना फ़र्ज़ है ।

सुवाल ज़कात कब फ़र्ज़ हुई ?

जवाब ज़कात 2 हिजरी में रोज़ों से क़ब्ल फ़र्ज़ हुई ।[3]

---

[1] ……هداية، كتاب الزكوة، ١/٩٦

[2] ……फ़तावा रज़विय्या, 10/157 माख़ूज़न

[3] ……درمختار، كتاب الزكوة، ٣/٢٠٢

सुवाल क्या ज़कात की फ़र्ज़िय्यत कुरआनो सुन्नत से साबित है ?

जवाब जी हां ! ज़कात की फ़र्ज़िय्यत किताब व सुन्नत से साबित है । चुनान्चे,

۞..... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

(پ ۱، البقرۃ:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो ।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی इस आयत के तहत तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है ।

۞..... शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه को यमन की तरफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : उन को बताओ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के मालों में ज़कात फ़र्ज़ की है जो उन के मालदारों से ले कर फ़ुक़रा को दी जाएगी ।[1]
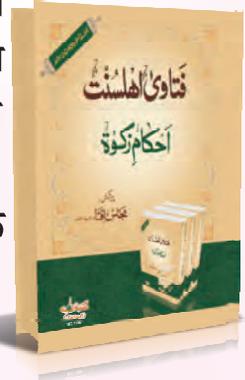
सुवाल अगर कोई ज़कात को फ़र्ज़ न माने तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब अगर कोई ज़कात को फ़र्ज़ न माने तो वोह काफ़िर है ।[2]

सुवाल क्या ज़कात देने से माल में कमी हो जाती है ?

जवाब जी नहीं ! ज़कात देने से माल में कमी नहीं होती बल्कि माल पहले से भी बढ़ जाता है, लिहाज़ा ज़कात देने वाले को येह यक़ीन रखते हुवे ख़ुश दिली से ज़कात देनी चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को बेहतर बदला अ़ता फ़रमाएगा । चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : सदक़े से माल कम नहीं होता ।[3] अगर्चे ज़ाहिरी तौर पर माल कम होता नज़र आता है लेकिन

---

[1] ...... ترمذی، کتاب الزکوۃ، باب ماجاء فی کراھیۃ اخذ خیار المال فی الصدقۃ، ۲/۱۲۶، حدیث:۶۲۵ ملخصًا

[2] ...... عالمگیری، کتاب الزکوۃ، الباب الاول، ۱/۱۷۰

[3] ...... المعجم الاوسط، ۱/۶۱۸، حدیث:۲۲۷۰

हक़ीक़त में बढ़ रहा होता है जैसे दरख़्त से ख़राब होने वाली शाख़ें तराशने से बज़ाहिर दरख़्त में कमी नज़र आती है लेकिन येह तराशना इस की नश्वो नुमा का सबब है । मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़कात देने वाले की ज़कात हर साल बढ़ती ही रहती है । येह तजरिबा है कि जो किसान खेत में बीज फेंक आता है वोह बज़ाहिर बोरियां ख़ाली कर लेता है लेकिन हक़ीक़त में मअ़ इज़ाफ़ा के भर लेता है । घर की बोरियां चूहे, सुरसुरी वग़ैरा की आफ़ात से हलाक हो जाती हैं या येह मतलब है कि जिस माल में से सदक़ा निकलता रहे उस में से ख़र्च करते रहो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ बढ़ता ही रहेगा, कूंएं का पानी भरे जाओ तो बढ़े ही जाएगा ।[1]

सुवाल ज़कात देने के फ़वाइद क्या हैं ?

जवाब ज़कात देने के फ़वाइद दो त़रह़ के हैं कुछ वोह हैं जो क़ुरआने पाक में बयान हुवे हैं और बा'ज़ ह़दीसे पाक में मरवी हैं । चुनान्चे,

क़ुरआने पाक में मरवी चन्द फ़वाइद

क़ुरआने पाक में मरवी चन्द फ़वाइद येह हैं :

﴾1﴿....ज़कात देने वाले पर रह़मते इलाही की छमा छम बरसात होती है । सूरए आ'राफ़ में है :

وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ (پ۹،الاعراف:۱۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़न क़रीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं ।

﴾2﴿.....ज़कात देने से तक़्वा ह़ासिल होता है । क़ुरआने पाक में मुत्तक़ीन की अ़लामात में से एक अ़लामत येह भी बयान की गई है । चुनान्चे, इरशाद होता है :

---

[1]...... मिरआतुल मनाजीह़, 3/93

وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۟ۙ
(پ ۱، البقرۃ:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं।

﴿3﴾.....ज़कात देने वाला कामयाब लोगों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो जाता है। जैसा कि कुरआने पाक में फ़लाह़ को पहुंचने वालों का एक काम ज़कात भी गिनवाया गया है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۟ۙ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۟ۙ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۟ۙ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۟ۙ
(پ ۱۸، المؤمنون: ۱ تا ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं।

﴿4﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़कात अदा करने वाले की मदद फ़रमाता है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَ لَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝
(پ ۱۷، الحج: ۴۰، ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक अल्लाह ज़रूर मदद फ़रमाएगा उस की जो उस के दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर अल्लाह कुदरत वाला ग़ालिब है वोह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अन्जाम।

﴿5﴾.....ज़कात अदा करना अल्लाह के घरों या'नी मसाजिद को आबाद करने वालों की सिफ़ात में से है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और

क़ियामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते तो क़रीब है कि येह लोग हिदायत वालों में हों ।

وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ وَ لَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰۤى اُولٰٓىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ (پ١٠، التوبۃ:١٨)

《6》.....ज़कात देने वाले का माल कम नहीं होता बल्कि दुन्या व आख़िरत में बढ़ता है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वोह इस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला ।

وَ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗ ۚ وَ هُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ (پ٢٢، سبا:٣٩)

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाना की त़रह़ जिस ने ऊगाईं सात बालीं हर बाल में सो दाने और अल्लाह उस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है वोह जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ।

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَ اللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ (پ٣، البقرۃ:٢٦١، ٢٦٢)

अह़ादीसे मुबारका में मरवी चन्द फ़वाइद

《1》.....तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना येह है कि तुम अपने मालों की ज़कात अदा करो ।[1]

---

[1] ......الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، باب الترغیب فی اداءِ الزکوۃ، ١/٣٠١، حدیث:١٢

﴾2﴿.....अपने माल की ज़कात निकाल कि वोह पाक करने वाली है, तुझे पाक कर देगी ।[1]

﴾3﴿.....जिस ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी उस से माल का शर दूर हो गया ।[2]

﴾4﴿.....ज़कात इस्लाम का पुल है ।[3]

ज़कात न देने के नुक़्सानात

﴾1﴿.....जो क़ौम ज़कात न देगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़हत़ में मुब्तला फ़रमाएगा ।[4]

﴾2﴿.....ख़ुश्की व तरी में जो माल तलफ़ होता है, वोह ज़कात न देने से तलफ़ होता है ।[5]

﴾3﴿.....जिस माल की ज़कात नहीं दी गई क़ियामत के दिन वोह माल गंजा सांप बन कर मालिक को दौड़ाएगा ।[6]

सदक़ए फ़ित्र

सदक़ए फ़ित्र से मुराद

सुवाल सदक़ए फ़ित्र से क्या मुराद है ?

जवाब सदक़ए फ़ित्र से मुराद वोह सदक़ा है जो रमज़ानुल मुबारक के बा'द नमाज़े ईद की अदाएगी से क़ब्ल दिया जाता है ।

सदक़ए फ़ित्र की शरई हैसिय्यत

सुवाल सदक़ए फ़ित्र की शरई हैसिय्यत क्या है ?

1 ……مسند احمد، ۴/۲۷۳، حدیث:۱۲۳۹۷

2 ……المعجم الاوسط، ۱/۴۳۱، حدیث:۱۵۷۹

3 ……المعجم الاوسط، ۲/۳۲۸، حدیث:۸۹۳۷

4 ……المعجم الاوسط، ۳/۲۷۵، حدیث:۴۵۷۷

5 ……الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، الترہیب من منع الزکوۃ……الخ، ۱/۳۰۸، حدیث:۱۶

6 ……مسند احمد، ۳/۱۲۶، حدیث:۱۰۸۵۷

जवाब सदक़ए फ़ित्र वाजिब है ।(1) सहीह़ बुख़ारी में है कि सरकारे वाला तबार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों पर सदक़ए फ़ित्र मुक़र्रर किया ।(2)

सुवाल सदक़ए फ़ित्र किस पर वाजिब है ?

जवाब सदक़ए फ़ित्र हर उस आज़ाद मुसलमान पर वाजिब है जो मालिके निसाब हो और उस का निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो ।(3) मालिके निसाब मर्द अपनी त़रफ़ से, अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से और अगर कोई मजनून (या'नी पागल) अवलाद है (ख़्वाह बालिग़ ही हो) तो उस की त़रफ़ से भी सदक़ए फ़ित्र अदा करे । हां अगर वोह बच्चा या मजनून ख़ुद साहि़बे निसाब है तो फिर उस के माल में से फ़ित्रा अदा कर दे ।(4)

सुवाल सदक़ए फ़ित्र कब वाजिब होता है ?

जवाब सदक़ए फ़ित्र ईद के दिन सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ होते ही वाजिब हो जाता है ।(5)

सुवाल सदक़ए फ़ित्र कब वाजिब हुवा ?

जवाब दो हिजरी में रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुवे और उसी साल ईद से दो दिन पहले सदक़ए फ़ित्र का हुक्म दिया गया ।(6)

सुवाल क्या सदक़ए फ़ित्र का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी है ?

जवाब जी हां ! सदक़ए फ़ित्र का ज़िक्र 30 वें पारे की सूरए आ'ला में किया गया है । चुनान्चे, मरवी है कि मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस आयते करीमा : قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿۱۵﴾ (پ۳۰، الاعلى: ۱۴، ۱۵)

---

[1] ……درمختار، کتاب الزکوۃ، باب صدقۃ الفطر، ۳/۳۶۲

[2] ……بخاری، کتاب الزکوۃ، باب فرض صدقۃ الفطر، ۱/۵۰۷، حدیث: ۱۵۰۳ ملخصًا

[3] ……درمختار، کتاب الزکوۃ، باب صدقۃ الفطر، ۳/۳۶۵

[4] ……عالمگیری، کتاب الزکوۃ، الباب الثامن فی صدقۃ الفطر، ۱/۱۹۲

[5] ……المرجع السابق

[6] ……درمختار، کتاب الزکوۃ، باب صدقۃ الفطر، ۳/۳۶۲

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी ।

के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह आयत सदक़ए फ़ित्र के बारे में नाज़िल हुई ।[1]

सदक़ए फ़ित्र की अदाएगी की ह़िक्मत

सुवाल सदक़ए फ़ित्र क्यूं दिया जाता है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोज़ों को लग़्व और बे ह़याई की बात से पाक करने के लिये और मिस्कीनों को खिलाने के लिये सदक़ए फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाया ।[2] ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : फ़ित्रा वाजिब करने में 2 ह़िक्मतें हैं । एक तो रोज़ादार के रोज़ों की कोताहियों की मुआ़फ़ी । अकसर रोज़े में ग़ुस्सा बढ़ जाता है तो बिला वजह लड़ पड़ता है, कभी झूट, ग़ीबत वग़ैरा भी हो जाते हैं, रब तआ़ला इस फ़ित्रे की बरकत से वोह कोताहियां मुआ़फ़ कर देगा कि नेकियों से गुनाह मुआ़फ़ होते हैं । दूसरे मसाकीन की रोज़ी का इन्तिज़ाम ।[3]

सुवाल क्या सदक़ए फ़ित्र के लिये रमज़ान के रोज़े रखना शर्त़ है ?

जवाब जी नहीं ! सदक़ए फ़ित्र वाजिब होने के लिये रमज़ान के रोज़े रखना शर्त़ नहीं, लिहाज़ा बिला उ़ज़्र या किसी उ़ज़्र मसलन सफ़र, मरज़ या बुढ़ापे की वजह से रोज़े न रखने वाला भी फ़ित्रा अदा करेगा ।[4]

---

[1]······صحیح ابن خزیمه، ۴/۹۰، حدیث: ۲۴۲۰

[2]······ابو داود، کتاب الزکوة، باب زکوة الفطر، ۲/۱۵۷، حدیث: ۱۶۰۹

[3]······मिरआतुल मनाजीह़, स. 3/43

[4]······درمختار، کتاب الزکوة، باب صدقة الفطر، ۳/۳۶۷

हज

हज से मुराद

सुवाल हज किसे कहते हैं ?

जवाब हज नाम है एहराम बांध कर 9 ज़ुल हिज्जा को मैदाने अरफ़ात[1] में ठहरने और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के त़वाफ़ का । इस के लिये एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर है कि इस में येह अफ़्आ़ल किये जाएं तो हज है ।[2]

हज की शरई हैसिय्यत

सुवाल हज की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब हज करना फ़र्ज़ है ।

सुवाल क्या हज करना हर एक पर फ़र्ज़ है ?

जवाब जी नहीं ! हर एक पर फ़र्ज़ नहीं बल्कि सिर्फ़ उन लोगों पर फ़र्ज़ है जो इस की इस्तित़ाअ़त रखते हैं । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ لِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا (پ ٤، ال عمران: ٩٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके ।

---

[1]...... मिना से तक़रीबन 11 किलो मीटर दूर एक मैदान है जहां 9 ज़ुल हिज्जा को तमाम हाजी साहिबान जम्अ़ होते हैं । (बहारे शरीअ़त, इस्तिलाहात, 1/68)

[2]...... बहारे शरीअ़त, हज का बयान, 1/1035

सुवाल अगर कोई शख़्स साहिबे इस्तिताअ़त हो तो क्या उस पर हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ होगा ?

जवाब जी नहीं ! ह़ज सिर्फ़ ज़िन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है, जब एक बार ह़ज कर लिया तो अब हर साल इस्तिताअ़त के बा वुजूद फ़र्ज़ नहीं ।

सुवाल जो शख़्स इस्तिताअ़त रखते हुवे ह़ज न करे उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स इस्तिताअ़त के बा वुजूद ह़ज न करे उस के मुतअ़ल्लिक़ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे ह़ज करने से न ह़ाजते ज़ाहिरा मानेअ़ हुई, न ज़ालिम बादशाह, न कोई ऐसा मरज़ जो रोक दे फिर बिग़ैर ह़ज किये मर गया तो चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर ।[1]

सुवाल ह़ज किस साल फ़र्ज़ हुवा ?

जवाब ह़ज 9 हिजरी में फ़र्ज़ हुवा, इस की फ़र्ज़िय्यत क़त़ई है, जो इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे काफ़िर है ।

ह़ज के फ़ज़ाइल पर मदनी अह़ादीसे मुबारका

﴾1﴿.....ह़ज कमज़ोरों के लिये जिहाद है ।[2]

﴾2﴿.....ह़ज उन गुनाहों को दूर कर देता है जो पेशतर हुवे हैं ।[3]

﴾3﴿.....जिस ने ह़ज किया और रफ़स (फ़ुह़्श कलाम) न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा ।[4]

﴾4﴿.....ह़ज व उ़मरह मोह़ताजी और गुनाहों को ऐसे दूर करते हैं, जैसे भट्टी लोहे और चांदी और सोने के मैल को दूर करती है और ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है ।[5]
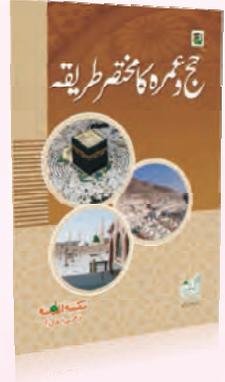
[1] ......دارمی، کتاب المناسک، باب من مات ولم یحجّ، ۲/۴۵، حدیث: ۱۷۸۵

[2] ......ابن ماجہ، کتاب الحج، باب الحج جہاد النساء، ۳/۴۱۴، حدیث: ۲۹۰۲

[3] ......مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یہدم ماقبلہ......الخ، ص ۷۴، حدیث: ۱۲۱

[4] ......بخاری، کتاب الحج، باب فضل الحج المبرور، ۱/۵۱۲، حدیث: ۱۵۲۱

[5] ......ترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی ثواب الحج والعمرۃ، ۲/۲۱۸، حدیث: ۸۱۰

हज की अक़्साम

सुवाल हज की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब हज की तीन क़िस्में हैं :

﴾1﴿.....हज्जे क़िरान ﴾2﴿.....हज्जे तमत्तोअ़ ﴾3﴿.....हज्जे इफ़राद

सुवाल हज्जे क़िरान से क्या मुराद है ?

जवाब हज्जे क़िरान से येह मुराद है कि ह़ाजी उ़मरह और ह़ज दोनों का एह़राम एक साथ बांधे।

सुवाल हज्जे तमत्तोअ़ से क्या मुराद है ?

जवाब हज्जे तमत्तोअ़ से मुराद येह है कि ह़ाजी ह़ज के महीने में उ़मरह करे फिर इसी साल ह़ज का एह़राम बांधे या पूरा उ़मरह न किया, सिर्फ़ चार फेरे किये फिर ह़ज का एह़राम बांधा।

सुवाल हज्जे इफ़राद से क्या मुराद है ?

जवाब हज्जे इफ़राद से मुराद येह है कि ह़ाजी ह़ज के महीने में सिर्फ़ ह़ज करे।

सुवाल सब से अफ़्ज़ल ह़ज कौन सा है ?

जवाब सब से अफ़्ज़ल क़िरान है फिर तमत्तोअ़ फिर इफ़राद।

ह़ज के महीने व अय्याम

सुवाल ह़ज के अय्याम कौन से हैं ?

जवाब ह़ज का वक़्त शव्वाल से दसवीं ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम तक या'नी दो महीने और दस दिन है कि इस से पहले ह़ज के अफ़्आ़ल नहीं हो सकते।[1]

[1]·····बहारे शरीअ़त, ह़ज का बयान, 1/1036
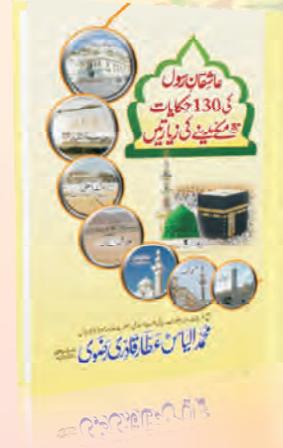
ज़ुल हिज्जतिल ह़राम की 8 तारीख़ के अफ़्आल

सुवाल ह़ज के दौरान ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 8 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं?

जवाब ह़ज के दौरान ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 8 तारीख़ को दर्जे ज़ैल काम किये जाते हैं:

- ..... अगर एह़राम[1] की ह़ालत में न हों तो सब से पहले ह़ज का एह़राम बांधा जाता है क्यूंकि एह़राम के बिग़ैर ह़ज नहीं होता।
- ..... फिर तुलूए आफ़्ताब के बा'द मिना[2] को रवानगी होती है।
- ..... मिना में नमाज़े ज़ोहर तक पहुंच कर अगली सुब्ह़ नमाज़े फ़ज्र तक क़ियाम किया जाता है।

ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 9 तारीख़ के अफ़्आल

सुवाल ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 9 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं?

जवाब ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 9 तारीख़ को दर्जे ज़ैल काम किये जाते हैं:

- ..... नमाज़े फ़ज्र मिना में अदा करने के बा'द मैदाने अ़रफ़ात का रुख़ किया जाता है।
- ..... जब नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हो जाए तो मैदाने अ़रफ़ात में नमाज़े ज़ोहर और अ़स्र मिला कर पढ़ी जाती हैं[3] मगर इस की बा'ज़ शराइत़ हैं।
- ..... मैदाने अ़रफ़ात में कम अज़ कम एक लम्ह़ा ठहरना ह़ज का पहला रुक्न (या'नी फ़र्ज़) है लिहाज़ा 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम दोपहर ढलने से ले कर 10 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम सुब्ह़े सादिक़ के दरमियान जो कोई एह़राम के साथ एक लम्ह़े के लिये भी मैदाने अ़रफ़ात में दाख़िल हो गया वोह ह़ाजी हो गया।
- ..... फिर ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द मैदाने अ़रफ़ात से मुज़्दलिफ़ा[4] के लिये रवाना हो जाएं।

---

[1]......जब ह़ज या उ़मरह या दोनों की निय्यत कर के तल्बिय्या पढ़ते हैं तो बा'ज़ ह़लाल चीज़ें भी ह़राम हो जाती हैं इस लिये इस को एह़राम कहते हैं और मजाज़न उन बिग़ैर सिली चादरों को भी एह़राम कहा जाता है जिन को एह़राम की ह़ालत में इस्ति'माल किया जाता है। (बहारे शरीअ़त, इस्तिलाह़ात, 1/64)

[2]......मस्जिदुल ह़राम से पांच किलो मीटर पर एक वादी है जहां ह़ाजी साह़िबान क़ियाम करते हैं। (बहारे शरीअ़त, इस्तिलाह़ात, 1/68)

[3]......आप अपने अपने ख़ैमों ही में ज़ोहर की नमाज़ ज़ोहर के वक़्त में और अ़स्र की नमाज़ अ़स्र के वक़्त में बा जमाअ़त अदा कीजिये। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, ह़ाशिया, स. 160)

[4]......मिना से अ़रफ़ात की त़रफ़ तक़रीबन पांच किलो मीटर पर वाक़ेअ़ एक मैदान है जहां अ़रफ़ात से वापसी पर रात बसर करते हैं। यहां सुब्ह़े सादिक़ और तुलूए आफ़्ताब के दरमियान कम अज़ कम एक लम्ह़ा वुक़ूफ़ वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, इस्तिलाह़ात, 1/64)

❁····· मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ में मग़्रिब और इशा दोनों नमाज़ें एक साथ अदा करें ।

सुवाल : मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ में मग़्रिब और इशा दोनों नमाज़ें एक साथ कैसे पढ़ी जाती हैं ?

जवाब : मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ में एक ही अज़ान और एक ही इक़ामत से नमाज़े मग़्रिब व इशा वक़्ते इशा में अदा की जाती हैं, लिहाज़ा अज़ान व इक़ामत के बा'द पहले मग़्रिब के तीन फ़र्ज़ अदा कर लीजिये, सलाम फेरते ही फ़ौरन इशा के फ़र्ज़ पढ़िये फिर मग़्रिब की सुन्नतें, नफ़्ल (अव्वाबीन) इस के बा'द इशा की सुन्नतें, नफ़्ल और वित्र व नवाफ़िल अदा कीजिये ।[1]

ज़ुल हिज्जतिल हराम की 10 तारीख़ के अफ़्आल

सुवाल : ज़ुल हिज्जतिल हराम की 10 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं ?

जवाब : ज़ुल हिज्जतिल हराम की 10 तारीख़ को दर्जे ज़ैल काम किये जाते हैं :

❁····· 10 वीं रात को मुज़्दलिफ़ा में क़ियाम करना सुन्नते मुअक्कदा और कम अज़ कम हाजी का एक लम्हा वहां ठहरना वाजिब है ।

❁····· फिर नमाज़े फ़ज्र मुज़्दलिफ़ा में अदा करने के बा'द मिना को रवानगी होती है ।

❁····· मिना पहुंच कर जमरतुल अ़क़बा या'नी बड़े शैतान को सात कंकरियां मारी जाती हैं ।

❁····· कंकरियां मारने के बा'द कुरबानी की जाती है ।

❁····· कुरबानी करने के बा'द मर्द हल्क़ या क़स्र[2] करवाते हैं जब कि औरतें सिर्फ़ क़स्र[3] करवाती हैं ।

❁·····हल्क़ करवाने के बा'द एहराम की पाबन्दियां ख़त्म हो जाएंगी ।

---

[1]····· रफ़ीक़ुल हरमैन, स. 182

[2]····· एहराम से बाहर होने के लिये हुदूदे हरम ही में पूरा सर मुंडवाने को हल्क़ और चौथाई सर का हर बाल कम अज़ कम उंगली के एक पोरे के बराबर कतरवाने को क़स्र कहते हैं । (रफ़ीक़ुल हरमैन, स. 60)

[3]····· इस्लामी बहनों को सर मुंडवाना हराम है वोह सिर्फ़ तक़्सीर करवाएं । इस का आसान तरीक़ा येह है कि अपनी चुटया के सिरे को उंगली के गिर्द लपेट कर उतना हिस्सा काट लें, लेकिन येह एहतियात लाज़िमी है कि कम अज़ कम चौथाई सर के बाल एक पौरे के बराबर कट जाएं । (रफ़ीक़ुल हरमैन, स. 138)

۞····· अब सिले हुवे कपड़े पहन सकते हैं ।

۞····· अब ह़ज का आख़िरी फ़र्ज़ त़वाफ़ुज़्ज़ियारत किया जाता है ।

सुवाल त़वाफ़ुज़्ज़ियारत से क्या मुराद है ?

जवाब 10 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम से 12 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के सूरज ग़ुरूब होने से पहले का'बए मुशर्रफ़ा के त़वाफ़ को ह़ज का दूसरा बड़ा रुक्न (फ़र्ज़) त़वाफ़ुज़्ज़ियारत कहा जाता है, इस के बा'द ह़ज मुकम्मल हो जाता है । त़वाफ़ुज़्ज़ियारत सिले हुवे कपड़े पहन कर किया जाता है क्यूंकि क़ुरबानी और ह़ल्क़ के बा'द ह़ाजी एह़राम की पाबन्दियों से आज़ाद हो चुका होता है ।

ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 11 और 12 तारीख़ के अफ़आ़ल

सुवाल ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 11 और 12 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं ?

जवाब ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 11 और 12 तारीख़ को दर्जे ज़ैल काम किये जाते हैं :

۞····· त़वाफ़ुज़्ज़ियारत के बा'द ग्यारह, बारह और तेरह ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की तीन रातें मिना शरीफ़ में गुज़ारना सुन्नत है ।

۞····· ग्यारह, बारह तारीख़ को तीनों शैत़ानों को कंकरियां मारी जाती हैं ।

सुवाल तीनों शैत़ानों को कंकरियां मारने की तरतीब क्या है ?

जवाब ग्यारह और बारह तारीख़ को ज़वाले आफ़्ताब (सूरज ढलने) के बा'द पहले छोटे शैत़ान को फिर दरमियान वाले को और आख़िर में बड़े शैत़ान को कंकरियां मारी जाती हैं ।
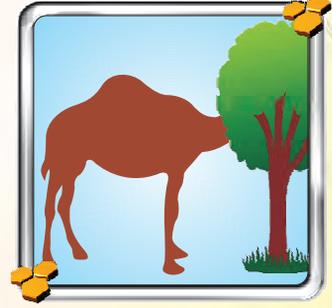
क़ुरबानी से मुराद

सुवाल कुरबानी से क्या मुराद है ?

जवाब कुरबानी से मुराद है : मख़्सूस जानवर को मख़्सूस दिन में (या'नी 10, 11 और 12 ज़ुल ह़िज्जा को) कुर्बे ख़ुदावन्दी के ह़ुसूल की निय्यत से ज़ब्ह़ करना । कभी उस जानवर को भी उज़्ह़िया और कुरबानी कहते हैं जो ज़ब्ह़ किया जाता है ।[1]

क़ुरबानी की शरई ह़ैसिय्यत

सुवाल कुरबानी की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

जवाब कुरबानी हर उस बालिग़ मुक़ीम मुसलमान मर्द व औ़रत पर वाजिब है जो मालिके निसाब हो ।[2]

क़ुरबानी का जानवर

सुवाल कुरबानी के जानवर की उ़म्र कितनी होनी चाहिये ?

जवाब ऊंट पांच साल का, गाए भेंस दो साल की, बकरा (बकरी, दुम्बा, दुम्बी और भेड़ वग़ैरा सब) एक साल का । इस से कम उ़म्र हो तो कुरबानी जाइज़

[1]……बहारे शरीअ़त, उज़्ह़िया या'नी कुरबानी का बयान, 3/327

[2]……عالمگیری، کتاب الاضحیۃ، الباب الاوّل، ۵/۲۹۲

नहीं, ज़ियादा हो तो जाइज़ बल्कि अफ़्ज़ल है। हां दुम्बा या भेड़ का छे महीने का बच्चा अगर इतना बड़ा हो कि दूर से देखने में साल भर का मा'लूम होता हो तो उस की क़ुरबानी जाइज़ है।[1]

सुवाल कुरबानी का जानवर कैसा होना चाहिये ?

जवाब कुरबानी का जानवर बे ऐब होना ज़रूरी है। चुनान्चे, मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "चार क़िस्म के जानवर कुरबानी के लिये दुरुस्त नहीं : (1) काना : जिस का कानापन ज़ाहिर हो (2) बीमार : जिस की बीमारी ज़ाहिर हो (3) लंगड़ा : जिस का लंग ज़ाहिर हो और (4) ऐसा लाग़र जिस की हड्डियों में मग़्ज़ न हो।"[2] अलबत्ता ! अगर थोड़ा सा ऐब हो (मसलन कान चिरा हुवा हो या कान में सूराख़ हो) तो कुरबानी हो जाएगी मगर मकरूह होगी और अगर ऐब ज़ियादा हो तो बिल्कुल नहीं होगी।[3]
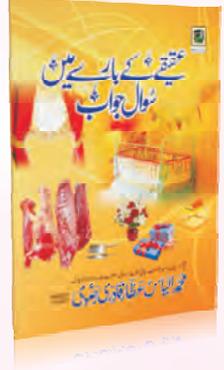
क़ुरबानी का त़रीक़ा

सुवाल जानवर ज़ब्ह करने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब जानवर ज़ब्ह करने में सुन्नत येह है कि ज़ब्ह करने वाला और जानवर दोनों क़िब्ला रू हों, हमारे अ़लाक़े (या'नी पाक व हिन्द) में क़िब्ला मग़रिब में है, इस लिये सरे ज़बीह़ा (जानवर का सर) जुनूब की त़रफ़ होना चाहिये ताकि जानवर बाएं (उलटे) पहलू लेटा हो और उस की पीठ मशरिक़ की त़रफ़ हो, ताकि उस का मुंह क़िब्ला की त़रफ़ हो जाए और ज़ब्ह करने वाले ने अपना या जानवर का मुंह क़िब्ला की त़रफ़ करना तर्क किया तो मकरूह है।[4] फिर जानवर की गर्दन के क़रीब पहलू पर अपना सीधा पाउं रख कर اَللّٰھُمَّ لَکَ وَمِنْکَ بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکْبَر पढ़ कर तेज़ छुरी से जल्द ज़ब्ह कर दीजिये।

---

[1]......درمختار، کتاب الاضحیۃ، ٩/٥٣٣

[2]......مسند احمد، ٦/٤٠٧، حدیث:١٨٥٣٥

[3]......बहारे शरीअ़त, कुरबानी के जानवर का बयान, 3/340 मुलख़्ख़सन

[4]......फ़तावा रज़विय्या, 20/216

जानवर ज़ब्ह़ करते वक़्त की दुआ़

सुवाल कुरबानी का जानवर ज़ब्ह़ करने से पहले कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है ?

जवाब कुरबानी का जानवर ज़ब्ह़ करने से पहले येह दुआ़ पढ़ी जाती है :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ عَلٰی مِلَّةِ اِبْرَاهِیْمَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

सुवाल क्या ज़ब्ह़ के बा'द भी कोई दुआ़ पढ़ी जाती है ?

जवाब जी हां ! कुरबानी अपनी त़रफ़ से हो तो ज़ब्ह़ के बा'द येह दुआ़ पढ़ी जाती है :

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّیْ کَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِیْلِكَ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ وَحَبِیْبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

और अगर दूसरे की त़रफ़ से हो तो مِنِّیْ के बजाए مِنْ कह कर उस का नाम लिया जाता है ।(1)

कु़रबानी के मुतअ़ल्लिक़ दीगर मदनी फूल

सुवाल क्या कुरबानी का जानवर अपने हाथ से ज़ब्ह़ करना चाहिये ?

जवाब जी हां ! कुरबानी का जानवर अपने हाथ से ज़ब्ह़ करना सुन्नत है और ब वक़्ते ज़ब्ह़ ब निय्यते सवाबे आख़िरत वहां ह़ाज़िर रहना भी सुन्नत है ।

सुवाल गाए, भेंस और ऊंट में कितनी कुरबानियां हो सकती हैं ?

---

(1)...अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 14

जवाब गाए, भेंस और ऊंट में सात कुरबानियां हो सकती हैं ।

सुवाल जिस पर कुरबानी वाजिब हो वोह अगर कुरबानी के बजाए इतनी रक़म सदक़ा कर दे तो क्या उस के लिये ऐसा करना जाइज़ है ?

जवाब जी नहीं ! कुरबानी का बकरा या उस की क़ीमत सदक़ा कर देने से कुरबानी नहीं होती क्यूंकि कुरबानी के वक़्त में कुरबानी करना ही लाज़िम है कोई दूसरी चीज़ इस के क़ाइम मक़ाम नहीं हो सकती ।[1]

सुवाल कुरबानी के वक़्त तमाशा देखना कैसा है ?

जवाब कुरबानी के वक़्त बतौरे तफ़रीह ज़ब्ह होने वाले जानवर के गिर्द घेरा डालना, उस के चिल्लाने और तड़पने फड़कने से लुत्फ़ अन्दोज़ होना, हंसना, क़हक़हे बुलन्द करना और उस का तमाशा बनाना सरासर ग़फ़्लत की अ़लामत है । ज़ब्ह करते वक़्त या अपनी कुरबानी हो रही हो उस के पास हाज़िर रहते वक़्त अदाए सुन्नत की निय्यत होनी चाहिये ।

सुवाल कुरबानी के वक़्त अदाए सुन्नत के इलावा और क्या क्या निय्यतें की जा सकती हैं ?

जवाब कुरबानी के वक़्त अदाए सुन्नत के इलावा दर्जे ज़ैल निय्यतें भी की जा सकती हैं :

- ۞.....मैं राहे ख़ुदा में जिस त़रह़ आज जानवर कुरबान कर रहा हूं ब वक़्ते ज़रूरत अपनी जान भी कुरबान कर दूंगा ।
- ۞.....जानवर ज़ब्ह कर के अपने नफ़्से अम्मारा को भी ज़ब्ह कर रहा हूं और आयिन्दा गुनाहों से बचूंगा ।

सुवाल ज़ब्ह के वक़्त जानवर पर रह़्म खाना कैसा है ?

जवाब ज़ब्ह होने वाले जानवर पर रह़्म खाए और ग़ौर करे कि अगर इस की जगह मुझे ज़ब्ह किया जा रहा होता तो मेरी क्या कैफ़िय्यत होती ! ब वक़्ते ज़ब्ह जानवर पर रह़्म खाना कारे सवाब है जैसा कि एक सह़ाबी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे बकरी ज़ब्ह करने पर रह़्म आता है । तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर इस पर रह़्म करोगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी तुम पर रह़्म फ़रमाएगा ।[2]

۞......۞......۞

---

[1]......बहारे शरीअ़त, उज़्हिया या'नी कुरबानी का बयान, 3/335 माख़ूज़न

[2]......مسند احمد، ۵/۳۰۴، حدیث: ۱۵۵۹۲

बहारे शरीअ़त हिस्सए अव्वल व दुवुम से चन्द ज़रूरी इस्तिलाहात की वज़ाहत

मो 'जिज़ा : नबी से बा 'दे दा 'वए नबुव्वत ख़िलाफ़े अ़क़्ल व आ़दत सादिर होने वाली चीज़ जिस से सब मुन्किरीन आ़जिज़ हो जाते हैं उसे मो 'जिज़ा कहते हैं।

इरहास : नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत ए 'लाने नबुव्वत से पहले ज़ाहिर हो उस को इरहास कहते हैं।

करामत : वली से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को करामत कहते हैं।

मऊ़नत : आ़म मोअमिनीन से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को मऊ़नत कहते हैं।

इस्तिदराज : बे बाक फुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो बात उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो उस को इस्तिदराज कहते हैं।

इहानत : बे बाक फुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो बात उन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो उस को इहानत कहते हैं।

बिदअ़त : वोह ए 'तिक़ाद या वोह आ 'माल जो कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए ह़याते ज़ाहिरी में न हों, बा 'द में ईजाद हुवे।

बिदअ़ते सय्यिआ : जो बिदअ़त इस्लाम के ख़िलाफ़ हो या किसी सुन्नत को मिटाने वाली हो वोह बिदअ़ते सय्यिआ है।

बिदअ़ते मकरूहा : वोह नया काम जिस से कोई सुन्नत छूट जाए अगर सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा छूटी तो येह बिदअ़त मकरूहे तन्ज़ीही है और अगर सुन्नते मुअक्कदा छूटी तो येह बिदअ़त मकरूहे तह़रीमी है।

बिदअ़ते ह़राम : वोह नया काम जिस से कोई वाजिब छूट जाए, या 'नी वाजिब को मिटाने वाली हो।

बिदअ़ते मुस्तह़ब्बा : वोह नया काम जो शरीअ़त में मन्अ़ न हो और उस को आ़म मुसलमान कारे सवाब जानते हों या कोई शख़्स उस को निय्यते ख़ैर से करे, जैसे मह़फ़िले मीलाद वग़ैरा।

बिदअ़ते जाइज़ (मुबाह़) : हर वोह नया काम जो शरीअ़त में मन्अ़ न हो और बिग़ैर किसी निय्यते ख़ैर के किया जाए जैसे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने खाना वग़ैरा।

बिदअ़ते वाजिब : वोह नया काम जो शरअ़न मन्अ़ न हो और उस के छोड़ने से दीन में ह़रज वाक़ेअ़ हो, जैसे कि क़ुरआन के ए'राब और दीनी मदारिस और इल्मे नह़्व वग़ैरा पढ़ना।

तक़्लीद : किसी के क़ौल व फ़े'ल को अपने ऊपर लाज़िमे शरई जानना येह समझ कर कि इस का कलाम और इस का काम हमारे लिये हुज्जत है क्यूंकि येह शरई मुह़क़्क़िक़ है, जैसे कि हम मसाइले शरइय्या में इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल व फ़े'ल अपने लिये दलील समझते हैं और दलाइले शरइय्या में नज़र नहीं करते।

तक़्लीद की मुख़्तलिफ़ सूरतें :

शरई मसाइल तीन त़रह़ के हैं : (1) अ़क़ाइद : इन में किसी की तक़्लीद जाइज़ नहीं (2) वोह अह़काम जो सराह़तन क़ुरआने पाक या ह़दीस शरीफ़ से साबित हों,इजतिहाद को इन में दख़्ल नहीं, इन में भी किसी की तक़्लीद जाइज़ नहीं जैसे पांच नमाज़ें, नमाज़ की रक्अ़तें, तीस रोज़े वग़ैरा (3) वोह अह़काम जो क़ुरआने पाक या ह़दीस शरीफ़ से इस्तिम्बात़ व इजतिहाद कर के निकाले जाएं, इन में ग़ैरे मुज्तहिद पर तक़्लीद करना वाजिब है।

फ़र्ज़ : जो दलीले क़त़ई[1] से साबित हो या'नी ऐसी दलील जिस में कोई शुबा न हो।

फ़र्ज़े किफ़ाया : वोह होता है जो कुछ लोगों के अदा करने से सब की जानिब से अदा हो जाते हैं और कोई भी अदा न करे तो सब गुनाहगार होते हैं। जैसे नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा।

वाजिब : वोह जिस की ज़रूरत दलीले ज़न्नी[2] से साबित हो।

---

[1]......दलीले क़त़ई वोह है जिस का सुबूत क़ुरआने पाक या ह़दीसे मुतवातिरा से हो।(फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, 1/204)

[2]...... दलीले ज़न्नी वोह है जिस का सुबूत क़ुरआने पाक या ह़दीसे मुतवातिरा से न हो, बल्कि अह़ादीसे उह़ाद या मह़्ज़ अक़वाले अइम्मा से हो।(फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, 1/204)

सुन्नते मुअक्कदा : वोह है जिस को हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा किया हो अलबत्ता बयाने जवाज़ के लिये कभी तर्क भी किया हो ।

सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा : वोह अ़मल जिस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुदावमत (हमेशगी) नहीं फ़रमाई और न उस के करने की ताकीद फ़रमाई लेकिन शरीअ़त ने उस के तर्क को नापसन्द जाना हो और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह अ़मल कभी किया हो ।

मुस्तह़ब : वोह कि नज़्रे शरअ़ में पसन्द हो मगर तर्क पर कुछ नापसन्दी न हो, ख़्वाह खुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे किया या उस की तरग़ीब दी या उ़लमाए किराम ने पसन्द फ़रमाया अगर्चे अह़ादीस में उस का ज़िक्र न आया ।

मुबाह़ : वोह जिस का करना और न करना यक्सां हो ।

ह़रामे क़त़ई : जिस की मुमानअ़त दलीले क़त़ई से लुज़ूमन साबित हो, येह फ़र्ज़ का मुक़ाबिल है ।

मकरूहे तह़रीमी : जिस की मुमानअ़त दलीले ज़न्नी से लुज़ूमन साबित हो, येह वाजिब का मुक़ाबिल है ।

इसाअत : वोह ममनूए़ शरई जिस की मुमानअ़त की दलील ह़राम और मकरूहे तह़रीमी जैसी तो नहीं मगर उस का करना बुरा है, येह सुन्नते मुअक्कदा के मुक़ाबिल है ।

मकरूहे तन्ज़ीही : वोह अ़मल जिसे शरीअ़त नापसन्द रखे मगर अ़मल पर अ़ज़ाब की वई़द न हो । येह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा के मुक़ाबिल है ।

ख़िलाफ़े औला : वोह अ़मल जिस का न करना बेहतर हो । येह मुस्तह़ब का मुक़ाबिल है ।
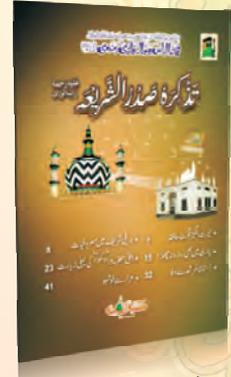
चौथा बाब एक नज़र में

क्या आप ने अस्हाबे बद्र की निस्बत से इबादात के मुतअ़ल्लिक़ चौथे बाब में बयान कर्दा दर्जे ज़ैल 313 सुवालात के जवाबात जान लिये हैं ?

1 तहारत का क्या मतलब है ?
2 तहारत की कितनी क़िस्में हैं ?
3 नजासत की कितनी क़िस्में हैं ?
4 नजासते हुक्मिय्या से क्या मुराद है ?
5 नजासते हुक्मिय्या से पाक होने का तरीक़ा क्या है ?
6 नजासते हक़ीक़िय्या से क्या मुराद है ?
7 नजासते हक़ीक़िय्या से पाक होने का तरीक़ा क्या है ?
8 नजासते ग़लीज़ा का हुक्म क्या है ?
9 नजासते ग़लीज़ा के दिरहम या इस से कम या ज़ियादा होने से क्या मुराद है ?
10 कौन कौन सी चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं ?
11 नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म क्या है ?
12 नजासते ख़फ़ीफ़ा कौन कौन सी चीज़ें हैं ?
13 बदन या कपड़ा नजिस हो जाए तो पाक करने का क्या तरीक़ा है ?
14 गुस्ल के कितने फ़र्ज़ हैं ? और इन से क्या मुराद है ?
15 गुस्ल का तरीक़ा बताइये ।
16 नहाने में किन बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

17 नापाकी की ह़ालत में कौन कौन से काम नहीं कर सकते ?

18 नापाकी की ह़ालत में कौन कौन से काम करने में कोई ह़रज नहीं ?

19 तयम्मुम क्या है ?

20 क्या वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम में कोई फ़र्क़ है ?

21 अगर किसी पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो तो क्या वोह ग़ुस्ल का तयम्मुम कर के नमाज़ वग़ैरा पढ़ सकता है या नमाज़ के लिये अलग से वुज़ू का तयम्मुम करना ज़रूरी है ?

22 क्या तयम्मुम का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में भी है ?

23 तयम्मुम के कितने फ़र्ज़ हैं ?

24 तयम्मुम में निय्यत से क्या मुराद है ?

25 तयम्मुम में सारे मुंह पर हाथ फेरते हुवे किन बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

26 तयम्मुम में कोहनियों समेत दोनों हाथों के मस्ह़ के दौरान क्या एह़तियात़ करनी चाहिये ?

27 तयम्मुम की सुन्नतें कितनी हैं ?

28 तयम्मुम कैसे करते हैं ? त़रीक़ा बताइये ।

29 अज़ान से क्या मुराद है ?

30 अज़ान देने का त़रीक़ा क्या है ?

31 अज़ान कहने वाले को क्या कहते हैं ?

32 अज़ान सुनने वाला क्या करे ?

33 जो शख़्स अज़ान के वक़्त बातें करता रहे उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

34 अज़ान का जवाब देने से क्या मुराद है ?

35 इक़ामत किसे कहते हैं ?

36 अज़ानो इक़ामत में क्या फ़र्क़ है ?

37 इक़ामत का जवाब किस त़रह़ दिया जाए ?

38 इमामत की शराइत़ कितनी हैं ?

39 इमामत का सब से ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?

40 जिस इमाम का अ़क़ीदा दुरुस्त न हो क्या उस के पीछे नमाज़ हो जाएगी ?

41 इक़्तिदा की 13 शराइत़ में से कोई सात शराइत़ बताइये ?

42 क्या तरावीह़ फ़र्ज़ है ?

43 क्या तरावीह़ की जमाअ़त वाजिब है ?

44 मस्जिद के इलावा घर या किसी दूसरी जगह बा जमाअ़त तरावीह़ अदा करने का क्या हुक्म हैं ?

45 क्या तरावीह़ बैठ कर पढ़ सकते हैं ?

46 तरावीह़ का वक़्त क्या है ?

47 अगर तरावीह़ फ़ौत हो गई तो इस की क़ज़ा कब करे ?

48 तरावीह़ की कितनी रक्अ़तें हैं ?

49 तरावीह़ की ﴿20﴾ रक्अ़तों की अदाएगी का त़रीक़ा क्या है ?

50 क्या नाबालिग़ इमाम के पीछे तरावीह़ पढ़ सकते हैं ?

51 तरावीह़ में पूरा क़ुरआने मजीद पढ़ने या सुनने की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

52 अगर तरावीह़ में किसी भी वजह से ख़त्मे क़ुरआन मुमकिन न हो तो क्या करना चाहिये ?

53 तरावीह़ में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ बुलन्द आवाज़ से पढ़ना चाहिये या आहिस्ता ?

54 अगर तरावीह़ सिर्फ़ आख़िरी दस सूरतों के साथ पढ़ी जा रही हो तो क्या फिर भी एक बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ ऊंची आवाज़ से पढ़ना सुन्नत है ?

55 तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआने करीम किस त़रह़ करना चाहिये ?

56 ख़त्मे कुरआन के बा'द क्या महीने के बाक़ी दिन तरावीह़ छोड़ दे ?
57 तरावीह़ में कुरआने मजीद जल्दी जल्दी पढ़ना चाहिये या आहिस्ता आहिस्ता ?
58 आज कल के बहुत तेज़ पढ़ने वाले हुफ़्फ़ाज़ के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?
59 अगर जल्दी जल्दी पढ़ने में ह़ाफ़िज़ साहि़ब कुरआने मजीद में से कुछ अल्फ़ाज़ चबा गए तो क्या ख़त्मे कुरआन की सुन्नत अदा हो गई ?
60 अगर किसी आयत में कोई ह़र्फ़ चब गया या अपने मख़रज से न निकला तो अब क्या करना चाहिये ?
61 अगर किसी वजह से तरावीह़ की नमाज़ फ़ासिद हो जाए तो क्या करना चाहिये ?
62 अगर इमाम ग़लती से कोई आयत या सूरह छोड़ कर आगे बढ़ गया तो क्या करे ?
63 तरावीह़ में दो रक्अ़त के बा'द बैठना भूल गया तो क्या करे ?
64 तरावीह़ में अगर कोई रक्आ़त की ता'दाद भूल जाए तो क्या करे ?
65 तरवीह़ा से क्या मुराद है ?
66 तरवीह़ा के दौरान क्या करना या पढ़ना चाहिये ?
67 तरावीह़ पढ़ाने की उजरत लेना कैसा है ?
68 अगर तरावीह़ पढ़ाने की उजरत तै न की जाए और लोग या इन्तिज़ामिय्या कुछ ख़िदमत वग़ैरा करें तो क्या येह लेना जाइज़ है ?
69 अगर ह़ाफ़िज़ उजरत न ले मगर अपनी तेज़ी दिखाने, ख़ुश आवाज़ी की दाद पाने और नाम चमकाने के लिये कुरआने पाक पढ़े तो क्या उसे सवाब मिलेगा ?
70 अगर कोई अलग अलग मसाजिद में तरावीह़ पढ़े तो क्या उस का ऐसा करना दुरुस्त है ?
71 बा'ज़ लोग इमाम के रुकूअ़ में पहुंचने के इन्तिज़ार में बैठे रहते हैं, उन के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?
72 क्या इशा के फ़र्ज़ एक इमाम के पीछे और तरावीह़ दूसरे इमाम के पीछे पढ़ सकते हैं ?
73 क्या वित्र पढ़ना फ़र्ज़ है ?
74 क्या फ़र्ज़ की त़रह़ वित्र की भी क़ज़ा है ?

75 वित्र किस वक़्त पढ़े जाते हैं ?
76 अगर कोई नमाज़े इशा से पहले वित्र पढ़ ले तो क्या हो जाएंगे ?
77 वित्र कब तक पढ़े जा सकते हैं ?
78 वित्र पढ़ने का अफ़्ज़ल वक़्त कौन सा है ?
79 क्या वित्र बा जमाअ़त पढ़ सकते हैं ?
80 वित्र की कितनी रक्अ़तें हैं और इस के पढ़ने का त़रीक़ा क्या है ?
81 क्या दुआ़ए कुनूत पढ़ना फ़र्ज़ है ?
82 क्या दुआ़ए कुनूत किसी ख़ास दुआ़ का नाम है ?
83 क्या बाक़ी दुआ़ओं की त़रह़ दुआ़ए कुनूत के बा'द दुरूदे पाक पढ़ सकते हैं ?
84 अगर किसी को दुआ़ए कुनूत न आती हो तो वोह क्या पढ़े ?
85 अगर कोई दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल जाए तो क्या करे ?
86 वित्र जमाअ़त से पढ़ रहे हों और इमाम मुक़्तदी के मुकम्मल कुनूत पढ़ने से पहले ही रुकूअ़ में चला जाए तो अब मुक़्तदी क्या करे ?
87 सजदए सह्व से क्या मुराद है ?
88 अगर किसी ने जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो क्या फिर भी सजदए सह्व से तलाफ़ी हो जाएगी ?
89 सजदए सह्व की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?
90 अगर किसी ने सजदए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?
91 क्या कोई ऐसा वाजिब भी है जिस के रह जाने की सूरत में सजदए सह्व वाजिब नहीं होता ?
92 अगर कोई फ़र्ज़ रह जाए तो क्या सजदए सह्व से उस की भी तलाफ़ी हो जाएगी ?
93 अगर सुन्नतें या मुस्तह़ब्बात छूट जाएं तो क्या इस सूरत में भी सजदए सह्व कर लेना चाहिये ?
94 अगर एक से ज़ाइद वाजिबात तर्क हुवे हों तो क्या हर एक के लिये अलग अलग सजदए सह्व करना होगा ?

95 अगर इमाम से नमाज़ में कोई वाजिब छूट गया तो क्या मुक़्तदी पर भी सजदए सह्व वाजिब है ?

96 अगर मुक़्तदी से बहालते इक़्तिदा सह्व वाक़ेअ़ हुवा तो क्या उस पर सजदए सह्व वाजिब है ?

97 क्या सजदए सह्व सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ में वाजिब है या दीगर नमाज़ों में भी वाजिब है ?

98 चन्द सूरतें बताइये जिन में सजदए सह्व वाजिब होता है ।

99 सजदए सह्व का तरीक़ा क्या है ?

100 सजदए तिलावत से क्या मुराद है ?

101 कुरआने पाक में सजदे की कुल कितनी आयात हैं ?

102 आयते सजदा का शरई हुक्म क्या है ?

103 अगर किसी ने आयते सजदा का तर्जमा पढ़ा या सुना तो क्या उस पर भी सजदा करना लाज़िम है ?

104 अगर किसी ने पूरी आयते सजदा न पढ़ी बल्कि कुछ हिस्सा ही पढ़ा या सुना तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

105 क्या आयते सजदा पढ़ने या सुनने से फ़ौरन सजदा करना ज़रूरी है या बा'द में भी कर सकते हैं ?

106 मदारिस में त़ालिबे इल्म कुरआने करीम याद करने के लिये एक ही आयत एक ही जगह बैठे बैठे बार बार पढ़ते हैं तो क्या आयते सजदा बार बार पढ़ने और सुनने से बार बार सजदा करना होगा ?

107 अगर कोई पूरी सूरत तिलावत करे मगर आयते सजदा न पढ़े तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

108 सजदे का मस्नून तरीक़ा क्या है ?

109 क्या सजदए तिलावत में येह निय्यत होना ज़रूरी है कि येह सजदा फुलां आयत का है ?

110 क्या सजदए तिलावत में अल्लाहु अक्बर कहते वक़्त कानों को हाथ लगाए जाते हैं ?

111 अगर कोई सजदे वाली तमाम आयात इकठ्ठी पढ़े तो इस की क्या फ़ज़ीलत है ?

112 आयाते सजदा कुरआने पाक के किस पारे व सूरत में हैं और कौन सी हैं तफ़्सील बताइये ?

113 जुमुआ से क्या मुराद है ?

114 जुमुआ का शरई हुक्म क्या है ?
115 अगर कोई जुमुआ न पढ़े तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?
116 अगर कोई जुमुआ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?
117 जुमुआ का आग़ाज़ कब और कहां हुवा ?
118 सब से पहले जुमुआ किस ने पढ़ाया ?
119 क्या सब से पहली नमाज़े जुमुआ मस्जिदे नबवी में अदा की गई थी ?
120 जिस मस्जिद में जुमुआ होता है उसे क्या कहते हैं ?
121 सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहला जुमुआ कब और कहां अदा फ़रमाया ?
122 सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में कुल कितने जुमुआ अदा फ़रमाए ?
123 क्या जुमुआ का ज़िक्र क़ुरआन में भी है ?
124 जो शख़्स रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी शब) मरे उस के मुतअ़ल्लिक़ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क्या इरशाद फ़रमाया है ?
125 क्या जुमुआ के दिन हर दुआ क़बूल होती है ?
126 वोह घड़ी कौन सी है जिस में हर दुआ क़बूल होती है ?
127 उस वक़्त क्या दुआ मांगना चाहियें ?
128 क्या येह बात दुरुस्त है कि जुमुआ के दिन नेकी का सवाब और गुनाह का अ़ज़ाब सत्तर गुना हो जाता है ?
129 जुमुआ के दिन क्या काम करने चाहिये ?
130 जुमुआ के दिन ग़ुस्ल की फ़ज़ीलत बताइये ।
131 क्या जुमुआ के दिन सुन्नत के मुत़ाबिक़ संवर कर नमाज़ के लिये जाने के मुतअ़ल्लिक़ कोई फ़ज़ीलत मरवी है ?
132 हजामत बनवाने और नाख़ुन तरशवाने का काम जुमुआ से पहले करना चाहिये या जुमुआ के बा'द ?
133 जुमुआ के दिन इमामा शरीफ़ बांधने की फ़ज़ीलत बताइये ।

134 जुमुआ के दिन दुरूदे पाक की कसरत के मुतअ़ल्लिक़ कोई रिवायत बयान कीजिये ?

135 क्या जुमुआ के दिन जल्द जामेअ़ मस्जिद जाने की कोई फ़ज़ीलत मरवी है ?

136 अगर कोई जुमुआ के दिन नमाज़े अ़स्र या मग़रिब तक मस्जिद ही में रुका रहे तो उस के लिये किस क़दर अज्रो सवाब है ?

137 जुमुआ के दिन ज़ियारते क़ुबूर का अफ़्ज़ल वक़्त कौन सा है ?

138 अगर किसी के मां बाप दोनों या कोई एक फ़ौत हो चुका हो तो क्या जुमुआ के दिन उन की क़ब्र की ज़ियारत करने के मुतअ़ल्लिक़ कोई रिवायत मरवी है ?

139 जुमुआ के दिन सूरए कह्फ़ की तिलावत की फ़ज़ीलत बताइये ?

140 वोह कौन से पांच काम हैं जो जुमुआ के दिन करने से बन्दा जन्नत का ह़क़दार बन सकता है ?

141 जुमुआ की अदाएगी की शराइत़ बयान कीजिये ।

142 जुमुआ के दिन ख़ुत़्बा हो रहा हो और जो शख़्स बातों में मसरूफ़ हो तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

143 क्या ख़ुत़्बा सुनना वाजिब है ?

144 क्या ख़ुत़्बा सुनने वाला दुरूद शरीफ़ पढ़ सकता है ?

145 ख़ुत़्बे के 7 मदनी फूल बयान कीजिये ?

146 जुमुआ के ख़ुत़्बात सुनाइये ?

147 साल में कितनी ईदें हैं ?

148 येह दोनों ईदें कब और किन महीनों में मनाई जाती हैं ?

149 इन दोनों ईदों पर मुसलमान क्या करते हैं ?

150 क्या इन दोनों ईदों के इलावा भी किसी दिन को ईद कहा गया है ?

151 क्या इन ईदों के इलावा भी कोई दिन ऐसा है जिस में मुसलमान ख़ुशियां मनाते हैं ?

152 ईदे मीलाद के मौक़अ़ पर मुसलमान क्या करते हैं ?

153 क्या ईदैन की नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है ?

154 क्या ईदैन की नमाज़ पढ़ना तमाम मुसलमानों पर वाजिब है ?

155 क्या नमाज़े जुमुआ की अदाएगी की त़रह़ नमाज़े ईदैन की अदाएगी की भी कुछ शराइत़ हैं ?

156 क्या नमाज़े जुमुआ और नमाज़े ईदैन की अदाएगी में कोई फ़र्क़ है ?

157 क्या ईदैन की नमाज़ों और आ़म नमाज़ों की अदाएगी में भी कोई फ़र्क़ है ?

158 नमाज़े ईद का त़रीक़ा क्या है ?

159 नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल क्या मय्यित के लिये कोई ख़ास एहतिमाम किया जाता है ?

160 तजहीज़ व तक्फ़ीन से क्या मुराद है ?

161 ग़ुस्ले मय्यित के फ़राइज़ बताएं ?

162 ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा बताएं ?

163 मर्द व औ़रत का मस्नून कफ़न क्या है ?

164 मुख़न्नस (हीजड़े) को मर्दों वाला मस्नून कफ़न दिया जाएगा या औ़रतों वाला ?

165 मर्दों और औ़रतों को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा बताइये ?

166 क्या तजहीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की फ़ज़ीलत भी मरवी है ?

167 नमाज़े जनाज़ा की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

168 क्या नमाज़े जनाज़ा के लिये जमाअ़त शर्त़ है ?

169 अगर कोई नमाज़े जनाज़ा का फ़र्ज़ होना न माने तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

170 नमाज़े जनाज़ा के सह़ीह़ होने की शराइत़ बताइये ?

171 नमाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ क्या शराइत़ हैं ?

172 मय्यित से मुतअ़ल्लिक़ शराइत़ क्या हैं ?

173 नमाज़े जनाज़ा के फ़राइज़ और सुन्नतें बताइये ?

174 नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा बताइये ?

175 बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़ क्या है ?

176 ना बालिग़ लड़के की जनाज़े की दुआ़ सुनाइये ?

177 ना बालिग़ लड़की की जनाज़े की दुआ़ सुनाइये ?

178 क्या जनाज़े को कन्धा देना सवाब का काम है ?

179 क्या सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी जनाज़े को कन्धा देना साबित है ?

180 जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा क्या है ?

181 क्या जूता पहन कर जनाज़ा पढ़ सकते हैं ?

182 नमाज़े जनाज़ा में कितनी सफ़ें होनी चाहियें ?

183 नमाज़े जनाज़ा में सब से अफ़्ज़ल सफ़ कौन सी है ?

184 बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से पहले क्या ए'लान करना चाहिये ?

185 मय्यित को क़ब्र में उतारने के लिये क़ब्र के पास किस त़रफ़ रखना चाहिये ?

186 मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त कितने आदमी होने चाहिये ?

187 औ़रत की मय्यित क़ब्र में उतारते हुवे किन बातों को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

188 मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त क्या दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

189 मय्यित को क़ब्र में लिटाते वक़्त क्या करना चाहिये ?

190 क़ब्र पर मिट्टी डालने का त़रीक़ा बताइये ?

191 क़ब्र पर किस क़दर मिट्टी डालनी चाहिये ?

192 क़ब्र कैसी बनानी चाहिये ?

193 क़ब्र ज़मीन से किस क़दर ऊंची होनी चाहिये ?

194 तदफ़ीन के बा'द क्या करना चाहिये ?

195 तल्क़ीन की शरई हैसिय्यत क्या है ?

196 क्या तल्क़ीन ह़दीस से साबित है ?

197 तल्क़ीन का त़रीक़ा क्या है ?

198 तल्क़ीन का क्या फ़ाएदा है ?

199 अगर किसी को मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो तल्क़ीन के वक़्त क्या कहे ?

200 ईसाले सवाब से क्या मुराद है ?

201 क्या ईसाले सवाब का ज़िक्र किसी ह़दीसे पाक में भी मरवी है ?

202 क्या ईसाले सवाब के लिये दिन वग़ैरा मुक़र्रर करना जाइज़ है ? मसलन तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी (या'नी सालाना ख़त्म) वग़ैरा ?

203 क्या ईसाले सवाब सिर्फ़ मुर्दों को ही किया जा सकता है ?

204 बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن की नियाज़ और लंगर वग़ैरा खाना कैसा है ?

205 बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن की नियाज़ क्या मालदार भी खा सकते हैं ?

206 ईसाले सवाब का त़रीक़ा क्या है ?

207 फ़ातिह़ा का त़रीक़ा क्या है ?

208 ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का त़रीक़ा बताइये ?

209 रोज़े से क्या मुराद है ?

210 क्या रोज़ा रखना फ़र्ज़ है ?

211 फ़र्ज़ रोज़े से क्या मुराद है ?

212 वाजिब रोज़े से क्या मुराद है ?

213 नफ़्ली रोज़े से क्या मुराद है ?

214 क्या किसी दिन रोज़ा रखना मन्अ़ भी है ?

215 रमज़ान के रोज़े कब और किस पर फ़र्ज़ हुवे ?

216 कुरआने मजीद में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का हुक्म किस आयते मुबारका में है ?

217 क्या रोज़ा पहले की उम्मतों पर भी फ़र्ज़ था ?

218 क्या रोज़ा तक़्वा व परहेज़गारी की अ़लामत है ?

219 किस उ़म्र में रोज़ा रखना शुरूअ़ कर देना चाहिये ?

220 क्या कभी किसी ने दूध पीने की उ़म्र में रोज़ा रखा है ?

221 क्या रोज़ा रखने से इन्सान बीमार हो जाता है ?

222 रोज़ा रखने व खोलने की दुआ़एं सुनाइये ?

223 रोज़ादारों के ए'तिबार से रोज़े की कितनी क़िस्में हैं ?

224 रोज़े की ह़क़ीक़त क्या है ?

225 ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के फ़रमान से क्या बात मा'लूम होती है ?

226 आंख के रोज़े से क्या मुराद है ?

227 कान के रोज़े से क्या मुराद है ?

228 ज़बान के रोज़े से क्या मुराद है ?

229 हाथ के रोज़े से क्या मुराद है ?

230 पाउं के रोज़े से क्या मुराद है ?

231 रोज़े के चार हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा रखने के फ़ज़ाइल पर मब्नी चार रिवायात बयान कीजिये ?

232 रोज़ा न रखने की दो वईदें बयान कीजिये ।

233 सहरी से क्या मुराद है ?

234 सहरी कब तक कर सकते हैं ?

235 सहरी में ताख़ीर से मुराद कौन सा वक़्त है ?

236 रात का छटा हिस्सा कैसे मा'लूम हो सकता है ?

237 जो लोग सुब्हे सादिक़ के बा'द फ़ज्र की अज़ानें हो रही हों और खाते पीते रहें उन के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

238 ज़कात से क्या मुराद है ?

239 हाशिमी से क्या मुराद है ?

240 ज़कात किस पर फ़र्ज़ है ?

241 निसाब का मालिक होने से क्या मुराद है ?

242 ह़ाजते अस्लिय्या से क्या मुराद है ?

243 ज़कात के फ़र्ज़ होने के लिये साल गुज़रने में क़मरी (या'नी चांद के) महीनों का ए'तिबार होगा या शम्सी महीनों का ?

244 कितनी ज़कात देना फ़र्ज़ है ?

245 ज़कात कब फ़र्ज़ हुई ?

246 क्या ज़कात की फ़र्ज़िय्यत कुरआन व सुन्नत से साबित है ?

247 अगर कोई ज़कात को फ़र्ज़ न माने तो उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

248 क्या ज़कात देने से माल में कमी हो जाती है ?

249 कुरआन व सुन्नत से ज़कात देने के फ़वाइद और न देने के नुक़्सानात बयान कीजिये ।

250 सदक़ए फ़ित्र से क्या मुराद है ?

251 सदक़ए फ़ित्र की शरई हैसिय्यत क्या है ?

252 सदक़ए फ़ित्र किस पर वाजिब है ?

253 सदक़ए फ़ित्र कब वाजिब होता है ?

254 सदक़ए फ़ित्र कब वाजिब हुवा ?

255 क्या सदक़ए फ़ित्र का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी है ?

256 सदक़ए फ़ित्र क्यूं दिया जाता है ?

257 क्या सदक़ए फ़ित्र के लिये रमज़ान के रोज़े रखना शर्त़ है ?

258 ह़ज किसे कहते हैं ?

259 ह़ज की शरई हैसिय्यत क्या है ?

260 क्या ह़ज करना हर एक पर फ़र्ज़ है ?

261 अगर कोई शख़्स साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो क्या उस पर हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ होगा ?

262 जो शख़्स इस्तित़ाअ़त रखते हुवे ह़ज न करे उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

263 ह़ज किस साल फ़र्ज़ हुवा ?

264 ह़ज के फ़ज़ाइल पर मब्नी कोई सी तीन अह़ादीसे मुबारका बयान कीजिये ।

265 ह़ज की कितनी क़िस्में हैं ?

266 ह़ज्जे क़िरान से क्या मुराद है ?

267 ह़ज्जे तमत्तोअ़ से क्या मुराद है ?

268 ह़ज्जे इफ़राद से क्या मुराद है ?

269 सब से अफ़्ज़ल ह़ज कौन सा है ?

270 ह़ज के अय्याम कौन से हैं ?

271 ह़ज के दौरान ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 8 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं ?

272 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की 9 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं ?

273 मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ में मग़रिब और इशा दोनों नमाज़ें एक साथ कैसे पढ़ी जाती हैं ?

274 ज़ुल ह़ज्जतिल ह़राम की 10 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं ?

275 त़वाफ़ुज़्ज़ियारत से क्या मुराद है ?

276 ज़ुल ह़ज्जतिल ह़राम की 11 और 12 तारीख़ को क्या काम किये जाते हैं ?

277 तीनों शैत़ानों को कंकरियां मारने की तरतीब क्या है ?

278 कुरबानी से क्या मुराद है ?

279 कुरबानी की शरई हैसिय्यत क्या है ?

280 कुरबानी के जानवर की उ़म्र कितनी होनी चाहिये ?

281 कुरबानी का जानवर कैसा होना चाहिये ?

282 जानवर ज़ब्ह़ करने का त़रीक़ा क्या है ?

283 कुरबानी का जानवर ज़ब्ह़ करने से पहले कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है ?

284 क्या ज़ब्ह़ के बा'द भी कोई दुआ़ पढ़ी जाती है ?

285 क्या कुरबानी का जानवर अपने हाथ से ज़ब्ह़ करना चाहिये ?

286 गाए, भेंस और ऊंट में कितनी कुरबानियां हो सकती हैं ?

287 जिस पर कुरबानी वाजिब हो वोह अगर कुरबानी के बजाए इतनी रक़म सदक़ा कर दे तो क्या उस के लिये ऐसा करना जाइज़ है ?

288 कुरबानी के वक़्त तमाशा देखना कैसा है ?

289 कुरबानी के वक़्त अदाए सुन्नत के इलावा और क्या क्या निय्यतें की जा सकती हैं ?

290 ज़ब्ह़ के वक़्त जानवर पर रह़्म खाना कैसा है ?

291 नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत ए'लाने नबुव्वत से पहले ज़ाहिर हो उस को क्या कहते हैं ?

292 नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत ए'लाने नबुव्वत के बा'द ज़ाहिर हो उस को क्या कहते हैं ?

293 वली से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को क्या कहते हैं ?

294 आ़म मोअमिनीन से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को क्या कहते हैं ?
295 बेबाक फुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो बात उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो उस को क्या कहते हैं ?
296 बेबाक फुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो बात उन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो उस को क्या कहते हैं ?
297 बिदअ़त से क्या मुराद है ?
298 बिदअ़ते सय्यिआ, मकरूहा और बिदअ़ते ह़राम से क्या मुराद है ?
299 बिदअ़ते मुस्तह़ब्बा, मुबाह़ और बिदअ़ते वाजिब से क्या मुराद है ?
300 तक़्लीद किसे कहते है ?
301 तक़्लीद की मुख़्तलिफ़ सूरतें बयान कीजिये ?
302 किसी शै के फ़र्ज़ होने से क्या मुराद है ?
303 फ़र्ज़े किफ़ाया से क्या मुराद है ?
304 वाजिब किसे कहते हैं ?
305 सुन्नते मुअक्कदा से क्या मुराद है ?
306 सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा से क्या मुराद है ?
307 मुस्तह़ब की ता'रीफ़ बयान कीजिये ।
308 मुबाह़ किसे कहते हैं ?
309 ह़रामे क़त़ई से क्या मुराद है ?
310 मकरूहे तह़रीमी क्या होता है ?
311 मकरूहे तन्ज़ीही किसे कहते हैं ?
312 इसाअत से क्या मुराद है ?
313 ख़िलाफ़े औला किसे कहते हैं ?

बाब : 5

सुन्नतें और आदाब

इस बाब में आप पढ़ेंगे

इल्मे दीन सीखने सिखाने के फ़ज़ाइल, कुरआने मजीद की तिलावत करने व सीखने के फ़ज़ाइल, मुख़्तलिफ़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निय्यतों का बयान मसलन खाना खाने, पानी व चाय पीने, ख़ुश्बू लगाने की निय्यतों के इलावा मुख़्तलिफ़ कामों की सुन्नतें और आदाब

इल्मे दीन

इल्म एक ऐसी नायाब दौलत है जो रूपे पैसे से ह़ासिल नहीं हो सकती बल्कि येह तो मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक ख़ास करम है वोह जिसे चाहे इस दौलत से नवाज़ दे।

इल्मे दीन ह़ासिल करने के बेशुमार फ़ज़ाइल व बरकात कुरआनो ह़दीस में जा बजा वारिद हुवे हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ (پ ١١، التوبة: ١٢٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्यूं न हुवा कि उन के हर गुरौह में से एक जमाअ़त निकले कि दीन की समझ ह़ासिल करें।

"इल्म नायाब दौलत है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इल्म के मुतअ़ल्लिक़ 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

प्यारे मदनी मुन्नो! इल्मे दीन सीखने वाले सआ़दत मन्दों के क्या कहने! इन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लुत़्फ़ो करम की बारिश रह़मत बन कर छमा छम बरसती है। इस बात का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल रिवायात को पढ़ कर ब ख़ूबी लगाया जा सकता है।

﴿1﴾.....जो शख़्स हुसूले इल्म के लिये किसी रास्ते पर चले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है।(1)

(1) ......مسلم، كتاب الذكر والدعاء، باب فضل الاجتماع ......الخ، ص ١٤٤٧، حديث: ٣٨-(٢٦٩٩)

﴾2﴿..... जो शख़्स त़लबे इ़ल्म के लिये घर से निकला तो जब तक वापस न हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में है ।(1)

﴾3﴿..... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अ़त़ा फ़रमा देता है ।(2)

﴾4﴿..... एक घड़ी रात में पढ़ना, पढ़ाना सारी रात इ़बादत करने से अफ़्ज़ल है ।(3)

﴾5﴿..... मोमिन कभी ख़ैर (या'नी इ़ल्म) से सैर नहीं होता इसे सुनता या'नी ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि जन्नत में पहुंच जाता है ।(4)

﴾6﴿..... इ़ल्म को ख़ूब फैलाओ और लोगों में बैठो ताकि इ़ल्म न जानने वाले इ़ल्म ह़ासिल करें क्यूंकि जब तक इ़ल्म को राज़ नहीं बनाया जाएगा इ़ल्म नहीं उठेगा ।(5)

﴾7﴿..... जो इ़ल्म त़लब करे फिर इसे ह़ासिल करने में कामयाब हो जाए तो उस के लिये दो गुना अज्र है । अगर ह़ासिल न कर सके तो एक अज्र है ।(6)

﴾8﴿..... जिसे मौत इस ह़ाल में आए कि वोह इस्लाम ज़िन्दा करने के लिये इ़ल्म सीख रहा हो तो जन्नत में उस के और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दरमियान एक दरजे का फ़र्क़ होगा ।(7)

﴾9﴿..... क्या तुम जानते हो बड़ा सख़ी कौन है ? अ़र्ज़ की गई : اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं । फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बड़ा जवाद है, फिर अवलादे आदम में मैं बड़ा सख़ी हूं और मेरे बा'द वोह शख़्स बड़ा सख़ी है जो इ़ल्म सीखे और फिर इसे फैलाए वोह क़ियामत के दिन एक जमाअ़त हो कर आएगा ।(8)

---

(1) ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ۴/۲۹۴، حدیث:۲۶۵۶

(2) المرجع السابق، باب اذا اراد اللہ......الخ، حدیث: ۲۶۵۴

(3) دارمی، باب مذاکرۃ العلم، ۱/۱۵۷، حدیث: ۶۱۴

(4) ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/۳۱۴، حدیث: ۲۶۹۵

(5) بخاری، کتاب العلم، باب کیف یقبض العلم، ۱/۵۴

(6) دارمی، باب فی فضل العلم والعالم، ۱/۱۰۸، حدیث:۳۳۵

(7) دارمی، باب فی فضل العلم والعالم، ۱/۱۱۲، حدیث:۳۵۴

(8) شعب الایمان للبیہقی، الثامن عشر من شعب الایمان، باب فی نشر العلم، ۲/۲۸۱، حدیث:۱۷۶۷

《10》.....مَنۡ طَلَبَ الۡعِلۡمَ تَكَفَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِرِزۡقِهٖ जो शख़्स इल्म की तलब में रहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के रिज़्क़ का ज़ामिन है ।(1)

《11》.....थोड़ा सा इल्म कसीर इबादत से अच्छा है ।(2)

《12》.....तालिबे इल्म को इस हाल में मौत आई कि वोह तलबे इल्म में मसरूफ़ था तो वोह शहीद है ।(3)

《13》.....अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि कोई मुसलमान शख़्स इल्म हासिल करे फिर अपने मुसलमान भाई को भी सिखाए ।(4)

《14》.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सहाबी से महूवे गुफ़्त्गू थे कि वह्य नाज़िल हुई : इस सहाबी की ज़िन्दगी की एक साअ़त (या'नी घन्टा भर) बाक़ी रह गई है । वोह वक़्ते अ़स्र था। रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह बात उस सहाबी को बताई तो उन्हों ने मुज़्तरिब हो कर इल्तिजा की : ''या रसूलल्लाह'' صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये सब से बेहतर हो ।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''इल्म सीखने में मश्ग़ूल हो जाओ ।'' चुनान्चे, वोह सहाबी इल्म सीखने में मश्ग़ूल हो गए और मग़रिब से पहले ही उन का इन्तिक़ाल हो गया । रावी फ़रमाते हैं कि अगर इल्म से बेहतर कोई शै होती तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी का हुक्म इरशाद फ़रमाते ।(5)
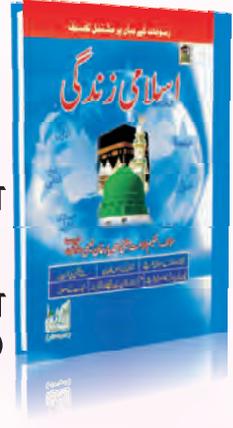
अस्हाबे सुफ़्फ़ा

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الۡمُبِيۡن इल्मे दीन हासिल करने का बहुत शौक़ रखते

---

(1)......تاریخ بغداد، ۳/۳۹۷، حدیث:۱۵۳۵

(2)......الترغیب والترهیب، کتاب العلم، باب الترغیب فی العلم...الخ، ۱/۵۰، حدیث:۵

(3)......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، ص ۲۴، حدیث:۱۹۴

(4)......ابن ماجه، کتاب السنة، باب ثواب معلم الناس الخیر، ۱/۱۵۸، حدیث:۲۴۳

(5)......تفسیر کبیر، پ ۱، البقرة، تحت الآیة:۳۰، ۱/۴۱۰

थे, इस बात का अन्दाज़ा हम यूं लगा सकते हैं कि सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का मा'मूल था कि ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी करने के साथ साथ दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में हाज़िर हो कर इल्मे दीन भी हासिल किया करते थे मगर मुख़्तलिफ़ अलाक़ों से तअल्लुक़ रखने वाले 60 से 70 सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ऐसे थे जो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर पड़े रहते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत में रह कर इल्मे दीन सीखने के साथ साथ राहे ख़ुदा में सफ़र कर के काफ़िरों को दा'वते इस्लाम पेश करते और आम मुसलमानों को शरई अहकामात सिखाया करते। इन की रिहाइश मस्जिदे नबवी से मुत्तसिल एक चबूतरे में थी जिस पर छत डाल दी गई थी, अरबी ज़बान में चूंकि चबूतरे को सुफ़्फ़ा कहते हैं, लिहाज़ा इन पाकीज़ा हस्तियों को अस्हाबे सुफ़्फ़ा कहा जाता। सब से ज़ियादा अहादीस रिवायत करने वाले सहाबी हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه भी इन्ही ख़ुश नसीबों में शामिल थे।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अस्हाबे सुफ़्फ़ा عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के बा'द भी कसीर मुसलमान इन पाकीज़ा हस्तियों के नक़्शे क़दम पर चलते रहे और अपने अलाक़े और घर वग़ैरा को छोड़ कर किसी मद्रसे या जामिआ में जम्अ हो कर बाक़ाइदा इल्मे दीन सीखते सिखाते रहे और नेकी की दा'वत आम करते रहे।

प्यारे मदनी मुन्नो ! दुन्यावी तरक़्क़ी के साथ साथ जब रोज़ बरोज़ नित नई ईजादात होने लगीं तो अकसर लोग इल्मे दीन के हुसूल को छोड़ कर दुन्यावी उलूम व फुनून सीखने समझने और इस के ज़रीए अपनी ज़िन्दगी ऐशो आराम के साथ गुज़ारने की जुस्तजू में लग गए। येही वजह है कि इस पुर फ़ितन दौर में आज का मुसलमान इल्मे दीन के हुसूल के जज़्बे से नावाक़िफ़ और कोसों दूर नज़र आता है। अगर कुछ लोग ख़ुश क़िस्मती से राहे इल्म के मुसाफ़िर बन जाते हैं तो नफ़्सो शैतान इन्हें अपने घेरे में ले लेते हैं क्यूंकि जिस तरह हर क़ीमती शै चोरों के लिये कशिश रखती है इसी तरह हर उस शै पर शैतान की ख़ुसूसी तवज्जोह होती है जो उख़रवी लिहाज़ से क़ीमती हो। येही वजह है कि राहे इल्म पर चलने वाले मुसलमान नफ़्सो शैतान की निगाहों का मर्कज़ बन जाते हैं।

राहे इल्म के मुसाफ़िर या'नी त़ालिबे इल्म शैत़ान पर किस क़दर भारी हैं इस का अन्दाज़ा इन रिवायात से लगाया जा सकता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़बज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! एक आ़लिम, शैत़ान पर एक हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा भारी है।[1] और ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उस आ़लिम से बढ़ कर शैत़ान की कमर तोड़ कर रख देने वाली कोई शै नहीं जो अपने क़बीले में ज़ाहिर हो।''[2]

प्यारे मदनी मुन्नो ! शैत़ान हर सम्त से त़ालिबे इल्म पर मुसलसल ह़म्ला आवर होता रहता है और इसे उख़्रवी सआ़दत से मह़रूम करवा देने को अपनी कामयाबी तसव्वुर करता है। इस सिलसिले में शैत़ान की सब से पहली कोशिश येह होती है कि कोई इस राहे अ़ज़ीम का मुसाफ़िर न बन पाए और अगर कोई बनने में कामयाब हो भी जाए तो येह उस त़ालिबे इल्म को निय्यत की ख़राबी, मायूसी, ख़ुद पसन्दी, तकब्बुर, सुस्ती और लालच जैसी हलाकतों में मुब्तला कर के उसे इल्मे दीन के समरात से मह़रूम करवाने की भर पूर कोशिश करता है, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ान के मक्रो फ़रेब से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और अपने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के नक़्शे क़दम पर चल कर इल्मे दीन ह़ासिल करने और इसे दूसरों तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तिलावते क़ुरआने मजीद

क़ुरआने मजीद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का प्यारा कलाम है। इस की तिलावत करना बहुत बड़ा सवाब है। चुनान्चे, मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों पर अ़ज़ाब करने का इरादा फ़रमाता है लेकिन जब बच्चों को क़ुरआने पाक पढ़ते सुनता है तो अ़ज़ाब रोक लेता है।[3]

---

[1] ...... کنزالعمال، کتاب العلم، الجزء العاشر، ۵/۷۶، حدیث: ۲۸۹۰۴

[2] ...... کنزالعمال، کتاب العلم، الجزء العاشر، ۵/۶۴، حدیث: ۲۸۷۵۱

[3] ...... دارمی، کتاب فضائل القراٰن، باب فی تعاھد القراٰن، ۲/۵۳۰، حدیث: ۳۳۴۵

हो करम अल्लाह ! हाफ़िज़ मदनी मुन्नों के तुफ़ैल
जगमगाते गुम्बदे ख़ज़रा की किरनों के तुफ़ैल

प्यारे मदनी मुन्नो ! आप सब बहुत ख़ुश नसीब हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पाक कलाम कुरआने मजीद की ता'लीम हासिल कर रहे हैं जब कि बहुत सारे बच्चे ऐसे भी हैं जो गली कूचों में आवारा घूमते हैं और कुरआने पाक की ता'लीम से महरूम हैं, ऐसे बच्चों को फ़िल्मी गाने तो याद होते हैं, इंगलिश नज़्में भी अज़बर होती हैं मगर अफ़्सोस ! कुरआने पाक की कोई सूरत याद नहीं होती । दुआ कीजिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी कुरआने मजीद के नूर से मुनव्वर फ़रमाए । आमीन

शैतान के वार

बसा अवक़ात शैतान मदनी मुन्नों को कुरआने पाक की ता'लीम से रोकने के लिये खेल कूद में लगा देता है, आप इस की बातों में न आइये । याद रखिये ! हम दुन्या में खेल तमाशों के लिये नहीं आए, लिहाज़ा खेल कूद में वक़्त बरबाद करने के बजाए भर पूर तवज्जोह के साथ कुरआने पाक की ता'लीम हासिल कीजिये ।

इसी तरह शैतान मदनी मुन्नों का दिल कुरआने पाक की ता'लीम से उचाट करने के लिये दिल में यूं वस्वसे डालता है कि येह क्या है कि तुम सारा दिन "ا، ب، ت" पढ़ते रहते हो ? जब कभी आप को ऐसे वस्वसे आएं तो इन वस्वसों को फ़ौरन झटक दीजिये क्यूंकि शैतान यूं हमें नेकियों से रोकना चाहता है । हदीसे पाक में हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किताबुल्लाह का एक हर्फ़ पढ़ा उस के लिये इस के इवज़ एक नेकी है और एक नेकी का सवाब दस गुना होता है । मैं नहीं कहता कि "الٓمّٓ" एक हर्फ़ है बल्कि "الف" एक हर्फ़, "لام" एक हर्फ़ और "ميم" एक हर्फ़ है ।"(1)

रोशन क़िन्दीलें

कुरआने पाक को जितनी बार भी पढ़ा जाए सवाब ही सवाब है, लिहाज़ा

(1) ......ترمذی، کتاب فضائل القران، باب ماجاء فی من قرا حرفا...الخ، ۴/۴۱۷، حدیث: ۲۹۱۹

मद्रसे में पढ़ने के इलावा घर में भी सबक़ याद करने और तिलावते कुरआन का एहतिमाम फ़रमाना चाहिये कि इस में हमारे लिये रह़मत ही रह़मत है। चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक रात सूरए बक़रह की तिलावत फ़रमा रहे थे कि यकायक क़रीब ही बन्धा हुवा आप का घोड़ा बिदकने या'नी उछलने कूदने लगा। आप ख़ामोश हुवे तो घोड़ा भी ठहर गया, आप ने फिर पढ़ना शुरूअ़ किया तो घोड़ा भी दोबारा उछलने कूदने लगा, आप फिर ख़ामोश हो गए, इस त़रह़ जब आप पढ़ने लगते तो घोड़े की उछल कूद देख कर फिर ख़ामोश हो जाते क्यूंकि आप के साहिबज़ादे ह़ज़रते यह़्या घोड़े के क़रीब ही सो रहे थे, इस लिये आप को अन्देशा हुवा कि कहीं घोड़ा बच्चे को तक्लीफ़ न पहुंचाए। चुनान्चे, जब आप ने सिह़्न में आ कर आस्मान की त़रफ़ देखा तो क्या देखते हैं कि बादल की त़रह़ कोई चीज़ है जिस में बहुत सी क़िन्दीलें (चराग़) रोशन हैं। आप ने सुब्ह़ को बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर येह वाक़िआ़ बयान किया तो रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह फ़िरिश्तों की मुक़द्दस जमाअ़त थी जो तेरी क़िराअत की वजह से आस्मान से तेरे मकान की त़रफ़ उतर पड़ी थी अगर तू सुब्ह़ तक तिलावत करता रहता तो येह फ़िरिश्ते ज़मीन से इस क़दर क़रीब हो जाते कि तमाम इन्सानों को इन का दीदार हो जाता।(1)

बुज़ुर्गाने दीन और तिलावते कुरआन

प्यारे मदनी मुन्नो! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن तिलावते कुरआने पाक में बहुत दिलचस्पी रखते थे बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن रोज़ाना चार, बा'ज़ दो और बा'ज़ एक कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते। इसी त़रह़ बा'ज़ ह़ज़रात दो दिन में एक कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते, बा'ज़ तीन दिन में, बा'ज़ पांच दिन में और बा'ज़ सात दिन में। और सात दिन में कुरआने पाक ख़त्म करना अकसर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मा'मूल था, लिहाज़ा आप भी जितना मुमकिन हो तिलावते कुरआने पाक को अपना मा'मूल बना लीजिये। नीज़ अपने सबक़ की तकरार भी करते रहिये मगर एक बात ज़ेहन नशीन रखिये कि जल्दी पढ़ने की कोशिश में ग़लत़ नहीं पढ़ना चाहिये कि सवाब सह़ीह़ पढ़ने में है न कि मह़्ज़ जल्दी पढ़ने में।

---

(1) مشکاۃ المصابیح، کتاب فضائل القراٰن، ۱/۳۹۸، حدیث:۲۱۱۶ ملخصًا

वालिदैन की ख़ुश बख़्ती

प्यारे मदनी मुन्नो ! जिस त़रह़ आप ख़ुश नसीब हैं कि क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं इसी त़रह़ आप के वालिदैन भी बड़े ख़ुश क़िस्मत हैं क्यूंकि वोह आप को दीनी ता'लीम के ज़ेवर से आरास्ता कर रहे हैं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन के लिये आप एक अ़ज़ीम सवाबे जारिया का सबब होंगे। चुनान्चे,

क़ब्र से अ़ज़ाब उठ गया

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने एक क़ब्र के क़रीब से गुज़रते हुवे देखा कि उस मय्यित पर अ़ज़ाब हो रहा है। फिर जब आप عَلَيْهِ السَّلَام का वापसी पर वहां से गुज़र हुवा तो मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि उस क़ब्र में नूर ही नूर है और वहां रह़मते इलाही की बारिश हो रही है। आप عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ह़ैरान हुवे और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की, कि मुझे इस का भेद बताया जाए। चुनान्चे, इरशाद हुवा : ऐ रूह़ल्लाह ! येह सख़्त गुनाहगार और बदकार था इस वजह से अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार था। इस के इन्तिक़ाल के बा'द इस के यहां लड़का पैदा हुवा और आज उस को मक्तब में भेजा गया, उस्ताज़ ने उस को बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ाई तो मुझे ह़या आई कि मैं ज़मीन के अन्दर उस शख़्स को अ़ज़ाब दूं जिस का बच्चा ज़मीन के ऊपर मेरा नाम ले रहा है।[1]

प्यारे मदनी मुन्नो ! देखा आप ने जिस शख़्स के बच्चे ने सिर्फ़ बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और इस की बरकत से उस की बख़्शिश हो गई तो जिन ख़ुश नसीब वालिदैन के बच्चों ने पूरे कलामुल्लाह की ता'लीम ह़ासिल की और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल किया तो उन की शान किस क़दर बुलन्द होगी ! ऐसे ख़ुश नसीब वालिदैन को यक़ीनन कल बरोज़े क़ियामत ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस की चमक सूरज से भी ज़ियादा होगी। चुनान्चे,

बरोज़े क़ियामत ह़ाफ़िज़ के वालिदैन को ताज पहनाया जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे नामदार,

1 ...... تفسیر کبیر، الباب الحادی العشر، النکت المستخرجة من البسملة، ۱/۱۵۵

मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने कुरआन पढ़ा और जो कुछ इस में है उस पर अ़मल किया, उस के वालिदैन को क़ियामत के दिन ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस की रोशनी उस सूरज से अच्छी होगी जो दुन्या में तुम्हारे घरों के अन्दर चमकता है तो ख़ुद इस अ़मल करने वाले के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या गुमान है ।[1]

नेक अवलाद सदक़ए जारिया है

वालिदैन को चाहिये कि अपने बच्चों को कुरआने पाक की ता'लीम से आरास्ता व पैरास्ता फ़रमाएं, इस में उन का अपना फ़ाएदा है कि नेक अवलाद वालिदैन के लिये सवाबे जारिया होती है । उ़मूमन देखा गया है कि जो बच्चे दीनी ता'लीम ह़ासिल करते हैं वोह वालिदैन का बहुत अदब करते हैं येह मुआ़मला तो वालिदैन की ह़यात में है उन की वफ़ात के बा'द भी येही बच्चे काम आते हैं कि जब तक वोह तिलावते कुरआने करीम करते रहेंगे और नेक आ'माल करते रहेंगे उन के वालिदैन को अज्रो सवाब मिलता रहेगा । इस को इस मिसाल से समझिये कि अगर किसी शख़्स के दो बच्चे हों एक बच्चे को उस ने फ़क़त़ दुन्यवी ता'लीम दिला कर डॉक्टर की डिग्री दिलाई, दूसरे को पहले ह़ाफ़िज़े कुरआन बनाया, फिर दूसरी ता'लीम दिलाई । वालिदैन के इन्तिक़ाल के बा'द ईसाले सवाब के लिह़ाज़ से कौन मां बाप के लिये फ़ाएदा मन्द होगा ? क्या डॉक्टर की डिग्री मुफ़ीद होगी या ह़िफ़्ज़े कुरआने करीम ? अ़क़्ल मन्द के लिये इशारा काफ़ी है ।

प्यारे मदनी मुन्नो ! ऐ काश ! आप कुरआने करीम की ता'लीम की अहम्मिय्यत को समझें और कुरआनो सुन्नत की ता'लीम को ख़ूब दिलजमई के साथ सीखें । ऐ काश ! ऐसा मदनी माह़ोल बन जाए कि हर बच्चे के लिये ता'लीमे कुरआन लाज़िमी हो जाए और हर मां बाप अपने हर बच्चे को कुरआनो सुन्नत की ता'लीम के ज़ेवर से आरास्ता करे ।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

---

[1] ......ابوداود، كتاب الوتر، باب في ثواب قراءة القرآن، ٢/١٠٠، حديث:١٤٥٣

अच्छी अच्छी निय्यतें

नेक आ'माल के क़बूल होने के लिये हमें अपनी निय्यतों में इख़्लास पैदा करना होगा। आइये जानते हैं कि निय्यत किसे कहते हैं? और अच्छी अच्छी निय्यतों के ज़रीए हम किस क़दर सवाबे आख़िरत का ज़ख़ीरा इकट्ठा कर सकते हैं।

निय्यत किसे कहते हैं?

निय्यत लुग़वी तौर पर दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं और शरअ़न इबादत के इरादे को निय्यत कहा जाता है।(1)

जितनी निय्यतें उतना सवाब

एक अ़मल में जितनी निय्यतें होंगी उतनी नेकियों का सवाब मिलेगा, मसलन किसी मोह़ताज रिश्तेदार की मदद करने में अगर निय्यत फ़क़त़ सदक़े की होगी तो एक निय्यत का सवाब मिलेगा और अगर सिलए रेह़्मी (या'नी ख़ानदान वालों से नेकी का बरताव करने) की निय्यत भी करेंगे तो दो गुना सवाब पाएंगे।(2) इसी त़रह़ मस्जिद में नमाज़ के लिये जाना भी एक अ़मल है इस में बहुत सी निय्यतें की जा सकती हैं, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या जिल्द 5 सफ़ह़ा 673 में इस के लिये चालीस निय्यतें बयान की हैं, आप मज़ीद फ़रमाते हैं : बेशक जो इल्मे निय्यत जानता है एक एक फ़े'ल को अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है।(3) बल्कि मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यतें करने से सवाब मिलेगा मसलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए सुन्नत, ता'ज़ीमे मस्जिद, फ़रह़ते दिमाग़ और अपने इस्लामी भाइयों से नापसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब होगा।(4)

हर काम से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये

प्यारे मदनी मुन्नो! बिला शुबा अच्छी निय्यत करना एक ऐसा अ़मल है जो

---

[1]...... ماخوذ از نزهة القاری شرح صحیح البخاری، باب بدء الوحی، ۱/۲۲۴

[2]...... اشعة اللمعات، ۱/۳۶

[3]......फ़तावा रज़विय्या, 5/673

[4]...... اشعة اللمعات، ۱/۳۷ملخصًا

मेह़नत के ए'तिबार से बेह़द हल्का लेकिन अज्रो सवाब के लिह़ाज़ से बहुत अ़ज़ीम है। इस लिये हमें चाहिये कि हर नेक अ़मल शुरूअ़ करने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लें ह़त्ता कि खाने, पीने, लिबास पहनने और सोने वग़ैरा में भी अच्छी निय्यत शामिले ह़ाल हो। मसलन खाने पीने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत हो। लिबास पहनते वक़्त येह निय्यत हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी पोशीदा चीज़ें छुपाने का हुक्म दिया है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत के इज़्हार की निय्यत हो। सोने से येह मक़्सूद हो कि जो इबादात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ की हैं उन को अदा करने में मदद ह़ासिल हो।[1]

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से अच्छी निय्यत के 5 फ़ज़ाइल

﴾1﴿......मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

﴾2﴿......सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।[3]

﴾3﴿......अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।[4]

﴾4﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की निय्यत पर दुन्या अ़त़ा फ़रमा देता है मगर दुन्या की निय्यत पर आख़िरत नहीं अ़त़ा फ़रमाता है।[5]

﴾5﴿......अच्छी निय्यत अ़र्श से चिमट जाती है पस जब कोई बन्दा अपनी निय्यत को सच्चा कर देता है तो अ़र्श हिलने लग जाता है, फिर उस बन्दे को बख़्श दिया जाता है।[6]

---

1 ......अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा केसिट बयान **निय्यत का फल** और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** या **पेमफ़्लेट** मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

2 ...... المعجم الكبير، ٦/١٨٥، حديث: ٥٩٤٢

3 ...... جامع الاحاديث، ٢/١٩، حديث: ٣٥٥٤

4 ...... كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب النية، ٣/١٢٩، حديث: ٧٢٤٥

5 ...... كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب الزهد، ٣/٧٥، حديث: ٦٠٥٣

6 ...... تاريخ بغداد، ٢/٤٤٣، حديث: ٢٩٢٦

प्यारे मदनी मुन्नो ! दुन्या व आख़िरत की कामयाबी के लिये अपनी निय्यतों में इख़्लास पैदा करना ज़रूरी है आइये चन्द अच्छी अच्छी निय्यतें सीखने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ सुन्नतें और इन के आदाब भी सीख लेते हैं :

खाने की "40" निय्यतें

अज़ : शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

﴾1﴿..... खाने से क़ब्ल और ﴾2﴿..... बा'द का वुज़ू करूंगा (या'नी हाथ, मुंह का अगला हिस्सा धोऊंगा और कुल्लियां करूंगा) ﴾3﴿..... इबादत ﴾4﴿..... तिलावत ﴾5﴿..... वालिदैन की ख़िदमत ﴾6﴿..... तह़सीले इल्मे दीन ﴾7﴿..... सुन्नतों की तरबियत की ख़ातिर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र ﴾8﴿.....अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत ﴾9﴿..... उमूरे आख़िरत और ﴾10﴿..... ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भाग दौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा ।

(येह निय्यतें उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जब कि भूक से कम खाए, ख़ूब डट कर खाने से उलटा इबादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुजह़ान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जनम लेती हैं)

﴾11﴿..... ज़मीन पर ﴾12﴿..... दस्तरख़्वान बिछाने की सुन्नत अदा कर के ﴾13﴿..... सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर ﴾14﴿..... खाने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ और ﴾15﴿..... दीगर दुआ़एं पढ़ कर ﴾16﴿..... तीन उंगलियों से ﴾17﴿..... छोटे छोटे निवाले बना कर ﴾18﴿..... अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा । ﴾19﴿..... हर दो एक लुक़्मे पर یَا وَاجِدُ पढ़ूंगा ﴾20﴿..... जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा ।

﴾21﴿..... रोटी का हर निवाला सालन के बरतन के ऊपर कर के तोड़ूंगा ताकि रोटी के ज़र्रात बरतन ही में गिरें ।
﴾22﴿..... हड्डी और गर्म मसालह़ा अच्छी त़रह़ साफ़ करने और चाटने के बा'द फेंकूंगा ।
﴾23﴿..... भूक से कम खाऊंगा ।
﴾24﴿..... आख़िर में सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से बरतन और
﴾25﴿..... तीन बार उंगलियां चाटूंगा ।
﴾26﴿..... खाने के बरतन धो कर पी कर एक ग़ुलाम आज़ाद करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ।[1]
﴾27﴿..... जब तक दस्तरख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा ।
﴾28﴿..... खाने के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा ﴾29﴿......ख़िलाल करूंगा ।
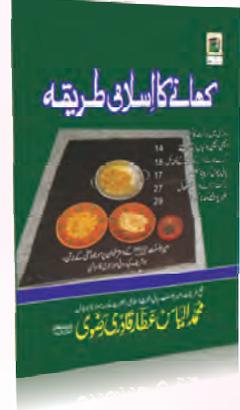
मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

﴾30﴿..... दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुवे तो उन से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा ।
﴾31﴿..... मुसलमानों के कुर्ब की बरकतें ह़ासिल करूंगा ।
﴾32﴿..... उन को बोटी, कद्दू शरीफ़, खुरचन और पानी वग़ैरा पेश कर के उन का दिल ख़ुश करूंगा ।

﴾33﴿..... उन के सामने मुस्कुरा कर सदक़े का सवाब कमाऊंगा ।
﴾34﴿..... खाने की निय्यतें और ﴾35﴿......सुन्नतें बताऊंगा ।
﴾36﴿..... मौक़अ़ मिला तो खाने से क़ब्ल और ﴾37﴿......बा'द की दुआ़एं पढ़ाऊंगा ।
﴾38﴿..... ग़िज़ा का उ़म्दा ह़िस्सा मसलन बोटी वग़ैरा ह़िर्स से बचते हुवे दूसरों की ख़ात़िर ईसार करूंगा ।
﴾39﴿..... उन को ख़िलाल का तोह़फ़ा पेश करूंगा ।
﴾40﴿......खाने के हर एक दो लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَاوَاجِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए ।

[1] ……احیاء العلوم، ٢/٨ماخوذًا

अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

﴾1﴿......इबादत ﴾2﴿......तिलावत ﴾3﴿......वालिदैन की ख़िदमत ﴾4﴿......तह़सीले इल्मे दीन ﴾5﴿......सुन्नतों की तरबियत की ख़ातिर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र ﴾6﴿......अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत ﴾7﴿......उमूरे आख़िरत और ﴾8﴿......ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भाग दौड़ पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा।

(येह निय्यतें उसी वक़्त मुफ़ीद होंगी जब कि फ़्रीज़ या बर्फ़ का ख़ूब ठन्डा पानी न हो कि ऐसा पानी मज़ीद बीमारियां पैदा करता है।)

﴾9﴿......बैठ कर ﴾10﴿...... بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर ﴾11﴿......उजाले में देख कर ﴾12﴿......चूस कर ﴾13﴿......तीन सांस में पियूंगा। ﴾14﴿......पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कहूंगा ﴾15﴿......बचा हुवा पानी नहीं फेंकूंगा।

﴾1﴿...... بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर पियूंगा ﴾2﴿......सुस्ती उड़ा कर इबादत ﴾3﴿......तिलावत ﴾4﴿......दीनी किताबत और ﴾5﴿......इस्लामी मुत़ालआ़ पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा ﴾6﴿......पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कहूंगा।

ख़ुश्बू लगाने की 47 निय्यतें

﴾1﴿......सुन्नते मुस्त़फ़ा है इस लिये ख़ुश्बू लगाऊंगा ﴾2﴿......लगाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह ﴾3﴿......लगाते हुवे दुरूद शरीफ़ और ﴾4﴿......लगाने के बा'द अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहूंगा ﴾5﴿......मलाइका और ﴾6﴿......मुसलमानों को फ़र्ह़त पहुंचाऊंगा ﴾7﴿......अ़क़्ल बढ़ेगी तो अह़कामे शरई याद करने और सुन्नतें सीखने पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा ﴾8﴿......लिबास वग़ैरा से बदबू दूर कर के मुसलमानों को ग़ीबत के गुनाह से बचाऊंगा।

मौक़अ़ की मुनासबत से येह निय्यतें भी की जा सक्ती हैं :

﴾9﴿......नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा। ﴾10﴿......मस्जिद ﴾11﴿......नमाज़े तहज्जुद ﴾12﴿......जुमुआ़ ﴾13﴿......पीर शरीफ़ ﴾14﴿......रमज़ानुल मुबारक ﴾15﴿......ईदुल फ़ित्र ﴾16﴿......ईदुल अज़्हा ﴾17﴿......शबे मीलाद ﴾18﴿......ईदे मीलाद ﴾19﴿......जुलूसे मीलाद ﴾20﴿......शबे मे'राज ﴾21﴿......शबे बराअत ﴾22﴿......ग्यारहवीं शरीफ़ ﴾23﴿......यौमे रज़ा ﴾24﴿......दर्से कुरआन व ﴾25﴿......ह़दीस ﴾26﴿......अवरादो वज़ाइफ़ ﴾27﴿......तिलावत ﴾28﴿......दुरूद शरीफ़ ﴾29﴿......दीनी कुतुब का मुत़ालआ़ ﴾30﴿......तदरीसे इल्मे दीन ﴾31﴿......ता'लीमे इल्मे दीन ﴾32﴿......फ़तवा नवेसी ﴾33﴿......दीनी कुतुब की तस्नीफ़ व तालीफ़ ﴾34﴿......सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ ﴾35﴿......इजतिमाए ज़िक्र व

﴾36﴿......ना'त ﴾37﴿......कुरआन ख़्वानी ﴾38﴿......दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत ﴾39﴿......अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत ﴾40﴿......सुन्नतों भरा बयान करते वक़्त ﴾41﴿......आ़लिम ﴾42﴿......मां ﴾43﴿......बाप ﴾44﴿......मोमिने सालेह़ ﴾45﴿......पीर साह़िब ﴾46﴿......मूए मुबारक की ज़ियारत और ﴾47﴿......मज़ार शरीफ़ की ह़ाज़िरी के मवाक़ेअ़ पर भी ता'ज़ीम की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई जा सकती है।

ख़ुश्बू लगाने के मदनी फूल

ख़ुश्बू लगाना निहायत प्यारी और मीठी सुन्नत है, हमारे मीठे मीठे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू को बे ह़द पसन्द फ़रमाते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर वक़्त मुअ़त्तर मुअ़त्तर रहते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का बहुत इस्ति'माल फ़रमाया करते ताकि ग़ुलाम भी अदाए सुन्नत की निय्यत से ख़ुश्बू लगाया करें वरना इस बात में किस को शक व शुबा हो सकता है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे मसऊद तो कुदरती त़ौर पर ख़ुद ही महकता रहता और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक पसीना ब ज़ाते ख़ुद काएनात की सब से बेहतरीन ख़ुश्बू है।

मुश्को अ़म्बर क्या करूं ? ऐ दोस्त ख़ुश्बू के लिये
मुझ को सुल्त़ाने मदीना का पसीना चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समूरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक बार मीठे मीठे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते पुर अन्वार मेरे चेहरे पर फेरा मैं ने उसे ठन्डा और ऐसी ख़ुश्बूदार हवा की त़रह़ पाया जो किसी इत्र फ़रोश के इ़त्र दान से निकलती है।[1]

---

[1] ......مسلم، کتاب الفضائل، باب طیب رائحۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم......الخ، ص ۱۲۷۱، حدیث:۸۰-(۲۳۲۹)

उ़म्दा क़िस्म की ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उ़म्दा और बेहतरीन क़िस्म की ख़ुश्बू बहुत पसन्द आती और नागवार बू या'नी बदबू आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नापसन्द फ़रमाते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उ़म्दा ख़ुश्बू इस्ति'माल फ़रमाते और इसी की लोगों को भी तल्क़ीन फ़रमाते।

सर में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "मुश्क" सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक में लगाया करते।[1]

ख़ुश्बू का तोह़्फ़ा क़बूल करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि नबियों के सरदार, मुअ़त्तर मुअ़त्तर सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में जब ख़ुश्बू तोह़्फ़तन पेश की जाती तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रद्द न फ़रमाते।[2]

कौन कैसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मर्दाना ख़ुश्बू वोह है जिस की ख़ुश्बू ज़ाहिर हो मगर रंग न हो और ज़नाना ख़ुश्बू वोह है जिस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो।[3]

ख़ुश्बू की धूनी लेना सुन्नत है

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا कभी कभी ख़ालिस ऊ़द (या'नी अगर) की धूनी लेते। या'नी ऊ़द के साथ किसी दूसरी चीज़ की आमेज़िश नहीं करते और कभी ऊ़द के साथ काफ़ूर मिला कर धूनी लेते और फ़रमाते कि मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इसी त़रह़ धूनी लिया करते थे।[4]

---

١ ...... وسائل الوصول، الباب الثانی، الفصل الخامس، ص٨٧

٢ ...... شمائل محمدیة، باب ماجاء فی تعطر رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم، ص ١٣٠، حدیث: ٢٠٨

٣ ...... ترمذی، کتاب الادب، باب ماجآء فی طیب الرجال والنسآء، ٣٦١/٤، حدیث: ٢٧٩٦

٤ ...... مسلم، کتاب الالفاظ من الادب وغیرہ، باب استعمال المسک ...... الخ، ص١٢٣٧، حدیث: ٢١-(٢٢٥٤)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें प्यारे सरकार, दो आलम के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके में मदीनए मुनव्वरा की मुअत्तर मुअत्तर फ़ज़ाओं और मुअम्बर मुअम्बर हवाओं में सांस लेने की सआदत नसीब फ़रमा और फिर इन्ही मुअत्तर मुअत्तर फ़ज़ाओं में सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में आफ़िय्यत के साथ ईमान पर मौत नसीब फ़रमा और जन्नतुल बक़ीअ़ की महकी महकी सर ज़मीन में मदफ़न नसीब फ़रमा।

आप के वासिते कोई मुश्किल नहीं — कीजियेगा न मायूस माहे मुबीं
हम को या सय्यिदल अम्बिया चाहिये — बस बक़ीए मुबारक में दो गज़ ज़मीं
काश! हो जाए मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर — टूट जाए दम मदीने में मेरा या रब बक़ीअ़

सुवाल: मिस्वाक की शरई हैसिय्यत क्या है?

जवाब: वुज़ू से पहले मिस्वाक शरीफ़ करना प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सुन्नत है और अगर मुंह में बद बू हो तो उस वक़्त मिस्वाक करना सुन्नते मुअक्कदा है।

मिस्वाक की मोटाई व लम्बाई

सुवाल: मिस्वाक कितनी मोटी और लम्बी होनी चाहिये?

जवाब मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो और लम्बाई एक बालिश्त से ज़ियादा न हो, वरना इस पर शैतान बैठता है।

सुवाल मिस्वाक के रेशे कैसे होने चाहियें ?

जवाब मिस्वाक के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (*Gap*) का बाइस बनते हैं और मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये। इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक इन की तल्ख़ी बाक़ी रहे।

मिस्वाक करने और पकड़ने का त़रीक़ा

۞......दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ۞......जब भी मिस्वाक करना हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये। ۞......हर बार धो लीजिये। ۞......मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह लीजिये कि छुंगलिया इस के नीचे, बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो। ۞......पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर, फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये।

मिस्वाक की एह़तियातें

۞......चित लैट कर मिस्वाक करने से तिल्ली बढ़ जाने का ख़त़रा है।

۞......मुट्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है।

۞......मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) मिस्वाक के रेशे नीज़ जब येह नाक़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या समुन्दर में डाल दीजिये।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सुन्नत के मुत़ाबिक़ मिस्वाक करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

۞......۞......۞

इमामे की शरई हैसिय्यत

इमामा शरीफ़ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा सरे अक़्दस पर अपनी मुबारक टोपी पर इमामा शरीफ़ सजाए रखा। चुनान्चे, मरवी है कि एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इमामे की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : "फ़िरिश्तों के ताज ऐसे ही होते हैं।"[1] इसी लिये आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : इमामा सुन्नते मुतवातिरा व दाइमा है।[2]

इमामा शरीफ़ की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾......इमामे के साथ दो रक्अ़तें बिग़ैर इमामे के 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं।[3]

﴿2﴾......इमामे के साथ बा जमाअ़त नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है।[4]

﴿3﴾......बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते जुमुआ़ के दिन इमामा वालों पर दुरूद भेजते हैं।[5]

﴿4﴾......टोपी पर इमामा हमारे और मुशरिकीन के दरमियान फ़र्क़ है। बरोज़े क़ियामत इमामे के हर पेच के बदले मुसलमान को एक नूर अ़त़ा किया जाएगा।[6]

---

1 ......كنزالعمال، كتاب المعيشة والعادات، الجزء الخامس عشر، ٨/٢٠٥، حديث:٤١٩٠٦

2 ......फ़तावा रज़विय्या, 6/209 मुलतक़तन

3 ......فردوس الاخبار، ١/٤١٠، حديث:٣٠٥٤

4 ......فردوس الاخبار، ٢/٣١، حديث:٣٢٦١

5 ......الجامع الصغير، ص ٣١١، حديث:١٨١٧

6 ......مرقاة، كتاب اللباس، الفصل الثانى، ٨/١٤٧، تحت الحديث:٤٣٤٠

﴾5﴿......इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा।[1]

﴾6﴿......इमामा मुसलमानों का वक़ार और अ़रबों की इ़ज़्ज़त है, जब अ़रब इमामा उतार देंगे तो अपनी इ़ज़्ज़त भी उतार देंगे।[2]

﴾7﴿......इमामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इमामे के 70 जुमुआ़ के बराबर है।[3]

इ़मामे के आदाब

......इमामा सात हाथ या 'नी साढ़े तीन गज़ से छोटा न हो और बारह हाथ या 'नी छे गज़ से बड़ा न हो।[4]

......इमामे के शमले की मिक़्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा इतना हो कि बैठने में न दबे।[5]

......इमामा क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के खड़े खड़े बांधना चाहिये।

......इमामा उतारते वक़्त भी एक एक पेच खोलना चाहिये।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इमामे की सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मेहमान नवाज़ी के मदनी फूल

मेहमान नवाज़ी बड़ी ही प्यारी सुन्नत है। चुनान्चे,

.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

[1]......مستدرک، کتاب اللباس، باب اعتموا تزدادوا حلما، ۵/۲۷۲، حدیث: ۷۴۸۸

[2]......فردوس الاخبار، ۲/۹۱، حدیث: ۴۱۱۱

[3]......فردوس الاخبار، ۱/۳۲۸، حدیث: ۲۳۹۳

[4]......مرقاۃ، کتاب اللباس، الفصل الثانی، ۸/۱۴۸، تحت الحدیث: ۴۳۴۰

[5]......बहारे शरीअ़त, इमामे का बयान, 3/418 मुलख़्ख़सन

"जिस घर में मेहमान हो उस घर में ख़ैरो बरकत इस त़रह़ दौड़ती है जैसे छुरी ऊंट की कोहान पर, बल्कि इस से भी तेज़ ।"(1)

۞...... मेहमान आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जाता है तो मेज़बान के लिये गुनाह मुआ़फ़ होने का सबब होता है । सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साह़िबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है ।"(2)

۞...... दस फ़िरिश्ते साल भर घर में रह़मत लुटाते रहते हैं । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : ऐ बरा ! आदमी जब अपने भाई की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मेहमानी करता है और उस की कोई जज़ा और शुक्रिया नहीं चाहता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के घर में दस फ़िरिश्तों को भेज देता है जो पूरे एक साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तहलील और तक्बीर पढ़ते हैं और उस के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करते हैं और जब साल पूरा हो जाता है तो इन फ़िरिश्तों की पूरे साल की इ़बादत के बराबर उस के नामए आ'माल में इ़बादत लिख दी जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस को जन्नत की लज़ीज़ ग़िज़ाएं जन्नतुल ख़ुल्द और न फ़ना होने वाली बादशाही में खिलाए ।(3)

۞...... मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करना सुन्नत है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सुन्नत येह है कि आदमी मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए ।"(4)

١...... ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب الضيافة، ۴/۵۱، حديث: ۳۳۵۶

۲...... فردوس الاخبار، ۲/۴۱، حديث: ۳۷۱۱

۳...... كنزالعمال، كتاب الضيافة، الجزء التاسع، ۵/۱۱۹، حديث: ۲۵۹۷۲

۴...... ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب الضيافة، ۴/۵۲، حديث: ۳۳۵۸

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मेहमान की ख़ुश दिली के साथ मेहमान नवाज़ी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और बार बार मीठे मीठे मदीने की महकी महकी फ़ज़ाओं में मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मेहमान बनने की सआ़दत भी नसीब फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

चलने की सुन्नतें और आदाब

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा ज़िन्दगी के हर शो 'बे में हमारी रहनुमाई करती है। चुनान्चे, मुसलमान की चाल भी इम्तियाज़ी होनी चाहिये। गिरेबान खोल कर, गले में ज़न्जीर सजाए, सीना तान कर, क़दम पछाड़ते हुवे चलना अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है। मुसलमानों को दरमियाना और पुर वक़ार त़रीक़े पर चलना चाहिये। चुनान्चे,

- ......लफ़ंगों की त़रह़ गिरेबान खोल कर अकड़ते हुवे हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुवे मा 'लूम होते थे।(1)
- ......राह चलने में परेशान नज़री से बचें और सड़क उ़बूर करते वक़्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उ़बूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तह़ाशा भाग न पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में ह़िफ़ाज़त का ज़ियादा इमकान है।
- ......रास्ते में इधर उधर न झांकें बल्कि सर झुका कर शरीफ़ाना चाल चलें।

सूरए नज्म की फ़ज़ीलत

सूरतुन्नज्म मक्किय्या है, इस में 3 रुकूअ़, 62 आयतें, 360 कलिमे, 1405 ह़र्फ़ हैं। येह वोह पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए 'लान फ़रमाया और ह़रम शरीफ़ में मुशरिकीन के रू बरू पढ़ी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 27, अन्नज्म, ह़ाशिया नम्बर 1)

---

1 ......ابوداود، کتاب الادب، باب فی هدی الرجل، ۴/۳۴۹، حدیث: ۴۸۶۳
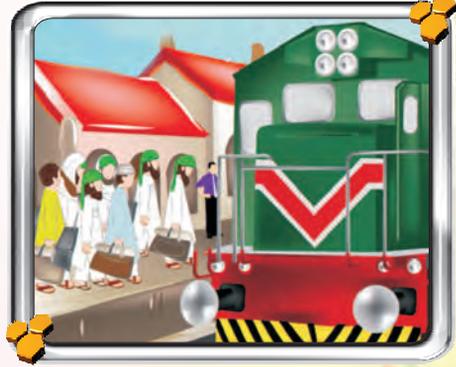
प्यारे मदनी मुन्नो ! अकसरो बेशतर हमें सफ़र की ज़रूरत पेश आती रहती है, लिहाज़ा हम कोशिश कर के सफ़र की भी कुछ न कुछ सुन्नतें व आदाब सीख लें ताकि इन पर अ़मल कर के हम अपने सफ़र को भी हुसूले सवाब का ज़रीआ़ बना सकें । चुनान्चे,

सुवाल सफ़र दरपेश हो तो इस की इब्तिदा किस दिन शुरूअ़ करना चाहिये ?

जवाब मुमकिन हो तो जुमा'रात को सफ़र शुरूअ़ किया जाए कि जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है ।[1]

सुवाल सफ़र आ़म तौ़र पर किस वक़्त करना चाहिये, रात को या दिन को ?

जवाब अगर सहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाए कि रात को सफ़र जल्द तै़ होता है । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रात को सफ़र किया करो क्यूंकि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है ।[2]

सुवाल अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो उन्हें क्या करना चाहिये ?

जवाब अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो किसी एक को अमीर बना लें कि अमीर बनाना सुन्नत है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो वोह अपने में से एक को अमीर बना लें ।[3]

---

[1] ...... اشعۃ اللمعات، ۳/۳۸۹

[2] ...... ابوداود، کتاب الجهاد، باب فی الدلجة، ۳/۴۰، حدیث: ۲۵۷۱

[3] ...... ابوداود، کتاب الجهاد، باب فی القوم یسافرون ...... الخ، ۳/۵۱، حدیث: ۲۶۰۹

सुवाल क्या सफ़र पर रवाना होते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाना चाहियें ?

जवाब जी हां ! चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवा लेना चाहियें और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें । चुनान्चे, मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत के लिये आए तो वोह उस का उ़ज़्र क़बूल कर ले ख़्वाह ह़क़ पर हो या बात़िल पर । जो ऐसा नहीं करेगा वोह मेरे ह़ौज़ पर नहीं आएगा ।(1)

सुवाल सफ़र पर रवाना होते वक़्त घर वालों की ह़िफ़ाज़त के लिये क्या करना चाहिये ?

जवाब सफ़र पर रवाना होते वक़्त घर वालों की ह़िफ़ाज़त के लिये दर्जे ज़ैल दो काम करना चाहियें :

۞...... लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो घर में चार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर बाहर निकलें और हर रक्अ़त में اَلْحَمْد शरीफ़ के बा'द एक बार कुल शरीफ़ पढ़ें । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह रक्अ़तें वापसी तक अहलो माल की निगहबानी करेंगी ।

۞...... जब भी सफ़र पर रवाना हों तो अपने अहले ख़ाना को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर के जाएं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही सब से बेहतर ह़िफ़ाज़त करने वाला है बल्कि हो सके तो अपने घर वालों को येह कलिमात कह कर सफ़र पर रवाना हों : اَسْتَوْدِعُكَ اللهَ الَّذِیْ لَایُضِیْعُ وَدَآئِعَهٗ या'नी मैं तुम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करता हूं जो अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं करता ।(2)

सुवाल सुवारी पर इत़मीनान से बैठ जाने के बा'द कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है ?

जवाब सुवारी पर इत़मीनान से बैठने के बा'द येह दुआ़ पढ़ी जाती है :

۞...... اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ
या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है, पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़ पलटना है ।(3)

---

[1] ...... مستدرک، کتاب البر والصلة، باب برّوا آباء کم تبر کم ابناؤکم، ۵/ ۲۱۳، حدیث: ۷۳۴۰

[2] ...... ابن ماجه، کتاب الجهاد، باب تشییع الغزاة ووداعهم، ۳/ ۳۷۲، حدیث: ۲۸۲۵ ماخوذًا

[3] ...... ابوداود، کتاب الجهاد، باب ما یقول الرجل اذا رکب، ۳/ ۴۹، حدیث: ۲۶۰۲

सुवाल दौराने सफ़र क्या करना चाहिये ?

जवाब दौराने सफ़र दर्जे ज़ैल उमूर पर अ़मल करना चाहिये :

۞...... दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह करते रहें, रैल या बस वग़ैरा में بِسۡمِ اللہ، اَللّٰہُ اَکۡبَر और سُبۡحٰنَ اللہ तीन तीन बार और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ एक बार पढ़ें ।

۞...... मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह दुआ़ से ग़फ़्लत न करे कि जब तक वोह सफ़र में है उस की दुआ़ क़बूल होती है बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ़ मक़्बूल है । मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन क़िस्म की दुआ़एं मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) हैं । इन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं : (1) मज़्लूम की दुआ़ (2) मुसाफ़िर की दुआ़ (3) बाप की अपने बेटे के लिये दुआ़ ।[1]

۞...... दौराने सफ़र अगर कोई ह़ाजत मन्द मिल जाए तो उस की ह़ाजत रवाई करनी चाहिये । اِنۡ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस में सवाब ज़ियादा होगा ।

۞...... जब सीढ़ियों पर चढ़ें या ऊंची जगह की त़रफ़ चलें (या बस वग़ैरा किसी ऐसी सड़क से गुज़रें जो ऊंचाई की त़रफ़ जा रही हो) तो अल्लाहु अक्बर कहना सुन्नत है और जब सीढ़ियों से उतरें या ढलान की त़रफ़ चलें तो سُبۡحٰنَ اللہ कहना सुन्नत है ।

۞...... जब किसी मन्ज़िल पर ठहरें तो वक़्तन फ़ वक़्तन येह दुआ़ पढ़ें : اِنۡ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हर नुक़्सान से बचेंगे :

اَعُوۡذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّاتِ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ

या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलिमाते ताम्मा की पनाह मांगता हूं उस के शर से जिसे उस ने पैदा किया ।[2]

---

[1] ...... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماذکر فی دعوة المسافر، ۵/۲۸۰، حدیث: ۳۴۵۹

[2] ...... کنز العمال، کتاب السفر، الفصل الثانی فی آداب السفر، الجزء السادس، ۳/۳۰۱، حدیث: ۱۷۵۰۸

۞...... जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो सूरए कुरैश पढ़ लें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर बला से अमान मिलेगी ।[1]

۞...... जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो ह़दीसे पाक में है कि इस त़रह़ तीन बार पुकारें : يَا عِبَادَاللهِ! اَعِيْنُوْنِيْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! मेरी मदद करो ।[2]

सुवाल सफ़र से वापसी पर क्या करना चाहिये ?

जवाब सफ़र से वापसी पर दर्जे ज़ैल उमूर पर अ़मल करना चाहिये :

۞...... सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़्फ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए ।[3]

۞...... सफ़र से वापसी पर अपनी मस्जिद में दोगाना (या'नी दो रक्अ़त नफ़्ल) पढ़ना सुन्नत है। चुनान्चे, मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां बैठने से पहले दो रक्अ़त (नमाज़े नफ़्ल) अदा फ़रमाते ।[4]

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें जब भी सफ़र दरपेश हो तो पूरा सफ़र सुन्नत के मुत़ाबिक़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हमें बार बार ह़रमैने त़य्यिबैन का मुबारक सफ़र, नीज़ आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र नसीब फ़रमा । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

۞......۞......۞

---

[1]...... الحصن الحصين، ادعية السفر، ص ٨٠

[2]...... الحصن الحصين، ادعية السفر، ص ٨٢

[3]...... كنز العمال، كتاب السفر، الفصل الثانى فى آداب السفر، الجزء السادس، ٣/٣٠١، حديث: ١٧٥٠٨

[4]...... بخارى، كتاب الجهاد، باب الصلاة اذا قدم من سفر، ٢/٣٣٦، حديث: ٣٠٨٨

बात चीत करने के मदनी फूल

प्यारे मदनी मुन्नो ! हमें अकसर बात चीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है बल्कि हम लोग बिला ज़रूरत भी अकसर बोलते रहते हैं हालांकि येह बिला ज़रूरत बोलना बहुत ही नुक़्सान देह है, ग़ैर ज़रूरी गुफ़्त्गू करने से ख़ामोश रहना अफ़्ज़ल है, लिहाज़ा प्यारे प्यारे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के फ़रामीन से माख़ूज़ बात चीत के सिलसिले में सुन्नतें और आदाब और ख़ामोशी के फ़ज़ाइल वग़ैरा बयान किये जाते हैं :

सुवाल सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े गुफ़्त्गू के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताइये ।

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्त्गू इस त़रह़ दिल नशीन अन्दाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता । जैसा कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ और ठहर ठहर कर कलाम फ़रमाते और हर सुनने वाला इसे याद कर लेता था ।[1]

सुवाल बात चीत के दौरान किन उमूर का ख़याल रखना चाहिये ?

जवाब बात चीत के दौरान दर्जे ज़ैल मदनी फूलों का ख़याल रखना चाहिये :

- ......मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत कीजिये ।
- ......छोटों के साथ मुशफ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दिबाना लहजा रखिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों के नज़दीक आप मुअ़ज़्ज़ज़ रहेंगे ।
- ......सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम किसी शख़्स को देखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे कम गोई और दुन्या से बे रग़बती की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है तो उस के पास ज़रूर बैठो क्यूंकि उस पर ह़िक्मत का नुज़ूल होता है ।[2]

---

[1]......مسند احمد، ۱۰/ ۱۱۵، حدیث: ۲۶۲۶۹

[2]......ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الزھد فی الدنیا، ۴/ ۴۲۲، حدیث: ۴۱۰۱

۞...... ह़दीसे पाक में है : "जो चुप रहा उस ने नजात पाई ।"(1)

۞...... किसी से जब बात चीत की जाए तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ बात की जाए जैसा कि कहा जाता है : كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो । इस का एक मत़लब येह भी है कि ऐसी बातें न की जाएं जो दूसरों की समझ में न आएं । अल्फ़ाज़ भी सादा साफ़ साफ़ हों, मुश्किल तरीन अल्फ़ाज़ भी इस्ति'माल न किये जाएं कि इस त़रह़ अगले पर आप की इल्मिय्यत की धाक तो बैठ जाएगी मगर उसे येह समझ में न आएगा कि आप कहना क्या चाहते हैं ?

सुवाल : बात चीत के दौरान किन उमूर से बचना चाहिये ?

जवाब : बात चीत के दौरान दर्जे ज़ैल उमूर से बचना चाहिये :

۞...... चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में दोस्त आपस में करते हैं मा'यूब है ।

۞...... दौराने गुफ़्तगू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं ।

۞...... दूसरे के सामने बार बार नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं । इस से दूसरों को घिन आती है ।

۞..... जब तक दूसरा बात कर रहा हो इत़्मीनान से सुनें, उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ न कर दें।

۞...... कोई हकला कर बात करता हो तो उस की नक़्ल न उतारें कि इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है ।

۞...... ज़ियादा बातें करने और बार बार क़ह्क़हा लगाने से वक़ार मजरूह़ होता है । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी क़ह्क़हा नहीं लगाया ।(2)

۞...... ज़बान को हमेशा बुरी बातों से रोके रखें क्यूंकि ज़बान के सह़ीह़ या ग़लत़ इस्ति'माल का जो कुछ फ़ाएदा व नुक़्सान होता है वोह सारे जिस्म को होता है । चुनान्चे, मरवी है कि जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के आ'ज़ा

---

1 ...... ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۵۰ - باب، ۴/۲۲۵، حدیث: ۲۵۰۹

2 ...... وسائل الوصول، الباب الثانی، الفصل الثامن، ص ۹۳

झुक कर ज़बान से कहते हैं : हमारे बारे में अल्लाह तआला से डर ! अगर तू सीधी रहेगी तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे ।[1]

۞...... आपस में हंसी मज़ाक़ की आदत कभी महंगी भी पड़ जाती है । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ العَزِيز फ़रमाते हैं कि आपस में ठठ्ठा मज़ाक़ मत किया करो इस त़रह़ (हंसी हंसी में) दिलों में नफ़रत बैठ जाती है और बुरे अफ़्आ़ल की बुन्यादें दिलों में उस्तुवार हो जाती हैं ।[2]

۞..... बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ करें, गाली गलोच से इजतिनाब करते रहें और याद रखें कि अपने भाई को गाली देना ह़राम है[3] और बेह़याई की बात करने वाले बद नसीब पर जन्नत ह़राम है ह़ुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई (या'नी बे ह़याई की बात) से काम लेता है ।"[4]

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें गुफ़्त्गू करने की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ज़ुल्फ़ें रखने के मदनी फूल

सुवाल ज़ुल्फ़ें रखने में सुन्नत क्या है ?

जवाब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

۱...... مسند احمد، ۴/۱۹۰، حدیث: ۱۱۹۰۸

۲...... کیمیائے سعادت، رکن سوم مہلکات، باب پیدا کردن ثواب خاموشی، ۲/۵۶۳

3...... फ़तावा रज़विय्या, 21/127 माख़ूज़न

۴...... موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، ۷/۲۰۴، حدیث: ۳۲۵

के सरे मुबारक के बाल शरीफ़ कभी निस्फ़ कान मुबारक तक तो कभी कान मुबारक की लौ तक रहते और बा'ज़ अवक़ात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गैसू बढ़ जाते तो मुबारक शानों को झूम झूम कर चूमने लगते। बाल चूंकि बढ़ने वाली चीज़ है। इस लिये जिस सहाबी ने जैसा देखा वोही रिवायत कर दिया। चुनान्चे,

आधे कानों तक : हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक आधे कानों तक थे।[1]

कानों की लौ तक : हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सुल्ताने मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गैसू मुबारक मुक़द्दस कानों की लौ को चूमते थे।[2]

शानों तक : उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस पर जो बाल मुबारक होते वोह कान मुबारक की लौ से ज़रा नीचे और मुबारक शानों से ज़रा ऊपर होते थे।[3]

सुवाल : क्या सर के बीच में से मांग निकालना सुन्नत है ?

जवाब : जी हां ! सर के बीच में से मांग निकालना सुन्नत है। जैसा कि बहारे शरीअ़त में है : बा'ज़ लोग दाईं या बाईं जानिब मांग निकालते हैं येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। सुन्नत येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए और बा'ज़ लोग मांग नहीं निकालते बल्कि बालों को सीधा रखते हैं येह सुन्नते मन्सूख़ा और यहूदो नसारा का तरीक़ा है।[4]

---

١ ······ شمائل محمدية، باب ماجاء فی شعر رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم، ص ٣٧، حدیث: ٢٨

٢ ······ المرجع السابق، ص ٣٥، حدیث: ٢٥

٣ ······ المرجع السابق، ص ٣٤، حدیث: ٢٤

4 ······ बहारे शरीअ़त, हजामत बनवाना और नाख़ुन तरशवाना, 3/587 माख़ूज़न

इन तमाम अहादीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा अपने सरे अक़्दस पर पूरे ही बाल रखे, आज कल जो छोटे छोटे बाल रखे जाते हैं इस त़रह़ के बाल रखना सुन्नत नहीं है, लिहाज़ा त़रह़ त़रह़ के तराश ख़राश वाले बाल रखने के बजाए हमें चाहिये कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में अपने सर पर आधे कानों तक, कानों की लौ तक या इतनी बड़ी ज़ुल्फ़ें रखें कि शानों को छू लें ।[1]

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब मुसलमानों को ख़िलाफ़े सुन्नत बाल रखने और रखवाने की सोच से नजात दे कर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी, मीठी मीठी ज़ुल्फ़ें रखने वाली ''मदनी सोच'' अ़त़ा फ़रमा ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मरीज़ की इयादत के मदनी फूल

जब हमारा कोई मुसलमान भाई बीमार हो जाए तो हमें वक़्त निकाल कर उस इस्लामी भाई की इयादत के लिये ज़रूर जाना चाहिये कि किसी मुसलमान की इयादत करना भी बहुत ज़ियादा अज्रो सवाब का बाइ़स है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त क़रीब न आया हो और सात मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाएगा : اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ या'नी मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्श के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं ।[2]

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मदनी पंज सूरह में इयादत करते वक़्त की येह दुआ़ भी नक़्ल फ़रमाई है :

لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ ط या'नी कोई ह़रज की बात नहीं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है ।[3]

---

[1]...... मदनी मश्वरा : छोटे मदनी मुन्नों का ह़ल्क़ करवाते (या'नी सर मुंडवाते) रहना भी मुनासिब है और अगर सुन्नत की निय्यत से ज़ुल्फ़ें रखनी हों तो आधे कान से ज़ाइद न रखें ।

[2]...... ابوداود، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادة، ٣/٢٥١، حدیث: ٣١٠٦

[3]...... بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، ٢/٥٠٥، حدیث: ٣٦١٦

इयादत के पांच हुरूफ़ की निस्बत से मरीज़ की इयादत के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿......जो शख़्स किसी मरीज़ की इयादत करता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है : "ख़ुश हो जा कि तेरा येह चलना मुबारक है और तू ने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।"(1)

﴾2﴿......मरीज़ों की इयादत किया करो और जनाज़ों में शिर्कत किया करो येह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाते रहेंगे।(2)

﴾3﴿......जिस ने अच्छे त़रीक़े से वुज़ू किया और सवाब की उम्मीद पर अपने किसी मुसलमान भाई की इयादत की उसे जहन्नम से सत्तर साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा।(3)

﴾4﴿......मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ़ रद्द नहीं होती।(4)

﴾5﴿......जब तुम किसी मरीज़ के पास आओ तो उस से अपने लिये दुआ़ की दरख़्वास्त करो क्यूंकि उस की दुआ़ फ़िरिश्तों की दुआ़ की त़रह़ होती है।(5)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इयादत की सुन्नत पर भी अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ...... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عاد مريضًا، ٢/١٩٢، حديث: ١٤٤٣

2 ...... مسند احمد، ٤/٤٧، حديث: ١١١٨٠

3 ...... ابو داود، كتاب الجنائز، باب فی فضل العيادة......الخ، ٣/٢٤٨، حديث: ٣٠٩٧

4 ...... الترغيب والترهيب، كتاب الجنائز، باب الترغيب فی عيادة المرضى......الخ، ٤/١٦٦، حديث: ١٩

5 ...... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی عيادة المريض، ٢/١٩١، حديث: ١٤٤١

“अल्लाह बच्चों के क़ुरआने मजीद पढ़ने की वजह से अहले ज़मीन से अज़ाब दूर फ़रमाता है” क्या आप ने इस जुम्ले के चव्वन हुरूफ़ की निस्बत से पांचवें बाब में बयान कर्दा दर्जे ज़ैल 54 सुवालात के जवाबात जान लिये हैं ?

1 क़ुरआन व सुन्नत से इल्मे दीन सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?
2 क्या इल्म से बेहतर भी कोई शै हो सकती है ? अगर नहीं तो ह़दीसे पाक से साबित कीजिये ।
3 क्या हमारे बुज़ुर्गाने दीन बिल ख़ुसूस सहाबए किराम भी इल्म ह़ासिल करने का शौक़ रखते थे ?
4 इस पुर फ़ितन दौर में आज का मुसलमान इल्मे दीन के हुसूल के जज़्बे से नावाक़िफ़ क्यूं है ?
5 क्या येह दुरुस्त है कि राहे इल्म के मुसाफ़िर या'नी त़ालिबे इल्म शैत़ान पर भारी हैं ?
6 क्या येह बात दुरुस्त है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बच्चों के क़ुरआन पढ़ने की वजह से ज़मीन वालों से अ़ज़ाब रोक लेता है ?
7 शैत़ान बच्चों को क़ुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल करने से रोकने के लिये क्या क्या त़रीक़े इस्ति'माल करता है ? चन्द त़रीक़े बताइये ।
8 क्या मद्रसे के इलावा घर में भी तिलावते क़ुरआन का एहतिमाम करना हमारे लिये रह़मत का बाइ़स है ?
9 हमारे बुज़ुर्गाने दीन रोज़ाना किस क़दर तिलावते क़ुरआने करीम का एहतिमाम फ़रमाया करते थे ?
10 क्या वाक़ेई बच्चों का क़ुरआन पढ़ना इन के वालिदैन की बख़्शिश का बाइ़स बन सकता है ?
11 क्या येह दुरुस्त है कि ह़ाफ़िज़े क़ुरआन के वालिदैन को बरोज़े क़ियामत ताज पहनाया जाएगा ?
12 क्या नेक अवलाद वाक़ेई सदक़ए जारिया है ?
13 निय्यत किसे कहते हैं ?
14 अगर किसी अ़मल की अदाएगी में एक से ज़ाइद निय्यतें कर ली जाएं तो क्या हर निय्यत का सवाब मिलेगा ?
15 निय्यतों के फ़ज़ाइल पर मब्नी तीन रिवायात सुनाइये ।
16 अकेले खाना खाएं तो किस क़दर अच्छी अच्छी निय्यतें कर सकते हैं ?

17 अगर मिल कर खाना खा रहे हों तो कितनी अच्छी अच्छी निय्यतें कर सकते हैं?

18 पानी पीने से पहले कौन सी अच्छी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं ?

19 चाए पीने की निय्यतें बताइये ।

20 ख़ुश्बू लगाते वक़्त किस क़दर अच्छी अच्छी निय्यतें कर सकते हैं ?

21 हमारे मीठे मीठे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्यूं ख़ुश्बू को बे हद पसन्द फ़रमाते थे ?

22 क्या उ़म्दा क़िस्म की ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है ?

23 क्या सर में ख़ुश्बू लगाना भी सुन्नत है ?

24 अगर कोई ख़ुश्बू का तोह़फ़ा दे तो क्या करना चाहिये ?

25 किस को कैसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करनी चाहिये ?

26 क्या ख़ुश्बू की धूनी लेना सुन्नत है ?

27 मिस्वाक की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

28 मिस्वाक कितनी मोटी और लम्बी होनी चाहिये ?

29 मिस्वाक के रेशे कैसे होने चाहियें ?

30 मिस्वाक करने और पकड़ने का त़रीक़ा बताइये ।

31 मिस्वाक करते हुवे किन बातों का ख़याल रखना चाहिये ?

32 इमामा शरीफ़ की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

33 इमामा शरीफ़ की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनाइये ।

34 इमामा बांधते वक़्त किन आदाब को मद्दे नज़र रखना चाहिये ?

35 क्या मेहमान की आमद से घर में ख़ैरो बरकत नाज़िल होती है ?

36 क्या येह दुरुस्त है कि मेहमान आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जाता है तो मेज़बान के गुनाहों की मुआ़फ़ी का सबब बनता है ?

37 वोह ह़दीसे पाक सुनाइये जिस में है कि 10 फ़िरिश्ते साल भर मेज़बान के घर में रह़मत लुटाते रहते हैं ?

38 क्या मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करना सुन्नत है ?
39 चलने की सुन्नतें और आदाब बयान कीजिये ।
40 सफ़र दरपेश हो तो इस का आग़ाज़ किस दिन से करना चाहिये ?
41 सफ़र आ़म तौ़र पर किस वक़्त करना चाहिये, रात को या दिन को ?
42 अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो इन्हें क्या करना चाहिये ?
43 क्या सफ़र पर रवाना होते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से कुसूर मुआ़फ़ करवाना चाहियें ?
44 सफ़र पर रवाना होते वक़्त घर वालों की हि़फ़ाज़त के लिये क्या करना चाहिये ?
45 सुवारी पर इत़्मीनान से बैठ जाने के बा'द कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है ?
46 दौराने सफ़र क्या करना चाहिये ?
47 सफ़र से वापसी पर क्या करना चाहिये ?
48 सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताइये ।
49 बात चीत के दौरान किन उमूर का ख़याल रखना चाहिये ?
50 बात चीत के दौरान किन उमूर से बचना चाहिये ?
51 ज़ुल्फ़ें रखने में सुन्नत क्या है ?
52 क्या सर के बीच में मांग निकालना सुन्नत है ?
53 जब हमारा कोई मुसलमान भाई बीमार हो जाए तो हमें क्या करना चाहिये ?
54 इयादत की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ कोई तीन रिवायात सुनाइये ।

बाब : 6

अख़्लाक़िय्यात

इस बाब में आप पढ़ेंगे

एह़तिरामे मुस्लिम में वालिदैन, बड़े भाइयों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों का एह़तिराम, दूसरों की दिल आज़ारी व रियाकारी से बचने, इख़्लास अपनाने, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद और बुग़्ज़ो कीना की नह़ूसतों से दूर रहने के मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी बातें

एहतिरामे मुस्लिम

सुवाल एहतिरामे मुस्लिम का जज़्बा पैदा करने के लिये हमें क्या करना चाहिये ?

जवाब पहले के बुज़ुर्गों में एहतिरामे मुस्लिम का जज़्बा कूट कूट कर भरा होता था। किसी अन्जाने मुसलमान भाई को इत्तिफ़ाक़ी नुक़्सान से बचाने के लिये भी अपना ख़सारा गवारा कर लिया जाता था जब कि आज तो भाई भाई को ही लूटने में मसरूफ़ है। तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी दौरे अस्लाफ़ की याद ताज़ा करना चाहती है। "दा'वते इस्लामी" नफ़रतें मिटाती और मह़ब्बतों के जाम पिलाती है। हमें चाहिये कि दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में रंग जाएं। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा बेदार होगा। अगर ऐसा हो गया तो हमारा मुआ़शरा एक बार फिर मदीनए मुनव्वरा के दिलकश व ख़ुशगवार, ख़ुश्बूदार व सदा बहार रंग बिरंगे फूलों से लदा हुवा ह़सीन गुलज़ार बन जाएगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

तैबा के सिवा सब बाग़ पामाले फ़ना होंगे
देखोगे चमन वालो जब अ़हदे ख़ज़ां आया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वालिदैन को सताने वाला जन्नत से मह़रूम

सुवाल वालिदैन का एह़तिराम करने के बजाए इन्हें सताना कैसा है ?

जवाब वालिदैन व दीगर ज़विल अरह़ाम (या'नी जिन के साथ ख़ूनी रिश्ता हो दरजा ब दरजा) मुआ़शरे में सब से ज़ियादा एह़तिराम व ह़ुस्ने सुलूक के ह़क़दार होते हैं, मगर अफ़्सोस कि इस की त़रफ़ अब ध्यान कम दिया जाता है। बा'ज़ लोग अ़वाम के सामने अगर्चे इन्तिहाई मुन्कसिरुल मिज़ाज व मिलनसार गरदाने जाते हैं मगर अपने घर में बिल ख़ुसूस वालिदैन के ह़क़ में निहायत ही तुन्द मिज़ाज व बद अख़्लाक़ होते हैं। ऐसों की तवज्जोह के लिये अ़र्ज़ है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक

हदीसे पाक में जिन तीन अश्ख़ास के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि वोह जन्नत में नहीं जाएंगे उन में से एक मां बाप को सताने वाला भी है।[1]

बड़े भाई का एहतिराम

सुवाल क्या हम पर बड़े भाई का एहतिराम करना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां ! वालिदैन के साथ साथ दीगर अहले ख़ानदान मसलन भाई बहनों का भी ख़याल रखना चाहिये। वालिद साहिब के बा'द दादा जान और बड़े भाई का रुत्बा है कि बड़ा भाई वालिद की जगह होता है। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : बड़े भाई का हक़ छोटे भाई पर ऐसा है जैसे वालिद का हक़ अवलाद पर।[2]

रिश्तेदारों का एहतिराम

सुवाल रिश्तेदारों के साथ हमें कैसा बरताव करना चाहिये ?

जवाब तमाम रिश्तेदारों के साथ हमें अच्छा बरताव करना चाहिये। चुनान्चे, मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे येह पसन्द हो कि उम्र में दराज़ी और रिज़्क़ में फ़राख़ी हो और बुरी मौत दफ़्अ़ हो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता रहे और रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करे।"[3]

पड़ोसियों का एहतिराम

सुवाल पड़ोसियों के साथ हमें कैसा बरताव करना चाहिये ?

जवाब हर एक को चाहिये कि अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव करे और बिला मस्लिहते शरई इन के एहतिराम में कमी न करे। अफ़्सोस ! आज कल पड़ोसियों को कोई ख़ातिर में नहीं लाता। हालांकि पड़ोसियों की अहम्मिय्यत के लिये येही काफ़ी है कि बन्दा अगर येह जानना चाहता हो कि उस ने फ़ुलां काम अच्छा किया या बुरा तो देखे कि इस काम के

[1] ……مسند احمد، ۲/۳۵۱، حدیث: ۵۳۷۲ ملخصًا

[2] ……شعب الایمان، الخامس والخمسون من شعب الایمان، فصل فی حفظ حق……الخ، ۶/۲۱۰، حدیث: ۷۹۲۹

[3] ……مستدرک، کتاب البر والصلة، باب من سره ان یدفع……الخ، ۵/۲۲۲، حدیث: ۷۳۶۲

मुतअ़ल्लिक़ उस के पड़ोसी क्या कहते हैं ? चुनान्चे, एक शख़्स ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लीशान में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे येह क्यूं कर मा'लूम हो कि मैं ने अच्छा काम किया या बुरा ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम पड़ोसियों को येह कहते सुनो कि तुम ने अच्छा किया तो बेशक तुम ने अच्छा किया और जब येह कहते सुनो कि तुम ने बुरा किया तो बेशक तुम ने बुरा किया है।"[1]

दोस्तों और हम सफ़रों का एह्तिराम

सुवाल दोस्तों और हम सफ़रों के साथ हमें कैसा बरताव करना चाहिये ?

जवाब ट्रेन या बस वग़ैरा में अगर निशस्तें कम हों तो येह नहीं होना चाहिये कि बा'ज़ बैठे ही रहें और बा'ज़ खड़े खड़े ही सफ़र करें। बल्कि होना येह चाहिये कि सारे बारी बारी बैठें और तक्लीफ़ें उठा कर सवाब कमाएं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए बद्र में फ़ी ऊंट तीन अफ़राद थे। चूंकि, ह़ज़रते अबू लुबाबा और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी में शरीक थे। दोनों ह़ज़रात का बयान है कि जब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैदल चलने की बारी आती तो हम दोनों अ़र्ज़ करते कि सरकार ! आप सुवार ही रहिये, हुज़ूर के बदले हम पैदल चलेंगे। इरशाद फ़रमाते : "तुम मुझ से ज़ियादा ताक़तवर नहीं हो और तुम्हारी त़रह़ मैं भी सवाब से बे नियाज़ नहीं हूं।"[2] (या'नी मुझे भी सवाब चाहिये फिर मैं क्यूं पैदल न चलूं ?)

दूसरों की मदद करना

सुवाल बत़ौरे मुसलमान क्या हमें दूसरों के दुख दर्द में उन की मदद करनी चाहिये ?

जवाब जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें मुसलमान बनाया और अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम अ़त़ा

---

[1] ......ابن ماجه، كتاب الزهد، الثناء الحسن، ۴/ ۴۷۹، حديث: ۴۲۲۳

[2] ......شرح السنة، كتاب السير والجهاد، باب العقبة، ۵/ ۵۲۵، حديث: ۲۶۸۰

फ़रमाया। सब मुसलमान आपस में भाई भाई हैं लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने मुसलमान भाई की तक्लीफ़ को अपनी तक्लीफ़ तसव्वुर करें और अपने इस्लामी भाई की मदद करें। चुनान्चे, सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : "जो आदमी मुसलमान भाई की ज़रूरत पूरी कर दे मैं उस के मीज़ान के पास खड़ा हो जाऊंगा अगर ज़ियादा वज़्न हो गया तो ठीक, वरना मैं उस के हक़ में सिफ़ारिश करूंगा।"(1) एक रिवायत में है कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की हाजत में चल पड़ा उस के हर एक क़दम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ 70 नेकियां दर्ज करेगा और 70 बुराइयां दूर कर देगा और अगर उस ज़रूरत मन्द मुसलमान की ज़रूरत उस के ज़रीए से पूरी हो गई तो वोह गुनाहों से यूं पाक हो गया जैसे उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना, अगर वोह इस दौरान वफ़ात पा गया तो बिग़ैर हिसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल होगा।(2)

प्यारे मदनी मुन्नो ! अपने मुसलमान भाई की मदद करने वाला कितना ख़ुश नसीब है कि वोह बिग़ैर हिसाबो किताब जन्नत में दाख़िल होगा। हमें भी चाहिये कि हम अपने इस्लामी भाई की मदद किया करें।

दिल आज़ारी

सुवाल : बतौरे मुसलमान क्या हमें दूसरों की दिल आज़ारी करनी चाहिये ?

जवाब : जी नहीं ! हरगिज़ हरगिज़ हमें अपने किसी इस्लामी भाई की दिल आज़ारी नहीं करनी चाहिये क्यूंकि कामिल मुसलमान वोही होता है जिस की ज़बान व हाथ से दीगर मुसलमान महफ़ूज़ रहें। जैसा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुसलमान वोह होता है जिस की ज़बान और हाथ से दीगर मुसलमान महफ़ूज़ रहें।"(3)

---

(1) ...... حلیۃ الاولیاء، ۶/۳۸۹، حدیث: ۹۰۳۸

(2) ...... الترغیب والترہیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، ۳/۲۶۴، حدیث: ۱۳

(3) ...... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تفاضل الاسلام...... الخ، ص ۴۱، حدیث: ۶۵-(۴۱)

सुवाल क्या दूसरों की दिल आज़ारी जहन्नम में ले जाने का बाइस बन सकती है ?

जवाब जी हां ! दूसरों की दिल आज़ारी जहन्नम में ले जाने का बाइस बन सकती है । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "अहले दोज़ख़ पर ख़ारिश को मुसल्लत़ कर दिया जाएगा, वोह इतनी ख़ारिश करते होंगे कि उन के चमड़े उतर जाने के बाइस हड्डियां नुमूदार हो जाएंगी, तो वोह कहेंगे : या अल्लाह ! किस वजह से हम इस मुसीबत में मुब्तला हैं ? तो उन को जवाब दिया जाएगा : तुम मुसलमानों को ईज़ा देते थे ।"(1)

सुवाल क्या दूसरों को तक्लीफ़ से बचाना हमें जन्नत का ह़क़दार बना सकता है ?

जवाब जी हां ! दूसरों को तक्लीफ़ से बचाना हमें जन्नत का ह़क़दार बना सकता है । लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने मुसलमान भाई को ज़बान या हाथ किसी त़रह़ से भी ईज़ा या'नी तक्लीफ़ न दें बल्कि उसे हर तक्लीफ़ से बचाने की कोशिश करें । जैसा कि सरकारे अब्दे क़रार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने एक ऐसे शख़्स को जन्नत में चलते फिरते देखा जिस ने रास्ते से एक ऐसे दरख़्त को काट दिया था जो मुसलमानों की ईज़ा का बाइस बना रहता था ।"(2) एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुसलमानों के रास्ते से किसी तक्लीफ़ पहुंचाने वाली चीज़ को दूर कर दिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ह़क़ में नेकी लिख देगा और जिस की नेकी क़बूल हो गई वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।(3)

سُبْحَانَ الله عَزَّوَجَلَّ अपने मुसलमान भाई के रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाने की कितनी फ़ज़ीलत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ह़क़ में नेकी दर्ज फ़रमा देता है और उस के लिये जन्नत का दाख़िला आसान कर देता है । हमें भी चाहिये कि हम अपने इस्लामी भाइयों को भी तक्लीफ़ से बचाने की कोशिश करें ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से राज़ी हो जाएं और अगर कोई हमें ईज़ा दे या'नी तक्लीफ़ पहुंचाए तो हमें उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ कर देना चाहिये कि अपने मुसलमान भाई को मुआ़फ़ करने की भी बहुत फ़ज़ीलत मरवी है । चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "मुआ़फ़ कर देने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आदमी की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है ।"(4)

---

[1] ......درمنثور، پ ٢٢، الاحزاب، ٦/٦٥٧، تحت الأية: ٥٨

[2] ......مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب فضل ازالة الاذى عن الطريق، ص ١٤١٠، حديث: ١٢٧-(١٩١٤)

[3] ......الادب المفرد للبخاری، باب البغی، ص ١٥٥، حديث: ٥٩٣

[4] ......مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب استحباب العفو والتواضع، ص ١٣٩٧، حديث: ٦٩-(٢٥٨٨)

प्यारे मदनी मुन्नो ! हमें भी अपने मुसलमान भाई को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआफ़ कर देना चाहिये, हो सकता है कि हमारा येही अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल हो जाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कल बरोज़े क़ियामत हमारी ख़ताएं भी मुआफ़ फ़रमा कर हमें जन्नत में दाख़िला अ़ता फ़रमा दे ।

रियाकारी की ता'रीफ़

सुवाल रिया से क्या मुराद है ?

जवाब रिया से मुराद दिखावा है या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत या नेक आ'माल के ज़रीए लोगों से अपनी इज़्ज़त व शोहरत की ख़्वाहिश रखना कि मेरे इस अ़मल पर लोगों में मेरी वाह वाह हो, लोग मुझे अच्छा व नेक समझें । रिया करने वाले को "रियाकार" कहते हैं ।

रियाकारों की ह़सरत

सुवाल क्या रियाकारी का शुमार जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल में होता है ?

जवाब जी हां ! रियाकारी का शुमार जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल में होता है । चुनान्चे, क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत में ले जाने का हुक्म होगा, यहां तक कि जब वोह जन्नत के क़रीब पहुंच कर उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे और उस के महल्लात और अहले जन्नत के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तय्यार कर्दा ने'मतें देख लेंगे, तो निदा दी जाएगी : इन्हें लौटा दो क्यूंकि इन का जन्नत में कोई हिस्सा नहीं । तो वोह ऐसी ह़सरत ले कर लौटेंगे जैसी अव्वलीन व आख़िरीन ने न पाई होगी, फिर वोह अ़र्ज़ करेंगे : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू वोह ने'मतें दिखाने से पहले ही हमें जहन्नम में दाख़िल कर देता जो तू ने अपने मह़बूब बन्दों के लिये तय्यार की हैं तो येह

हम पर ज़ियादा आसान होता। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : बद बख़्तो ! मैं ने इरादतन तुम्हारे साथ ऐसा किया है कि जब तुम तन्हाई में होते तो मेरे साथ ए'लाने जंग करते और लोगों के सामने होते तो मेरी बारगाह में दोग़ले पन से हाज़िर होते, नीज़ लोगों के दिखावे के लिये अ़मल करते जब कि तुम्हारे दिलों में मेरी ख़ातिर इस के बिल्कुल बर अ़क्स सूरत होती, लोगों से महृब्बत करते और मुझ से महृब्बत न करते, लोगों की इ़ज़्ज़त करते और मेरी इ़ज़्ज़त न करते, लोगों के लिये अ़मल छोड़ देते मगर मेरे लिये बुराई न छोड़ते थे, आज मैं तुम्हें अपने सवाब से महृरूम करने के साथ साथ अपने अ़ज़ाबे अलीम का मज़ा भी चखाऊंगा।[1]

रियाकारी व रियाकार के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने बारी तआ़ला

आ'माल की बरबादी

दिखावे के लिये इबादत करने वाले का अ़मल ज़ाएअ़ हो जाता है। कुरआने मजीद में इरशाद हुवा :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ (پ٣،البقرة:٢٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा दे कर उस की तरह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे।

दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देने वाले नादानों के आ'माल बरबाद होने के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे बारी तआ़ला है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَ هُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ۝ اُولٰٓىٕكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖٞ وَ حَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝ (پ١٢،هود:١٥،١٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम इस में उन का पूरा फल दे देंगे और इस में कमी न देंगे येह हैं वोह जिन के लिये आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग। और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद (बरबाद) हुवे जो उन के अ़मल थे।

---

[1] ……المعجم الاوسط، ٤/١٣٥، حديث:٥٤٧٨

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका रियाकारों के ह़क़ में नाज़िल हुई ।[1]

शैत़ान के दोस्त

लोगों पर अपनी धाक बिठाने के लिये माल ख़र्च करने वाले रियाकारों को शैत़ान के दोस्त क़रार दिया गया है । चुनान्चे, पारह 5 सूरतुन्निसा में इरशाद हुवा :

وَ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ وَ مَنْ یَّكُنِ الشَّیْطٰنُ لَهٗ قَرِیْنًا فَسَآءَ قَرِیْنًا۝۳۸ (پ۵، النسآء:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न क़ियामत पर और जिस का मुसाह़िब (साथी व मुशीर) शैत़ान हुवा तो कितना बुरा मुसाह़िब है ।

रियाकारों का ठिकाना

दिखावे की नमाज़ें पढ़ने वाले बद नसीबों का ठिकाना जहन्नम होगा । चुनान्चे, इरशाद होता है :

فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَۙ۝۴ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَۙ۝۵ الَّذِیْنَ هُمْ یُرَآءُوْنَۙ۝۶ وَ یَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ۠۝۷ (پ۳۰، الماعون: ۴تا۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं वोह जो दिखावा करते हैं और बरतने की चीज़ मांगे नहीं देते ।

रियाकारी व रियाकार के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿......मुझे तुम पर सब से ज़ियादा शिर्के असग़र या'नी दिखावे में मुब्तला होने का ख़ौफ़ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन कुछ लोगों को उन के आ'माल की जज़ा देते वक़्त इरशाद फ़रमाएगा : उन लोगों के पास जाओ जिन के लिये दुन्या में तुम दिखावा करते थे और देखो कि क्या तुम उन के पास कोई जज़ा पाते हो ?[2]

---

[1] ......تفسیر روح البیان، پ۱۲، ھود، ۴/۱۰۸، تحت الآیۃ:۱۵

[2] ......مسند احمد، ۹/۱۲۰، حدیث:۲۳۶۹۲

﴾2﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में राई के दाने के बराबर भी रिया हो ।[1]

﴾3﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर रियाकार पर जन्नत को ह़राम कर दिया है ।[2]

﴾4﴿......जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ग़ैरे ख़ुदा के लिये दिखलावा किया तह़क़ीक़ वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम से बरी हो गया ।[3]

﴾5﴿......क़ियामत के दिन सब से पहले एक शहीद का फ़ैसला होगा जब उसे लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा, वोह उन ने'मतों का इक़रार करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''मैं ने तेरी राह में जिहाद किया यहां तक कि शहीद हो गया ।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''तू झूटा है,तू ने जिहाद इस लिये किया था कि तुझे बहादुर कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया ।'' फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बारे में जहन्नम में जाने का हुक्म देगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा । फिर उस शख़्स को लाया जाएगा जिस ने इ़ल्म सीखा, सिखाया और कुरआने करीम पढ़ा, वोह आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी ने'मतें याद दिलाएगा, वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : ''तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''मैं ने इ़ल्म सीखा सिखाया और तेरे लिये कुरआने करीम पढ़ा ।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''तू झूटा है, तू ने इ़ल्म इस लिये सीखा ताकि तुझे आ़लिम कहा जाए और कुरआने करीम इस लिये पढ़ा ताकि तुझे क़ारी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया ।'' फिर उसे जहन्नम में डालने का हुक्म होगा तो उसे भी मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा । फिर एक मालदार शख़्स को लाया जाएगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कसरते माल अ़ता फ़रमाया था, उसे ला कर ने'मतें याद दिलाई जाएगी, वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : ''तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''मैं ने तेरी राह में जहां

---

[١]......الترغیب والترھیب، کتاب الاخلاص، ١/٤٧، حدیث: ٥٤

[٢]......جامع الاحادیث، ٢/٤٧٦، حدیث: ٦٧٢٥

[٣]......المعجم الکبیر، ٢٢/٣١٩، حدیث: ٨٠٥

ज़रूरत पड़ी वहां ख़र्च किया।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू झूटा है, तू ने ऐसा इस लिये किया था कि तुझे सख़ी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर उसे जहन्नम में डालने का हुक्म होगा तो उसे भी मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।[1]

प्यारे मदनी मुन्नो ! इन्सान के पास तीन अहम और क़ीमती चीज़ें होती हैं जिस से वोह ज़ियादा महब्बत करता है : (1) जान (2) वक़्त (या'नी ज़िन्दगी) और (3) माल। इस हदीसे पाक में इन तीनों चीज़ों को कुरबान किया गया या'नी शहीद ने अपनी जान कुरबान की, आलिम व क़ारी ने अपनी सारी ज़िन्दगी इल्म व कुरआन सीखने सिखाने में कुरबान की और सख़ी ने अपना माल कुरबान किया मगर बरोज़े क़ियामत रियाकारी के सबब बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन के येह आ'माल क़बूल न होंगे बल्कि उन्हें मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

दिखावे की नमाज़ें

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي कीमियाए सआदत में नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तीस बरस की नमाज़ें क़ज़ा कीं जो मैं ने हमेशा पहली सफ़ में अदा की थीं। इस का बाइस येह हुवा कि एक दिन मुझे किसी वजह से ताख़ीर हो गई तो आख़िरी सफ़ में जगह मिली। मैं ने अपने दिल में इस बात से शर्म महसूस की, कि लोग क्या कहेंगे कि येह आज इतनी देर से आया है? उस वक़्त मैं समझा कि येह सब लोगों के दिखाने के लिये था कि वोह मुझे पहली सफ़ में देखें। चुनान्चे, मैं ने येह तमाम नमाज़ें दोबारा पढ़ीं।[2]

---

[1] ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قاتل للریاء......الخ، ص ۱۰۵۵، حدیث: ۱۵۲-(۱۹۰۵)

[2] ......کیمیائے سعادت، رکن چہارم، اصل پنجم، حقیقت اخلاص، ۲/۸۷۶

इख़्लास

हर मुसलमान को चाहिये कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत व नेक आ'माल में रियाकारी जैसे गुनाह को शामिल न होने दे बल्कि जो भी नेक आ'माल करे ख़ास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने के लिये करे कि इस को इख़्लास कहते हैं और याद रखे कि इख़्लास वाली नेकी ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल है।

इख़्लास के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने बारी तआ़ला

मुख़्लिस मोमिन की मिसाल

कुरआने पाक में मुख़्लिस मोमिन की मिसाल इन अल्फ़ाज़ के साथ दी गई है :

وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَ تَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾ (پ٣، البقرة:٢٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को उस बाग़ की सी है जो भूड़ (रैतिली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे तो औस काफ़ी है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत लिखते हैं : येह मोमिने मुख़्लिस के आ'माल की एक मिसाल है कि जिस तरह बुलन्द ख़ित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर हाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा ! ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा और इन्फ़ाक़ (या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करना) ख़्वाह कम हो या ज़ियादा अल्लाह तआ़ला उस को बढ़ाता है और वोह तुम्हारी निय्यत और इख़्लास को जानता है।

"इख़्लास" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से इस के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿......जो दुन्या से इस ह़ाल में गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने तमाम आ'माल में मुख़्लिस था और नमाज़, रोज़े का पाबन्द था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी है।(1)

﴾2﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोही अ़मल पसन्द फ़रमाता है जो इख़्लास के साथ उस की रिज़ा चाहने के लिये किया जाता है।(2)

﴾3﴿......ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास के साथ अ़मल करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये इख़्लास के साथ किये जाते हैं। और येह मत कहा करो कि मैं ने येह काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रिश्तेदारी की वजह से किया।(3)

﴾4﴿...... अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ, थोड़ा अ़मल भी तुम्हारे लिये काफ़ी होगा।(4)

﴾5﴿......जब आख़िरी ज़माना आएगा तो मेरी उम्मत तीन गुरौह में बट जाएगी। एक गुरौह ख़ालिसन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करेगा दूसरा गुरौह दिखावे के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करेगा और तीसरा गुरौह इस लिये इ़बादत करेगा कि वोह लोगों का माल हड़प कर जाए। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उन को उठाएगा तो लोगों का माल खा जाने वाले से फ़रमाएगा : मेरी इ़ज़्ज़त और मेरे जलाल की क़सम ! मेरी इ़बादत से तू क्या चाहता था ? तो वोह अ़र्ज़ करेगा : तेरी इ़ज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम ! मैं तो बस लोगों का माल खाना चाहता था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू ने जो कुछ जम्अ़ किया उस ने तुझे कुछ फ़ाएदा न दिया। इसे दोज़ख़ में डाल दो। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दिखावे के लिये इ़बादत करने वाले से फ़रमाएगा : मेरी इ़ज़्ज़त और मेरे जलाल की क़सम ! मेरी इ़बादत से तेरा क्या इरादा था ? वोह अ़र्ज़ करेगा : तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! लोगों को दिखाना। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : इस की कोई नेकी मेरी बारगाह में मक़्बूल नहीं, इसे दोज़ख़ में डाल दो। फिर

---

١ ......مستدرک، کتاب التفسیر، باب خطبة النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ......الخ، ۳/٦۵، حدیث: ۳۳۳۰ ملتقطاً

٢ ......نسائی، کتاب الجهاد، باب من غزا یلتمس الاجر والذکر، ص ۵۱۰، حدیث: ۳۱۳۷

٣ ......دارقطنی، کتاب الطهارت، باب النیة، ۱/۷۳، حدیث: ۱۳۰ ملخصًا

٤ ......مستدرک، کتاب الرقاق، ۵/۴۳۵، حدیث: ۷۹۱۴

ख़ालिसन अपनी इबादत करने वाले से फ़रमाएगा : मेरी इ़ज़्ज़त और मेरे जलाल की क़सम ! मेरी इबादत से तेरा क्या मक़्सूद था ? वोह अ़र्ज़ करेगा : तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मेरे इरादे को तू मुझ से ज़ियादा जानता है, मैं तेरी रिज़ा चाहता था । इरशाद फ़रमाएगा : मेरे बन्दे ने सच कहा, इसे जन्नत की त़रफ़ ले जाओ ।[1]

सुवाल झूट से क्या मुराद है ?

जवाब ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात करने को झूट कहते हैं ।[2]

सुवाल सब से पहले झूट किस ने बोला ?

जवाब सब से पहले झूट शैत़ान ने बोला कि झूट बोल कर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को गन्दुम का दाना खिलाया ।

सुवाल क्या झूट बोलने की त़रह़ झूट लिखना भी गुनाह है ?

जवाब जी हां ! झूट लिखना भी गुनाह है ।

सुवाल अप्रील फ़ूल मनाना कैसा है ?

जवाब अप्रील फ़ूल मनाना गुनाह है और येह अह़मक़ों और बे वुक़ूफ़ों का त़रीक़ा है । यकुम अप्रील को लोगों को झूटी बातें बता कर या झूटी ख़बरें लिख कर मज़ाक़ किया जाता है जो कि नाजाइज़ व गुनाह है, लिहाज़ा इस नाजाइज़ व बुरे त़रीक़े से बचना बहुत ज़रूरी है ।

सुवाल बा'ज़ बच्चे बात बात पर क़समें खाते हैं, इस बारे में क्या हुक्म है ?

---

[1]……المعجم الاوسط، ۴/۳۰، حديث: ۵۱۰۵

[2]……حديقه نديه، ۲/۲۰۰
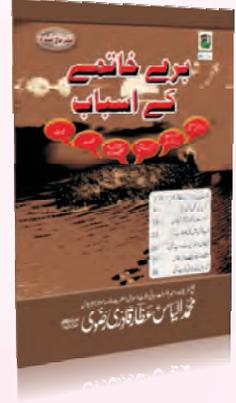
जवाब बात बात पर क़समें खाना बुरी आ़दत है क्यूंकि ज़ियादा क़समें खाना झूटा होने की अ़लामत है।

सुवाल झूटी क़सम खाना कैसा है ?

जवाब झूटी क़सम खाना नाजाइज़ व गुनाह और शैत़ानी काम है, हमें इस गुनाह से बचना चाहिये।

सुवाल लोगों को हंसाने के लिये झूटे लत़ीफ़े सुनाना कैसा है ?

जवाब लोगों को हंसाने के लिये झूटे लत़ीफ़े सुनाना भी नाजाइज़ व गुनाह है, इन बातों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है। जैसा कि मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है : "हलाकत है उस के लिये जो लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलता है। उस के लिये हलाकत है, उस के लिये हलाकत है।"(1) एक रिवायत में है कि जो बन्दा मह़्ज़ इस लिये बात करता है कि लोगों को हंसाए तो इस की वजह से आस्मानो ज़मीन के दरमियान मौजूद फ़ासिले से भी ज़ियादा दूर (जहन्नम में) जा गिरता है।(2)

सुवाल बा'ज़ बच्चे लत़ीफ़े और झूटी कहानी वाली किताबें पढ़ते हैं इस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब ऐसी किताबें पढ़ना सह़ीह़ नहीं कि ऐसी बातें बच्चों में ग़फ़्लत पैदा करती हैं।

सुवाल क्या मज़ाक़ में झूट बोल सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! मज़ाक़ में भी झूट बोलना ह़राम है।

सुवाल बा'ज़ वालिदैन बच्चों को डराने के लिये झूटी बातें करते हैं कि फ़ुलां चीज़ आ रही है या बहलाने के लिये कहते हैं कि इधर आओ हम तुम्हें चीज़ देंगे मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता इस का क्या हुक्म है ?

जवाब येह भी झूट में शामिल है और ह़राम व गुनाह है।

सुवाल बा'ज़ बच्चे मन घड़त ख़्वाब सुनाते हैं उन के बारे में क्या हुक्म है ?

---

(1) ……ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء من تکلم ……الخ، ۴/۱۴۲، حدیث: ۲۳۲۲

(2) ……شعب الایمان، الباب الرابع والثلاثون من شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۱۳، حدیث: ۴۸۳۲

जवाब झूटा ख़्वाब बयान करना सख़्त ह़राम व गुनाह है। ऐसे झूटों को क़ियामत के दिन "जव" के दो दानों में गिरह लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी और वोह कभी भी गिरह न लगा सकेंगे और यूं अ़ज़ाब पाते रहेंगे।[1]

सुवाल क्या येह बात दुरुस्त है कि झूट बोलने वाले के मुंह से बदबू निकलती है?

जवाब जी हां! झूट बोलने वाले के मुंह से ऐसी सख़्त बू निकलती है कि फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।[2]

सुवाल क्या झूट बोलने का असर दिल पर भी होता है?

जवाब जी हां! झूट बोलने से दिल सियाह (काला) हो जाता है, लिहाज़ा झूट बोलने से मुकम्मल परहेज़ करना चाहिये।

सुवाल झूट बोलने वाले को आख़िरत में क्या सज़ा मिलेगी?

जवाब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में झूट बोलने वाले की येह सज़ा दिखाई गई कि उस को गुद्दी के बल (या'नी चित) लिटाया हुवा था और एक शख़्स लोहे का चिमटा लिये उस पर खड़ा था और वोह एक त़रफ़ से उस की बांछ (गाल) चिमटे से पकड़ कर गुद्दी तक चीरता हुवा ले जाता, इस त़रह़ आंख और नाक के नथने में चिमटा घोंप कर चीरता हुवा गुद्दी तक ले जाता। जब एक त़रफ़ येह अ़मल कर लेता तो दूसरी जानिब आ जाता और येही अ़मल करता, इतनी देर में पहली जगह अस्ली ह़ालत में आ जाती फिर पहली जगह को इसी त़रह़ चीर फाड़ डालता। झूट बोलने वाले को येह सज़ा क़ियामत तक मिलती रहेगी।[3]

सुवाल बच्चों के झूट बोलने की चन्द एक मिसालें बयान कीजिये?

जवाब बच्चों के झूट बोलने की चन्द मिसालें येह हैं:

۞...... अगर अम्मी जान सुब्ह़ मद्रसे में जाने के लिये उठाती हैं तो झूटा बहाना कर देते हैं कि मेरी त़बीअ़त सह़ीह़ नहीं, मेरे सर में दर्द है, मेरे पेट में तक्लीफ़ है।

---

[١]...... ترمذی، کتاب الرؤیا، باب فی الذی یکذب فی حلمه، ۴/۱۲۵، حدیث: ۲۲۹۰

[٢]...... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی المراء، ۳/۴۰۰، حدیث: ۲۰۰۰

[٣]...... بخاری، کتاب الجنائز، ۹۳- باب، ۱/۴۶۷، حدیث: ۱۳۸۶ ملخصًا

۞...... इसी त़रह़ जब इन्हें मद्रसे का सबक़ याद करने का कहा जाए तो झूटा उ़ज़्र पेश कर देते हैं कि मुझे नींद आ रही है, मुझे फुलां तक्लीफ़ है ।

۞...... ऐसे ही जब एक बच्चा दूसरे बच्चे से लड़ाई झगड़ा कर ले या किसी को मारे तो दरयाफ़्त करने पर झूट बोल देता है कि मैं ने तो नहीं मारा ।

۞...... उ़मूमन वालिदैन अपने बच्चे को सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देह चीज़ें खाने से मन्अ़ करते हैं और मह़ल्ले के बुरे लड़कों के साथ उठने बैठने से भी मन्अ़ करते हैं मगर बच्चे बाज़ नहीं आते और वालिदैन जब पूछते हैं तो झूट बोल देते हैं ।

सुवाल झूट बोलने के चन्द नुक़्सान बयान कीजिये ?

जवाब झूट बोलने के चन्द नुक़्सान येह हैं :

۞...... झूट कबीरा गुनाह है । ۞......झूट से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं ।

۞...... झूट मुनाफ़िक़ की अ़लामत है । ۞......झूट से गुनाहों में इज़ाफ़ा होता है ।

۞...... झूट जहन्नम में ले जाने वाला अ़मल है । ۞......झूट से रिज़्क़ में कमी वाक़ेअ़ होती है ।

۞...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने झूटों पर ला'नत फ़रमाई है । ۞......झूट से दिल काला हो जाता है ।

۞...... झूट बोलना काफ़िरों, मुनाफ़िक़ों और फ़ासिक़ों का त़रीक़ा है ।

۞...... झूट बोलने वाले को आख़िरत में हौलनाक अ़ज़ाब दिया जाएगा कि चिमटे से उस के गाल, आंखें और नाक चीर फाड़ दिये जाएंगे ।

۞...... झूट बोलने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिल्कुल भी पसन्द नहीं फ़रमाते ।

प्यारे मदनी मुन्नो ! सच्चे दिल से तौबा कर लीजिये कि आयिन्दा कभी भी किसी से झूट नहीं बोलेंगे । न ही झूटी क़समें खाएंगे, न झूटे लत़ीफ़े सुनें सुनाएंगे, न ही झूटे लत़ीफ़े और झूटे ख़्वाब बयान करेंगे और न ही मज़ाक़ में झूट बोलेंगे । बस हमेशा सच बोलेंगे क्यूंकि सच्चाई जन्नत का रास्ता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी का ज़रीआ़ है ।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें झूट के गुनाह से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमा, हमें हमेशा सच बोलने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा और हमें ज़बान की जुम्ला आफ़तों से बचने के लिये ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

बोलूं न फ़ुज़ूल और रहें नीची निगाहें
आंखों का ज़बान का दे ख़ुदा क़ुफ़्ले मदीना

ग़ीबत

ग़ीबत की ता'रीफ़ और इस का शरई हुक्म

सुवाल ग़ीबत से क्या मुराद है ?

जवाब ग़ीबत नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस की मुराद दर्जे ज़ैल तीन अक़्वाल से समझिये :

- ...... एक बार हमारे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो ग़ीबत क्या है ?" अ़र्ज़ की गई : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं। फ़रमाया : (ग़ीबत येह है कि) तुम अपने भाई का इस त़रह़ ज़िक्र करो जिसे वोह नापसन्द करता है। अ़र्ज़ की गई : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो ? फ़रमाया : "जो बात तुम कह रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की ग़ीबत की और अगर उस में मौजूद न हो तो तुम ने उस पर बोहतान बांधा।"(1)
- ...... बहारे शरीअ़त में है : ग़ीबत के येह मा'ना हैं कि किसी शख़्स के पोशीदा ऐ़ब को (जिस को वोह दूसरों के सामने ज़ाहिर होना पसन्द न करता हो) उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना।(2)
- ...... उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : इन्सान के किसी ऐसे ऐ़ब का ज़िक्र करना जो उस में मौजूद हो ग़ीबत कहलाता है।

---

1 ...... مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تحریم الغیبة، ص١٣٩٧، حدیث: ٧٠-(٢٥٨٩)

2 ......बहारे शरीअ़त, ज़बान को रोकना और गाली गलोच, ग़ीबत और चुग़ली से परहेज़ करना, 3/532

अब वोह ऐब चाहे उस के दीन, दुन्या, ज़ात, अख़्लाक़, माल, अवलाद, बीवी, ख़ादिम, इमामा, लिबास, ह़रकात व सकनात, मुस्कुराहट, दीवानगी, तुर्श रूई और खुश रूई वग़ैरा किसी भी ऐसी चीज़ में हो जो उस के मुतअ़ल्लिक़ हो।

जिस्म में ग़ीबत की मिसालें : अन्धा, लंगड़ा, गंजा, ठिगना, लम्बा, काला और ज़र्द वग़ैरा कहना।

दीन में ग़ीबत की मिसालें : फ़ासिक़, चोर, ख़ाइन, ज़ालिम, नमाज़ में सुस्ती करने वाला और वालिदैन का नाफ़रमान वग़ैरा कहना। कहा जाता है कि ग़ीबत में खजूर की सी मिठास और शराब जैसी तेज़ी और सुरूर है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस आफ़त से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए।[1]

मुर्दा भाई का गोश्त खाना

सुवाल क्या कोई अपने मरे हुवे भाई का गोश्त खा सकता है ?

जवाब जी नहीं ! ऐसा कोई भी नहीं जो अपने मरे हुवे भाई का गोश्त खाना पसन्द करे। अलबत्ता ! बा'ज़ नाआ़क़िबत अन्देश (वोह लोग जिन्हें अपनी आख़िरत की फ़िक्र नहीं) ग़ीबत जैसे घिनावने गुनाह में मुब्तला हो कर गोया कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने लगते हैं। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ لَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًاؕ اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُؕ (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा।

ग़ीबत की तबाहकारियां

ग़ीबत के बेशुमार नुक़्सानात में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं:

۞...... ग़ीबत और चुग़ली ईमान को इस त़रह़ झाड़ देती हैं जिस त़रह़ चरवाहा दरख़्त (से पत्ते) झाड़ता है।[2]

---

[1] ...... الزواجر عن اقتراف الکبائر، الکبیرۃ الثامنۃ والتاسعۃ والاربعون بعد المأتین ......الخ، ۲/ ۲۴، ۲۵ ملخصًا

[2] ...... الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترھیب من الغیبۃ ......الخ، ۳/ ۳۳۲، حدیث:۲۸

۞...... ग़ीबत करने वाला जहन्नम में बन्दर की शक्ल में बदल जाएगा।[1]

۞...... शबे मे'राज सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र एक ऐसी क़ौम के पास से हुवा जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाख़ुनों से नोच रहे थे। पूछने पर मा'लूम हुवा कि येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे।[2]

मुंह से गोश्त निकला

सुवाल क्या कोई ऐसा वाक़िआ़ मरवी है जिस से साबित हो कि ग़ीबत करने वाले ने वाक़ेई मुर्दा भाई का गोश्त खाया हो ?

जवाब जी हां ! ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया और इरशाद फ़रमाया : जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्त़ार न करे। लोगों ने रोज़ा रखा। जब शाम हुई तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के ह़ाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हो कर अ़र्ज़ करते रहे : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं रोज़ा खोल दूं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते। एक सह़ाबी ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दो औ़रतों ने रोज़ा रखा और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में आने से ह़या मह़सूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी रोज़ा खोल लें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फेर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चेहरए अन्वर फेर लिया। उन्हों ने फिर येही बात दोहराई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फेर लिया वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फेर लिया, फिर ग़ैब दान रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब

---

[1] ...... تنبیہ المغترین، ومنها سر باب الغیبة ...... الخ، ص ۱۹۴

[2] ...... ابوداود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ۴/۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۸ ملخصًا

की ख़बर देते हुवे) इरशाद फ़रमाया : उन दोनों ने रोज़ा नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ, उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें । वोह सहाबी उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें फ़रमाने शाही सुनाया । उन दोनों ने क़ै की तो क़ै से जमा हुवा ख़ून निकला । उन सहाबी ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में वापस हाज़िर हो कर सूरते हाल अ़र्ज़ की । मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता तो उन दोनों को आग खाती । (क्यूंकि उन्हों ने ग़ीबत की थी)[1]

एक रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सहाबी से मुंह फेरा तो वोह सामने आए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह दोनों प्यास की शिद्दत से मरने के क़रीब हैं । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : उन दोनों को मेरे पास लाओ । वोह दोनों हाज़िर हुईं । सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया : इस में क़ै करो ! उस ने ख़ून, पीप और गोश्त की क़ै की, ह़त्ता कि आधा पियाला भर गया । फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरी को हुक्म दिया कि तुम भी इस में क़ै करो ! उस ने भी इसी त़रह़ की क़ै की, यहां तक कि पियाला भर गया अल्लाह के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन दोनों ने अल्लाह की ह़लाल कर्दा चीज़ों (या'नी खाने, पीने वग़ैरा) से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (इलावा रोज़े के भी) ह़राम रखा है उन (ह़राम चीज़ों) से रोज़ा इफ़्त़ार कर डाला ! हुवा यूं कि एक दूसरी के पास बैठ गई और दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं ।[2]

---

[1] ......ذم الغيبة لابن ابی الدنیا، ص ٧٢، حدیث: ٣١

[2] ......مسند احمد، ٩/١٦٥، حدیث: ٢٣٧١٤

चुग़ली

लोगों में फ़साद डालने के लिये एक की बात दूसरे को बताना चुग़ली है। चुग़ली करना ह़राम है।[1] चुनान्चे, चुग़ल ख़ोरी की मज़म्मत बयान करते हुवे रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَ لَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍۙ۝۱۰ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍۙ۝۱۱ (پ۲۹، القلم:۱۰، ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला ज़लील बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

चुग़ली के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿......चुग़ल ख़ोर और दोस्तों में जुदाई डालने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से बद तरीन लोग हैं।[2]

﴾2﴿......मेरे नज़दीक सब से नापसन्दीदा लोग चुग़ल ख़ोर हैं जो दोस्तों के दरमियान जुदाई डालते और पाक दामन लोगों में ऐ़ब ढूंडते हैं।[3]

﴾3﴿......لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ या'नी चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।[4]

﴾4﴿......ग़ीबत करने वालों, चुग़ल ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों पर ऐ़ब लगाने वालों का ह़श्र कुत्तों की सूरत में होगा।[5]

﴾5﴿......जो लोगों में चुग़ल ख़ोरी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये आग के जूते बनाएगा जिन से उस का दिमाग़ खोलता रहेगा।[6]

---

[1]......حدیقہ ندیہ، ۲/۴۲۷

[2]......مسند احمد، ۶/۲۹۱، حدیث: ۱۸۰۲۰

[3]......مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی حسن الخلق، ۸/۴۷، حدیث: ۱۲۶۶۸

[4]......بخاری، کتاب الادب، باب مایکرہ من النمیمة، ۴/۱۱۵، حدیث: ۶۰۵۶

[5]......الترغیب والترہیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترہیب من النمیمة، ۳/۳۲۵، حدیث: ۱۰

[6]......تنزیہ الشریعة، کتاب الادب والزہد، الفصل الثالث، ۲/۳۱۳، حدیث: ۱۰۱

ह़सद

ह़सद की ता'रीफ़

येह तमन्ना करना कि किसी की ने'मत उस से ज़ाइल हो कर मुझे मिल जाए ह़सद कहलाता है।[1] या'नी किसी के पास कोई ने'मत देख कर तमन्ना करना कि काश ! इस से येह ने'मत छिन कर मुझे ह़ासिल हो जाए ह़सद है। मसलन किसी की शोहरत या इ़ज़्ज़त से नफ़रत का जज़्बा रखते हुवे ख़्वाहिश करना कि येह किसी त़रह़ ज़लील हो जाए और इस की जगह मुझे इ़ज़्ज़त का मक़ाम ह़ासिल हो जाए, नीज़ किसी मालदार से जल कर येह तमन्ना करना कि इस का किसी त़रह़ नुक़्सान हो जाए और येह ग़रीब हो जाए और मैं इस की जगह पर दौलत मन्द बन जाऊं। इस त़रह़ की तमन्ना करना ह़सद है।

ह़सद का शरई हुक्म

ह़सद करना बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है।[2] लेकिन अगर येह तमन्ना है कि वोह ख़ूबी मुझे भी मिल जाए और उसे भी ह़ासिल रहे रश्क कहलाता है और येह जाइज़ है।

ह़सद के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने बारी तआ़ला

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत के वसीले से अहले ईमान को नुसरत व ग़लबा व इ़ज़्ज़त वग़ैरा ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया तो यहूदी आप से ह़सद करने लगे। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पारह 5 सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 54 में यहूदियों के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया :

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ (پ۵، النسآء:۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या लोगों से ह़सद करते हैं इस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।

---

[1]……बहारे शरीअ़त, बुग़्ज़ व ह़सद का बयान, 1/542 माख़ूज़न

[2]……المرجع السابق

पारह 30 सूरतुल फ़लक़ की आयत नम्बर 5 में है :

وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝۵ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले ।

(پ٣٠، الفلق:٥)

ह़सद के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿......ह़सद ईमान को इस त़रह़ ख़राब कर देता है जिस त़रह़ ऐलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है ।[1]

﴾2﴿......ह़सद से बचते रहो क्यूंकि ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ियों को खा जाती है ।[2]

﴾3﴿......ह़सद करने वाले, चुग़ली खाने वाले और काहिन के पास जाने वाले का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और न ही मेरा उन से कोई तअ़ल्लुक़ है ।[3]

﴾4﴿......लोग जब तक आपस में ह़सद न करेंगे हमेशा भलाई पर रहेंगे ।[4]

﴾5﴿......इब्लीस (अपने चेलों से) कहता है : इन्सानों से ज़ुल्म और ह़सद के आ'माल कराओ क्यूंकि येह दोनों अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक शिर्क के बराबर हैं ।[5]

﴾6﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के भी दुश्मन होते हैं । अ़र्ज़ की गई : वोह कौन हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह जो लोगों से इस लिये ह़सद करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्लो करम से उन को ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं ।[6]

---

[1] ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الجزء الثالث، ٢/١٨٦، حديث:٧٤٣٧

[2] ......ابوداود، كتاب الادب، باب فی حسد، ٤/٣٦٠، حديث:٤٩٠٣

[3] ......مجمع الزوائد، كتاب الادب، باب ماجاء فی الغيبة والنميمة، ٨/١٧٢، حديث:١٣١٢٦

[4] ......المعجم الكبير، ٨/٣٠٩، حديث:٨١٥٧

[5] ......جامع الاحاديث، ٣/٦٠، حديث:٧٢٦٩

[6] ......شعب الايمان، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، الحديث تحت الباب، ٥/٢٦٣

ह़सद बुरे ख़ातिमे का बाइ़स है

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने एक शागिर्द की नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ने लगे । तो उस शागिर्द ने कहा : सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो । फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन फ़रमाई । वोह बोला : मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढूंगा, मैं इस से बेज़ार हूं । बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा । चालीस रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे । चालीस दिन के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़्वाब में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस सबब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी मा'रीफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : तीन ड़यूब के सबब से : (1) चुग़ली कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कुछ और, (2) ह़सद कि मैं अपने साथियों से ह़सद करता था (3) शराब नोशी कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से त़बीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था ।[1]

सूरए कह्फ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ मदनी पंज सूरह में सूरए कह्फ़ की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं : (1) जो सूरए कह्फ़ की अव्वल और आख़िर से तिलावत करेगा उस के सर ता पा नूर ही नूर होगा और जो इस की मुकम्मल तिलावत करेगा, उस के लिये आस्मान और ज़मीन के दरमियान नूर होगा (مسند احمد، حدیث معاذ بن انس، ۵/۳۱۱، حدیث:۱۵۶۲۶) (2) जो जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़े उस के लिये दो जुमुओं के दरमियान एक नूर रोशन कर दिया जाता है । एक रिवायत में है : जो शबे जुमुआ़ को पढ़े उस के और बैतुल अ़तीक़ (या'नी का'बतुल्लाह शरीफ़) के दरमियान एक नूर रोशन कर दिया जाता है । (شعب الایمان، ۲/۴۷۴، حدیث:۲۴۴۴) (3) जो सूरए कह्फ़ की पहली दस आयतें याद करेगा दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा और एक रिवायत में है : जो सूरए कह्फ़ की आख़िरी दस आयतें याद करेगा दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा । (مسلم، ص ۴۰۴، حدیث:۸۰۹)

[1] ……مِنہاجُ العابِدین، ص ۱۶۵

बुग़्ज़ो कीना

जब इन्सान को ग़ुस्सा आए और वोह इसे नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत न पाने की वजह से पी ले तो वोह ग़ुस्सा दिल में बैठ कर बुग़्ज़ या'नी नफ़रत और कीने की शक्ल इख़्तियार कर लेता है। फिर इस बुग़्ज़ो कीना के नताइज येह मुरत्तब होते हैं कि बन्दा अपने मग़्ज़ूब (या'नी जिस पर ग़ुस्सा आया उस) से ह़सद करने लगता है या'नी उस से ने'मत के ज़वाल की तमन्ना कर के उस ने'मत से ख़ुद नफ़्अ़ उठाना चाहता है या उस की परेशानी पर ख़ुशी का इज़्हार करता है । उस से अपना तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर लेता है। अगर वोह उस के पास किसी ज़रूरत के तह़्त आ जाए तो उस की ज़बान उस के बारे में ह़राम की मुर्तकिब होती है और वोह उस का मज़ाक़ उड़ाता, मस्ख़री करता और दिल आज़ारी का बाइ़स बनता है। येह तमाम काम सख़्त गुनाह और ह़राम हैं।

बच्चों को चूंकि दिली ख़यालात के अच्छे या बुरे होने का इ़ल्म नहीं होता इस लिये दिल में जो आता है करते चले जाते हैं और दूसरे पर अपने दिली जज़्बात का इज़्हार भी कर देते हैं। बहुत कम ऐसा होता है कि उन के दिल में किसी का बुग़्ज़ या'नी किसी की नफ़रत पाई जाए। मगर बुग़्ज़ो कीना चूंकि अच्छी चीज़ नहीं इस लिये बच्चों को इस से मुतअ़ल्लिक़ भी मा'लूमात होना ज़रूरी हैं। चुनान्चे, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मोमिन कीना परवर नहीं होता।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बन्दों के आ'माल हर हफ़्ते में दो मरतबा (बारगाहे ख़ुदावन्दी में) पेश किये जाते हैं, पीर और जुमा'रात को। पस हर बन्दे की मग़फ़िरत हो जाती है सिवाए उस के जो अपने किसी मुसलमान भाई से बुग़्ज़ो कीना रखता है, उस के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दिया जाता है कि उन दोनों को छोड़े रहो (या'नी फ़िरिश्ते उन के गुनाहों को न मिटाएं) यहां तक कि वोह आपस की अ़दावत से बाज़ आ जाएं।(2)

---

(1) ...... كشف الخفاء، ٢/٢٦٢، حديث: ٢٦٨٤

(2) ...... مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب النهى عن الشحناء والتهاجر، ص١٣٨٧، حديث: ٣٦-(٢٥٦٥)

"तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी" के 45 हुरूफ़ की निस्बत से क्या आप ने छटे बाब में बयान कर्दा दर्जे ज़ैल 45 सुवालात के जवाबात जान लिये हैं ?

1 एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा पैदा करने के लिये हमें क्या करना चाहिये ?

2 वालिदैन का एह़तिराम करने के बजाए उन्हें सताना कैसा है ?

3 क्या हम पर बड़े भाई का एह़तिराम करना ज़रूरी है ?

4 रिश्तेदारों के साथ हमें कैसा बरताव करना चाहिये ?

5 पड़ोसियों के साथ हमें कैसा बरताव करना चाहिये ?

6 दोस्तों और हम सफ़रों के साथ हमें कैसा बरताव करना चाहिये ?

7 बत़ौरे मुसलमान क्या हमें दूसरों के दुख दर्द में उन की मदद करनी चाहिये ?

8 बत़ौरे मुसलमान क्या हमें दूसरों की दिल आज़ारी करनी चाहिये ?

9 क्या दूसरों की दिल आज़ारी जहन्नम में ले जाने का बाइस बन सकती है ?

10 क्या दूसरों को तक्लीफ़ से बचाना हमें जन्नत का ह़क़दार बना सकता है ?

11 रिया से क्या मुराद है ?

12 क्या रियाकारी का शुमार जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल में होता है ?

13 रियाकारी व रियाकार के मुतअ़ल्लिक़ कम अज़ कम दो फ़रामैने बारी तआ़ला मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान सुनाइये ?

14 रियाकारी व रियाकार के मुतअ़ल्लिक़ कम अज़ कम दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा बयान कीजिये ?

15 रिया के मुतअ़ल्लिक़ वोह ह़दीसे पाक मुकम्मल सुनाइये जिस में बरोज़े क़ियामत एक शहीद, क़ारी और मालदार शख़्स को रियाकारी में मुब्तला होने की वजह से जहन्नम में फेंकने का हुक्म होगा ? नीज़ इस ह़दीसे पाक से हमें क्या सबक़ ह़ासिल होता है वोह भी बताइये ।

16 रियाकारी से बचने के लिये क्या करना चाहिये ?

17 क़ुरआने पाक में मज़्कूर मुख़्लिस मोमिन की मिसाल मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान बयान कीजिये ।

18 इख़्लास की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ कम अज़ कम तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनाइये ?

19 झूट से क्या मुराद है ?

20 सब से पहले झूट किस ने बोला ?

21 क्या झूट बोलने की त़रह़ झूट लिखना भी गुनाह है ?

22 अप्रील फ़ूल मनाना कैसा है ?

23 बा'ज़ बच्चे बात बात पर क़समें खाते हैं, इस बारे में क्या हुक्म है ?

24 झूटी क़सम खाना कैसा है ?

25 लोगों को हंसाने के लिये झूटे लत़ीफ़े सुनाना कैसा है ?

26 बा'ज़ बच्चे लत़ीफ़े और झूटी कहानी वाली किताबें पढ़ते हैं इस के बारे में क्या हुक्म है ?

27 क्या मज़ाक़ में झूट बोल सकते हैं ?

28 बा'ज़ वालिदैन बच्चों को डराने के लिये झूटी बातें करते हैं कि फ़ुलां चीज़ आ रही है या बहलाने के लिये कहते हैं कि इधर आओ हम तुम्हें चीज़ देंगे मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता इस का क्या हुक्म है ?

29 बा'ज़ बच्चे मन घड़त ख़्वाब सुनाते हैं उन के बारे में क्या हुक्म है ?

30 क्या येह बात दुरुस्त है कि झूट बोलने वाले के मुंह से बदबू निकलती है ?

31 क्या झूट बोलने का असर दिल पर भी होता है ?

32 झूट बोलने वाले को आख़िरत में क्या सज़ा मिलेगी ?

33 बच्चों के झूट बोलने की चन्द एक मिसालें बयान कीजिये।
34 झूट बोलने के चन्द नुक़्सान बयान कीजिये ?
35 ग़ीबत से क्या मुराद है ?
36 क्या कोई अपने मरे हुवे भाई का गोश्त खा सकता है ?
37 ग़ीबत के चन्द नुक़्सान बयान कीजिये।
38 क्या कोई ऐसा वाक़िआ़ मरवी है जिस से साबित हो कि ग़ीबत करने वाले ने वाक़ेई मुर्दा भाई का गोश्त खाया हो ?
39 चुग़ली से क्या मुराद है ? इस का शरई हुक्म बयान कीजिये।
40 चुग़ली की मज़म्मत के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा बयान कीजिये।
41 ह़सद किसे कहते हैं ?
42 ह़सद का शरई हुक्म बयान कीजिये।
43 ह़सद की मज़म्मत कुरआनो ह़दीस (कम अज़ कम एक आयत और तीन अह़ादीस) की रोशनी में बयान कीजिये।
44 क्या येह दुरुस्त है कि ह़सद बुरे ख़ातिमे का बाइ़स बन सकता है ?
45 बुग़्ज़ो कीना से क्या मुराद है ?

आयतुल कुरसी की फ़ज़ीलत

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर फ़रमाते हुवे सुना : जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी पढ़े उसे जन्नत में दाख़िल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकती और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे, उस के घर को और आस पास के घरों को मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा। (شُعَبُ الْاِیْمان، ٢/٤٥٨، حدیث ٢٣٩٥)

दा'वते इस्लामी

इस बाब में आप पढ़ेंगे

नेकी की दा'वत, दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें, फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा, ब लिह़ाज़े मौज़ूआ़ती तरतीब 40 मदनी इन्आ़मात और दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ात
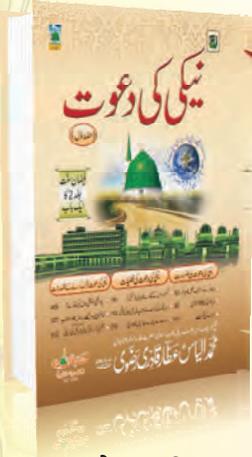
नेकी की दा'वत

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ (پ ۴، ال عمران:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

प्यारे मदनी मुन्नो ! देखा आप ने कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें साबिक़ा तमाम उम्मतों में बेहतर उम्मत इरशाद फ़रमाया है मगर याद रखें हमें बेहतर उम्मत इस लिये नहीं कहा कि इस उम्मत में बड़े बड़े इन्जीनियर, डॉक्टर्ज़, दानिश्वर और दौलत मन्द होंगे। नहीं नहीं बल्कि हम को तो बेहतर उम्मत इस लिये इरशाद फ़रमाया है कि येह उम्मत आपस में नेकी की दा'वत देती है या'नी अच्छी बात का हुक्म करती और बुरी बात से मन्अ़ करती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर दौर में एक ऐसा बन्दा पैदा फ़रमाता है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से नेकी की दा'वत की धूम मचाता है, इन्हीं नेक बन्दों में एक नाम शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का भी है। आप ने ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम सि. 1401 हि. ब मुताबिक़ सितम्बर 1981 ई. में नेकी की दा'वत की धूम मचाने के अ़ज़ीम मक़्सद के तह़त ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" की बुन्याद रखी और देखते ही देखते नेकी की दा'वत की येह अ़ज़ीम तह़रीक दुन्या के 172 से ज़ाइद मुमालिक में फैल चुकी है।

इस मदनी तह्‌रीक ने हर ख़ासो आ़म के सीने में येह अ़ज़ीम जज़्बा बेदार कर दिया है कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ चुनान्चे, इस मक़्सद की तक्मील और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़त बे शुमार मदनी क़ाफ़िले राहे ख़ुदा में घर घर, शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं, मुल्क ब मुल्क सफ़र कर के बे नमाज़ियों को नमाज़ की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की, जाहिलों को इल्म व मा'रिफ़त की, फ़ासिक़ों को तक़्वा की, बुरों को भलाई की और ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की दा'वत देने में मसरूफ़े अ़मल हैं।

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह लोग किस क़दर ख़ुश नसीब हैं जो अपने मुसलमान भाइयों को नेकी की दा'वत देते हैं। उन ख़ुश नसीबों के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّ قَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ﴿۳۳﴾ (پ ٢٤، حم السجدة: ٣٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसलमान हूं।

जब कोई मुसलमान नेकी की दा'वत देता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत जोश में आ जाती है। चुनान्चे, इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो अपने भाई को बुलाए उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से मन्अ़ करे उस की जज़ा क्या है? फ़रमाया : मैं उस की हर बात के बदले एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देते हुवे मुझे ह़या आती है।(1)

नेकी की दा'वत आ़म करने के इस सच्चे जज़्बे के तह़त अमीरे अहले सुन्नत ने अपने मुरीदीन, मुह़िब्बीन, मुतअ़ल्लिक़ीन और अपनी प्यारी तह़रीक दा'वते इस्लामी को एक मदनी मक़्सद अ़ता फ़रमाया है :

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आइये हम सब दा'वते इस्लामी के साथ मिल कर सारी दुन्या में नेकी की दा'वत पहुंचाने का अ़ज़्म करें।

(1) ......مكاشفة القلوب، الباب الخامس عشر فی الامر بالمعروف......الخ، ص ٤٨

दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें

﴾1﴿ दुआ़ए मदीना की बरकत

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई अपनी तौबा का तज़्किरा करते हैं कि मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल बहुत बिगड़ा हुवा इन्सान था। लड़ाई झगड़ा मौल लेना, दूसरों को बिला वजह तंग करना मेरा पसन्दीदा काम था। मेरी बुरी आ़दतों की वजह से मेरे घर वाले और अहले मह़ल्ला सब ही परेशान थे मगर मुझे किसी की कोई परवा न थी यहां तक कि वालिदैन की बात भी न सुनता था। आज के इस पुर फ़ितन दौर के आवारा लड़कों की त़रह़ क़ब्रो आख़िरत से ग़ाफ़िल हो कर बस अपनी मोज मस्ती में मगन अनमोल ज़िन्दगी को बे मक़्सद ज़ाएअ़ कर रहा था कि एक दिन मस्जिद के पास से गुज़रते हुवे प्यास की शिद्दत मुझे मस्जिद में ले गई। मेरा मस्जिद में जाना मेरी ज़िन्दगी में एक अ़ज़ीम इन्क़िलाब बरपा कर गया, मेरी प्यास की शिद्दत तो ख़त्म हो गई मगर मैं रह़मते ख़ुदावन्दी की छमा छम बरसात में भीग कर हमेशा के लिये करमे ख़ुदावन्दी का प्यासा हो गया, हुवा कुछ यूं कि पानी पीते हुवे अचानक एक पुर सोज़ आवाज़ मेरे कानों के पर्दों से टकराई। कोई बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं दुआ़ कर रहा था : अल्लाह मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे। येह अल्फ़ाज़ थे या तरकश से निकले हुवे तीर जो मेरे सीने में पैवस्त होते गए, आ़लमे शुऊ़र में एक मह़शर बरपा हो गया, मुझे अपनी बुरी आ़दात की वजह से गोया अ़ज़ाबे ख़ुदावन्दी आंखों के सामने नज़र आने लगा, बिल आख़िर नदामत के आंसूओं की बरसात ने दिल की सियाही धोना शुरूअ़ की तो ज़मीर की वादियों से येह सदा बुलन्द हुई कि अब मुझे अपनी बुरी आ़दात से जान छुड़ा लेना चाहिये। मैं ने वहीं पुख़्ता इरादा कर लिया कि मुझे भी ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनना है। चुनान्चे, येह नेक जज़्बात लिये घर पहुंचा और वालिदैन की ख़िदमत में अपनी इस नेक आरज़ू का इज़्हार किया तो उन्हें यक़ीन न आया, शायद इसी वजह से ब ख़ुशी इजाज़त देने के बजाए साफ़ साफ़ इन्कार कर दिया। मुझे बे ह़द अफ़्सोस हुवा लेकिन मैं ने कोशिश जारी रखी और बिल आख़िर बड़ी मुश्किल से मान गए और मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में दाख़िला दिला दिया। अब मैं रोज़ाना ज़ौक़ व शौक़ से पढ़ने लगा। यहां

आ कर अस्ल ज़िन्दगी का एहसास हुवा। तलबा के अख़्लाक़ व किरदार और असातिज़ा की सुन्नतों भरी तरबियत की बरकत से मेरे मा'मूलाते ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तब्दीलियां रू नुमा होने लगीं। अख़्लाक़ व किरदार में एक निखार आ गया, नमाज़ों का पाबन्द बन गया, वालिदैन की पहले एक न सुनता था और अब वालिदैन की क़दम बोसी की सआदत पाने वाले खुश नसीबों में शामिल हो गया। कल तक वालिदैन और अहले मह़ल्ला मेरी बुरी ख़स्लतों की वजह से बेज़ार नज़र आते थे, आज मेरे अख़्लाक़ व किरदार की ता'रीफ़ें करने लगे। येह सब मद्रसतुल मदीना में होने वाली तरबियत की बरकत थी कि मैं कुछ ही दिनों में घर और मह़ल्ले वालों की आंखों का तारा बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर ह़ल्क़ा मुशावरत ज़िम्मादार की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत के लिये कोशां हूं।

﴾2﴿ आवारा सोच को ठिकाना मिल गया

मदीनतुल औलिया (मुलतान शरीफ़ पंजाब पाकिस्तान) की बस्ती हाए वाला के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मैं बचपन में बुरी सोह़बत की वजह से गुनाहों की तारीक वादियों में भटक रहा था, बुरे दोस्तों की संगत ने मेरे अख़्लाक़ व किरदार को तबाह कर दिया था, फ़िल्म बीनी का इस क़दर शाइक़ था कि फ़िल्म देखे बिग़ैर चैन आता न वक़्त गुज़रता। मेरे आ'माल की वजह से दूसरों की दिल आज़ारी हो या माल की बरबादी मुझे कुछ परवा न थी, इस गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर कोई नदामत थी न कोई अफ़्सोस। नफ़्सो शैतान के इशारों पर ज़िन्दगी के शबो रोज़ पर लगाए गुज़र रहे थे। शायद ग़फ़्लत, खेल कूद और हंसी मज़ाक़ में दूसरों की खाने पीने वाली अश्या पर हाथ साफ़ करते हुवे ज़िन्दगी यूं ही तमाम हो जाती कि एक दिन मुझ पर मेरे रब का ख़ास करम हो गया। सबब कुछ यूं बना कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई ने वालिद साह़िब पर इनफ़िरादी कोशिश की, कि आप अपने साह़िब ज़ादे को मद्रसतुल मदीना में दाख़िल करवा दें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के अख़्लाक़ व किरदार बेहतर हो जाएंगे। वालिदे मोह़तरम हाथों हाथ तय्यार हो गए और मेरी इस्लाह़ के जज़्बे के तह़त मुझे मद्रसतुल मदीना में दाख़िल करवा दिया। मेरे लिये येह एक अनोखा माह़ोल था, बिल ख़ुसूस मदनी मुन्नों के उ़म्दा अख़्लाक़ और अच्छी आ़दात से मैं मुतअस्सिर हुवे बिग़ैर न रह सका। अल ग़रज़ यहां के सुन्नतों भरे मदनी

माहोल की खुशबूओं से मेरा ज़ाहिर व बातिन मुअत्तर व मुअम्बर होने लगा। मद्रसतुल मदीना की पुर नूर फ़ज़ाओं में आने से क़ब्ल मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ बुरे दोस्तों के साथ मुख़्तलिफ़ शरारतें करते गुज़रते और अब कुरआने मजीद की तिलावत करते हुवे बसर होने लगे, खेल कूद और बुरे दोस्तों से दिल उचाट हो गया, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्तफ़ा की शम्अ़ क्या फ़रोज़ां हुई मुझे इल्मे दीन से प्यार हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल में एक सोज़ो गुदाज़ की कैफ़िय्यत महसूस करने लगा, मेरी वजह से हमेशा दूसरों की आंखों में पानी रहता मगर कभी मेरी आंखों ने आंसूओं का ज़ाइक़ा न चखा था अब येही आंखें ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइस अश्कबारी की चाश्नी से ऐसी आश्ना हुईं कि बस इस इन्तिज़ार में रहती हैं कि कब इन्हें बरसने का कोई मौक़अ़ मिले, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना का रिसाला पुर करने से मेरी बे हूदा फ़िक्रें दूर हो गईं, मेरी आवारा सोच को ठिकाना मिल गया और मैं सुन्नतों का आ़मिल बन गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह सब मद्रसतुल मदीना के सुन्नतों भरे मदनी माहोल का फ़ैज़ान है कि जिस ने मुझे क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी करने वाले ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल की फ़ेहरिस्त में शामिल कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) की सआ़दत पा रहा हूं।

﴾3﴿ आंखों पर ह़या का कुफ़्ले मदीना लग गया

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े लांढी के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मदनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं हर रोज़ नित नए फ़ेशन अपनाने और बद निगाही व बे ह़याई के रेकॉर्ड बनाने में मसरूफ़ रहता। नमाज़ों की पाबन्दी का तो कभी सोचा भी न था, यूं ही दिन रात गुनाहों की दलदल में धंसता जा रहा था कि मेरी सआ़दतों का सफ़र शुरूअ़ हुवा और मैं मदनी माहोल से वाबस्ता अपने एक हम जमाअ़त दोस्त की तरग़ीब पर गाहे गाहे नमाज़ पढ़ने लगा, मज़ीद इनफ़िरादी कोशिश पर मैं मद्रसतुल मदीना में दाख़िला ले कर नूरे कुरआन से मुनव्वर होने वाले ख़ुश नसीब त़लबा में शामिल हो गया। यहां के रूह़ परवर सुन्नतों भरे मदनी माहोल का मदनी रंग मुझ पर चढ़ने लगा, इमामा शरीफ़ का ताज और सफ़ेद मदनी लिबास गोया कि मेरे बदन का हिस्सा बन गया, नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ तहज्जुद की सआ़दत भी पाने लगा और सब से बढ़ कर येह

इन्क़िलाब मेरी ज़िन्दगी में रू नुमा हुवा कि बद निगाही की मुर्तकिब मेरी आंखों पर ह़या का कुफ़्ले मदीना लग गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ असातिज़ा की शफ़्क़त व तरबियत की बरकत से मैं दिल जमई के साथ कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने में मश्ग़ूल हो गया, आख़िर शबो रोज़ की कोशिशें रंग लाईं और मैं 15 माह के क़लील अ़र्से में मुकम्मल ह़ाफ़िज़े कुरआन बन गया।

﴾4﴿ पूरा घराना सुन्नतों का गहवारा बन गया

ज़िल्अ़ गुजरात (पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है कि हमारा घराना बद अ़मली का शिकार था, कोई फ़र्द नमाज़ न पढ़ता जिस की नह़ूसत से एक अ़जब माह़ोल रहता, हर वक़्त फ़िल्मों डिरामों का शोरो गुल थमने का नाम न लेता, किसी को अपनी आख़िरत की फ़िक्र थी न येह परवा कि इसे मरना और अन्धेरी क़ब्र में उतर कर अपनी बद आ'मालियों का ख़मयाज़ा भुगतना है। येह ह़क़ीक़त है कि जब घर के बड़े ही नमाज़ों और नेकी के कामों से दूर हों तो छोटों की इस्लाह़ बहुत बईद है, मेरी क़िस्मत अच्छी थी कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई की तरग़ीब पर मैं ने मद्रसतुल मदीना में दाख़िला ले लिया। असातिज़ा की इस्लाह़ पर मब्नी तरबियत और बा अ़मल त़लबा की सोह़बत की बरकत से सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा मेरे दिल में पैदा हुवा और मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, इस की बरकत से सब घर वाले मेरे अख़्लाक़ व किरदार से मुतअस्सिर होने लगे और मेरी देखा देखी बाक़ी घर वालों ने भी नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। वालिद साह़िब ने दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, घर का गुनाहों भरा माह़ोल रुख़्सत हो गया और अब फ़िल्मों डिरामों की जगह ना'ते मुस्त़फ़ा और अमीरे अहले सुन्नत के बयानात ने ले ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यूं मद्रसतुल मदीना में होने वाली मेरी अख़्लाक़ी तरबियत की बरकत से मेरा पूरा घराना सुन्नतों का गहवारा बन गया और सब लोग दामने अ़त्तार से भी वाबस्ता हो गए।

﴾5﴿ मद्रसे में देख भाल कर दाख़िला लीजिये

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े रन्छोड़ लाइन के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं बद मज़हबों के एक इदारे में पढ़ता था। उन से नजात की सूरत कुछ

यूं बनी कि एक मरतबा माहे रबीउ़ल अव्वल की मुबारक साअ़तों में जब हर सू सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के चर्चे हो रहे थे, गली कूचों को सजाया जा रहा था, घरों में चराग़ां का एहतिमाम हो रहा था, जगह ब जगह मह़ाफ़िले ज़िक्रो ना'त मुन्अ़क़िद हो रही थीं, मगर मेरे मद्रसे वाले थे कि न वहां दरोदीवार को सजाया गया न किसी क़िस्म के चरागां का एहतिमाम हुवा, मज़ीद येह कि जब बारह रबीउ़ल अव्वल के मुबारक दिन इन्हों ने बच्चों को मीलाद के जुलूस में शरीक होने से रोकने के लिये छुट्टी न दी तो मेरे वालिदे मोह़तरम को तशवीश हुई कि येह कैसे लोग हैं जो न तो ख़ुद सरकारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यौमे विलादत की ख़ुशी मनाते हैं और न ही दूसरों को मनाने देते हैं। लिहाज़ा फ़ौरन मुझे उस इदारे से निकाल कर मीलाद शरीफ़ मनाने वाले आ़शिक़ाने रसूल के इदारे या'नी मद्रसतुल मदीना में दाख़िल करवा दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मद्रसतुल मदीना में होने वाली अख़्लाक़ी तरबियत की बरकत से मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई और मैं सुन्नतों का शैदाई बन गया। ता दमे तह़रीर तन्ज़ीमी तरकीब से ज़ैली मुशावरत के ख़ादिम की ह़ैसिय्यत से दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल हूं।

﴾6﴿ कमसिन मुबल्लिग़!

लांढी (बाबुल मदीना कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के मक्तूब का ख़ुलासा है : येह उन दिनों की बात है जब मैं चौथी जमाअ़त का त़ालिबे इ़ल्म था। हमारी क्लास में एक त़ालिबे इ़ल्म ऐसा भी था जो फ़ारिग़ अवक़ात में हमें अच्छी अच्छी बातें बताता और इन पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाता था। एक रोज़ मैं ने उस से पूछा : आप येह प्यारी प्यारी बातें कहां से सीखते हैं ? इस पर उस कमसिन मुबल्लिग़ ने बताया कि मैं अपने अ़लाक़े की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाता हूं, वहां हर रोज़ नमाज़े मग़रिब के बा'द "फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स होता है, मैं उसे बग़ौर सुनता हूं और येह प्यारी प्यारी बातें वहीं से सीखता हूं। येह जवाब सुन कर मैं बेह़द मुतअस्सिर हुवा और मैं ने भी अपने मह़ल्ले की मस्जिद में जाना शुरूअ़ कर दिया, मग़रिब की नमाज़ के बा'द वहां भी दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत होता था, मैं उस में बाक़ाइ़दगी से शिर्कत करने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

सुन्नतों भरे दर्स की बरकत से मेरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद हो गया, जब से दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्तगी नसीब हुई मैं न सिर्फ़ नमाज़ों का पाबन्द बन गया बल्कि मेरे सब काम संवर गए। मदनी माह़ोल में आने से क़ब्ल मैं ता'लीमी सरगर्मियों में निहायत कमज़ोर था लेकिन मदनी माह़ोल से क्या वाबस्ता हुवा ता'लीमी मैदान में पोज़ीशन होल्डर बन गया। इस वक़्त मैं एक प्राईवेट फ़र्म में डिपटी मेनेजर के फ़राइज़ सर अन्जाम दे रहा हूं और अपने दफ़्तरी अवक़ात में (वक़्फ़े के दौरान) अपने मुलाज़िमीन इस्लामी भाइयों को भी दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने की कोशिश करता हूं।

﴾7﴿ सुब्ह़ का भूला शाम को घर आ जाए तो!

हैदराबाद (सिंध पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई अपने बचपन के मुतअ़ल्लिक़ कुछ यूं बयान करते हैं कि 12 साल की उ़म्र में मुझ पर अच्छे काम करने का जुनून सुवार था मगर इल्मे दीन से दूरी की बिना पर येह न जानता था कि अच्छे काम हैं कौन कौन से? ह़ुस्ने इत्तिफ़ाक़ से मेरे मामूं जान ने ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की निय्यत से अपने बच्चों के साथ मुझे भी मद्रसतुल मदीना में दाख़िल करवा दिया। यहां दीनी मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना, नमाज़ों का ज़ौक़ और सुन्नतों की बरकतें ह़ासिल हुईं। सर पर सब्ज़ इमामे शरीफ़ का ताज सजा तो बदन पर सफ़ेद लिबास। यूं सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने लगा। बद क़िस्मती से घर वालों और दोस्त अह़बाब की त़न्ज़िय्या गुफ़्त्गू की वजह से मेरा दिल टूट गया, ऐसे में शैत़ान ने अपना भर पूर वार किया और मुझे दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से दूर बुरे दोस्तों की सोह़बत में फेंक दिया, एक अ़र्से तक भटकता रहा, अपने नामए आ'माल को गुनाहों से सियाह करता रहा। एक दिन अचानक इस बात का एह़सास हुवा कि मुझ से इतना प्यारा नेकियों भरा मदनी माह़ोल क्यूं छूट गया? फिर कुछ इस्लामी भाइयों ने भी इनफ़िरादी कोशिश की। यूं मैं दोबारा मद्रसतुल मदीना में दाख़िल हो गया और दिल जमई से क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने में मश्ग़ूल हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़िफ़्ज़ मुकम्मल करने के बा'द एक अ़र्से तक मद्रसतुल मदीना में मुदर्रिस के फ़राइज़ सर अन्जाम देने की सआ़दत ह़ासिल की और ता दमे तह़रीर मद्रसतुल मदीना में नाज़िम के मन्सब पर फ़ाइज़ हूं और एक ह़लक़े का ज़िम्मेदार होने के साथ साथ इमामत की भी सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

﴾8﴿ मदनी मुन्ने की दा'वत

मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) के अ़लाक़े न्यू नेशनल टाऊन में मुक़ीम इस्लामी भाई के मक्तूब का लुब्बे लुबाब है कि मैं एक वर्कशॉप में मुलाज़िम था। एक रोज़ मेरी एक पुराने दोस्त से मुलाक़ात हुई तो उसे देख कर ह़ैरत के मारे मेरी आंखें खुली की खुली रह गईं कि मेरा वोह दोस्त जो कल तक नित नए फ़ेशन का शौक़ीन और ठट्ठा मस्ख़री करने वाला था, बिल्कुल ही बदल चुका है। उन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज सजा हुवा था और जिस्म पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिन्डली तक सफ़ेद कुरता, चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी शरीफ़ ने मज़ीद उन की शख़्सिय्यत को निखार दिया था। मेरे चेहरे पर ह़ैरानी के आसार देख कर उन्हों ने अपनी इस तब्दीली का राज़ यूं आश्कार किया कि कुछ अ़र्से क़ब्ल मेरी मुलाक़ात एक ऐसे नौजवान से हुई जो दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे। उन का अन्दाज़ कुछ ऐसा दिल मोह लेने वाला था कि मैं उन से वक़्तन फ़ वक़्तन मिलने लगा। उस आ़शिक़े रसूल की सोह़बत में मुझे इस्लाह़ के प्यारे प्यारे मदनी फूल मिलते। कई बार उन्हों ने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत भी पेश की। आख़िर एक रोज़ मुझे शिर्कत की सआ़दत मिल ही गई। उन दिनों मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) में हफ़्तावार इजतिमाअ़ हर जुमा'रात को जामेअ़ मस्जिद ह़नफ़िय्या (सो डीवाल मुलतान रोड) में होता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इजतिमाअ़ में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने मेरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। जिसे देख कर आप ह़ैरत ज़दा हैं। मेरा तो आप की ख़िदमत में मदनी मश्वरा है कि आप भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कर के देखें, कैसी बहारें नसीब होती हैं। उस इस्लामी भाई का बयान है कि मैं ने निय्यत तो की मगर बद क़िस्मती से जा न सका। मेरे छोटे भाई ने दा'वते इस्लामी के क़ाइम कर्दा मद्रसतुल मदीना में क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल की थी। उन को पढ़ाने वाले उस्ताद साह़िब के 12 सालह बेटे जो मेरे भाई से मुलाक़ात के लिये आते रहते थे। वोह जुमा'रात को जब कभी हमारे घर आते तो बड़ी अपनाइय्यत से इजतिमाअ़ की दा'वत पेश फ़रमाते। मैं टाल मटोल कर देता मगर वोह जुमा'रात को आ पहुंचते और इसरार करते। आख़िरे कार एक रोज़ वोह कामयाब हो ही गए और मैं उन के हमराह दा'वते

इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जा पहुंचा। मैं ने पहली बार इतने नौजवान सुन्नतों भरे लिबास में मल्बूस सब्ज़ इमामा सजाए देखे थे। उन की मुस्कुराहट व मुलाक़ात का प्यार भरा अन्दाज़ मैं भुला न सका फिर जब सुन्नतों भरा बयान सुना और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ में शिर्कत की तो मेरे तारीक दिल में इश्क़े रसूल की ऐसी शम्अ़ रोशन हुई कि कुछ ही अ़र्से में न सिर्फ़ चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी सजा ली बल्कि सब्ज़ इमामे का ताज भी सर पर सज गया। मैं सिलसिलए नक़्श बन्दिय्या में मुरीद था मज़ीद फ़ुयूज़ो बरकात के हुसूल के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या में त़ालिब भी हो गया हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल की बरकतों को दुन्या भर में आ़म करे कि जिस ने मुझ से गुनहगार इन्सान को अ़मल का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाया और मैं अपने दोस्त और अपने भाई के दोस्त मदनी मुन्ने का बहुत शुक्र गुज़ार हूं जिन की इनफ़िरादी कोशिश से मैं हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुवा और मेरी ज़िन्दगी आ'माले सालेह़ा के नूर से मुनव्वर हो गई।

﴾9﴿ बाबे रह़मत खुला

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े खोखरापार मलीर तौसीई कोलोनी के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बड़ा फ़ज़्लो करम था क्यूंकि मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर था और मैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद भी था येही वजह थी कि मैं नमाज़ रोज़ों का पाबन्द, बा इमामा, बा रीश, सफ़ेद लिबास में मल्बूस, सुन्नतों से न सिर्फ़ मह़ब्बत करने वाला बल्कि सुन्नतें अपनाने वाला मुआ़शरे का एक बा किरदार मुसलमान बन चुका था। दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत किया करता था और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना और सुनना मेरे रोज़ मर्रा के मा'मूलात का एक ह़िस्सा था, अ़लाक़े में कितने ही लोग थे जो मेरी इनफ़िरादी कोशिश से दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर बन चुके थे,

लेकिन इस के बा वुजूद जब मैं अपने बड़े भाई को देखता तो बहुत कुढ़ता क्यूंकि वोह यादे इलाही से ग़ाफ़िल दुन्या की रंगीनियों में मस्त ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, नमाज़ रोज़ों की अदाएगी तो दूर की बात वोह तो ईद की नमाज़ पढ़ने के लिये भी तय्यार न होते थे, बल्कि फ़िल्मों, डिरामों और गाने बाजों में ही दिलचस्पी रखते थे, मैं ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा अ़ज़ीम मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के तह़्त बारहा उन की इस्लाह़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश की मगर उन पर मेरी बातों का कोई ख़ास असर न हुवा। एक मरतबा हमारे घर में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की केसिट "क़ब्र की पुकार" चल रही थी, उस दिन बड़े भाई भी अपने कमरे में बैठे बयान सुन रहे थे, एक वलिय्ये कामिल के दर्द मन्दाना और पुर तासीर अल्फ़ाज़ उन के दिल पर असर कर गए, उन्हों ने अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और नमाज़ रोज़ों का एहतिमाम शुरूअ़ कर दिया। मैं ने उन के अन्दर येह तब्दीली देखी तो मौक़अ़ ग़नीमत जानते हुवे उन्हें दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत के लिये अपने साथ ले जाने लगा और यूं आहिस्ता आहिस्ता वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए, सर पर इमामा शरीफ़ का ताज, चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सफ़ेद मदनी लिबास भी अपना लिया और यूं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के एक बयान की बरकत से देखते ही देखते हमारा सारा घर मदनी रंग में रंग गया, ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के तीन बेटे हि़फ़्ज़े कुरआने करीम की सआ़दत ह़ासिल कर चुके हैं और इन में से एक तो यके बा'द दीगरे तीन बार 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में भी सफ़र कर चुके हैं और बड़ी बेटी अ़लाक़ाई सत़्ह़ पर इस्लामी बहनों की ज़िम्मेदार हैं।

सूरए दुख़ान की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी पंज सूरह में सूरए दुख़ान की फ़ज़ीलत में नक़्ल फ़रमाते हैं : (1) जो किसी रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा तो सुब्ह़ होने तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करते रहेंगे। (ترمذی، ۴/۴۰۶،حدیث:۲۸۹۷) (2) जो जुमुआ़ के दिन या रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये एक घर बनाएगा। (المعجم الکبیر، ۸/۲۶۴،حدیث:۸۰۲۶)

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये : क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

(माइक इस्ति'माल न करें, बिग़ैर माइक के भी आवाज़ धीमी रखें, किसी नमाज़ी वग़ैरा को तशवीश न हो)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ　　وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللہ　　وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللہ

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये :

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف　तर्जमा : मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

फिर इस त़रह़ कहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स सुनिये। इधर उधर देखते हुवे, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुवे, लिबास बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुवे सुनने से हो सकता है इस की बरकत जाती रहें। (बयान के आग़ाज़ में भी क़रीब क़रीब आ जाइये कह कर इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइये) येह कहने के बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत से देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये । आयात व अ़रबी इबारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िये । किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राए से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये ।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्स व बयान के आख़िर में बिला कमी-बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा के हु़सूल के लिये हर हफ़्ते को इशा की नमाज़ के बा'द अमीरे अहले सुन्नत का मदनी मुज़ाकरा देखने, सुनने और हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ब निय्यते सवाब सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है, इशा के बा'द बेशक वहीं आराम फ़रमा लीजिये और अल्लाह पाक तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद भी अदा कीजिये । हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ "नेक बनने का नुस्ख़ा" बनाम मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा ।

आख़िर में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (या'नी जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुवे बिला कमी-बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :
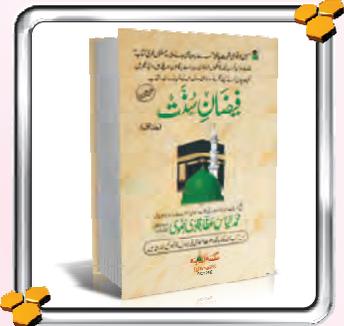
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। या अल्लाह पाक! दर्स की ग़लतियां और तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा, हमें आशिक़े रसूल, परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। या अल्लाह पाक! हमें मदनी इन्आमात पर अमल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। या अल्लाह पाक! मुसलमानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, झूटे मुक़द्दमों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़ता फ़रमा। या अल्लाह पाक! इस्लाम का बोल बाला कर। या अल्लाह पाक! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। या अल्लाह पाक! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। या अल्लाह पाक! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबारका पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٥٦ (پ٢٢، الاحزاب:٥٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो इन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝١٨٠ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٨١ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٢ (پ٢٣، الصفت:١٨٠ تا ١٨٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को उन की बातों से और सलाम है पैग़म्बरों पर और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहां का रब है।

(आख़िर में कलिमा पढ़ कर सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुंह पर दोनों हाथ फेर लीजिये।)

बलिहाज़े मौज़ूआती तरतीब चालीस मदनी इन्आमात

हर अच्छे काम की निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आम

- ...... क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरग़ीब दिलाई ?

इबादात से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आमात

- ...... पांचों नमाज़ें बा इमामा तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त मस्जिद में अदा करते हैं या नहीं ?
- ...... आप ने नमाज़े पंजगाना के बा'द और सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुरसी और तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ने का मा'मूल बनाया है या नहीं ?
- ...... रोज़ाना कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं या नहीं ?

इल्म सीखने सिखाने से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आमात

- ...... रोज़ाना कम अज़ कम एक घन्टा अपने घर पर सबक़ याद करते हैं या नहीं ?
- ...... रोज़ाना दो दर्स (मस्जिद, घर जहां सहूलत हो) देते या सुनते हैं या नहीं ?
- ...... क्या आप को ईमाने मुजमल, ईमाने मुफ़स्सल, छे कलिमे मअ़ तर्जमा और कुरआन की आख़िरी दस सूरतें याद हैं ? इन्हें हर माह की पहली पीर को पढ़ लेते हैं या नहीं ?

अख़्लाक़िय्यात से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आमात

किसी का नाम बिगाड़ना

- ...... किसी का नाम बिगाड़ना हुक्मे कुरआनी के ख़िलाफ़ है। किसी को (बिला इजाज़ते शरई) लम्बा, ठिगना, मोटा वग़ैरा तो नहीं कहते ?

किसी को ह़क़ीर जानना

...... किसी मज़्मून में आप की मा'लूमात ज़ियादा होने की सूरत में हो सकता है कम मा'लूमात वाला आप को ह़क़ीर लगे । इस त़रह़ का वस्वसा आने की सूरत में आप ख़ुद को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डराते हैं या नहीं ?

तू तुकार की आ़दत

...... ख़ुदा न ख़्वास्ता तू तुकार की आ़दत तो नहीं ? ख़्वाह एक दिन का बच्चा भी हो उस से आप कह कर मुख़ात़िब हों पीछे से भी जम्अ़ का सीग़ा इस्ति'माल करें । मसलन ज़ैद आया, ज़ैद कहता था कि जगह ज़ैद आए, ज़ैद कहते थे वग़ैरा ।

हंसने की आ़दत

...... क्या आज आप ने ह़त्तल इमकान क़ह्क़हा लगाने (या'नी खिल खिला कर हंसने) से बचने की कोशिश की ? (ज़रूरतन मुस्कुराना सुन्नत है)

बदला लेना या मुआ़फ़ करना

...... किसी पर ग़ुस्सा आ जाने की सूरत में चुप रह कर ग़ुस्से का इलाज करते हैं या बोल पड़ते हैं ?(اَعُوْذُ بِاللّٰه वग़ैरा पढ़ सकते हैं) नीज़ दरगुज़र से काम लेते हैं या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ़ ढूंडते हैं ?

...... किसी ने अगर आप की शिकायत (उस्ताद या वालिदैन वग़ैरा से) कर दी तो आप भी बदला लेने के लिये मौक़अ़ का इन्तिज़ार करते हैं या दुरुस्त शिकायत पर शुक्रिया अदा करते और ग़लत़ शिकायत पर मुआ़फ़ फ़रमा कर सवाब का ख़ज़ाना ह़ासिल करते हैं ?

मांगने की आ़दत

...... आप में कहीं दूसरे इस्लामी भाइयों से मांग मांग कर उन की चीज़ें इस्ति'माल करने की गन्दी आ़दत तो नहीं ? (दूसरों से सुवाल की आ़दत निकाल दीजिये ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास ब ह़िफ़ाज़त रखिये)

ग़ीबत, चुग़ली और ह़सद

...... क्या आप को ग़ीबत, चुग़ली और ह़सद की ता'रीफ़ मा'लूम है ? इन रज़ाइल और ज़िद, त़न्ज़, हंसी मज़ाक़ से आप बचते हैं या नहीं ?(1) किसी के अन्दर कोई ख़ामी या बुराई हो उसे उस की पीठ पीछे बयान करना ग़ीबत कहलाता है जो कि गुनाहे कबीरा है। किसी के लिबास को पीछे से बे ढंगा, मैला वग़ैरा कहा, या कहा कि उस की आवाज़ बेकार है येह सब ग़ीबत में दाख़िल है। जब कि वोह बुराई या ख़ामी या ख़राबी उस में मौजूद हो और अगर न हो तो बोहतान है जो ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह है। किसी का ह़ाफ़िज़ा अच्छा हो या अच्छी आवाज़ में ना'त पढ़ता हो तो उस के बारे में येह तमन्ना करना कि उस का ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर पड़ जाए या उस की आवाज़ ख़राब हो जाए येह ह़सद में दाख़िल है। ह़सद करना गुनाह है। ह़दीसे पाक में है "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को"(2)

सच और झूट

...... क्या आप हमेशा सच बोलते हैं, बिला ह़ाजते शरई तौरिया तो नहीं कर बैठते। तौरिया या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिरी मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर इस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं। ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है। तौरिया की मिसाल येह है कि आप ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है मैं ने खाना खा लिया इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है। येह भी झूट में दाख़िल है।(3)

दिल आज़ारी

...... सबक़ सुनाते वक़्त अगर कोई इस्लामी भाई ग़लत़ी कर बैठे तो आप हंस कर उस की दिल आज़ारी तो नहीं कर बैठते ? अगर आप कभी ऐसी भूल कर बैठे तो अपने उस इस्लामी भाई को राज़ी कर लें। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1...... बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16 से ग़ीबत, चुग़ली और ह़सद का बयान पढ़ या सुन लीजिये।

٢...... ابوداود، ٤/٣٦٠، حدیث: ٤٩٠٣

٣...... عالمگیری، ٥/٣٥٢ ملخصًا

फ़रमाते हैं : जिस ने (बिला वजहे शरई) किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी ।[1]

सलाम को आ़म करना

- ...... घर, बस, ट्रेन मद्रसे वग़ैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुवे राह में खड़े या बैठे हुवे मुसलमानों को सलाम करने की आ़दत बनाई है या नहीं ? (मद्रसे में जो जो सुन्नतें सिखाई जाती हैं घर में भी उन पर अ़मल जारी रखें)

लिबास के मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

- ...... सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिंडली तक (सफ़ेद) कुरता, सामने जेब में नुमायां मिस्वाक और टख़्नों से ऊंचे पाइंचे, सर पर ज़ुल्फ़ें, सारा दिन इमामा शरीफ़ (घर में भी और बाहर भी) सजाने का मा'मूल है या नहीं ?
- ...... फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 221 पर दिये हुवे त़रीक़े के मुताबिक़ (बाहर और घर में) पर्दे में पर्दा की आ़दत डाली है या नहीं ? (सोते वक़्त पाजामा पर मज़ीद एक चादर तहबन्द की त़रह़ बांध लें और एक चादर ऊपर से भी औढ़ लें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पर्दे में पर्दा हो जाएगा)

आंखों के क़ुफ़्ले मदीना से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

- ...... किसी से बात करते वक़्त अकसर आप की निगाह नीची होती है या मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं उस) के चेहरे पर ? (बात करते हुवे सामने वाले के चेहरे पर निगाहें गाड़ना सुन्नत नहीं) नीज़ क्या आज आप ने अपने घर के बर आमदों से (बिला ज़रूरत) बाहर नीज़ किसी और के दरवाज़ों वग़ैरा से उन के घरों के अन्दर झांकने से बचने की कोशिश की ?
- ...... घर या होटल वग़ैरा में T.V या V.C.R या मोबाइल वग़ैरा पर फ़िल्में डिरामे तो नहीं देखते ? (फ़िल्में डिरामे हरगिज़ न देखा करें । जो अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करता है क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भरी जाएगी । (TV) और (V.C.R) पर फ़िल्में और डिरामे देखने से ह़ाफ़िज़ा

---

[1] ...... المعجم الاوسط، ۲/۳۸۶، حدیث:۳۶۰۷

भी कमज़ोर हो सकता है, उ़मूमन नाबीना बच्चे जल्द ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बन जाते हैं इस लिये कि वोह आंखों के ग़लत़ इस्ति'माल से बचे रहते हैं लिहाज़ा उन का ह़ाफ़िज़ा क़वी होता है। आप भी आंखों के ग़लत़ इस्ति'माल से बचें और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगाएं)

ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

...... जब तक दूसरा बात कर रहा हो आप इत़्मीनान से सुनते हैं या उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ कर देते हैं ? नीज़ बहुत सों की आ़दत होती है कि बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख़्ता "हैं ?" या "क्या ?" वग़ैरा बोल कर दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़ह़मत देते हैं आप की भी तो कहीं येह आ़दत नहीं ?

...... ज़बान पर क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुवे ग़ैर ज़रूरी बातों की आ़दत निकालने और ख़ामोशी की आ़दत बनाने की कोशिश जारी है या नहीं ? नीज़ आप कुछ न कुछ इशारे से भी और रोज़ाना कम अज़ कम चार बार लिख कर भी गुफ़्तगू फ़रमाते हैं या नहीं ? नीज़ फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में बत़ौरे कफ़्फ़ारा फ़ौरन दुरूदे पाक पढ़ने की आ़दत बनाई है या नहीं ? (उ़मूमन गूंगे होशियार होते हैं कि वोह ज़बान के ग़लत़ इस्ति'माल से मह़फ़ूज़ रहते हैं। आप भी ज़बान पर क़ुफ़्ले मदीना लगा लें ताकि फ़ुज़ूल गोई से बच सकें)

खाना खाने के मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

...... घर (या मद्रसे वग़ैरा) का हर खाना सब्रो शुक्र के साथ तनावुल फ़रमा लेते हैं या पसन्द न आने पर مَعَاذَاللّٰه नापसन्दीदगी का इज़्हार करते हैं ? (खाने को ऐ़ब लगाना सुन्नत नहीं और मुंह न बिगाड़ें)

...... खाना ह़त्तल इमकान सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाते, नीचे गिरे हुवे दाने वग़ैरा चुन कर खा लेते, हड्डियां, गर्म मसालहा वग़ैरा नीज़ खाने के बा'द उंगलियां सब अच्छी त़रह़ चाट लेते और बरतन धो कर पी लेते हैं या नहीं ? (धोना उसी वक़्त कहेंगे जब कि खाने का असर बरतन में बाक़ी न रहे) नीज़

खाने से फ़रागत के बा'द बरतन उठाने, दस्तरख़्वान साफ़ करने और थाल वग़ैरा धोने के मुआमले में दूसरों से कहीं उलझते तो नहीं ? मद्रसे के नाज़िम साहिब सफ़ाई वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ वक़्तन फ़ वक़्तन जो हिदायात देते हैं आप उन पर अ़मल करते हैं या नहीं ?

सोने जागने के आदाब के मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़म

- ...... बा'द नमाज़े इशा (इल्मी मशाग़िल वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर) जल्द तर सोने की आ़दत डालें । जब आप को नमाज़ के लिये या यूं ही जगाया जाता है तो फ़ौरन उठ जाते हैं या दोबारा लैट जाते हैं या बैठे बैठे ऊंघ जाते हैं ? ऐसा कितनी बार होता है ? जब सो कर उठते हैं (चाहे बार बार बिछौना छोड़ना पड़े) हर बार बिछौना लपेट लेते हैं या नहीं ? सोने का वक़्त ख़त्म हो जाने पर बिछौना तह कर के उस की जगह पर रखते हैं या वहीं पड़ा रहने देते हैं ?

बडो़ं की इताअ़त के मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

- ...... मदनी मर्कज़, निगरान, उस्ताद और वालिदैन की (येह सब जब तक ख़िलाफ़े शरअ़ करने का हुक्म न दें) इताअ़त फ़रमाते हैं या नहीं ? नीज़ क्या आज आप ने यक्सूई के साथ फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुहासबा) करते हुवे जिन जिन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल हुवा उन की रिसाले में ख़ाना पुरी फ़रमाई ?
- ...... रोज़ाना कम अज़ कम किसी एक नमाज़ के बा'द अपने मां बाप और अपने क़ारी साहिब के लिये अच्छी अच्छी दुआ़एं करते हैं या नहीं ? नीज़ क्या आज आप ने घर में मदनी माह़ोल बनाने के मदनी फूलों के मुताबिक़ मुमकिना सूरत में अ़मल किया ? (वालिदैन और उस्ताद को आता देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएं, वालिदैन और उस्ताद के सामने हमेशा आवाज़ पस्त रखें, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाएं, अपने उस्ताद साहिब बल्कि किसी के भी पीछे से नक़्लें न उतारें)

मद्रसा व असातिज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

- ...... उस्ताद व मुन्तज़िमीन की कोई बात अगर नागवार गुज़रे तो सब्र करते हैं या مَعَاذَاللّٰه दूसरों पर इस का इज़्हार करने की नादानी कर बैठते हैं ? मद्रसे के इन्तिज़ामात की कमज़ोरियों का बयान इन्तिज़ामिया के इलावा

किसी और के आगे करना बहुत बुरी बात है। नीज़ अगर किसी इस्लामी भाई की कोई बात नागवार ख़ातिर हो या वोह ख़ता कर बैठे तो इस का दूसरों पर इज़्हार करने के बजाए अह़्सन त़रीक़े पर ख़ुद ही उस की इस्लाह़ फ़रमा दें।

- ...... मद्रसे के निज़ामुल अवक़ात की पाबन्दी फ़रमाते हैं या नहीं ? वक़्त पर पहुंच कर आख़िरी पीरियड तक पढ़ाई करते और अस्बाक़ याद करते हैं या इधर उधर की बातों में वक़्त ज़ाएअ़ कर देते हैं ? किसी पीरियड में उस्ताद साह़िब या मुन्तज़िमीन की इजाज़त लिये बिग़ैर चुपके से घर वग़ैरा तो नहीं चले जाते ? (मुक़ीम त़लबा के लिये दिन हो या रात बाहर जाने के लिये हर वक़्त इजाज़त लेना लाज़िमी है)
- ...... आप ने इस माह (मद्रसे की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा छुट्टियों के इलावा) बिला ज़रूरत व बिग़ैर मजबूरी के छुट्टी तो नहीं की ?
- ...... क्या आप अपने उस्तादे मोह़्तरम से (مَعَاذَاللہ) इम्तिह़ानन भी सुवालात करते हैं ? नीज़ आप की مَعَاذَاللہ सुन्नी उ़लमा पर तन्क़ीद की आ़दत तो नहीं ? (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं जो सुन्नी आ़लिम की तजहील करे या उस पर नुक्ता चीनी करे उस से मैं बेज़ार हूं। फिर तन्क़ीद करने वाला ख़्वाह उस्ताद हो या शागिर्द)

दा'वते इस्लामी से मुतअ़ल्लिक़ मदनी इन्आ़मात

- ...... आप बा अ़मल ह़ाफ़िज़े क़ुरआन या आ़लिमे बा अ़मल बनने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हैं। लिहाज़ा आप अपने वालिद वग़ैरा के हमराह (बालिग़ मदनी मुन्ने तन्हा या क़ाफ़िले के साथ) हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शुरूअ़ (तिलावत व ना'त) से ले कर (मअ़ ज़िक्रो दुआ़ व ह़ल्क़ा) आख़िर तक ह़त्तल इमकान निगाहें नीची किये सुनते हैं या नहीं ?
- ...... क्या आप ने तन्हा या केसिट इजतिमाअ़ में कम अज़ कम एक बयान या मदनी मुज़ाकरे की ऑडियो / वीडियो केसिट बैठ कर सुनी या देखी या मदनी चैनल पर रोज़ाना कम अज़ कम 1 घंटा 12 मिनट नशरियात देखीं ?
- ...... हफ़्ते में बयान की कम अज़ कम एक केसिट बैठ कर तवज्जोह के साथ सुनते हैं या नहीं ? (अगर मुयस्सर हो तो हफ़्तावार केसिट इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमा लिया करें)

किरदार को उ़म्दा बनाने से मुतअ़ल्लिक़ मुतफ़र्रिक़ मदनी इन्आ़मात

- ...... क्या आप ने इस माह की पहली पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी

भी पीर शरीफ़) को रिसाला "ख़ामोश शहज़ादा" का मुतालआ फ़रमा कर फ़ुज़ूल गोई से बचने की आदत बनाने के लिये "यौमे कुफ़्ले मदीना" मनाया ? नीज़ क्या आप ने पिछले महीने का मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाया ?

...... आप ने अपना आईडियल (मिसाली शख़्सिय्यत) किस को बनाया है ? (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के आईडियल आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت हैं)

...... आप ने किसी एक या चन्द मदनी मुन्नों से दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ यक्सां तअल्लुक़ात रखे हैं । (बात बात पर रूठना, बार बार एक ही दोस्त को तोहफ़े देना, उस के नाराज़ होने पर या न आने पर रोना सिर्फ़ उसी को पर्चियां लिखते रहना उसी जैसा लिबास वग़ैरा इस्ति'माल करना, वोह इजतिमाअ में आए तो आना वोह न आए तो ख़ुद भी न आना वग़ैरा येह सब अन्दाज़ मुनासिब नहीं)

...... مَعَاذَ الله आप के लिबास या मद्रसे के बस्ते वग़ैरा पर जानदारों की तसावीर या जानवरों के स्टीकर्ज़ तो नहीं हैं ? (बिस्किट, सुपारी, या चूईंगम वग़ैरा के पेकेट में से जो जानदारों की तसावीर वाले स्टीकर्ज़ निकलते हैं उन्हें दरवाज़े, दीवार वग़ैरा पर चस्पां तो नहीं कर डालते ?)

...... आप की बिल्ली या कुत्ते को सताने या च्यूंटियां मार डालने की आदत तो नहीं ? (कुत्ते या बिल्ली वग़ैरा को न मारें, न सताएं कि जानवर पर ज़ुल्म करना मुस्लिम पर ज़ुल्म करने से बड़ा गुनाह है । एक हदीसे पाक में येह वाक़िआ बयान किया गया है कि एक औरत इस लिये जहन्नम में दाख़िल कर दी गई कि उस ने बिल्ली को बन्द कर दिया, न ख़ुद कुछ खिलाया न आज़ाद किया कि वोह कुछ खा लेती बिल्ली बेचारी भूक से मर गई ।)[1]

...... फलों वग़ैरा के छिलके ला परवाही के साथ गली में फेंकने की आदत तो नहीं (केले या पपीते के छिलके या कांच वग़ैरा ऐसी जगह पर न डालें जहां लोगों को तक्लीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो । बल्कि ऐसी चीज़ें रास्ते में नज़र आएं तो इन को हटा देना सवाब है । हदीसे पाक में येह मज़मून मौजूद है कि एक शख़्स ने रास्ते में पड़ी हुई कांटेदार शाख़ रास्ते से दूर कर दी ताकि मुसलमानों को तक्लीफ़ न पहुंचे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उस का येह अमल पसन्द आ गया और उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी ।[2])

---

[1] ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب خمس من الدواب...الخ، ۲/۴۰۸، حدیث:۳۳۱۸

[2] ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب فضل ازالة الاذی...الخ، ص ۱۴۱۰، حدیث:۱۹۱۴

दा'वते इस्लामी की इस्तिलाहात

इस्लामी भाइयों और बहनों की ख़िदमत में मदनी मश्वरा है कि वोह ज़ैल में दिये हुवे कलिमात ज़ेह्न नशीन करें और गुफ़्तगू, बयान, तहरीर वग़ैरा हर जगह इस्ति'माल करें ताकि दा'वते इस्लामी की हमागीरी का इज़्हार हो। दौराने गुफ़्तगू मख़्सूस अल्फ़ाज़ व इस्तिलाहात का इस्ति'माल इन्सान को नुमायां करता है।

येह अल्फ़ाज़ न कहें	येह अल्फ़ाज़ कहें	येह अल्फ़ाज़ न कहें	येह अल्फ़ाज़ कहें
एक साल का क़ाफ़िला	12 माह का मदनी क़ाफ़िला	मर्कज़ी इस्लामी भाई	ज़िम्मेदार इस्लामी भाई
मैं ने तीस दिन लगाए	मैं ने 30 दीन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया	V.I.P	शख़्सिय्यत
एक माह का क़ाफ़िला	30 दिन का मदनी क़ाफ़िला	केम्प / रूम / दफ़्तर	मक्तब
क़ाफ़िले में निकलो	क़ाफ़िले में सफ़र करो	मीटिंग/ इजलास	मदनी मश्वरा
फ़िक्र करें	ज़ेह्न बनाएं	मीटिंग का एजन्डा	मदनी मश्वरे के मदनी फूल
फ़ौरन	हाथों हाथ	रिपोर्ट	कारकर्दगी
क़ाफ़िले में आने वाले मेहमान	आशिक़ाने रसूल	वर्किंग/ वर्क	मदनी काम
क़ाफ़िले वालों के ख़िदमत गुज़ार	ख़ैर ख़्वाह	वर्कर	मदनी काम करने वाला
क़ाफ़िले वालों की ख़िदमत	ख़ैर ख़्वाही	सेटिंग	तरकीब
आलमी / वर्ल्ड शूरा	मर्कज़ी मजलिसे शूरा	कनवेन्स करना	ज़ेह्न बनाना / समझाना
ज़ोन निगरान	डिवीज़न मुशावरत निगरान	मेह्नत करें	कोशिश करें
शहर की निगरान कमीटी	शहर की मजलिसे मुशावरत	इन्सान, बन्दे, लोग, भाई , लड़के	इस्लामी भाई

राबित़ा कमीटी	मजलिसे राबित़ा	औरतें, लेडीज़, ख़वातीन, बहनें	इस्लामी बहन / इस्लामी बहनें
दा'वते इस्लामी की फ़ुलां टीम / कमीटी	मजलिस	ख़वातीन का इजतिमाअ़	इस्लामी बहनों का इजतिमाअ़
मह़फ़िले ना'त / ना'त ख़्वानी का प्रोग्राम	इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त	ख़ित़ाब, तक़रीर, लेकचर	बयान
मर्कज़ी ना'त ख़्वान	ना'त ख़्वान	स्टेज	मन्च
मुक़र्रिर / ख़त़ीब	मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी	आख़िरत के लिये फ़िक्र पैदा कीजिये	आख़िरत के लिये ज़ेहन बनाइये

जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना के लिये इस्तिलाह़ात

येह अल्फ़ाज़ न कहें	येह अल्फ़ाज़ कहें	येह अल्फ़ाज़ न कहें	येह अल्फ़ाज़ कहें
एसेम्बली	दुआ़ए मदीना	जूनियर त़लबा	नए त़लबा
क्लास	दरजा	सीनियर त़लबा	पुराने त़लबा
क्लास मॉनीटर	दरजा ज़िम्मेदार	फ़ॉरेनर त़लबा	ग़ैर मुल्की त़लबा
निगहबान	ख़ैर ख़्वाह	ऑफ़िस	मक्तब
रिहाइशी त़लबा	मुक़ीम त़लबा	चेकर	मुफ़त्तिश
शहरी / ग़ैर रिहाइशी त़लबा	ग़ैर मुक़ीम त़लबा	हमारे अ़ल्लामा साह़िब	हमारे उस्ताज़ साह़िब
फ़र्स्ट / सेकन्ड फ़्लोर	पहली, दूसरी मन्ज़िल	कईरटीकर	निगहबान
मद्रसा कमीटी	मजलिसे मद्रसा	किचन	मत़्बख़

बाब : 8

इख़्तितामिया

इस बाब में आप पढ़ेंगे

अवरादो वज़ाइफ़, मन्क़बते ग़ौसे आ'ज़म, मुनाजात, सलातो सलाम, दुआ़ और इस की अहम्मिय्यत व आदाब

अवरादो वज़ाइफ़
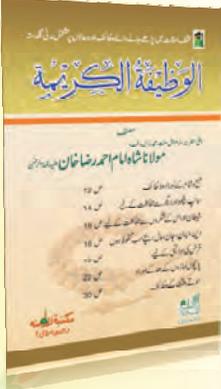
हर विर्द के अव्वल व आखि़र एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये, फ़ाएदा ज़ाहिर न होने की सूरत में शिक्वा करने के बजाए अपनी कोताहियों की शामत तसव्वुर कीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हि़क्मत पर नज़र रखिये ।

هُوَاللّٰهُ الرَّحِيْمُ	जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा ।
يَامَلِكُ	90 बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुर्बत से नजात पा कर मालदार हो ।
يَاسَلَامُ	111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल होगी ।
يَامُهَيْمِنُ	29 बार रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहेगा ।
يَافَتَّاحُ	70 बार जो रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र दोनों हाथ सीने पर रख कर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के दिल का ज़ंग व मैल दूर होगा ।
يَارَافِعُ	20 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की मुराद पूरी होगी
يَاجَلِيْلُ	जो 10 बार पढ़ कर अपने माल व अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चोरी से मह़फ़ूज़ रहेगा ।

يَا حَمِيْدُ	जिस की गन्दी बातों की आ़दत न जाती हो वोह 90 बार पढ़ कर किसी ख़ाली प्याले या गिलास में दम कर दे। ह़स्बे ज़रूरत उसी में पानी पिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ोह़्शगोई की आ़दत निकल जाएगी।(एक बार का दम किया हुवा गिलास बरसों तक चला सकते हैं)
يَا مُحْيِيُ	सात बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लीजिये, गैस हो या पेट या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।(मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना कम अज़ कम एक बार)
يَا غَنِيُّ	रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों या जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द जाता रहेगा।
يَا مُغْنِيُ	एक बार पढ़ कर हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मलने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुकून मिलेगा।
يَا نَافِعُ	20 बार जो किसी काम को शुरूअ़ करने से क़ब्ल पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह काम उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ पूरा होगा।

उ़लमा की शान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है : जन्नती जन्नत में उ़लमाए किराम के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को अल्लाह तआ़ला के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा : تَمَنَّوْا عَلَیَّ مَا شِئْتُمْ या'नी मुझ से मांगो, जो चाहो। वोह जन्नती उ़लमाए किराम की त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे : "येह मांगो वोह मांगो।" जैसे वोह लोग दुन्या में उ़लमाए किराम के मोह़ताज थे, जन्नत में भी उन के मोह़ताज होंगे।

(الفردوس بمأثور الخطاب، ١/٢٣٠، حديث:٨٨٠ والجامع الصغير، ص ١٣٥، حديث:٢٢٣٥)

मन्क़बते ग़ौसे आ'ज़म

मेरे ख़्वाब में आ भी जा ग़ौसे आ'ज़म

मेरे ख़्वाब में आ भी जा ग़ौसे आ'ज़म
पिला जामे दीदार या ग़ौसे आ'ज़म

कभी तो ग़रीबों के घर कोई फेरा !
हमारी भी क़िस्मत जगा ग़ौसे आ'ज़म

कुछ ऐसी पिला दो शराबे महब्बत
न उतरे कभी भी नशा ग़ौसे आ'ज़म

हैं ज़ेरे क़दम गर्दनें औलिया की
तुम्हारा है वोह मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

हैं सारे वली तेरे ज़ेरे नगीं[1] और
है तू सय्यिदुल औलिया ग़ौसे आ'ज़म

मदद कीजिये आह ! चारों त़रफ़ से
मैं आफ़ात में हूं घिरा ग़ौसे आ'ज़म

---

(1) ... मा तहत ।

बहार आए मेरे भी उजड़े चमन में
चला कोई ऐसी हवा ग़ौसे आ'ज़म

रहे शाद व आबाद मेरा घराना
करम अज़ पए मुस्त़फ़ा ग़ौसे आ'ज़म

दमे नज़्अ़ शैत़ां न ईमान ले ले
ह़िफ़ाज़त की फ़रमा दुआ़ ग़ौसे आ'ज़म

मुरीदीन की मौत तौबा पे होगी
है येह आप ही का कहा ग़ौसे आ'ज़म

मेरी मौत भी आए तौबा पे मुर्शिद !
हूं मैं भी मुरीद आप का ग़ौसे आ'ज़म

करम आप का गर हुवा तो यक़ीनन
न होगा बुरा ख़ातिमा ग़ौसे आ'ज़म

मेरी क़ब्र में "ला तख़फ़"[1] कहते आओ
अन्धेरा रहा है डरा ग़ौसे आ'ज़म

गो अ़त्तार बद है बदों का भी सरदार
येह तेरा है तेरा, तेरा ग़ौसे आ'ज़म[2]

---

[1]……"ला तख़फ़" से ग़ौसे पाक के इस इरशाद : مُرِیْدِیْ لَاتَخَفْ، اَللّٰہُ رَبِّیْ (या'नी मेरे मुरीद मत डर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा परवर्दगार है) की त़रफ़ इशारा है ।

[2]……वसाइले बख़्शिश, स. 524

मुनाजात

अल्लाह ! मुझे हाफ़िज़े क़ुरआन बना दे[1]

अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़े कुरआन बना दे
कुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे
हो जाया करे याद सबक़ जल्द इलाही !
मौला तू मेरा ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ बना दे
सुस्ती हो मेरी दूर उठूं जल्द सवेरे
तू मद्रसे में दिल मेरा अल्लाह ! लगा दे
हो मद्रसे का मुझ से न नुक़्सान कभी भी
अल्लाह ! यहां के मुझे आदाब सिखा दे
छुट्टी न करूं भूल के भी मद्रसे की मैं
अवक़ात का भी मुझ को तू पाबन्द बना दे
उस्ताज़ हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़
आ़दत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे
ख़सलत हो मेरी दूर शरारत की इलाही !
सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे

---

[1] वसाइले बख़्शिश, स. 101

उस्ताज़ की करता रहूं हर दम मैं इताअ़त
मां बाप की इ़ज़्ज़त की भी तौफ़ीक़ ख़ुदा दे
कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़
मौला तू मदीना मेरे सीने को बना दे
फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही !
बस शौक़ मुझे ना'त व तिलावत का ख़ुदा दे
मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें
अल्लाह ! इबादत में मेरे दिल को लगा दे
पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे
हर काम शरीअ़त के मुताबिक़ मैं करूं काश !
या रब ! तू मुबल्लिग़ मुझे सुन्नत का बना दे
मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं
अल्लाह ! मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे
मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा
चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे
अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे
उस्ताज़ हों, मां बाप हों, अ़त्तार भी हो साथ
यूं हज को चलें और मदीना भी दिखा दे

सलातो सलाम[1]

ऐ मदीने के ताजदार तुझे
अहले ईमां सलाम कहते हैं

तेरे उ़श्शाक़ तेरे दीवाने
जाने जानां सलाम कहते हैं

जो मदीने से दूर रहते हैं
हिजरो फुर्क़त का रंज सेहते हैं

वोह त़लब गारे दीद रो रो कर
ऐ मेरी जां सलाम कहते हैं

जिन को दुन्या के ग़म सताते हैं
ठोकरें दर बदर की खाते हैं

ग़म नसीबों के चारह गर तुम को
वोह परेशां सलाम कहते हैं

दूर दुन्या के रन्जो ग़म कर दो
और सीने में अपना ग़म भर दो

उन को चश्माने तर अ़त़ा कर दो
जो भी सुल्त़ां सलाम कहते हैं

[1]......वसाइले बख़्शिश, स. 584

जो तेरे इश्क़ में तड़पते हैं
हाज़िरी के लिये तरसते हैं

इज़्ने तैबा की आस में आक़ा
वोह पुर अरमां सलाम कहते हैं

तेरे रौज़े की जालियों के पास
साथ रह़्मो करम की ले कर आस

कितने दुख्यारे रोज़ आ आ के
शाहे ज़ीशां सलाम कहते हैं

आरज़ूए ह़रम है सीने में
अब तो बुलवाइये मदीने में

तुझ से तुझ ही को मांगते हैं जो
वोह मुसलमां सलाम कहते हैं

रुख़ से पर्दे को अब उठा दीजिए
अपने क़दमों से अब लगा लीजिये

आह ! जो नेकियों से हैं यक्सर
ख़ाली दामां सलाम कहते हैं

आप अ़त्त़ार क्यूं परेशां हैं
बद से बद तर भी ज़ेरे दामां हैं

उन पे रह़्मत वोह ख़ास करते हैं
जो मुसलमां सलाम कहते हैं

दुआ
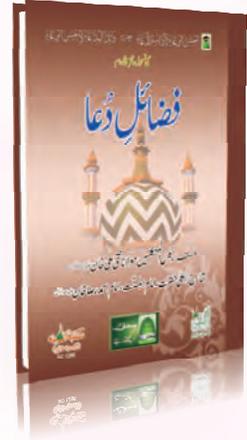
दुआ की अहम्मिय्यत

प्यारे मदनी मुन्नो ! दुआ जिस तरह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने, उस की कुर्बत हासिल करने, उस के फ़ज़्लो इन्आम के मुस्तहिक़ होने और बख़्शिश व मग़फ़िरत का परवाना हासिल करने का निहायत आसान और मुजर्रब ज़रीआ है। इसी तरह दुआ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत, उस के प्यारे बन्दों की आदत और दर हक़ीक़त इबादत बल्कि मग़ज़े इबादत और गुनाहगार बन्दों के हक़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से एक बहुत बड़ी ने'मत व सआदत है। कुरआने करीम व अहादीसे मुबारका में जगह जगह दुआ मांगने की तरग़ीब दिलाई गई है। चुनान्चे, दुआ से मुतअल्लिक़ कुरआने करीम में फ़रमाने बारी तआला है :

وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ۠ (پ۲۴، المؤمن:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ۠ (پ۲، البقرة:۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूं दुआ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं कि कहीं राह पाएं।

प्यारे मदनी मुन्नो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पैदा होते ही अपनी उम्मत के हक़ में येह दुआ मांगी : رَبِّ هَبْ لِيْ اُمَّتِيْ या'नी खुदाया मेरी उम्मत को मेरे वासिते बख़्श दे ।

नीज़ सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कसीर अहादीसे मुबारका में बार बार दुआ मांगने की तरग़ीब दिलाई है । चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ[1] तर्जमा : दुआ इबादत का मग़ज़ है । और न मांगने की सूरत में रब्बे जलील का निहायत सख़्त हुक्म भी सुनाया : مَنْ لَّا يَدْعُوْنِيْ اَغْضِبُ عَلَيْهِ[2] या'नी जो मुझ से न मांगेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा ।

आदाबे दुआ

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं : अल्लाह तआ़ला बन्दों की दुआएं अपनी रहमत से क़बूल फ़रमाता है और उन के क़बूल के लिये चन्द शर्तें हैं : एक इख़्लास (दुआ में) । दूसरी येह कि क़ल्ब ग़ैर की तरफ़ मश्ग़ूल न हो । तीसरी येह कि वोह दुआ किसी अम्रे ममनूअ़ पर मुश्तमिल न हो । चौथी येह कि अल्लाह तआ़ला की रहमत पर यक़ीन रखता हो । पांचवीं येह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ मांगी क़बूल न हुई । येह शराइत़ नक़्ल फ़रमाने के बा'द सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब इन शर्तों से दुआ की जाती है क़बूल होती है हदीस शरीफ़ में है कि दुआ करने वाले की दुआ क़बूल होती है या तो उस की मुराद दुन्या ही में उस को जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या उस से उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है ।(3)

---

[1]...... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، ۵/ ۲۴۳، حدیث: ۳۳۸۲

[2]...... الجامع الصغیر، ص۳۷۷، حدیث: ۶۰۲۹

[3]...... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 24, अल मुअमिन, तहतल आयत. 60

दुआ के तीन फ़ाएदे

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो मुसलमान ऐसी दुआ़ करे जिस में गुनाह व क़त़ए रेह़मी की कोई बात शामिल न हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तीन चीज़ों में से कोई एक ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता है :

﴾1﴿......उस की दुआ़ का नतीजा जल्द ही उस की ज़िन्दगी में ज़ाहिर हो जाता है।

﴾2﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई मुसीबत उस बन्दे से दूर फ़रमा देता है।

﴾3﴿......उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ कर दी जाती है।

एक रिवायत में है कि बन्दा जब आख़िरत में अपनी दुआ़ओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थीं तो तमन्ना करेगा : काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ क़बूल न हुई होती।[1]

आयतुल कुरसी की फ़ज़ीलत

जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी पढ़ेगा उस को ह़स्बे ज़ैल बरकतें नसीब होंगी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ :

(1) वोह मरने के बा'द जन्नत में जाएगा।

(2) वोह शैत़ान और जिन्न की तमाम शरारतों से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(3) अगर मोह़ताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोह़ताजी और ग़रीबी दूर हो जाएगी।

(4) जो शख़्स सुब्ह़ व शाम और बिस्तर पर लैटते वक़्त आयतुल कुरसी और इस के बा'द की दो आयतें خٰلِدُوْنَ तक पढ़ा करेगा वोह चोरी, ग़र्क़आबी और जलने से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(5) अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर इस का कतबा आवेज़ां कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस घर में कभी फ़ाक़ा न होगा बल्कि रोज़ी में बरकत और इज़ाफ़ा होगा और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 589)

[1] ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی جامع الدعوات...الخ، ۵/۲۹۲، حدیث: ۳۴۹۰

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

1	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
2	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
3	تفسیر الطبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۴ھ
4	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	الجامع لاحکام القرآن	امام محمد بن احمد القرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
6	تفسیر المدارک	امام عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
7	تفسیر الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیۃ، مصر
8	تفسیر ابن کثیر	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
9	الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
10	الاتقان فی علوم القرآن	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۳ھ
11	التفسیرات الاحمدیۃ	شیخ احمد بن ابی سعید ملّا جیون جونپوری، متوفی ۱۱۳۰ھ	پشاور
12	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
13	حاشیۃ الصاوی علی تفسیر الجلالین	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوفی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت
14	روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
15	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
16	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
17	کتاب التیسیر فی القراءات السبع	امام ابو عمرو عثمان بن سعید الدانی، متوفی ۴۴۴ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
18	شرح العقائد	علامہ مسعود بن عمر سعد الدین تفتازانی، متوفی ۷۹۳ھ	باب المدینہ کراچی
19	المسامرۃ بشرح المسایرۃ	کمال الدین محمد بن محمد المعروف بابن ابی شریف، متوفی ۹۰۶ھ	مطبعۃ السعادۃ بمصر
20	الیواقیت والجواہر	عبد الوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
21	النبراس	علامہ محمد عبد العزیز فرہاری، متوفی ۱۲۳۹ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان

22	المعتقد المنتقد مع شرحه المعتمد المستند	علامہ فضل الرسول بدایونی، متوفی ۱۲۸۹ھ	برکاتی پبلشرز، کراچی ۱۴۲۰ھ
23	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمية، بیروت ۱۴۱۹ھ
24	المؤطا	امام مالک بن انس اصبحی ۱۷۹ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۰ھ
25	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
26	سُنن الترمذی	امام ابو عیسی محمد بن عیسی الترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۴ھ
27	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث السجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
28	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد الله محمد بن یزید القزوینی، متوفی ۲۷۳ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
29	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب بن علی النسائی متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمية، بیروت ۱۴۲۶ھ
30	صحیح ابن خزیمة	امام ابو بکر محمد بن اسحاق نیشاپوری شافعی، متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی، بیروت
31	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	امام حافظ ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد تمیمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمية، بیروت
32	سنن الدارمی	امام حافظ عبد الله بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی، بیروت
33	سنن دار قطنی	امام علی بن عمر دار قطنی، متوفی ۳۸۵ھ	مدینة الاولیاء، ملتان
34	المسند للامام احمد	امام ابو عبد الله احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
35	المسند لابی یعلٰی	شیخ الاسلام ابو یعلی احمد الموصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمية، بیروت ۱۴۱۸ھ
36	المعجم الکبیر	امام سلیمان احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
37	المعجم الاوسط	امام سلیمان احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمية، بیروت ۱۴۲۲ھ
38	المعجم الصغیر	امام سلیمان احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمية، بیروت
39	المصنف لعبد الرزاق	امام حافظ ابو بکر عبد الرزاق بن همام، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمية، بیروت ۱۴۲۱ھ
40	المصنف لابن ابی شیبه	امام عبد الله بن محمد ابی شیبة، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
41	الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند، ایران
42	موسوعة الامام ابن ابی الدنیا	امام ابو بکر عبد الله بن محمد القرشی، متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمية، بیروت
43	نوادر الاصول	ابو عبد الله محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری
44	مستدرک علی الصحیحین	امام ابو عبد الله محمد بن عبد الله حاکم، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفة، بیروت ۱۴۱۸ھ

45	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
46	معرفۃ السنن والآثار	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
47	فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شھردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
48	شرح السنۃ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۴ھ
49	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
50	مشکوۃ المصابیح	الشیخ محمد بن عبد اللہ الخطیب التبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
51	مشکوۃ المصابیح	الشیخ محمد بن عبد اللہ الخطیب التبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	باب المدینہ کراچی
52	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابوبکر ھیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
53	الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
54	جامع الاحادیث	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت
55	کنز العمال	علامہ علاء الدین علی المتقی الھندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
56	عمدۃ القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر، بیروت
57	تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ	ابو الحسن علی بن محمد بن عراق الکنانی، متوفی ۹۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
58	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
59	اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبد الحق محدث دھلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
60	مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القران پبلی کیشنز لاھور
61	نزھۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک سٹال، لاھور
62	الشمائل المحمدیۃ	الامام ابو عیسی محمد بن عیسی الترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
63	الشفاء بتعریف حقوق المصطفی	قاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اھلسنت برکات رضا، ھند
64	المواھب اللدنیۃ	شھاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۶ھ
65	شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیۃ	محمد بن عبد الباقی بن یوسف الزرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
66	الخصائص الکبری	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
67	وسائل الوصول الی شمائل الرسول	امام یوسف بن اسماعیل نبھانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	دار المنھاج، بیروت

68	الحصن الحصين	شیخ محمد بن محمد بن الجزری شافعی، متوفی ۸۳۳ھ	مکتبة العصرية، بيروت
69	حلية الاولياء	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمية، بيروت ۱۴۱۹ھ
70	تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی الخطیب البغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمية، بيروت
71	قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمية، بيروت ۱۴۲۶ھ
72	احیاء علوم الدین	امام محمد بن احمد الغزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بيروت ۲۰۰۰ء
73	اتحاف السادة المتقين	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمية، بيروت
74	کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران
75	کشف المحجوب	علی بن عثمان ھجویری، متوفی ۴۶۵ھ	نوائے وقت پرنٹرز، لاہور
76	القول البديع	الحافظ محمد بن عبد الرحمن السخاوی، متوفی ۹۰۲ھ	مؤسسة الريان، بيروت
77	افضل الصلوات علی سید السادات	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	دار الثمر
78	الحديقة الندية	علامہ عبد الغنی نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۱ھ	پشاور
79	المفردات فی غریب القرآن	ابو القاسم الحسین بن محمد الاصفہانی، متوفی ۵۰۲ھ	دار القلم، دمشق
80	المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفی ۸۵۰ھ	دار الفکر، بيروت
81	قصیدہ نعمانیہ مع الخیرات الحسان	امام اعظم ابو حنیفة نعمان بن ثابت، متوفی ۱۵۰ھ	مکتبة الحقيقة، استنبول
82	الهداية	برھان الدین علی بن ابی بکر مَرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	دار احیاء التراث العربي، بيروت
83	كنز الدقائق	امام ابو البرکات حافظ الدین عبد اللہ بن احمد نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	باب المدینہ، کراچی
84	البحر الرائق	علامہ زین الدین بن نجیم، متوفی ۹۷۰ھ	کوئٹہ ۱۴۲۰ھ
85	خلاصة الفتاوى	علامہ طاہر بن عبد الرشید بخاری، متوفی ۵۴۲ھ	کوئٹہ
86	فتاوی رملی	علامہ خیر الدین رملی، متوفی ۱۰۸۱ھ	باب المدینہ کراچی
87	فتح القدير	کمال الدین محمد بن عبد الواحد المعروف بابن ھمام، متوفی ۶۸۱ھ	کوئٹہ
88	شرح الوقاية	علامہ صدر الشریعہ عبید اللہ بن مسعود، متوفی ۷۴۷ھ	باب المدینہ کراچی
89	جامع الرموز	امام شمس الدین محمد الخراسانی القہستانی، متوفی ۹۵۳ھ وقیل ۹۶۲ھ	باب المدینہ کراچی

90	غنیۃ المتملی	علامہ محمد ابراھیم بن حلبی، متوفی ۹۵۶ھ	سہیل اکیڈمی، مرکز الاولیاء لاھور
91	تنویر الابصار	شمس الدین محمد بن عبد اللہ تمرتاشی، متوفی ۱۰۰۴ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
92	فتاوی تاتارخانیۃ	علامہ عالم بن علاء انصاری دھلوی، متوفی ۷۸۶ھ	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۶ھ
93	الدر المختار	علامہ علاؤ الدین الحصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
94	الفتاوی الھندیۃ	ملا نظام الدین، متوفی ۱۱۶۱ھ و علمائے ھند	کوئٹہ پاکستان
95	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
96	الفتاوی الرضویۃ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاھور
97	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
98	بہار شریعت	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
99	الفتاوی الامجدیۃ	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبہ رضویہ، کراچی ۱۴۱۹ھ
100	جاء الحق	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القران پبلی کیشنز لاھور
101	سیرت مصطفٰے	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفی اعظمی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
102	جنتی زیور	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفی اعظمی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
103	ھمارا اسلام	مفتی محمد خلیل خان برکاتی، متوفی ۱۴۰۵ھ	فرید بک اسٹال، لاھور
104	مدنی پنج سورہ	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتھم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
105	فیضانِ سنت (جلد اول)	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتھم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
106	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتھم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
107	نماز کے احکام	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتھم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
108	ابلق گھوڑے سوار	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتھم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
109	حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
110	ذوقِ نعت	مولانا محمد حسن رضا خان قادری	مرکز اھل سنت برکاتِ رضا (ھند)
111	وسائلِ بخشش	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتھم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)

शो'बए इस्लाही कुतुब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ
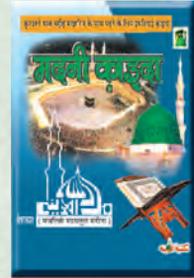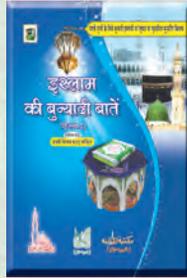
-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

۞... अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200

۞... मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

۞... नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099

۞... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, फ़ोन : (0145) 2629385

۞... हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ऑल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860

۞... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

۞... बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकया, मदनपूरा, बनारस, फ़ोन : 0936902310

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net